हिन्दी-मुहावरे

ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा

UNIVERSAL LIBRARY

OU_186215

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—43—30-1-71—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. Accession No. P. G. H2021

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

हिन्दी-मुहाविरे

लेखक—
ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा,
एम० ए०, एल-एल, बी०

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी, बनारस।

प्रकाशक
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी, बनारस।
शाखा—कलकत्ता, पटना।

सर्वाधिकार स्वरक्षित
द्वितीय संस्करण सन् १६५१
मूल्य ६)

मुद्रक
कृष्ण गोपाल केडिया
वणिक प्रेस
साक्षीविनायक, बनारस

दो शब्द

किसी भाषामें दिखायी पड़नेवाली असाधारण शब्द-योजना अथवा प्रयोग मुहाविरा कहलाता है। मुहाविरा वास्तवमें लक्षणा या व्यञ्जना द्वारा सिद्ध वह वाक्यांश है, जो किसी एक ही बोली या लिखी जानेवाली भाषामें प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थसे विलक्षण हो। 'लाठी खाना' एक मुहाविरा है, क्योंकि इसमे 'खाना' शब्द अपने साधारण अर्थमें नहीं आया है, लाक्षणिक अर्थमें आया है। लाठी खानेकी चीज नहीं है, पर बोलचालमें 'लाठी खाना' का अर्थ 'लाठीका प्रहार सहना' लिया जाता है। ऐसे प्रयोगोंको रोजमर्रा या बोलचाल भी कहते हैं।

मुहाविरे, हमारे भाषण और लेखके आवश्यक अङ्ग हैं। उनकी संख्या और प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। वे अधिकाधिक लोक-प्रिय होते जा रहे हैं। पर हमारे मनमें यह जिज्ञासा शायद ही कभी होती है कि ये मुहाविरे भाषाके विकासकी किस अवस्थामें बनते और बढ़ते हैं तथा इनकी उपयोगिता क्या है। यों तो भाषाकी सृष्टिके [illegible] साथ मुहाविरे भी बन जाते हैं, किन्तु भाषाके वि[illegible] अवस्थासे इनकी संख्या बहुत ही न्यून रहती है। उस समय तो भाषा सीधे-सादे ढङ्गसे सबकी अभिधा-शक्तिकी सहायतासे—विचारों और भावोंको प्रकट करनेकी शक्ति अर्जित करनेमें यत्नशील रहती

है। जब भाषाकी व्यञ्जना-शक्ति पर्याप्त बढ़ जाती है, तब मुहाविरोंका प्रयोग बढ़ने लगता है। भाषाकी इस व्यञ्जन-शक्तिकी वृद्धिके साथ साथ मुहाविरोंकी भी संख्या वृद्धि होती है।

किसी भाषामें मुहाविरोंकी वर्तमान उत्पत्ति और प्रयोगका दूसरा और सम्भवतः सबसे प्रधान—कारण उस भाषाका व्यवहार करनेवाले समाजके कार्य-क्षेत्रका विस्तार है। समाज अनेक समुदायोंकी समष्टि है। प्रत्येक समुदायके लिए विशिष्ट कार्य होता है। जब समुदायके कार्य-क्षेत्रमें पूरी विशिष्टता (Specialisation) आ जाती है, तब नित्य-प्रतिके व्यवहारमें भावोंकी सम्यक् व्यञ्जनाके लिए, भिन्न-भिन्न वस्तुओं, व्यापारों और प्राणियोंके रूप, रङ्ग कार्य इत्यादिके आधार पर विलक्षण शब्द-योजनाओंकी (मुहाविरोंकी) सृष्टि द्रुत गतिसे होने लगती है। आरम्भमें इन मुहाविरोंका प्रयोग समुदाय विशेषके ही कार्य-क्षेत्रसे सीमित रहता है, किन्तु कालान्तरमें ये व्यापक होकर सार्वत्रिक प्रयोगके शब्द हो जाते हैं। आधुनिक यूरोपीय भाषाओं—विशेषतः अंगरेजी और फ्रेंच—में जो मुहाविरे मिलते हैं उनके भिन्न-भिन्न समुदायों—जैसे नाविक सैनिक, कृषक आदि—के शब्द योजना-कौशलका परिणाम है। यदि वहां समाजकी संकुलता और उसका कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृत न हो गया होता, तो इन भाषाओंमें इतने मुहाविरे न उत्पन्न हो जाते।

ग्रीक, लैटिन, संस्कृत-जैसी प्राचीन भाषाओंमें मुहाविरेको

न्यूनताका यह एक प्रधान कारण है कि उस समय समाजका कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृत और विशिष्ट (Shecialised) न था। दूसरा और सबसे मुख्य कारण यह है कि उन दिनों इतिवृत्तों, सम्वादों, सम्भाषणों आदिको परम उदात्त, आदर्श और साहित्यिक रूपमें रखनेकी चेष्टा की जाती थी, वास्तविक और स्वाभाविक रूपमें रखनेकी नहीं। उस युगकी प्रायः सभी नायक-नायिकाएँ उच्च श्रेणीके लोगोंमें से ही हुआ करती थीं। कवि और लेखक अपने ग्रन्थोंमें इनके वार्तालापोंको सदा आदर्श और कृत्रिम रूप देते थे। वाल्मीकि, कालिदास, आदिकी रचनाएँ इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं। इनकी रचनाओं-में मुहाविरोंका आधिक्य सम्भव ही नहीं था। संस्कृतके किसी ग्रन्थमें यदि मुहाविरोंकी प्रचुरता पायी जाती है, तो मृच्छकटिक नाटकमें, जिसमें सर्वसाधारणके कथोपकथनों और सम्भाषणोंको स्वाभाविक रूपमें रखनेका सफल प्रयत्न हुआ है। बात यह है कि मुहाविरे अधिक वहीं दिखायी पड़ेंगे जहाँ सर्व-साधारणके कथन और सम्भाषण अपने वास्तविक रूपमें प्रत्यक्ष होंगे। जहाँ वे आदर्श और बनावटी रूपमें दिखायी पड़ेंगे वहाँ मुहाविरोंको आकाश-कुसुम समझिये। मिल्टन और जांसनकी रचनाएं हमें मुहाविरोंका चमत्कार नहीं दिखा सकतीं; इनका जौहर देखनेके लिए हमें डिकेन्स और थैकरेके उपन्यासोंके पन्ने उलटने पड़ेंगे। यही बात हिन्दीके सम्बन्धमें भी सत्य है। मुहाविरोंका नयनाभिराम छटा देखनेके लिए उत्सुक

आंखोंको सूर और तुलसी उतनी तृप्ति नहीं प्रदान कर सकते जितनी मुन्शी प्रेमचन्द। आज क्या पश्चिमीय और क्या पूर्वीय, सभी देशोंकी भाषाओंमें मुहाविरोंकी प्रचुरता है। इसका कारण यह है कि आधुनिक युगमें समाजके कार्य-क्षेत्रका आशातीत विस्तार तो हुआ ही है, साथ ही साहित्य क्षेत्रसे आदर्शवादको खदेड़कर उसके स्थानपर वास्तविकताको लानेका प्रयत्न हो रहा है—वस्तुओं; व्यापारों, कथनोपकथनों संभाषणों आदिका असली रूप प्रत्यक्ष करनेकी चेष्टा हो रही है।

भाषा-विकासकी प्राथमिक अवस्थामें शब्द, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, अपनी अभिधा-शक्तिका ही प्रदर्शन कर सकते हैं। जब भाषामें शक्ति या प्रौढ़ता आती है, तब शब्दोंकी लक्षणा और व्यञ्जना शक्तियोंका चमत्कार दिखायी पड़ने लगता है। मुहाविरे बन ही नहीं सकते जब तक शब्दोंमें ये शक्तियां न आ जायं। इससे सूचित होता है कि किसी भाषामें मुहाविरोंका प्राचुर्य उसकी सजीवताका सूचक है।

यह बात तो हुई मुहाविरोंकी उत्पत्ति और वृद्धिके सम्बन्ध में। अब रही इनकी उपयोगिताकी बात। मुहाविरोंकी उपयोगिताके सम्बन्धमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आज इनके बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता। बोल-चाल और साहित्य, दोनोंके लिए ये अनिवार्य हैं। मुहाविरोंके प्रयोगसे वाणीमें हृदय-ग्राहिता और मार्मिकताकी मात्रा बहुत बढ़ जाती है। किसी छोटेसे मुहाविरेमें जो भाव निहित है, उसकी यथार्थ

व्यञ्जना श्रेष्ठसे श्रेष्ठ शब्दावलीमें भी नहीं हो सकती। मुहाविरोंमें थोड़े-से-थोड़े अक्षरोंसे बहुत-सा भाव भरनेकी शक्ति होती है। अस्तु, वे भाषाकी समास-शक्तिको उत्कर्ष-प्रदान करते हैं। कितने ही मुहाविरे सामाजिक नियम, रीति-रिवाज आदिके स्मारक-स्वरूप हैं।

जो मुहाविरे इतनी उपयोगी और महत्वपूर्ण वस्तु है, उनका एक सर्वाङ्ग सुन्दर संग्रह हिन्दी जैसी जीवित तथा उन्नत भाषाके लिए अनिवार्य रूपसे आवश्यक है। इस आवश्यकताका अनुभव लोग बहुत दिनोंसे करते आ रहे थे। हर्षका विषय है कि पंडित ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा, एम० ए०, एल०-एल० बी० के गम्भीर अध्ययन तथा मनन, कठिन परिश्रम और सच्चे अध्यवसायके परिणाम-स्वरूप हिन्दी-मुहाविरोंके प्रस्तुत संग्रहसे उक्त आवश्यकताकी पूर्ति, बहुत अंशोंमें हो जाती है। हिन्दीमें मुहाविरोंका इतना सुन्दर संग्रह मेरे देखनेमें अबतक नहीं आया। जो दो-चार पुस्तकें इस विषय पर प्रकाशित हुई हैं, वे अनेक त्रुटियोंसे पूर्ण हैं। प्रायः उन सभी पुस्तकोंमें मुहाविरों (Idioms) और लोकोक्तियों (Proverbs) की विचित्र खिचड़ी पकायी गयी है; दोनोंमें जो भेद हैं वह उनसे स्पष्ट नहीं होता। कहीं-कहीं उदाहरणके रूपमें मुहाविरोंका वाक्योंमें प्रयोग बहुत ही बेठिकाने है; मुहाविरोंके भाव वाक्योंसे नहीं स्पष्ट नहीं होते। प्रस्तुत संग्रह इन दोषोंसे मुक्त है। इस संग्रहमें केवल मुहाविरे ही हैं, लोकोक्तियाँ नहीं हैं। प्रत्येक मुहाविरेका अर्थ दे कर वाक्यमें उसका प्रयोग दिखाया गया

है। ऐसे वाक्योंकी रचना बड़ी सावधानी और विचारसे की गयी है, तथापि कतिपय स्थलोंपर भाषाकी कठिनताके कारण कुछ दुर्बोधता उत्पन्न होती है। आशा है, अगले संस्करणमें यह दुर्बोधता दूर कर दी जायगी। उर्दू अपने मुहाविरोंके वैभवके लिए प्रसिद्ध है। उर्दू चूँकि हिन्दीकी विभाषा मात्र है; अतएव बहुतसे मुहाविरे हिन्दी और उर्दू दोनोंमें प्रयुक्त होते हैं। पर कई मुहाविरोंके अच्छे प्रयोगोंके उदाहरण हिन्दीमें मुश्किलसे मिलेंगे। ऐसे मुहाविरोंके प्रयोगोंके उदाहरण शर्माजीने उर्दू के प्रसिद्ध कवियोंकी रचनाओंसे उद्धृत किये हैं उद्धृत शेर बड़े ही सरल, अर्थगर्भ और चुभते हुए हैं। यह बात इस संग्रहकी एक उल्लेखनीय विशेषता है। हिन्दीमें कुछ ऐसी क्रियाएं हैं, जिनके बहुत ही सुन्दर प्रयोग लाक्षणिक अर्थोंमें होते हैं, जैसे—मरना, चिपटना, भरना आदि। इस पुस्तकमें ऐसी क्रियाओंका पृथक् संकलन हुआ है। इन क्रियाओंके भी प्रयोग दिखलाये गये हैं। यह भी एक नवीनता है। सारांश यह है कि संग्रह बहुत ही सुन्दर, बहुत ही अनूठा और बहुत ही उपादेय हुआ है। शर्माजीको इसके लिए जितनी बधाई दी जाय थोड़ी है। विश्वास है कि हिन्दी-जगत् इस संग्रहका यथेष्ट आदर कर उनका उत्साह-वर्धन करेगा।

डी० ए० वी० कालेज,
देहरादून।
२५ जून १९३८ ई०

गयाप्रसाद शुक्ल, एम० ए०,
हिन्दी-अध्यापक।

विषय-परिचय

'मुहाविरा' अरबी भाषाका शब्द है, जिसका अर्थ है बात-चीत करना अथवा प्रश्नका उत्तर देना। परन्तु पारिभाषिक हो जानेके कारण मुहाविरेका प्रयोग विलक्षण अर्थमें किया जाता है। 'पानी पानी होना', यह एक मुहाविरा है; इसके शब्दोंका सीधा अर्थ नहीं किया जाता, किन्तु इसका प्रयोग एक विलक्षण अर्थमें होता है—लज्जित होना। मुहाविरेका निर्माण किसी व्यक्ति विशेषके द्वारा नहीं होता। अनेक व्यक्तियोंके द्वारा बहुत दिनोंतक एक वाक्यांश विलक्षण अर्थमें प्रयुक्त होनेके कारण मुहाविरा बन जाता है। वाक्यांश होनेके कारण मुहाविरेमें उद्देश्य और विधेयका अभाव रहता है।

सब मुहाविरे वाक्यांश होते हैं, परन्तु सब वाक्यांश मुहाविरे नहीं होते। नदी-तटपर, यह एक वाक्यांश है, मुहाविरा नहीं है क्योंकि इसका प्रयोग विलक्षण अर्थमें नहीं किया जाता। लंगोटी बँधवा देना, यह भी एक वाक्यांश है, परन्तु विलक्षण अर्थमें प्रयुक्त होनेसे यह एक मुहाविरा बन गया है, जिसका अर्थ है निर्धन बना देना।

अनेक वाक्यांश ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग विलक्षण अर्थमें किया जाता है, परन्तु वे मुहाविरे नहीं कहला सकते क्योंकि उनके अन्तमें क्रियाका संज्ञार्थक अर्थात् सामान्य रूप नहीं रहता। ऐसे वाक्यांशोंको मुहाविरेदार वाक्यांश कहते हैं।

[अ] कोल्हूका बैल।

[ब] टेढ़ी खीर।

[स] आँखें दिखलाना।

(अ) और (ब) मुहाविरेदार वाक्यांश हैं, जिनका प्रयोग विलक्षण अर्थमें अवश्य किया जाता है। तथापि इनके अन्तमें किसी क्रियाका संज्ञार्थक रूप न होनेसे इनकी गणना मुहाविरोंमें नहीं की जाती। इनको मुहाविरेदार वाक्यांश कहते हैं। (स) एक मुहाविरा है क्योंकि इसके अन्तमें क्रियाका सामान्य रूप है और इसका प्रयोग विलक्षण अर्थमें किया जाता है। मुहाविरे और मुहाविरेदार वाक्यांशमें केवल इतना ही भेद है।

पुनश्च, हिन्दी भाषामें अनेक क्रियाएँ ऐसी हैं, जिनका प्रयोग विलक्षण अर्थमें किया जाता है। उनको मुहाविरेदार प्रयोगवाली क्रिया कहते हैं। 'मरना' यह एक क्रिया है; इसका साधारण अर्थ शरीर-परित्याग करना है। इसका विलक्षण अर्थ किसीपर अत्यन्त आसक्त होना है।

यद्यपि मुहाविरेका शब्दार्थ नहीं लिया जाता, तदपि उसमें और उसके लाक्षणिक अर्थमें कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य रहता

है। उदाहरणार्थ, **लंगोटी बंधवा देना**, एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ है **निर्धन बना देना**। निर्धन लोग प्रायः लँगोटी बाँधते हैं। इसलिए **लंगोटी बांधना** निर्धनत्वका सूचक है।

मुहाविरोंके शब्द नपे-तुले होते हैं; उनमें प्रायः हेर-फेर नहीं किया जा सकता। **पानी पानी होना**, एक मुहाविरा है। इसको **जल जल होना** अथवा **पानी होना**, नहीं कह सकते क्योंकि **जल जल होना** लज्जित होनेके अर्थमें प्रचलित नहीं है और **पानी होना** एक दूसरा मुहाविरा बन जाता है, जिसका अर्थ है **सुगम होना**।

मुहाविरों और लोकोक्तियोंमें बड़ा अन्तर है; दोनोंको एक समझना भूल है।

[अ] हाथ पाँव मारना।

[ब] देनी पड़े बुनाई, घटा बतावे सूत।

(अ) एक मुहाविरा है अतएव वाक्यांश है। (ब) एक लोकोक्ति है और वाक्य है। मुहाविरा एक वाक्यांश होता है और लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य। मुहाविरेका प्रयोग वाक्यमें होता है और लोकोक्तिका स्वतन्त्र रूपसे। मुहाविरा, वाक्यके अर्थमें चमत्कार उत्पन्न करता है और लोकोक्ति किसी बातके समर्थनमें प्रयुक्त होती है। लोकोक्ति, भूत कालकी किसी घटनापर अवलम्बित होती है और उसका अर्थ मुहाविरेकी भांति विलक्षण होता है। मुहाविरे और लोकोक्तिमें केवल इसी एक बातमें समानता है।

मुहाविरों और लोकोक्तियोंका प्रयोग भाषामें जान डाल देता है। इससे उसका सौन्दर्य बढ़ता और एक प्रकारका चमत्कार उत्पन्न हो जाता है। इसीलिये मुहाविरेदार भाषा अधिक रुचिकर होती है। मुहाविरेदार कविता पढ़कर अथवा सुनकर मनुष्यका हृदय फड़क उठता है और वह उसको शीघ्र कण्ठाग्र कर लेता है और बहुत दिनोंतक नहीं भूलता।

प्रस्तुत पुस्तक केवल मुहाविरोंपर ही लिखी गयी है। हिन्दी-वर्णमालाके प्रायः सब अक्षरोंसे आरम्भ होनेवाले मुहाविरे दिये गये हैं। प्रत्येक मुहाविरेका अर्थ स्पष्ट करनेके अभिप्रायसे उसका उदाहरण भी दिया गया है। हिन्दीकी अपेक्षा उर्दूमें मुहाविरोंका प्रयोग अधिक है और वह बिना तोड़े-मरोड़े किया गया है। इसलिये, उदाहरणार्थ यत्र-तत्र उर्दू-कवियोंके सरल शेर उद्धृत किये गये हैं।

देहरादून,
जून १६३८

ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा,
एम० ए०, एल-एल, बी०

I have great pleasure in congratulating Pt. B. S. Dinker Sharma, M. A. LL. B. on the admirable manner in which he has treated the subJect in his "Hindi Muhavare". The idioms of daily occurance have been very systematically arranged in the alphabetic order and have been very explained in a Scholarly style by means of interesting illustrations. The treatment of the subject is both intelligent and exhaustive.

A carefull perusal of this book is sure to give a complete mastery on the Hfndustani idioms. In his VISHAYA PARICHAYA the difference between Idiom s and proverbs has been very carefully marked by him which is generally confused by many teachers and students.

I am specially glad to notice the ability and knowledge the learned Author has brought to bear on this important branch of Hindi Literature.

The Book is a unique and valuable addition of its kind to the Hindi Literature. I hope it will find its way in the hands of every lover of Hindi Literature and specially of teachers and students.

I wish the book every success.

Sd/- M. Mazhar Mohammad,
B. A. LL. B. Pleader.

Dr. Mohan Singh, M. A, Ph. D,D. Litt., Punjab University Oriental College Lahore writes :—

I have carefully looked into "HINDI MUHAVARE" of Pandit B. S. D. Sharma. M. A., LL. B., who is at once a scholar and popular writer. With my fairly complete knowledge of the Urdu and Hindi collections of vocabulary, and idioms and idiomatic usages, I can say that it is a unique work, and fulfils a real need. By framing his illustrations with an eye to literary flavour and pleasant humour, he has lifted it from a mere dictionary of idioms to an instructive and entertaining work, which the student can peruse at leisure. I wish it could be included in the Hindi syllabus of colleges and schools as a general reading book.

I congratulate Sharmaji on having turned out a a work which can stand the test of scholarship as well as popularity.

Sd/- MOHAN SINGH

M. A, Ph. D, D. Litt.

28-6-38.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मुहाविरे	१
मुहाविरेदार वाक्यांश	५४५
कुछ क्रियाओंका मुहाविरेदार प्रयोग	६०६

हिन्दी-मुहाविरे

(अ)

अकड़ दिखाना—घमण्ड करना।

उदाहरण—इस नीचताका कहीं ठिकाना है कि तुम जिसका खाते हो उसको ही अकड़ दिखाते हो।

अकलके पीछे लाठी लिये फिरना—बुद्धिसे काम न लेना।

उ०—जो व्यक्ति हिताहितका विचार नहीं करता, वह अकलके पीछे लाठी लिये फिरता है।

अकलपर परदा पड़ना—बुद्धि-भ्रष्ट होना।

उ०—जगदीशको अपने भले-बुरेका ज्ञान नहीं रहा, क्योंकि उसकी अकलपर परदा पड़ा हुआ है।

अकलके घोड़े दौड़ाना—अनेक प्रकारसे विचार करना।

उ०—ईश्वरकी लीलाका भेद मनुष्य न पा सका, यद्यपि उसने बहुत कुछ अकलके घोड़े दौड़ाये।

अकल चकराना—कुछ समझमें न आना।

उ०—जब साधारण-सी बातमें तुम्हारी अकल चकरा जाती है, तब तुम दर्शन शास्त्रका अध्ययन कैसे कर सकते हो ?

अकल मारी जाना—बुद्धि नष्ट होना।

उ०—दिन-रात चाण्डाल-चौकड़ीमें डटे रहते हो, क्या तुम्हारी अकल मारी गयी है ?

अकलपर पत्थर पड़ना—विवेक भ्रष्ट होना।

उ०—जगदीश ! माता-पिताको गालियाँ देते हो ; क्या तुम्हारी अकलपर पत्थर पड़ गये ?

पड़ गये अक्ल पै क्या शेख़की पत्थर देखो।
आपको हूर बुढ़ापेमें पसन्द आई है॥

अखाड़ेमें आना
अखाड़ेमें उतरना } मुकाबिला करना।

उ०—व्यर्थ प्रलाप करनेसे क्या लाभ है ? यदि कुछ दम रखते हो तो अखाड़ेमें उतरो।

अखाड़ा मारना—विजय प्राप्त करना; कार्य सिद्ध होना।

उ०—इस बार राम बी० ए० में उत्तीर्ण न हो सका, परन्तु श्यामने उत्तीर्ण होकर अखाड़ा मारा।

अखाड़ेसे भागना—हारकर चला जाना।

उ०—जगदीश बहुत देरसे अपनी वीरताकी डींग मार रहा था, परन्तु तपोधन शर्माको देखते ही अखाड़ेसे भाग गया।

अखाड़ा जमाना—आमोद-प्रमोदके लिये इकट्ठा होना।

उ०—आज समस्त धूर्त्त-मण्डली इसी मार्गसे गुजरी है। ऐसा जान पड़ता है कि आज शिवनाथके घर अखाड़ा जमाया जायगा।

अंग-अंग ढीला होना—अत्यन्त थक जाना।

उ०—आज प्रातःकालसे सायंकाल तक वह परिश्रम करना पड़ा कि मोहनका अंग-अंग ढीला हो गया।

अंग-अंग ढीला करना—शरीरकी बुरी अवस्था कर देना।

उ०—रामदेवने अपने पुत्रको ऐसा मारा कि उसका अंग-अंग ढीला कर दिया।

अंग-अंग मुस्कराना—बहुत प्रसन्न होना।

उ०—एम० ए० की परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका समाचार सुनकर विमल बाबूका अंग-अंग मुस्कराने लगा।

अंग-अंग फड़कना—अत्यन्त चपल होना।

उ०—यह लड़का क्षणकर भी चैनसे नहीं बैठ सकता। देखते न हो, जबसे आया है इसका अंग-अंग फड़क रहा है।

अंग न लगना—खाने-पीनेका शरीरपर प्रभाव न पड़ना।

उ०—उसका लड़का अच्छेसे अच्छा भोजन करता है, दूध पीता है, फल खाता है, परन्तु कुछ भी अंग नहीं लगता।

अगर मगर करना—बहाना करना।

उ०—यदि तुमको काम करना स्वीकार न हो, तो साफ कहो; अगर-मगर करनेसे कुछ लाभ नहीं।

अंगारोंपर लोटना—अत्यन्त व्यग्र होना।

उ०—जबसे विमलाको समाचार मिला है कि उसका पति बहुत बीमार है, तबसे वह बेचारी अंगारोंपर लोट रही है।

शाम ही से लोटना है मुझको अंगारों पै आज।
इसलिये मैंने अलग तह करके बिस्तर रख दिया॥

अंगार उगलना—क्रोधके आवेशमें कठोर वचन बोलना।

उ०—इस समय अग्निहोत्रीजीके पास न जाओ क्योंकि वे अंगार उगल रहे हैं।

अंगार बरसना—कड़ी धूप पड़ना।

उ०—इस समय घरमें ही बैठे रहो, दोपहरका समय है; बाहर देखते नहीं हो अंगार बरस रहे हैं।

अगाड़ी-पिछाड़ी बांधना—सब प्रकारसे किसी बातका प्रबन्ध करना।

उ०—किसी भयङ्कर कार्यमें पड़नेसे पहले मनुष्यको उसकी अगाड़ी-पिछाड़ी बाँध लेनी चाहिये।

अंगुली रखना—दोष निकालना।

उ०—अपनी त्रुटियोंपर तो तुम कभी ध्यान नहीं देते, परन्तु दूसरोंके कार्यपर अंगुली रखनेको सदा प्रस्तुत रहते हो।

अंगुली उठाना—हानि पहुँचानेकी चेष्टा करना।

उ०—तुम निर्भय होकर कार्य करो, किसीकी मजाल नहीं कि तुम्हारी ओर अंगुली उठाए।

अंगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना—थोड़ा-सा मिल जानेपर अधिक लेनेकी चेष्टा करना।

उ०—जो देना था एक बार दे दिया; बार-बार कहांसे दिया जाय; तुम तो अंगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ते हो।

अंगुलियां उठना—बदनामी होना।

उ०—तुमसे पहले ही कहा था कि कुसंगतिका फल अच्छा

नहीं होता। अब देखते हो कि जिधर जाते हो उधर ही अंगुलियां उठती हैं।

अंगुलियाँ उठाना—अपयश फैलाना।

उ०—कोई भला हो या बुरा; हम किसीकी ओर अंगुलियाँ उठाना नहीं चाहते।

अंगुलियोंपर नचाना—तंग करना।

उ०—मोहन! तपोधनके साथ विरोध करना निरी मूर्खता है। वह साधारण व्यक्ति नहीं है; यदि वह चाहे तो तुमको अंगुलियोंपर नचा सकता है।

अंगुलियों पर नाचना—वशीभूत होना।

उ०—जगदीश आजकल उमरावकी अंगुलियोंपर नाचता है; वह तुम्हारी एक न सुनेगा।

अंगुलियाँ नचाना—लड़ते समय हाथ हिलाना।

उ०—सरला नामकी ही सरला है; जरा उसको देखो तो क्या अंगुलियां नचा रही है।

अंगुलियोंपर गिना जा सकना—अल्प संख्यामें होना।

उ०—भारतमें विदेशी अंगुलियोंपर गिने जा सकते हैं।

अंगूठा दिखाना—चिढ़ाना।

उ०—बहुत अंगूठा दिखाते हो; ठहर जाओ; अभी तुम्हारी खबर लेता हूँ।

अंगूठा दिखा देना—साफ जवाब देना

उ०—जबतक उमरावका स्वार्थ रहा, वह जगदीशका परम

मित्र बना रहा है। अब जगदीशका काम पड़ा तो उसको उसने अंगूठा दिखा दिया।

अंगूर बँधना—घाव अच्छा होना।

उ०—रामके हाथमें बड़ा घातक घाव लगा था, परन्तु ईश्वरकी कृपासे अब अंगूर बँध रहा है।

अंगूठा चूमना—चिरौरी करना।

उ०—तुमको लज्जा नहीं आती? कल जिसको अंगूठा दिखाते थे आज उसीका अंगूठा चूमते हो।

अंगूठीमें नग-सा जड़ना—सुन्दर बना देना।

उ०—तुमने इस लालटेनमें कमानी लगाकर अंगूठीमें नग सा जड़ दिया।

अग्निमें घृत डालना—क्रोध भड़काना; झगड़ा बढ़ाना।

उ०—धनुष-भंगके समय परशुरामके साथ बातचीत करते हुए राम अग्निमें पानी डालते थे और लक्ष्मण अग्निमें घृत डालते थे।

अच्छे दिन देखना—आनन्दमय जीवन बिताना।

उ०—यादव! संसारमें सदा बुरे दिन किसीके नहीं रहते। तुम भी अच्छे दिन देखोगे।

अञ्जर-पञ्जर ढीले करना—बहुत मारना।

उ०—बहुत अण्ड-बण्ड न बको; जानते हो मैं कौन हूँ? सब अञ्जर-पञ्जर ढीले कर दूँगा।

अजीर्ण होना—कष्टप्रद होना।

उ०—मोहन! तुम बड़े दुष्ट हो। तुम्हारी बुद्धिको क्या हो गया। तुमको दूसरोंकी वृद्धि क्यों अजीर्ण होती है।

अठखेलियां सूझना }
अठखेलियां करना } दिल्लगी करना।

उ०—(अ) रामशरण! कितने खेदकी बात है कि तीन मास परीक्षाके रह गये और तुम अठखेलियाँ कर रहे हो।

(ब) विमलने कहा—"तुम लोगोंको किसीके दुःखका कुछ भी ध्यान नहीं है। मेरे पेटमें बड़े जोरका दर्द हो रहा है और तुमको अठखेलियाँ सूझ रही हैं।"

न छेड़ अब नगहते-बादे-बहारी राह लग अपनी।
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं॥

अण्टीपर चढ़ना—काबूमें आना।

उ०—जी खोलकर उछल-कूद दिखलाओ। जहाँ किसी दिन अण्टीपर चढ़े कि मैंने तुम्हें ठीक बनाया।

अट्टे पंजे लड़ाना—दाव-घात सोचना।

उ०—शिवदासने पढ़ना-लिखना ताकमें रख दिया; दिन-रात अट्टे-पंजे लड़ाता रहता है।

अड़ंगा अड़ाना—रुकावट डालना।

उ०—किसीके कार्यमें अकारण अड़ंगा अड़ाना अच्छे पुरुषोंका काम नहीं होता।

अड़ंगा देना—पेंच चलना।

उ०—आज दंगलमें लखनऊके पहलवानने पंजाबी पहलवानको ऐसा अड़ंगा दिया कि वह क्षणभरमें चित्त आया।

अड़ंगेपर चढ़ना—काबूमें आना।

उ०—उस दुष्टको मैं अवश्य समझूंगा; किसी-न-किसी दिन वह मेरे अड़ंगेपर चढ़ेगा, यह निश्चय है।

अड़ंगेपर चढ़ाना—वशमें करना।

उ०—रामदेव बड़ा चलता-पुरजा है। न जाने तुमने किस प्रकार उसको अपने अड़ंगेपर चढ़ाया है।

अड़ जाना—मुकाबिला कर बैठना।

उ०—जब श्यामने सोहनको ललकारा, तो वह भी निर्भय होकर अड़ गया।

अड़ बैठना—हठ करना।

उ०—तुम ज़रा-ज़रा सी बातोंपर हमसे व्यर्थ अड़ बैठते हो, हम ऐसे विद्यार्थीको पढ़ाना नहीं चाहते।

अड्डा जमाना—अधिकार करना।

उ०—रामगोपालके घर आजकल चाण्डाल-चौकड़ीने अड्डा जमा रखा है; वहां तुम्हारी दाल नहीं गल सकती, शिवराम!

अड्डा जमना—इकट्ठा होना।

उ०—तुम्हारी बैठकमें दिन-रात धूर्त्तोंका अड्डा जमा रहता है; वहाँ किसी भले आदमीका क्या काम?

अण्डे सेना—निकम्मा बैठना।

उ०—यादव! तुम तो अपने काममें लगे हुए हो; हमलोग क्या यहाँ बैठे अण्डे सेवेंगे?

अँतड़ियोंमें बल पड़ना—जोरसे हँसनेके कारण पेट दुखने लगना।

उ०—रामनाथ ऐसी बातें सुनाता है कि हँसते-हँसते अँतड़ियोंमें बल पड़ जाते हैं।

अता-पता लगाना—कुछ खोज निकालना।

उ०—अध्यापकने कहा—"लड़को! बड़े खेदकी बात है कि तुमने नारायणकी पुस्तकका अभीतक अता-पता लगानेका विचार-तक नहीं किया।"

अर्द्धचन्द्र देकर निकालना—एक ओर हाथका अंगूठा और दूसरी अंगुलियां फैलाकर गला दबाना।

उ०—नारायण! इस दुष्टको यहाँसे अर्द्धचन्द्र देकर निकाल दो।

अन्त पाना—रहस्य जानना।

उ०—तुम घबराओ नहीं, मैंने इस गोलमालका अन्त पा लिया है।

अन्धा बनाना—धोखा देना।

उ०—जगदीशने वह खोटी अठन्नी चला दी है; न जाने किसको अन्धा बनाया है?

अन्धा बन जाना—असावधान हो जाना, धोखा खा जाना।

उ०—कैसा रद्दी धोती-जोड़ा लाये हो; तुम तो दूसरोंको कहा करते हो; आज स्वयं अन्धे बन गये।

अन्धाधुन्ध उड़ाना—बिना सोचे-विचारे व्यय करना।

उ०—मोहनका पिता कुछ पूँजी छोड़ मरा था; उसने थोड़े दिनोंमें ही सबकी सब अन्धाधुन्ध उड़ा दी।

अन्धेर खाता करना—नियमानुकूल कार्य न करना।

उ०—तुम्हारे कागजोंसे न आयका पता चलता है न व्ययका; तुमने तो अन्धेर खाता कर रखा है।

अन्धेर-गरदी मचना—अन्याय होना।

उ०—संसारमें चारों ओर अन्धेर-गरदी मची हुई है; ऐसी स्थितिमें न्यायकी दुहाई देना अरण्य-रोदनके अतिरिक्त कुछ नहीं।

अन्धेर-गरदी मचाना—अन्याय करना।

उ०—तुम एक ओर तो न्यायके अवतार बनते हो, दूसरी ओर दिन-रात अन्धेर-गरदी मचाते हो; इस दुरंगी चालका कुछ ठिकाना है?

अन्धेर मचना—न्यायपूर्वक कार्य न होना।

उ०—जहाँ दिन रात अन्धेर मचा रहता है, वहां न्यायकी आशा नहीं की जा सकती।

अन्धेर मचाना—अन्याय करना।

उ०—तुमने नारायणकी पुस्तकें चुरा लीं और उसने कुछ कहा तो मारनेको दौड़े। जगदीश! तुमने क्यों अन्धेर मचा रखा है?

अन्धेके हाथ बटेर लगना—किसी अयोग्य व्यक्तिको अनायास लाभ होना।

उ०—नानकके विवाहका रहस्य यह है कि अन्धेके हाथ बटेर लग गयी है।

अन्न-जल उठ जाना
अन्न-जल पूरा हो जाना } एक स्थानसे दूसरे स्थानको परिवर्त्तन हो जाना अथवा मर जाना।

उ०—(अ) बाबू रामगोपालका लखनऊसे अन्न-जल उठ गया।

(ब) मनुष्यके जीवनका विश्वास नहीं; न जाने कब अन्न-जल पूरा हो जाय।

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित होना; निरुत्तर होना।

उ०—नारायणको सबने रोका था कि तुम रामके साथ शास्त्रार्थ मत करो। उसने नहीं माना; शास्त्रार्थ किया और अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

अपना उल्लू सीधा करना—स्वार्थ-सिद्ध करना।

उ०—तुम अपना उल्लू सीधा करो; तुम्हें किसीके हानि-लाभसे क्या प्रयोजन?

अपना घर समझना—किसी प्रकारका संकोच न करना।

उ०—पण्डितजी, आरामसे बैठिये, इसको भी अपना घर समझिए।

अपना रास्ता लेना—चला जाना।

उ०—तुम यहाँ व्यर्थ क्यों झगड़ा कर रहे हो? अपना रास्ता लो।

अपना उल्लू कहीं न जाना—स्वार्थ सिद्ध होना।

उ०—किसीको लाभ हो अथवा हानि, अपना उल्लू कहीं न जायगा।

अपना ही राग अलापना—अपने ही मतलबकी बात कहना।

उ०—तुम दूसरोंकी बात सुनना हो नहीं जानते; सदा अपना ही राग अलापते रहते हो।

अपनी बातका एक होना—वचन पूरा करना।

उ०—मैं उसका विश्वास करता हूं क्योंकि वह अपनी बातका एक है।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—सबसे भिन्न रहना।

उ०—वह किसी कार्यमें भी सबके साथ नहीं रहता, सदा अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

अपनी कब्र आप खोदना—अपने विनाशका साधन उपस्थित करना।

उ०—रात दिन मदिरा-पानमें मस्त रहने दो; जगदीश, तुम अपनी कब्र आप खोद रहे हो।

अपनी नींद सोना अपनी नींद जागना—स्वाधीन रहना।

उ०—मैं नौकरी करना नहीं चाहता; मैं व्यवसायको पसन्द करता हूं, क्योंकि इसमें मनुष्य अपनी नींद सोता और अपनी नींद जागता है।

अपनी-सी कर गुजरना—यथाशक्ति प्रयत्न करना।

उ०—फल परमात्माके हाथमें है, मनुष्यका कर्त्तव्य केवल इतना ही है कि, कोई भी कार्य हो, अपनी सी कर गुजरे।

अपनी ही पड़ी रहना—अपने ही लाभका ध्यान रखना।

उ०—दूसरोंके सुख दुःखका भी ध्यान रखना चाहिये; तुम विचित्र व्यक्ति हो, तुम्हें सदा अपनी ही पड़ी रहती है।

अपनी निबेड़ना—अपना कार्य संभालना।

उ०—तुमको औरोंकी बुराई-भलाईसे क्या प्रयोजन है? तुम अपनी निबेड़ो।

रिन्दे-ख़राब-हालको ज़ाहिद न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू॥

अपनी ही गाये जाना—अपने ही मतलबकी कहते रहना।

उ०—किसी दूसरेकी भी सुन लिया करो, तुम सदा अपनी ही गाये जाते हो।

अपने बछड़ेके दांत जानना—किसी भेदसे परिचित होना।

उ०—मुझे खेद है कि वह दुष्ट तुमको हानि पहुँचाये बिना न रहा, वह पहिले मेरे साथ रहना चाहता था, परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मैं पहलेसे ही अपने बछड़ेके दांत जानता था।

अपने बावलेको समझाना—अपने मनको सन्त्वना देना।

उ०—जब कहीं कुछ बस नहीं चलता, तो सभी अपन बावलेको समझा लेते हैं।

अपने पैरोंपर खड़ा होना—स्वावलम्बी होना।

उ०—दूसरोंका आश्रित बनकर जीवन अतिवाहित करना बुरा है। मनुष्यको अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहिये।

अपने मुंह मियांमिट्ठू बनाना—आत्मश्लाघा करना; अपनी प्रशंसा करना।

उ०—जो सत्य बात है कहनी ही पड़ जाती है, इससे मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं कि मैं अपने मुँह मियाँमिट्ठू बनूँ।

अपने पांवोंपर आप कुल्हाड़ी मारना—स्वयं अपनी हानि करना।

उ०—यदि जगदीशको मैं अपना भेद न बतलाता, तो वह दुष्ट मेरे साथ दांव-पेंच चलानेका साहस न करता। बात तो यह है कि मैंने अपने पाँवोंपर आप कुल्हाड़ी मारी है।

अपने हाथों पापड़ बेलना—जान-बूझकर कष्ट उठाना।

उ०—किसीको दोष देना व्यर्थ है। तुम तो अपने हाथों पापड़ बेलते हो।

अपने दिनोंको रोना—दुःखमय जीवन बिताना।

उ०—तुम दूसरोंको दुःखमें देखकर हँसा करते थे; अब तुम बरसों अपने दिनोंको रोओगे।

अपने बलपर खड़ा होना—किसीसे सहायता न लेना।

उ०—परमात्मा उनका सहायक होता है, जो अपने बलपर खड़े होते हैं।

अपने मार्गमें कांटे बोना }
अपने हकमें कांटे बोना } अपने लिये हानिप्रद कार्य करना।

उ०—(अ) गुरु द्रोही बनकर तुम अपने मार्गमें कांटे बो रहे हो।

(ब) करामात अलीको कुछ भी होश होता, तो अपने हकमें काँटे क्यों बोता?

अपने गरेबानमें मुँह डालकर देखना—अपने दोषोंपर दृष्टिपात करना।

उ०—दूसरोंको नाम धरते फिरते हो; जरा अपने गरेबानमें मुँह डालकर देखो।

अभिलाषाओंका भवन बनाना—केवल कल्पना करना।

उ०—तुम कभी कुछ करके भी दिखाओगे या बैठे-बैठे अभिलाषाओंका भवन ही बनाते रहोगे?

अमर हो जाना—चिरस्थायी यश स्थापित होना।

उ०—जो दूसरोंके लिये मर मिटता है, वह संसारमें अमर हो जाता है।

अमल-पानी करना—नाश करना।

उ०—महादेव प्रसादके समान विचित्र व्यक्ति हमने नहीं देखा है; दिनमें वह कितनी हो बार अमल-पानो करता है फिर भो उसका पेट नहीं भरता।

अमचूर बना देना—हड्डी-पसली तोड़ डालना।

उ०—यहांसे तुरन्त चले जाओ। यदि अधिक धांधली करोगे, तो मारते मारते अमचूर बना दूँगा।

अमरौती खाकर आना—कभी न मरना।

उ०—जगदीशको उमरावके मरनेका बहुत शोक है, परन्तु क्या किया जाय। आगे-पीछे सबको ही चलना है। अमरौती खाकर कौन आया है?

अलल्ले-तलल्ले करना—खूब रुपया बनाना।

उ०—योरोपीय महा-समरके दिनोंमें रंगके व्यापारियोंने खूब अलल्ले-तलल्ले किये।

अवाई उड़ाना—झूठे समाचार फैलाना।

उ०—संसारमें धूर्त्तोंको और कुछ काम नहीं मिलता, तो हवाई ही उड़ाते रहते हैं।

अस्सी हजार फिरना—अनेक तुच्छ व्यक्ति होना; महत्त्व हीन होना।

उ०—उसने कहा—"मैं तुम्हें क्या समझता ? तुम्हारे समान अस्सी हजार फिरते हैं।"

(आ)

आकाशमें बातें करना
आकाशको स्पर्श करना } बहुत ऊंचा होना।

उ०—चौधरी घनश्यामसिंह किसी बातमें भी सेठ रामकिशोरसे कम नहीं है। यदि सेठजीका भवन आकाशसे बातें करता है तो चौधरी साहबकी अट्टालिका भी आकाशसे स्पर्श करती है।

आकाशके तारे तोड़ना—कठिन-से-कठिन कार्य करना।

उ०—ललित मोहनको आप साधारण व्यक्ति न समझिये; वह आकाशके तारे तोड़ सकता है।

आकाशमें छेद करना—बड़ी चालाकी करना।

उ०—विश्वनाथ देखनेमें सीधा मालूम होता है; वह इस प्रकार आकाशमें छेद करता है कि देखनेवाले दंग रह जाते हैं।

आकाश-पाताल एक कर देना—बहुत खोज करना।

उ०—प्रातःकालसे आकाश-पाताल एक कर दिया; पर कहीं उसका पता न मिला।

आकाश-पाताल एक कर देना—कठिन परिश्रम करना।

उ०—मुरलीके सफल होनेमें सन्देह नहीं क्योंकि इस वर्ष उसने ऐसा अध्ययन किया है कि आकाश-पाताल एक कर दिया।

आकाशमें थेगरी लगाना—बड़ी चालाकी करना।

उ०—तुम अपने भाईको सीधा न समझो; वह इस ढंगसे आकाशमें थेगरी लगाता है कि बड़े बड़े चालाक भी चकित हो जाते हैं।

आकाश-गङ्गामें नहाना—असंभव बातको संभव करनेकी चेष्टा करना।

उ०—रामनाथकी कुछ न पूछो। वह तो आकाश-गङ्गामें नहाना चाहता है। सातवीं परीक्षामें उत्तीर्ण नहीं हो सका, मैट्रिककी तैयारी कर रहा है।

आकाशमें छेद हो जाना
आकाश फट या फूट पड़ना } —अति वृष्टि होना।

उ०—पण्डितजी, इस वर्ष तो आकाशमें छेद हो गया; गाँवमें अनेक मकान बैठ गये। पण्डितजीने कहा—"हाँ, भाई, क्या पता था कि इस बार इस प्रकार आकाश फूट पड़ेगा। मेरी बैठककी छत बैठ गयी और रसोईकी कोठरी भी गिरनेही वाली है।"

आँख उठना—दृष्टिपात होना।

उ०—वह दुष्ट क्षणभर भी तो न ठहर सका; तुम्हारी आँख उठते ही पत्ता तोड़ भागा।

रह गये लाखों कलेजा थाम कर।
आँख जिस जानिब तुम्हारी उठ गई॥

आंख उठाना
आंख उठाकर देखना } —बुरी दृष्टिसे देखना; हानि पहुंचानेकी चेष्टा करना।

उ०—मेरे होते किसीकी शक्ति नहीं कि तुम्हारी ओर आँख उठा सके।

आंख उठाकर भी न देखना—ध्यान तक न देना।

उ०—तुम उससे इतना प्रेम करते हो और वह तुम्हारी ओर कभी आँख उठाकर भी नहीं देखता।

आंख ऊँची होना—सम्मानित होना।

उ०—जो व्यक्ति ऋण लेकर समयपर नहीं देता, उसकी आँख ऊँची कैसे हो सकती है?

आंख आना—नेत्र दुखना।

उ०—रामदीन स्कूल नहीं गया, क्योंकि तीन दिनसे उसकी आँख आयी हुई है।

आंख बचा जाना—सामने न आना।

उ०—मैंने कितनी बार देखा है कि वह तुमसे आँख बचा जाता है।

आँख ठहरना—पसन्द आना।

उ०—अनेक अच्छी-से-अच्छी धोतियाँ रखी हैं; किसीपर तुम्हारी आँख ठहरती भी है?

आंख तरसना—देखनेको उत्सुक होना।

उ०—तुम छुट्टियोंमें भी घर नहीं आते ; तुम्हारी माताकी आँख तरसती रहती है।

आंख मिलना—किसीके सामने देखना।

उ०—आश्रममें आँख मिलते ही दुष्यन्त शकुन्तला पर मोहित हो गया।

आंख भर लाना—नेत्रोंमें आँसू निकल आना।

उ०—रामलाल आज तीन सालके उपरान्त घर लौटा है; उसको देखते ही उसकी माताकी आँख भर लाई।

आंख ऊँची न होना—लज्जित होना।

उ०—जो व्यक्ति नीच कर्म करता है, दूसरोंके सामने उसकी आँख ऊँची नहीं होती।

आंख चीर-चीरकर देखना
आंख फाड़कर देखना } उत्सुकतासे देखना, घूरना।

उ०—रामचन्द्रने कहा—"मोहन, तुम बड़े असभ्य हो; उस स्त्रीको आँख चीर-चीरकर क्यों देख रहे हो?" मोहनने कहा—"तुम कहांके सभ्य हो ; पहले तो तुम ही उसको आँख फाड़कर देखते थे।"

आंखमें शील न होना—निर्लज्ज होना।

उ०—तुमपर उपदेशका प्रभाव नहीं पड़ सकता ; क्योंकि तुम्हारी आँखमें शील ही नहीं है।

आंखका टोना लगना—प्रेम-दृष्टिसे आकृष्ट होना।

उ०- वह पढ़ना-लिखना सब भूल गया; उसको आँखका टोना लग गया है।

आंख रखना—प्रेम करना।

उ०—तुम अपने मित्रको बहुत सीधा समझते हो; वह छिपा रुस्तम है, न जाने कहां-कहां आँख रखता है।

आंखका तेल निकालना—आँखसे पढ़ने-लिखने अथवा किसी बारीक काममें अधिक परिश्रम करना।

उ०—वह रातके तीन बजेतक पढ़ता है। इस प्रकार आँखका तेल निकालेगा तो शीघ्र ही आँखोंसे हाथ धो बैठेगा।

क्यों न खोदेंगे आँखका तिल वे।
आँखका तेल जो निकालेंगे॥
'हरिऔध'

आंखका तिल खो देना—अन्धा हो जाना।

उ०—जो लोग आँखका तेल निकालते हैं, वे अवश्य ही आँखका तिल खो देते हैं।

आंखकी पुतली फिर जाना—मरणासन्न होना।

उ०—अब उसके बचनेकी आशा नहीं की जा सकती। देखते न हो, उसकी आँखकी पुतली फिर गयी।

आंख न ठहरना—चका-चौंध लगना।

उ०—द्वारिका पुरीमें कृष्ण-भवनको देखकर सुदामाकी आँख न ठहर सकी।

आँख मैली करना—बे-मुरौवत होना।

उ०—जिनके साथ हमने शुद्ध व्यवहार किया, उन्होंने काम पड़नेपर आँख मैली कर ली।

आँख मारना—संकेत करना।

उ०—मोहनका आँख मारना था कि वह रुपये देते-देते रुक गया।

आँख मटकाना—सैन चलाना।

उ०—चार सभ्य पुरुषोंमें बैठकर आँख मटकाना सभ्यताके विरुद्ध है।

आँख मूंदना—विचार पूर्वक कार्य न करना।

उ०—अन्तमें तुमको पछताना इसीलिये पड़ता है कि तुम कार्यारम्भ करते समय आँख मूँद लेते हो।

आँख मुंदना— } मर जाना।
आँख मिचना— }

उ०—जीते-जीका सब बखेड़ा है; जब आँख मुँद जाती है, तब सब कुछ यहीं धरा रह जाता है।

जब तलक आँखें खुली हैं, दुःख पे दुःख देखेंगे आह।
मुँद गयी जब आँख तब अय 'सोज़' सब आनन्द है॥

आंख लगना—आसक्त होना।

उ०—उसकी आँखें बतलाती हैं कि कहीं उसकी आँख लग गयी है।

आंख न लगना—नींद न आना।

उ०—पड़ोसमें रातभर ऐसा कोलाहल होता रहा कि मेरी घण्टे भर भी आँख नहीं लगी।

आग लग जाय ऐसी आँख लगनेको
न लगी आँख जबसे आँख लगी॥

आंख जाना—अन्धा होना।

उ०—आँखके समान विचित्र वस्तु दूसरी नहीं। आँख आना तो बुरा है ही, आँख जाना और भी दुःखदायी है।

आंख बदलना—बेमुरौवत होना।

उ०—तुम्हारा क्या विश्वास? काम निकला कि आँख बदलते देर नहीं लगती।

आंख चुराना—लज्जावश सामने न आना।

उ०—दिल चुराना था, तुमने चुरा लिया; अब आँख क्यों चुराते हो?

आंख मिलाना—सामने आना।

उ०—जब किसीसे दिल ही नहीं मिलता तो आँख मिलानेसे क्या लाभ?

दिल चुराया है तो अब आँख मिलाएं क्योंकर।
सामने होती है मुशकिलसे गुनहगार की आंख॥

'दाग़'

दिल ले ही चुके नाज़से, शोख़ीसे, हँसीसे।
अब उनकी बला आँख मिलाती है किसीसे॥

'दाग़'

आंखमें कांटा होना—असह्य होना।

उ०—तुम बहुत नीच हो; किसीका सुख तुम्हारी आँखमें काँटा क्यों हो जाता है?

आंखका पानी भर जाना—निर्लज्ज हो जाना।

उ०—(अ) उसपर किसीके कहने-सुननेका प्रभाव नहीं पड़ सकता, क्योंकि उसकी आँखका पानी मर चुका है।

(ब) उसका जीना व्यर्थ है, जिसकी आँखका पानी मर जाय।

आंखमें चुभना—बुरा लगना; अखरना।

उ०—मेरा यहां रहना तुम्हारी आँखमें बहुत दिनोंसे चुभ रहा था।

आंखसे आंख मिलाना—सामने होना।

उ०—भलाई करनेवालेके साथ बुराई करके कोई आँखसे आँख कैसे मिला सकता है?

आंख कान खोलकर चलना—सावधान होकर चलना।

उ०—जो लेखक सदा आँख-कान खोलकर चलता है, उसको लिखनेके लिये बहुत कुछ सामग्री अनायास ही मिल जाती है।

आंखसे ओझल न करना—सदा सामने रखना; पास रखना।

उ०—श्यामाका पुत्र कैसे पढ़-लिख सकता है? वह उसे कभी आँखसे ओझल करना नहीं चाहती।

आंख भर लाना—आँसू आ जाना।

उ०—हस्तिनापुरके पुराने खण्डहरोंको देखकर प्राचीन भारतकी याद आ जाती है और आँख भर आती है।

वो कहाँ दिन कि रहा करता था दौरे-सागर।
आँख भर आती है अब देखके पैमानेको॥

'दाग़'

आंख तले न लाना—तुच्छ समझना।

उ०—तुम अपने आपको इतना ऊपर खींचते हो कि किसीको आँख तले नहीं लाते।

आंख पड़ना—देखना।

उ०—सब-के-सब वनकी शोभा देखते जा रहे थे, इस मृग-शावकपर मेरी आँख पड़ी और मैंने इसको उठा लिया।

आंख पड़ना—आसक्त होना।

उ०—प्रियम्वदाने कहा—"जबसे शकुन्तलाकी आँख उस राजर्षिपर पड़ी है, उसका मन व्यग्र-सा रहता है।"

आंख लड़ना—आसक्त होना।

उ०—जिसका तुमसे दिल मिलना कठिन है, उससे तुम्हारी आँख लड़ी है।

गज़बकी 'फूट' उलफ़तमें पड़ी है।
मिला है दिल जो आँख उससे लड़ी॥

आंख फोड़ना—धोखा देना।

उ०—श्यामने उस खोटे रुपयेको चला दिया है; न जाने बाज़ारमें आज किसकी आँख फोड़ी है।

आंख सेकना—सुन्दर व्यक्तिको घूरना।

उ०—शिवनाथ और उमराव परले सिरेके धूर्त्त हैं; दिनरात गलियोंमें आँख सेकते फिरते हैं।

गैर आँखें सेकें उस बुतसे दिले-मुज़तर जले।
वाय बेदरदी कोई तापे किसीका घर जले॥

आंख ठण्डी होना—शान्ति मिलना।

उ०—रामनाथ मित्र-वियोगसे बहुत सन्तप्त हो रहा था; आज उसके मिलनेसे उसकी आँख ठण्डी हो गयी।

आंख फूटना—धोखा खाना।

उ०—धोतीकी फटी किनारी साफ दिखाई देती थी, परन्तु तुम्हारी ही आँख फूट गयी, बजाजको क्या दोष दिया जाय।

आंख बन्द करना—असावधान होना।

उ०—अन्तमें पछतानेसे क्या लाभ है? आरम्भमें कार्य करते समय आँख बन्द क्यों कर लेते हो?

आंख न झिपना—लज्जित न होना।

उ०—वह ऐसा चिकना घड़ा है कि आप चाहे जितना बुरा-भला कहें, उसको आँख नहीं छिप सकती।

आंखका पानी ढलना—निर्लज्ज होना।

उ०—तुमको भली-बुरी संगतिका विचार नहीं हो सकता क्योंकि तुम्हारी आँखका पानी ढल चुका है।

आंखसे गिरना—प्रतिष्ठा-भंग होना।

उ०—जनताकी आँखसे गिरकर किसीका उठना कठिन है।

आंख न डालना—पसन्द न करना।

उ०—तुम न जाने उसपर क्यों जान देते हो; वह कभी तुमपर आँख भी नहीं डालता।

हूरपर आंख न डाले कभी शैदा तेरा।
सबसे बेगाना है अय दोस्त शनासा तेरा॥

आंखसे दिखाना—प्रमाणित करना।

उ०—मैं झूठ नहीं कहता; तुम मेरे साथ चलो मैं तुमको आँखसे दिखा सकता हूँ; वह तो रात-दिन उसी चौकड़ामें डटा रहता है।

आंख भर देखना—अच्छी तरह देखना।

उ०—मैंने उसको आँख भर देखा भी न था कि वह आँखसे ओझल हो गया।

आंखें फूटना—अन्धा होना।

उ०—पहले उसका भाग्य फूटा था कि उसका इकलौता पुत्र मर गया था; अब उसकी आँखें फूट गयीं और वह कहींका भी न रहा।

तुझे देखें तो फिर औरोंको किन आँखोंसे हम देखें।
ये आँखें फूट जाएँ गरचे इन आँखोंसे हम देखें॥

आंखें बैठना—अन्धा होना।

उ०—वह जब जवान था, उसने बड़े-बड़े मैदान मारे। वृद्ध हो गया, आँखें बैठ गयीं, अब बेचारा किसीके मुक़ाबिलेमें क्या खड़ा हो सकता है?

आंखें निकालना—बिगड़ना, डाँटना।

उ०—मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझपर आँखें निकालते हो?

'दाग़' आंखे निकालते हैं वो।
उनको दे दूँ निकाल कर आंखें॥
'दाग़'

मुझ पे आँखें जो निकालीं तो हुआ क्या हासिल।
कोई अरमान मेरे दिलका निकाला होता॥

आंखें बिछाना—प्रेमपूर्वक स्वागत करना।

उ०—आज हम सब उनके लिये अपनी आंखें बिछाये हुए हैं।

आंखें झुक आना—नींद आना।

उ०—कल रात तुम यहांसे उठकर गये और मेरी आंखें झुक आयीं।

आंखें चढ़ना—नशा होना।

उ०—जगदीशको जीनेसे सँभालकर उतारना, क्योंकि आज उसकी आंखें चढ़ी हैं।

आंखें सफेद होना—अन्धा होना।

उ०—जिस व्यक्तिकी आंखें सफेद हो जायँ, उसे लाल-पीला क्या, कुछ भी नहीं दीख सकता।

आंखें जमीनसे लग जाना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—बहुत आसमान सिरपर न उठाओ, मैं तुम्हारी रग-रग पहचानता हूँ; एक बात भी कह दूँगा तो आंखें जमीनसे लग जायँगी।

आंखें खुलना—सावधान होना।

उ०—वह दुष्ट थोड़ा-थोड़ा करके तुम्हारा सब माल लिये जाता है, परन्तु न जाने, कब तुम्हारी आंखें खुलेंगी?

आंखें खुल जाना—
आंखें फटना— } आश्चर्य होना।

उ०—कभी घरसे बाहर निकले नहीं, तुमको संसारका क्या पता है? बम्बईमें जाकर ताज होटलको देखो तो तुम्हारी आंखें खुल जायँगी।

आंखें देखना—संगति करना; अनुभव करना।

उ०—रामदास साधारण व्यक्ति नहीं है; उसने एक दुनिया-की आंखें देखी हैं।

आंखें डबडबाना—आंसू निकल आना।

उ०—मोहन! क्या कारण है जो आज तुम्हारी आंखें डब-डबा रही हैं?

आंखें पथरा जाना—निर्निमेष होना।

उ०—तुम्हारी बाट जोहते-जोहते उसकी आंखें पथरा गयीं।

पथरा गयीं आंखें न मगर तू नजर आया।
अल्लाह करे तू भी तके राह किसी की॥

आंखें उठ जाना—देखना।

उ०—स्वामी रामतीर्थ ऐसे प्रभावशाली साधु थे कि जिस ओर उनकी आँखें उठ जाती थीं, लोग उनके भक्त बन जाते थे।

तर्जे-निगहने छीन लिया ज़ाहिदोंका दिल।
आंखें जो उनकी उठ गयीं दस्ते दुआके साथ॥

आंखें फिरना—प्रतिकूल होना।

उ०—हमसे हमारा भाग्य ही फिरा हुआ है; तुम्हारी आँखें फिर गयीं, तो आश्चर्य क्या है?

आंखें फेरना—बे-मुरौवत होना।

उ०—जब तुम्हारा मतलब होता है, तब मित्र बन जाते हो; जब तुम्हारा उल्लू सीधा हो जाता है, आँखें फेर लेते हो।

"कैसी आंखें फेर लीं मतलब निकल जानेके बाद।"

आंखें तन जाना—क्रोधित होना।

उ०—तुम भी विचित्र जीव हो, दूसरोंको मनमानी सुनाते रहते हो; परन्तु जब तुम्हें कोई चुभती हुई बात कह देता है, तो तुम्हारी आँखें तन जाती हैं।

आंखें चार करना
आंखें चार होना } नजर मिलाना।

उ०—पहले उसका अपमान किया, अब उससे आंखें चार करते हो।

दिलके दो टुकड़े इक निगाहमें किये।
और फिर आँखें चार करते हो॥
ये सब कहनेकी बातें हैं, उन्हें हम छोड़ बैठे हैं।
जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है॥

आंखें चढ़ाना—क्रोध करना।

उ०—ज़रा अखाड़ेमें उतरो तो जानूँ; दूर बैठे क्या आंखें चढ़ाते हो?

आंखें दिखाना—धमकाना।

उ०—किसी दिन शिवदासको देख लिया तो आंखें खुल जायंगी। जाओ अधिक आँखें न दिखाओ।

आंखें दिखलाते हो जोबन भी दिखलाओ साहब।
वह अलग बाँधके रक्खा है जो माल अच्छा है॥
'अमीर'

आंखें लाल-पीली करना—क्रोधित होना।

उ०—उसने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा; आंखें लाल-पीली क्यों करते हो?

आंखें निकली पड़ना—सिरमें अधिक पीड़ा होना।

उ०—तुम्हें अपने पढ़नेकी पड़ी हुई है, उसकी आंखें निकली पड़ती हैं।

आंखोंसे आना—नम्रता एवं प्रेमपूर्वक आना।

उ०—आप कभी बुलाते भी हैं, मैं तो आँखोंसे आनेको प्रस्तुत हूँ।

बुलाता तू अगर हमको क़सम है तेरे क़दमोंकी।
कोई आता है पाँवोंसे हम आते अपनी आंखोंसे॥

आंखोंसे काजल चुराना—बड़ी चालाकी करना।

उ०—तुम्हारे साथ कौन आँखें मिलाए? तुम तो आँखोंसे काजल चुराते हो।

आंखोंमें जान आना—मरणासन्न होना।

उ०—अब चिकित्सा करना व्यर्थ है, उसकी आँखोंमें जान आ गयी है।

आंखोंमें हलका होना—सम्मान घट जाना।

उ०—अपने आप भारी बननेसे क्या हो सकता है जब कि तुम सबकी आँखोंमें हलके हो गये।

आंखोंमें सरसों फूलना—नशेमें होना।

उ०—उससे इस समय बात करना व्यर्थ है, क्योंकि उसकी आँखोंमें सरसों फूली हुई है।

आंखोंमें खुबना—पसन्द आना।

उ०—तुमको अनेक प्रकारके कम्बल दिखाए, परन्तु तुम्हारी आँखोंमें कोई खुबा नहीं।

आंखोंमें खटकना—बुरा लगना।

उ०—माधव बड़ा नीच व्यक्ति है, क्योंकि दूसरोंकी वृद्धि उसकी आंखोंमें खटकती है।

आंखोंमें तेलकी सलाई फिरना—अन्धा होना।

उ०—जबसे इस वृद्ध पुरुषकी आँखोंमें तेलकी सलाई फि गयी है इसका जीवन दूभर हो गया है।

आंखोंमे न ठहरना—पसन्द न आना।

उ०—तुम जहाँके सर्वगुण सम्पन्न हो जो कोई व्यक्ति तुम्हा आंखोंमें ही नहीं ठहरता।

आंखोंमें जगह मिलना—सम्मान पाना।

उ०—जो व्यक्ति नम्रतासे रहता है, उसको लोगोंकी आँखों जगह मिलती है।

आंखोंमें मोती कूट-कूट भरना—आँखें अधिक चमकीली औ रसीली होना

उ०—जिस किसीने भी उससे आँखें चार कीं, वह उसव ओर आकृष्ट हो गया; कारण, उसकी आँखोंमें मोती कूट-कूट क भरे हैं।

आंखोंपर बैठाना
आंखोंमें जगह देना } सम्मान करना।

उ०—आज उमराव भी तुमको आँखोंपर बैठाता है, शिवना भी आंखोंमें जगह देता है, परन्तु कुछ दिनोंके उपरान्त ये ही लो तुमको नजरोंसे गिरायेंगे।

आंखों-आंखोंमें उड़ा देना—देखते-देखते चुरा लेना।

उ०—जगदीश चोरोंका भी गुरुघण्टाल है; आँखों-आँखों चीज उड़ा देता है।

आंखोंसे रस निचुड़ना—आँखोंमें मस्ती छाना।

उ०—आज तो कुछ रंग ही और है; तुम्हारी आँखोंसे तो रस निचुड़ रहा है।

आंखोंकी पट्टी खुलना—सजग होना।

उ०—धन और समय नष्ट करनेके उपरान्त अब उसकी आँखोंकी पट्टी खुली है।

आंखोंमें बातें होना—दृष्टिसे मनका भेद प्रकट होना।

उ०—पुरश्री और बसन्त एक-दूसरेपर उसी समय मोहित हो गये थे, जब उनकी आंखोंमे बातें हुई थीं।

आंखोंमें रात कटना—नींद न आना।

उ०—विमलाका पति किसी कारणसे कल घर न लौट सका; बेचारीकी आँखोंमें रात कटी।

'सौदा' तेरी फरियादसे आँखोंमें कटी रात।
अब आई सहर होनेको टुक तू कहीं मर भी॥

'सौदा'

आंखोंका बीमार होना—प्रेम-रोगसे पीड़ित होना।

उ०—दमयन्तीके रूप और लावण्यको देखकर नल आंखोंका बीमार हो गया था।

कि वह बीमार आँखोंका हुआ है।
मरज़ उसका निहायत ला-दवा है॥

आंखोंमें समा जाना
आंखोंमें बसना— } अधिक प्रिय होना।

उ०—जबसे दुष्यन्तकी आंखोंमें शकुन्तलाका सौन्दर्य समाया है, वह सब राग-रंग भूल गया है।

आंखोंपर परदा पड़ना—असावधान होना।

उ०—सब-की-सब चीजें रद्दी उठा लाये, क्या खरीदते समय तुम्हारी आंखोंपर परदा पड़ा हुआ था ?

आंखोंसे लगाना—प्यार करना।

उ०—दमयन्तीको नलका पत्र मिला; वह बहुत प्रसन्न हुई और पत्रको बार-बार आंखोंसे लगाया।

आंखोंमें डोरे डालना—क्रोध करना।

उ०—जो तुम्हारे प्रेम-पाशसे बँधा हुआ है, उसको देखकर तुम आंखोंमें डोरे डालते हो।

हम दिखालाएँ तुझे नरगिसे-बीमारकी आँख।
डोरे डालेगी मगर बुलबुले-गुजारकी आँख॥

आंखोंमें डोरे लगाना—प्रेम-पाशमें फँसाना।

उ०—पुरुओंने इस प्रकारसे आँखोंमें डोरे लगाये कि वसन्त परवश हो गया।

आंखोंको रो बैठना—अन्धा हो जाना।

उ०—इस प्रकार पुस्तकोंका कीड़ा बनना ठीक नहीं है; स्वास्थ्यसे तो तुम हाथ धो हो चुके हो; किसी दिन आँखोंको भी रो बैठोगे।

आंखोंमें बराबर तोलना—समदृष्टि होना।

उ०—मुझे पूर्ण आशा है कि वह इस विषयपर पक्षपात न करेगा; वह सदा सबको आँखोंमें बराबर तोलता है।

आँखोंमें पालना—अत्यन्त प्रिय रखना।

उ०—माता माता ही होती है; डायन भी अपने पुत्रोंको आँखोंमें पालती है।

आंखोंमें फिरना
आँखोंमें घूमना } बराबर स्मरण रहना।

उ०—लैलाकी आकृति सदा मजनूँकी आँखोंमें फिरती रहती थी।

आँखोंपर पट्टी बांधना—असावधान होना।

उ०—तुमको भला-बुरा क्या सूझ सकता है; तुम तो आँखोंपर पट्टी बाँधे फिरते हो।

आंखोंसे ताड़ लेना—दृष्टिसे समझ लेना।

उ०—मैंने उसको अपने पास नहीं ठहरने दिया; मैंने उसकी आँखोंसे ताड़ लिया था कि वह बड़ा चालाक है।

आंखोंके तले आना—वशीभूत होना।

उ०—कोई लोभी व्यक्ति ही तुम्हारी आंखोंके तले आ सकता है।

आंखोंके सामने नाचना—स्मरण आना।

उ०—तुम्हारा पत्र पढ़ते ही काशीके छात्रालयका दृश्य मेरी आँखोंके सामने नाचने लगा।

आंखोंके सामने अँधेरा छा जाना—शून्य दिखाई देना।

उ०—जब कमलाको उसके पतिकी मृत्युका समाचार मिला, उसकी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया।

आंखोंमें खून उतर आना—क्रोधित होना।

उ०—उस दुष्टको देखते ही मेरी आँखोंमें खून उतर आता है।

आंखोंमें चर्बी छाना—अधिक घमण्ड होना।

उ०—तुम किसी छोटे-बड़ेको नहीं देखते हो; तुम्हारी आँखोंमें चर्बी छायी हुई है।

आंखोंमें धूल झोंकना—धोखा देना।

उ०—जगदीश! तुम दूसरोंकी आँखोंमें क्या धूल झोंकते हो, किसी दिन तुमको कोई ऐसा अन्धा बनायगा कि सब चौकड़ी भूल जाओगे।

आंखोंपर ठीकरी धरना—निर्लज्ज हो जाना।

उ०—उसपर किसीके कहने-सुननेका कुछ प्रभाव नहीं पड़ सकता; उसने तो आँखोंपर ठीकरी धर ली है।

आखिर करना—समाप्त करना।

उ०—चलो मेरा ही दोष सही; इस झगड़ेको किसी प्रकार आखिर करो।

आखिर होना—समाप्त होना।

उ०—मुझको हानि तो अवश्य उठानी पड़ी; परन्तु आए दिनका बखेड़ा आखिर हो गया।

आग बन जाना—अत्यन्त प्रकुपित होना।

उ०—नन्द-भवनमें अपमानित होते ही चाणक्य आग बन गया।

आग पड़ना—अधिक गरम होना।

उ०—इस वर्ष ऐसी आग पड़ रही है कि पानी पीते-पीते आदमी थक जाता है, और प्यास शान्त नहीं होती।

आग फाँकना—बहुत झूठ बोलना।

उ०—वह परले सिरेका मिथ्यावादी है; दिन-रात आग फाँकता फिरता है।

आग दिखाना
आगके सुपुर्द करना } जला देना।

उ०—ऐसी गन्दी पुस्तकें पास न रखनी चाहियें; इन सबको आग दिखा दो।

आग लगाकर पानीको दौड़ाना—झगड़ा कराकर शान्त करनेका प्रयत्न करना।

उ०—संसारमें ऐसे भी कितने ही मनुष्य हैं जो आग लगाकर पानीको दौड़ते हैं।

आगमें पानी डालना—क्रोध शान्त करना।

उ०—यदि मैं आगमें पानी न डालता, तो वह इतना उत्तेजित हो गया था कि तुमको भस्म ही कर देता।

आगमें झोंक देना—नष्ट कर देना।

उ०—उसने तुम्हारे लिये अपना सब कुछ आगमें झोंक दिया, परन्तु तुम उसके न हुए।

आगमें झोंक देना—घोर आपत्तिमें डालना।

उ०—तुम लोग उसकी मित्रताका दम भरते हो, तो इधर-उधर क्या देखते हो? उसके लिये अब अपने आपको आगमें झोंक दो।

आग लगाना—झगड़ा करना।

उ०—शान्त बैठे-बिठाए व्यक्तियोंमें आग लगानेसे प्रेमनाथको बड़ा आनन्द मिलता है।

आग सुलगाना—झगड़ेका बीज बोना।

उ०—तुम बहुत आग सुलगाते फिरते हो; याद रखो किसी दिन इस आगमें स्वयं भस्म हो जाओगे।

आगमें लोटना—अत्यन्त व्याकुल होना।

उ०—जबसे यमुनाने सुना है कि उसका पति गङ्गामें डूब गया, वह बेचारी आगमें लोट रही है।

आग बुझाना—शान्त होना।

उ०—मैं उनको कुछ शान्त करता हूँ, तो तुम छेड़ बैठते हो। भला ईंधन डालनेसे आग बुझेगी या उत्तेजित होगी ?

आग लगाना—क्रोध आना।

उ०—उसको पत्र तो मैंने लिख दिया है, परन्तु उसके पढ़ते ही आग लग जायगी।

आग बरसना—कड़ी धूप पड़ना।

उ०—बारह बजेका समय है, आग बरस रही है, ऐसे समयमें घरसे बाहर निकलना बड़ा कठिन है।

आग उगलना—क्रोधके आवेशमें कठोर वचन कहना।

उ०—एक लठ खोपड़ीपर पड़ते ही ठण्डे हो जाओगे और आग उगलना भूल जाओगे।

आग बुझ जाना—कलह शान्त हो जाना।

उ०—मोहन ! नीचतासे बाज आओ। आग बुझ चुकी है तुम उसको फिर सुलगानेकी चेष्टा कर रहे हो !

आग लगाकर तमाशा देखना—झगड़ा कराकर प्रसन्न होना।

उ०—कृष्णकुमार ! क्या यह नीचता नहीं है कि तुम आग लगाकर तमाशा देखना चाहते हो ?

आग जाग उठना—उपद्रव खड़ा हो जाना।

उ०—मैं कहता न था कि योरपमें शीघ्र आग जाग उठेगो और उसका शान्त होना कठिन होगा।

आग-बबूला हो जाना
आग-बबूला हो जाना } अत्यन्त उत्तेजित हो उठना।

उ०—वह तुमसे बहुत असन्तुष्ट है। तुम उसके पास न जाओ; तुमको देखते ही वह आग-बबूला हो जायगा।

आग लगा देना—उत्तेजित करना।

उ०—तुम्हारे आजके भाषणने जनतामें आग लगा दी है।

आगमें कूदना—आपत्तिमें पड़ना।

उ०—मुझे क्या बावले कुत्तेने काटा है कि आरामसे बैठे-बिठाये आगमें कूदूँ ?

आग-पानीमेंसे गुजरना—सब प्रकारके कष्ट सहना।

उ०—वह तुम्हारे लिये आग-पानीमेंसे गुजरनेको प्रस्तुत है और तुम उसकी ओर आँख भी उठाकर नहीं देखते।

आगमें ईंधन डालना—क्रोधको बढ़ाना।

उ०—पण्डितजीका क्रोध कुछ शान्त हुआ था; तुमने उनको छेड़कर फिर आगमें ईंधन डाल दिया।

आगा रोकना—मुकाबिलेपर आना।

उ०—दश-पाँच व्यक्तियोंको साथ लेते जाओ; तुम अकेले उस दुष्टका आगा रोकनेमें समर्थ न होगे।

आगा-पीछा करना—हिचर-मिचर करना।

उ०—जो पहुँचनेवाले थे, वे गङ्गाके पार जा पहुँचे; तुम आगा-पीछा ही करते रह गये।

आगा-पीछा न सोचना—हानि-लाभका विचार न करना।

उ०—तुमने कार्यारम्भके समय ही आगा-पीछा न सोचा; अब पछतानेसे कुछ लाभ नहीं।

आगे धर लेना—पीछा करना।

उ०—तुम तो पीछे ही रह गये, परन्तु मोहनने बड़ी वीरता-से चोरको आगे धर लिया।

आगे आना—भुगतना।

उ०—जो कुछ तुमने किया है, सब तुम्हारे आगे आयगा।

आगे आना—काम आना।

उ०—तुम बड़ी आपत्तिमें पड़ गये थे, परन्तु सस्ते छूट गये; न जाने कबका दिया-लिया आगे आ गया।

आगे पड़ना—शरणागत होना।

उ०—मुझे क्रोध तो बहुत आया हुआ था, परन्तु जब वह मेरे आगे पड़ गया, मुझे क्षमा-प्रदान करना पड़ा।

आगे-आगे हो लेना—सुगम बन जाना।

उ०—कितना ही कठिन कार्य क्यों न हो, अभ्यासके आगे-आगे हो लेता है।

आंच न आने देना—कष्ट न पहुँचने देना।

उ०—मुझपर चाहे जो कुछ बीते, परन्तु निश्चय रखो, तुमको आँच न आने दूँगा।

आंच खा जाना—अधिक पक जाना।

उ०—हलुवा बना तो अच्छा, परन्तु आंच खा जानेसे कुछ कड़ुवा हो गया।

आंच खाना—हानि उठाना।

उ०—वह तो तुम्हारी मैत्रीका बड़ा दम भरता है, परन्तु तुम उसके लिये कुछ भी आँच खानेको तैयार नहीं हो।

आज-कलके फेरमें पड़ना—समयको टालना।

उ०—जिनको कुछ करना होता है, वे सोच-समझ कर अपना कार्य आरम्भ कर देते हैं ; तुम तो आजकलके फेरमें पड़े हो; तुमसे कुछ न होगा।

आज-कल करना—देनेमें बहाना करना।

उ०—देना हो, दे दो ; न देना हो वैसी कहो, आज-कल करते-करते तुमने तीन महीने बिता दिये।

आंट रखना—शत्रु होना।

उ०—वह निमन्त्रण भेजनेपर भी नहीं आयगा, क्योंकि वह हमसे आँट रखता है।

आंट पड़ना—मन-मुटाव होना।

उ०—जबसे हमारे और उसके बीचमें आँट पड़ी है, वह बराबर हमको हानि पहुँचानेका प्रयत्न करता रहता है।

आटा छानना—निकम्मा बैठना।

उ०—तुम तो सब अपने-अपने काममें लगे हुए हो, हम यहां क्या आटा छानें?

आटे-दालका भाव मालूम होना—कष्टका अनुभव होना।

उ०—जब भोजनाच्छादनकी चिन्तामें पड़ोगे, तब आटे-दालका भाव मालूम हो जायगा।

आटेके साथ घुन पिसना—दोषी व्यक्तिके साथ निर्दोष व्यक्तिको दण्ड मिलना।

उ०—उस चौकड़ीमें उठना-बैठना छोड़ दो नहीं तो किसी दिन आटेके साथ घुन पिस जायगा।

आठ पहर सूली रहना—सदा दुःखमय जीवन बिताना।

उ०—हम जानते भी नहीं संसारमें सुख किस चिड़ियाका नाम है; यहाँ तो आठ पहर सूली रहती है।

आठ-आठ आंसू रुलाना—बहुत रुलाना।

उ०—आज पण्डित तपोधन शर्माके भाषणने लोगोंको आठ-आठ आँसू रुलाये।

आठ-आठ आंसू रोना—अत्यधिक रोना।

उ०—यह कथा इतनी करुणाजनक है कि पढ़ने-सुननेवालेके आठ-आठ आँसू रोने लगते हैं।

आठ-अठारह कर देना—दिक कर देना।

उ०—जबतक दम-में-दम है तुम लोगोंको आठ-अठारह किये बिना दम न लूँगा।

आड़में आना—सहारा लेना।

उ०—यदि वह तुम्हारी आड़में न आता, तो बहुत हानि उठाता।

आड़े आना—आपत्तिमें सहायक होना।

उ०—मैं आपको कैसे भूल सकता हूँ? आपके अतिरिक्त और कोई नहीं जो आड़े आए।

आड़े हाथों लेना—बहुत बुरा-भला कहना।

उ०—मैंने भी आज उसको ऐसा आड़े हाथों लिया है कि अगर वह आदमी होगा, तो इधर आनेका नाम फिर न लेगा।

आड़े समय काम आना—दुःखके समय सहायता करना।

उ०—मित्र वही है जो आड़े समय काम आता है।

आड़ी देकर बैठना—जम जाना।

उ०—मैंने तुमसे कहा था कि जल्दी लौटना; तुम वहाँ आड़ी देकर बैठ गये।

आंतें भारी होना—अजीर्ण होना।

उ०—सिर-दर्दका होना आश्चर्य नहीं है, क्योंकि बहुधा तुम्हारी आंतें भारी रहती हैं।

आंतें मसोसना }
आंतें समेटना } भूखों रहना, दुःखी होना।

उ०—जिनको रात-दिन अपने हलुवे-मांड़ेसे काम है, उनको क्या पता है कि कितने आदमी रात्रिको आँतें समेटकर सो जाते हैं।

आंतें मुँहको आना }
आंतें निकलना } बड़ा दुःख होना।

उ०—तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं, यहाँ आँतें मुँहको आ रही हैं।

आंतें कुलबुलाना—भूखसे व्याकुल होना।

उ०—मुझे इस समय गाना-बजाना अच्छा नहीं लगता क्योंकि मेरी आँतें कुलबुला रही हैं।

आंतोंका बल खोलना—पेटभर भोजन करना।

उ०—यह मनुष्य बहुत दुःखी है, इसने तीन दिनसे आँतोंका बल नहीं खोला है।

आंतोंका बल खुलना—भोजन मिलना।

उ०—मुझको वे दिन भलीभाँति याद हैं जब कि सप्ताहमें केवल तीन बार मेरी आँतोंका बल खुलता था।

आंतोंका ढेर करना—हनन करना।

उ०—किसी दुष्टने इस सुन्दर पक्षीकी आँतोंका ढेर करके अपनी आँतोंका बल खोला है।

आत्मा ठण्डी होना—शान्ति मिलना।

उ०—मुखसे परदा उठाकर उस सुन्दरीने सन्तप्त-हृदय आजाद-से कहा—"लो, अब तो तुम्हारी आत्मा ठण्डी हुई!"

आत्मा ठण्ड —शान्ति देना।

उ०—जो व्यक्ति रात-दिन हमसे जलता रहता है, वह हमारी आत्मा ठण्डी कैसे कर सकता है?

आत्मा मसोसना—दुःखी होना।

उ०—जब अपने घरपर उस नराधमने मेरा अपमान किया, मैं आत्मा मसोस कर रह गया, क्योंकि वहाँ मेरा कुछ बस न चल सका।

आदमी बनना—शिष्टाचार जानना।

उ०—हमारे साथ शास्त्रार्थ पीछे करना, पहले आदमी बनो।

आदमी बनाना—सभ्य बनाना।

उ०—जिस व्यक्तिने तुमको पढ़ाया, आदमी बनाया, उसके प्रति तुम्हारा कुत्सित भाव देखकर मुझे खेद हुआ।

आदि-अन्त सोचना—पूर्णरूपसे विचार करना।

उ०—किसी कार्यको करनेके पूर्व मैं उसके आदि अन्तको भली भांति सोच लेता हूँ।

आन तोड़ना—प्रण छोड़ना।

उ०—दूसरे प्रतिज्ञा-बद्ध नहीं रहे, इसलिये तुमने भी आन तोड़ डाली, यह युक्ति-युक्त बात नहीं है।

आन निभाना—प्रणपर रहना।

उ०—तुमसे पूर्ण आशा है कि यावज्जीवन अपनी आन निभाओगे और कभी भूलकर भी मदिरा-पान न करोगे।

आना-कानी करना—बहाना करना।

उ०—यदि हमारे साथ चलना है, तो चलो, आना-कानी करनेसे क्या लाभ है ?

आ पड़ना—विपत्ति आना।

उ०—उसका कुछ भी दोष नहीं; उसपर तो बैठे-बिठाए आ पड़ी।

आप-बीती कहना—अपना अनुभूत कष्ट बतलाना।

उ०—मैंने अबतक जो कुछ कहा है, सब आप-बीती ही कही है।

आप-आप करना—चिरौरी करना।

उ०—तुम न्याय-संगत बात नहीं कह सकते; तुमको तो आप-आप करनेकी बान पड़ गई है।

आपको आसमानपर खींचना—अपनेको बड़ा समझना।

उ०—तुम हजार अपने आपको आसमानपर खींचो, मैं तो तुमको जमीनपर भी रहनेके योग्य नहीं समझता हूँ।

आपको दूर जानना—अपनेको बड़ा योग्य समझना।

उ०—जो मनुष्य अपने आपको दूर जानता है, मैं उसके पास भी फटकना नहीं चाहता।

आपसमें गिरह पड़ना—परस्पर मनमुटाव होना।

उ०—मैं जानता हूँ कि आपसमें गिरह पड़नेके कारण उन लोगोंने एक साथ बैठकर भोजन नहीं किया।

आपको खींचना—अलग हो जाना।

उ०—जब दूसरोंकी आपत्तिके समय तुम अपने आपको खींच लेते हो, तो दुःखके समय दूसरे तुम्हारे पास क्यों आने लगे ?

आप ही अपना जवाब होना—अद्वितीय होना।

उ०—संसारमें आगरेका ताज-महल आप-ही-अपना जवाब है।

आपा-धापी पड़ना—अपनी-अपनी चिन्तामें लगना।

उ०—जब हमारी नौका गङ्गामें डगमगाने लगी, तो लोगोंमें आपा-धापी पड़ गयी।

आपा खोना—अभिमान-त्याग करना।

उ०—जो व्यक्ति आपा खोता है, वही आनन्द पाता है।

ऐसी बानी बोलिए, मनका आपा खोय।
औरोंको सीतल करे, आपुहि सीतल होय॥

आपा न सँभलना—अपना ही निर्वाह न हो सकना।

उ०—दूसरोंकी सहायता कैसे की जाय? यहाँ तो आपा ही नहीं सँभलता।

आपा न सँभलना—शरीरपर वश न होना।

उ०—तुम भी विचित्र जीव हो, तुमसे आपा तो सँभलता ही नहीं, और दो बच्चे कन्धेपर धर लिये।

आपा पीट डालना—अपने शरीरको पीटना।

उ०—मोहनने क्रोधके आवेशमें अपना आपा ही पीट डाला।

आपेसे जाना—संज्ञाहीन होना।

उ०—मदिरा-पान करके जब मनुष्य आपेसे चला जाता है, तो उसको आनन्द ही क्या आता है?

आपेमें न रहना—बेहोश हो जाना।

उ०—धनके मद्के कारण भी बहुतसे लोग आपेमें नहीं रहते हैं।

आपेमें आना—होशमें आना।

उ०—पहले उनको आपेमें आने दो; सब बातें धीरे-धीरे पूछ ली जायँगी।

आपेसे निकला पड़ना—अत्यन्त व्यग्र होना।

उ०—ऐसी क्या आपत्ति है? इतना क्यों आपेसे निकले पड़ते हो?

आपेसे बाहर होना—क्रोधके आवेशमें अभिमानसहित बोलना।

उ०—मुझको कमरेके अन्दर देखते ही वह आपेसे बाहर हो गया।

आब बिगड़ना
आब जाना } आभा रहित होना।

उ०—इस प्रकारकी चीज़ोंकी आब जल्दी बिगड़ जाती है, और आब जानेसे ये भद्दी मालूम होने लगती हैं।

आब देना
आब चढ़ाना } चमकाना।

उ०—इसका कुछ नहीं बिगड़ा; आब चढ़ानेसे फिर नवीन मालूम होने लगेगी।

आबरू खाकमें मिलना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—संसारमें जिसकी आबरू खाकमें मिल गयी, उसका जीवन निःसार समझना चाहिये।

आयँ-बायँ करना—निरर्थक बोलना।

उ०—यहां दो घण्टेसे आयँ-बायँ कर रहे हो; क्या तुम्हें संसारमें और कुछ काम नहीं रहा है?

आयीको रोकना—मृत्युसे बचना।

उ०—एक-न-एक दिन सबको चलना पड़ेगा; आयीको कोई नहीं रोक सकता।

आयी गयी करना—क्षमा करना; समाप्त करना।

उ०—उसको ही बड़ा बन लेने दो; मोहन! तुमही आयी-गयी करो।

आयी-गयी करना—छिपाना।

उ०—एक चादर थी, वह उन दुष्टोंने कहीं आयी-गयी कर दी।

आयीं-घायीं बताना—बहाना बनाना।

उ०—मोहन बड़ा चालाक है; पुस्तकका पता नहीं देता, एक घण्टेसे आयीं-घायी बता रहा है।

आयुका पट्टा लिखवाकर लाना—सदा जीवित रहनेकी इच्छा रखना।

उ०—और तो सब मर जायँगे, परन्तु तुम आयुका पट्टा लिखवाकर लाये हो।

आरती उतारना—प्रतिष्ठा करना।

उ०—स्वामी रामतीर्थ जहाँ कहीं भी जाते थे, लोग उनकी आरती उतारते थे।

आरे चलना—बहुत दुःख होना।

उ०—किसीको आपत्तिमें देखकर हमारे दिलपर आरे चलने लगते हैं।

आर्द्र-नेत्र होना—रोना, शोकातुर होना।

उ०—कोई दुःख-जनक समाचार मिला है जो पण्डितजी आज आर्द्र-नेत्र हो रहे हैं।

आल्हा गाना—जगह-जगह प्रकट करते फिरना।

उ०—तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते; चाहे रात-दिन अपयशका आल्हा गाते फिरो।

आव देखना न ताव देखना—कुछ भी न सोचना।

उ०—जब उसने मुझे गालियाँ दीं, मैंने आव देखा न ताव, एक लट्ठ ऐसा जमाया कि आँखें माँगने लगा।

आव-भगतमें स्वाहा करना—शुष्क व्यवहार करना।

उ०—किसीके और काम तो क्या आते, तुमने आव-भगतमें भी स्वाहा कर दिया।

आव-भगत करना—आगन्तुकका सत्कार करना।

उ०—चौधरी सन्दलसिंह आव-भगत करनेसे संसारमें अमर हो गये।

आवा-सा बैठना—सर्वनाश होना।

उ०—पापी सदा आनन्द नहीं करता रहता; एक दिन उसका आवा-सा अवश्य बैठ जाता है।

आवाजें कसना—चुभती हुई बातें कहना।

उ०—जब कभी मैं उस मार्गसे निकलता हूँ, वह दुष्ट मुझपर आवाजें कसे बिना नहीं रहता।

आवेका आवा बिगड़ना—सब कुटुम्ब दुष्टाचारी होना।

उ०—जगदीशके घर जानेका धर्म नहीं रहा; उसका तो आवेका आवा बिगड़ रहा है।

आशाओंपर पानी फिरना—बिल्कुल हताश होना।

उ०—उसको अपना जीवन निस्सार प्रतीत होता है, क्योंकि पुत्रकी असामयिक मृत्युसे उसकी आशाओंपर पानी फिर गया।

आसरा तकना—सहायता चाहना।

उ०—स्वावलम्बनका अभाव यादवको दूसरोंका आसरा तकनेपर बाध्य करता है।

आसमानपर दिमाग चढ़ाना—अधिक घमण्ड होना।

उ०—वह अपने चौबारेमें बैठा हुआ है; मेरे कहनेसे नीचे न उतरेगा, उसका आसमानपर दिमाग चढ़ा हुआ है।

आसमानपर होना—उच्च पदपर होना।

उ०—तुम्हारा और मेरा मेल नहीं हो सकता; तुम आसमानपर हो और मैं जमीनपर।

आसमानपर सिर उठाना—बहुत कोलाहल करना, उपद्रव करना।

उ०—आज-कल उस चाण्डाल चौकड़ीने आसमान सिरपर उठा रखा है।

हम 'फ़लक' फूँकके रखते हैं जमींपर भी क़दम।
आसमाँ सर पे उठाएँ तो उठाएँ क्योंकर॥
'फ़लक'

आसमानसे टक्कर खाना
आसमानसे बातें करना } बहुत ऊँचा होना।

उ०—(अ) हिमालयकी चोटियाँ आसमानसे टक्कर खाती हैं।

(ब) बाबू पोल्हूरामका मकान आसमानसे बातें करता है।

आसमानपर थूकना—बहुत घमण्ड करना।

उ०—केशव, यह बात याद रखो कि जो व्यक्ति आसमानपर थूकता है, लोग उसके जन्ममें थूकते हैं।

आसमान टूटना—आपत्ति आना।

उ०—पहले विमलाका पति मर चुका था, अब उसपर और आसमान टूटा कि उसका एक पुत्र भी मर गया।

आसमानपर उड़ना—इतराना।

उ०—हमसे सीधी तरह बातें करो, बहुत आसमानपर न उड़ो।

आसमानपर चढ़ाना—अधिक प्रशंसा करना।

उ०—तुमने उसको ऐसा आसमानपर चढ़ाया है कि वह सीधे-मुँह बात नहीं करता।

आसमान देखना—पराजित होना।

उ०—तुम अचलरामके साथ यदि लड़नेका विचार न छोड़ोगे, तो मैं कहे देता हूँ कि एक ही पेचमें आसमान देखोगे।

आसमान दिखाना—चित करना; पराजित करना।

उ०—तुम उसके साथ न भिड़ो; उसने बड़े-बड़े पहलवानोंको आसमान दिखाया है।

आसमानसे गिरना—अनायास मिलना।

उ०—कुछ हाँथ-पाँव हिलाओ; धन आसमानसे नहीं गिरता।

आसन हिलना वा डोलना—चलायमान होना; प्रभावित होना।

उ०—धनको देखकर अच्छे-अच्छोंका आसन हिल जाता है, तुम्हारी तो बात ही क्या है?

आंसुओंकी झड़ी लगाना
आंसुओंके परनाले बहाना } अत्यधिक रोना।

उ०—अपने मित्रकी मृत्युका समाचार पाते ही उसने आँसुओंकी झड़ी लगा दी।

आंसू पीकर रह जाना—शोकातुर होकर निःशब्द होना।

उ०—राधाचरण आज आँसू पीकर रह गया।

आंसू पीना—दुःखको दबाना।

उ०—तुम गुलछर्रे उड़ाओ; तुमको क्या पता है कि आँसू पीते-पीते हमारा क्या हाल हो गया है?

आंसू बहाना—रोना।

उ०—जब किसीको दु:खमें देखता हूँ, तब मैं आँसू बहाए बिना नहीं रहता।

इस बहानेसे बहाए सेर-महफिल आँसू।
कह दिया उनसे कि आँखोंमें खटक होती है॥

'दाग़'

आंसू पोंछना—केवल सान्त्वना देना।

उ०—इस बार तो कुछ देना ही पड़ेगा; केवल आँसू पोंछने से काम न चलेगा।

आस्तीन चढ़ाना—लड़नेको प्रस्तुत होना।

उ०—वह बहुत देरसे अपनी वीरताकी डींग मार रहा था; जब मुझे आस्तीन चढ़ाते देखा, तो दुम दबाकर भाग गया।

आस्तीनमें सांप पालना—गुप्त शत्रुको आश्रय देना।

उ०—मैंने आपसे पहले ही कहा था कि इस दुष्टको अपने पास न रखिये, परन्तु आप न माने और आस्तीनमें साँप पालते रहे।

आह पड़ना—किसीको सतानेका फल मिलना।

उ०—तुमने किसी दीन-दुर्बलको सताया होगा; उसकी ही आह पड़ी है।

आह भरना—दु:खमें लम्बी साँस लेना।

उ०—चोरोंने इस विधवाका घर खाली कर दिया, आज प्रातःकालसे बेचारी आह भर रही है।

आह करके रह जाना—चुप-चाप चोट सह लेना।

उ०—उस दुष्टने इस साधुको मारा, यह कुछ न कर सका, केवल आह करके रह गया।

(इ)

इति श्री करना—समाप्त होना।

उ०—औरङ्गजेबकी मृत्युके उपरान्त मुग़ल साम्राज्यकी एक प्रकारसे इति श्री हो चुकी थी।

इति श्री करना—समाप्त करना।

उ०—इस मासके अन्ततक इस पुस्तककी इतिश्री कर दूँगा।

इधरकी दुनिया उधर होना—बड़ा परिवर्त्तन होना।

उ०—मुझे उसका पूर्ण विश्वास है; चाहे इधरकी दुनिया उधर हो जाय, वह अपने प्रणपर डटा रहेगा।

इधर-उधर करना—बहाना बनाना।

उ०—मैं अनेक बार आपसे अपनी पुस्तक माँग चुका हूँ; बड़े खेदकी बात है कि आप सदा इधर-उधर करते रहते हैं।

इधर-उधर कर देना—छिपा देना।

उ०—अब तलाशीसे क्या बनता है; उसने तमाम चीजें कभीकी इधर-उधर कर दी होंगी।

इधर-उधरकी हांकना—गप्पें लगाना।

उ०—तुमको और काम ही क्या है? निकम्मे बैठे इधर-उधरकी हाँकते रहते हो।

इधर-उधर देखना—हिचकिचाना।

उ०—वीरतापूर्वक आगे बढ़ो, इधर-उधर देखनेसे काम न चलेगा।

इधर-उधर देखने लगना—निरुत्तर हो जाना।

उ०—चुप रहो; यदि मैं कुछ कहूँगा, तो इधर-उधर देखने लगोगे।

इधरकी उधर लगाना—पिशुनता करना।

उ०—छज्जूराम! तुम बहुत इधरकी उधर लगाते फिरते हो; किसी दिन इसका मजा चखोगे।

इधरकी उधर लगाना—झगड़ा कराना।

उ०—मैं जानता हूं कि ऐसा करनेसे तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आता, तथापि तुम इधरकी उधर लगानेसे बाज नहीं आते।

इन तिलों तेल न होना—मिलनेकी आशा न होना।

उ०—तुम लाला शिवनाथके पास चन्दा लेने जा रहे हो; इन तिलों तेल न होगा।

इन्द्रका अखाड़ा बनना—सब प्रकारके आमोद-प्रमोदका स्थान होना।

उ०—आजकल तो आपका भवन इन्द्रका अखाड़ा बना हुआ है।

इन्द्र बनना—सर्वोच्च बनना।

उ०—तुम कुछ पुरुषार्थ करना नहीं चाहते; तो भी इन्द्र बननेकी इच्छा करते हो।

इन्द्र बनना—सब प्रकारका आनन्द लूटना।

उ०—कितने खेदकी बात है कि पिता भीख मांगता फिरता है और पुत्र इन्द्र बना बैठा है।

इन्हीं पांवों जाना—जानेमें बिल्कुल विलम्ब न करना।

उ०—यादव! इन्हीं पांवों बाजार जाओ और एक रुपयेका घृत लाओ।

इस कानसे सुनना उससे निकाल देना—ध्यान न देना।

उ०—मैंने तो उसको किसी कामके लिये कहना ही छोड़ दिया; कहके क्या करूँ, इस कानसे सुनता है तो उससे निकाल देता है।

इज्जत गँवाना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—भोलानाथने खेदसे कहा—"यह तुमलोगोंकी संगतिका फल है आज मैं अपनी इज्जत गँवा बैठा।"

इज्जत बिगाड़ना—अपमानित करना।

उ०—भले आदमियोंकी इज्जत बिगाड़ देना तो लफङ्गोंके लिये एक साधारण बात है।

इज्जत दो कौड़ीकी न रहना—प्रतिष्ठा नष्ट होना।

उ०—मैं तुमसे साफ कहता हूँ कि इन गुण्डोंकी कुसंगतिमें तुम्हारी इज्जत दो कौड़ीको न रहेगी।

(ई)

ईंटसे ईंट बजाना--विध्वंस करना।

उ०—यह बात मानी हुई है कि तुम जहां कहीं भी जाओगे, ईंटसे ईंट बजाओगे।

ईंटका जवाब पत्थरसे देना—दुष्टके साथ दुष्टता करना।

उ०—मेरे साथ बहुत छेड़-छाड़ न किया करो, तुम मुझे जानते हो कि मैं ईंटका जवाब पत्थरसे देता हूँ।

ईंटका घर मिट्टी कर देना—धनका नाश कर देना।

उ०—मोहनलाल! तुमको लज्जा नहीं आती कि तुमने व्यसनोंमें पड़कर ईंटका घर मिट्टी कर दिया।

ईंटोंसे निकलकर कीचड़में पड़ना—एक आपत्तिसे निकल दूसरीमें फँसना।

उ०—उस बेचारेका उद्धार क्या हुआ ? ईंटोंसे निकलकर कीचड़में पड़ गया।

ईदका चांद हो जाना—बहुत दिनोंके पीछे मिलना।

उ०—मधुसूदन! आजकल क्या करते रहते हो ? यार, तुम तो ईदके चाँद हो गये हो!

ईंधन हो जाना—शक्तिहीन हो जाना, वृद्ध हो जाना।

उ०—रामशरण! कुछ करना है, तो जवानीमें करो; फिर क्या करोगे जब ईंधन हो जाओगे ?

नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूखड़े, ईंधन हो गये सब्ब॥

ईश्वरको प्यारा होना—मर जाना।

उ०—उस विधवाका इकलौता पुत्र आज ईश्वरको प्यारा हो गया।

———

(उ)

उखड़ जाना—स्वीकार न करना।

उ०—मैं एक कम्बलके दस रुपयेतक देनेको तैयार था, परन्तु वह उखड़ गया।

उखड़ी हुई बातें करना—दिलसे न बोलना।

उ०—तुम्हारे पास बैठकर क्या करें ? तुम तो सदा उखड़ी हुई बातें करते हो।

उखाड़ देना—बिगाड़ना।

उ०—तुम बहुत ही नीच प्रकृतिके व्यक्ति हो ; तुमने उनका जमा-जमाया काम उखाड़ दिया।

उगल देना—गुप्त भेद प्रकट करना।

उ०—यह माना कि वह बड़ा चालाक है, परन्तु जब पुलिस-का डण्डा पड़ेगा तब सब उगल देगा।

उछलकर चलना—घमण्ड करना।

उ०—पचास रुपयेकी जगह मिलनेसे माधव आजकल बहुत उछलकर चलता है।

उछलकर चलना—शक्तिके बाहर कार्य करना।

उ०—किसी दिन पछताना पड़ेगा ; इतना उछलकर चलना उचित नहीं।

उछल-कूद दिखलाना—अभिमानकी बातें करना।

उ०—मैं जानता हूँ जिसके भरोसे तुम उछल-कूद दिखला रहे हो।

उछल पड़ना—बहुत प्रसन्न होना।

उ०—मोहन बी० ए० परीक्षामें सफल होनेका समाचार सुनते ही उछल पड़ा।

उठ जाना—मर जाना।

उ०—इस वृद्ध महात्माके सामने संसारसे अनेक लोग उठ गये, परन्तु यह अभी तक बैठा हुआ है।

उठ जाना—खर्च होना।

उ०—मेरठ जानेमें मेरे कमसे कम तीस रुपये अवश्य उठ जायँगे क्योंकि वहाँ पन्द्रह दिन रहना भी तो है।

उठ जाना—समाप्त होना।

उ०—इस महीनेकी पहली तारीखको तीन सेर घी आया था; पन्द्रह दिनमें सब उठ गया।

उठा न रखना—कसर न छोड़ना।

उ०—आप निश्चिन्त रहें; मैं इस मामलेमें अपनी ओरसे कुछ भी उठा न रखूँगा।

उड़कर पड़ना—बहुत लालच करना।

उ०—जगदीशकी कुछ न पूछो; मिठाईपर तो दुष्ट उड़कर पड़ता है।

उड़ती खबर पाना—अनिश्चित समाचार मिलना।

उ०—मैंने भी उड़ती खबर पायी थी कि उसका विचार इस वर्ष परीक्षामें बैठनेका नहीं है।

उड़ती चिड़िया पहिचानना—जीकी बात जानना।

उ०—मुझसे बहुत न उड़ो; तुम नहीं जानते कि मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूं ?

उड़ा जाना—टाल देना

उ०—कभी उनसे कुछ कहता हूँ, तो वह बातों ही बातोंमें उड़ा जाते हैं।

उड़ा ले जाना—अपहरण करना।

उ०—मेरी अनुपस्थितिमें वह दुष्ट मेरी अनेक पुस्तकें उड़ा ले गया।

उड़ा लेना—ठग लेना।

उ०—तुम कहाँके भले निकलकर आये हो ? तुमने भी उससे सैकड़ों रुपये उड़ा लिये हैं।

उड़ा देना—खो देना।

उ०—शङ्करने बाप-दादाकी सब कमाई व्यसनोंमें उड़ा दी अब धक्के खाता फिरता है।

उतर जाना—तेज न रहना।

उ०—वैद्यजी महाराज ! यह अर्क उतर गया है, मुझे दूसरा दीजिये।

उत्तर देना—ढीठ होना।

उ०—मैं इस नौकरको रखना नहीं चाहता हूँ; यह बात-बात-पर उत्तर देता है।

उतार धरना—निर्लज्ज हो जाना।

उ०—तुमको दूसरोंकी उतारनेमें क्या संकोच हो सकता है जब कि तुमने अपनी ही उतार धरी ?

उतार-चढ़ाव देखना—अनुभव होना।

उ०—रामलालको साधारण व्यक्ति न समझो; उसने संसारके उतार-चढ़ाव देखे हैं।

उतारू होना—प्रस्तुत होना।

उ०—रामदयालसे सावधान रहना; वह तुमको हानि पहुँचाने पर उतारू हो रहा है।

उतावला होना—जल्दीमें होना।

उ०—कार्य होते ही होते होता है; तुम तो इतने उतावले हो रहे हो कि कुछ कहा नहीं जाता।

उत्तीके बजना—बे-रौनकी होना; शोभा बिगड़ना।

उ०—जब आज प्रधानके समारोहमें ही उत्तीके बज रहे हैं, तो कल क्या आशा की जा सकती है ?

उथल-पुथल होना—परिवर्त्तन होना।

उ०—जहाँ कभी झाड़-झूँड़ खड़े हुए थे, वहाँ आज बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ शोभायमान हैं; थोड़े समयमें कितनी उथल-पुथल हो गयी है।

उथल-पुथल करना—गड़बड़ करना।

उ०—तुमने सारी पुस्तकें उथल-पुथल कर डाली है; मुझे दो घण्टे उनके ठीक करनेमें लगेंगे।

उधार खाए बैठना—ताकमें रहना, प्रतीक्षामें रहना।

उ०—यदि वे हमको हानि पहुँचानेकी चेष्टा करते हैं तो करने दो; इधर हम भी उनपर उधार खाए बैठे हैं।

उधार न छोड़ना—कसर न रखना।

उ०—अवसर आने दो, उस पाजीकी वह खबर लूँगा कि कोई उधार न छोड़ूँगा।

उधेड़बुनमें लगना—चिन्ता करना।

उ०—मुझे कहीं आने-जानेका अवसर नहीं मिलता; रात-दिन जीविकाकी उधेड़-बुनमें लगा रहता हूँ।

उधेड़ डालना—फाड़ डालना।

उ०—कल वनमें सिंहने एक आदमीको ऐसा उधेड़ डाला कि उसका बचना कठिन है।

उफ न करना—चुपचाप चोट सह लेना।

उ०—तुमने उसको इतना सताया, परन्तु उसका जिगर देखो कि उसने कभी उफ़ न की।

उबल पड़ना—प्रकुपित होना।

उ०—कोई उसको कहाँतक ठण्डा करे, वह तो जरा-जरा-सी बातोंपर उबल पड़ता है।

उबलती चाटना—अभिमान करना।

उ०—उसको किसी दिन अवश्य ठीक बनाऊँगा; उसने आजकल बहुत उबलती चाट रखी है।

उभारपर होना—बढ़ना।

उ०—इन दिनों उसकी जवानी उभारपर क्या है; वह किसी-को आरंगमें ही नहीं लाता।

उभारा देना—भड़काना।

उ०—मैं उसको शान्त कर चुका था, परन्तु तुमने फिर उभारा दे दिया।

उभार देना—साहस बढ़ाना।

उ०—यदि तुम उभारा न देते, तो आज उसका जीतना कठिन था।

उभारा लेना—सँभलना।

उ०—पठन-पाठन किसका, अभी तो उसने बीमारीसे ही उभारा नहीं लिया है।

उमङ्गे मिटना—उत्साहका आवेश न रहना।

उ०—आपत्ति पड़नेपर मनुष्यकी सब उमङ्गे मिट जाती है।

वो उमङ्ग मिट गयीं वो वलवला जाता रहा।

उलट-फेर होना—परिवर्त्तन होना।

उ०—जहाँ किसी समय सिंह और व्याघ्र विहार करते थे, वहाँ आज मनुष्योंके बच्चे खेलते फिरते हैं; दस वर्षमें कितना उलट-फेर हो गया है।

उलटी गङ्गा बहाना—विपरीत कार्य करना।

उ०—पण्डितजी, हमको आपकी सेवा करनी चाहिये न कि आपको हमारी; आप तो उलटी गङ्गा बहाते हैं।

उलटी पट्टी बढ़ाना—मार्गसे विचलित करना।

उ०—नाथूराम ! तुम बड़े दुष्ट हो; जबसे तुमने यादवको उलटी पट्टी पढ़ाई है, वह घरका रहा न घाट का।

उलटी सांस लेना—मरणासन्न होना।

उ०—उसके बचनेकी कोई आशा नहीं; वह आज उलटी साँस ले रहा है।

उलटी माला फेरना—अनिष्ट चिन्तन करना।

उ०—तुमने तो हानि पहुँचाई ही है; वह भी तुम्हारी ऐसी उलटी माला फेरेगा कि सीधे हो जाओगे।

उलटी-सीधी सुनाना—बुला-भला करना।

उ०—अब चुप रहो। उसने दो बातें कह दीं, तो क्या हुआ, तुम भी तो बहुत देरतक उसको उलटी-सीधी सुनाते रहे।

उलटी कहना—असंगत बात कहना।

उ०—तुमको कभी सीधी तरह बोलना ही न आयगा; जब कहोगे उल्टी ही कहोगे।

उलटे बांस बरेलीको ले जाना
उलटे बांस पहाड़ोंको ले जाना } जहां जिस वस्तुकी आवश्यकता न हो वहाँ वही ले जाना

उ०—मोहनने नागपुरको सन्तरे भेजे हैं; वह बड़ा विचित्र जीव है; उलटे बाँस बरेली ले जाता है।

उलटे छुरेसे मूँड़ना—बुरी तरहसे ठगना।

उ०—फीस देना तो दूर रहा, वह तो तुम्हारी पुस्तकें भी उड़ा ले गया; उसने तुमको खूब उल्टे छुरेसे मूँड़ा है।

उलटे पांवों जाना—लौटना।

उ०—कितनी रद्दी चीनी उठा लाये; अभी उलटे पाँवों जाओ और इसको वापस करके आओ।

उलझ पड़ना—लड़ बैठना।

उ०—यह भद्र पुरुषोंका काम नहीं कि जिसे देखा उससे ही अकारण उलझ पड़े।

उलझनमें पड़ना—झंझटमें फँसना।

उ०—हमने तुम्हें पढ़ाना क्या स्वीकार किया, एक उलझनमें पड़ गये।

उलझनमें डालना—चिन्तित करना।

उ०—तुम्हारी सन्देह-जनक बातोंने हमको उलझनमें डाल दिया।

उलूल-जलूल बकना—निरर्थक बातें कहना।

उ०—कभी बैठकर घण्टा आध घण्टा पुस्तक भी देख लिया करो; दिनभर उलूल-जलूल बकते फिरते हो।

उल्लूकी मिट्टी पड़ना—आलसी हो जाना।

उ०—छज्जूराम! इस वर्ष तुमपर ऐसी उल्लूकी मिट्टी पड़ी है कि हाथ-पाँव हिलाते मौत आती है।

उल्लूकी मिट्टी पड़ना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—वह हिताहितका विचार नहीं कर सकता; उसपर उल्लूकी मिट्टी पड़ी हुई है।

उल्लू बनना—मूर्ख बनना।

उ०—तुमसे पहले ही कहा था कि वहाँ न जाओ; देख लिया, हानि उठाई और उल्लू बने।

उल्लू बनाना—हास्यास्पद करना।

उ०—उसको वहाँ जाने दो, देखना, उसका कैसा उल्लू बनाया जायगा।

उल्लू बोलना—उजाड़ होना।

उ०—समयकी विचित्र गति है; जहाँ कल आनन्द-मंगल हो रहा था, वहाँ आज उल्लू बोल रहे हैं।

उल्लू खिलाना—वशमें करना।

उ०—दिन-रात कुत्तेकी भाँति उमरावके पीछे-पीछे फिरते हो, मालूम होता है कि उसने तुम्हें उल्लू खिला दिया है।

(ऊ)

ऊँच-नीचका भेद न रखना—सबके साथ समान व्यवहार करना।

उ०—महापुरुष संसारमें ऊँच-नीचका भेद नहीं रखते।

ऊँचा सुनना—कम सुनना।

उ०—ज़रा ज़ोरसे बोलिये, लाला साहब ऊँचा सुनते हैं।

नाला इस ज़ोरसे क्यों मेरा दुहाई देता।
अय फ़लक गर मुझे ऊँचा न सुनाई देता॥

ऊँचा बैठना होना—बड़े लोगोंकी संगतिमें रहना।

उ०—जब तुम नीचता नहीं छोड़ते, तो तुम्हारा ऊँचा बैठना होनेसे कुछ लाभ नहीं।

जिसका ऊँचा बैठना, जिसका खेत निमान।
उसका बैरी क्या करे, जिसका मीत दिवान॥

ऊँचा बोल बोलना—अभिमान करना।

उ०—नीच लोग ही ऊँचा बोल बोलते हैं।

ऊँची जगह पाना—प्रतिष्ठित होना।

उ०—जो अपने कर्त्तव्यका पालन करते हैं, वे संसारमें ऊँची जगह पाते हैं।

ऊट-पटांग हांकना—निरर्थक बोलना।

उ०—क्या संसारमें तुम्हारे लिये कोई काम नहीं रहा जो दिनभर ऊट-पटाँग हाँकते फिरते हो?

ऊँटके गलेमें बिल्ली बांधना—अनमेल काम करना।

उ०—दस वर्षीया कन्याका विवाह चालीस वर्षके पुरुषसे करना चाहते हो ; तुम ऊँटके गलेमें बिल्ली बाँधते हो।

ऊँटके मुँहमें जीरा देना—अधिक आवश्यकतावालेको थोड़ा देना।

उ०—यह आदमी कलसे भूखा है, दो चपातियोंसे काम न चलेगा ; तुम तो ऊँटके मुँहमें जीरा देते हो।

ऊधम मचाना—कोलाहल करना ; उपद्रव करना।

उ०—तुम लोगोंको कड़ा दण्ड मिलेगा ; तुम दो घण्टेसे ऊधम मचा रहे हो।

ऊपर पड़ना—दुःख उठाना।

उ०—जबतक अपने ऊपर नहीं पड़ती, दूसरेका दुःख मालूम नहीं होता।

ऊसरमें बीज डालना—निष्फल कार्य करना।

उ०—स्वामीजी इन लोगोंको उपदेश देकर ऊसरमें बीज डालते हैं।

———

(ए)

एककी दस सुनना—ज़रा अपशब्द कहनेपर बहुत गालियाँ मिलना।

उ०—उसको छेड़कर देखो ; एक की दस सुनोगे।

एक न एक रोग लगा रहना—शान्ति न रहना।

उ०—मैंने वह स्थान इसलिये छोड़ दिया कि वहाँ एक-न-एक रोग लगा ही रहता था।

एक लकड़ीसे सबको हांकना—व्यवहारमें भले-बुरेका विचार न करना।

उ०—तुम सबको एक ही लकड़ीसे हाँकते हो।

एक-से दिन न रहना—एक ही स्थिति न रहना।

उ०—तुमको घबराना न चाहिये। संसारमें सदा किसीके एक-से दिन नहीं रहते।

एक आंखसे देखना—समान व्यवहार करना।

उ०—महापुरुष संसारमें सबको एक आँखसे देखते हैं।

खुरशीदवार देखते हैं सबको एक आँख।
रोशन-ज़मीर मिलते हरेक नेको-बदसे हैं॥

'ज़ौक़'

एक रस रहना—कुछ भी विकार न होना।

उ०—आदर्श प्रेम सब अवस्थाओंमें एक रस रहता है।

एक टक लगाना—दृष्टि जमाकर देखना।

उ०—वह इस समय एक-टक लगा हुआ है।

एक बात होना—बहुत सुगम होना।

उ०—झगड़ा करा देना तो उसके लिये एक बात है।

एक ईंट के लिये भवन गिराना—साधारण लाभके लिये बड़ी हानि करना।

उ०—इस कार्यमें तुमको एक रुपयेका लाभ होगा और सौ की हानि; इसको जाने दो, क्या एक ईंटके लिये भवन गिराते हो?

एक परके सौ कौवे बनाना—बहुत थोड़ी बातको अत्यधिक बढ़ाना।

उ०—उसने एक ही कही, वह दुनियाभरका चालाक है, एक परके सौ कौवे बनाता है।

एककी सौ सुनना—जरासी बात कहनेपर बहुत बुरा-भला कहना।

उ०—उसको जरा छेड़कर देखो, एककी सौ सुनायेगा।

एकको एक खाए जाना—परस्पर द्वेष होना।

उ०—इन लोगोंमें रहनेका धर्म नहीं है; देखते नहीं हो, एकको एक खाए जाता है।

देखना रश्क उसकी महफ़िल में।
एक को एक खाए जाता है॥

'दाग़'

एक होना—अद्वितीय होना।

उ०—पण्डित तपोधन शास्त्री वेदान्त पढ़ानेमें एक हैं।

एक होना— भेद भाव न रखना।

उ०—यह कौन नहीं जानता कि तुम सब एक हो, और बड़े मेल-जोलसे रहते हो?

एक हो जाना—मिल जाना।

उ०—ये लोग लड़-झगड़कर फिर एक हो जायँगे, और तुम बुरे बनोगे।

एक ही साँचेमें ढलना—समान विचार रखना।

उ०—इनमेंसे मैं किसीका भी विश्वास नहीं करता ; ये सब एक ही साँचेमें ढले हैं।

एक न चलना—कुछ न कर सकना।

उ०—वह चाहे जितनी डींग मारे, मधुसूदनके सामने उसकी एक न चलेगी।

एकके तीन बनाना—अनुचित नफा लेना।

उ०—लाला मुरलीधर! एकके तीन बनाते हो, फिर भी सन्तोष नहीं होता।

एक-तरफा डिगरी देना—अधूरा न्याय करना।

उ०—यह बुद्धिमत्ताकी बात नहीं है, बाबूजी! आपने उन लोगोंके विचार सुनकर एक-तरफा डिगरी दे दी है।

एक टांगसे फिरना—बहुत चलना-फिरना।

उ०—इस गरीबको दम तो लेने दो ; सात बजेसे अबतक एक टाँगसे फिर रहा है।

एक सूत्रमें बांधना
एकमें गूँथना } संघटित करना, एकता स्थापित करना।

उ०—आजकल हिन्दुओंको एक सूत्रमें बाँधना बड़ा कठिन कार्य है।

एक ही पात्रमें चरणामृत और मदिरा भरना—व्यवहारमें भले-बुरेका भेद न करना।

उ०—हम ऐसे लोगांसे कोसों दूर भागते हैं, जो एक ही पात्रमें चरणामृत और मदिरा भरते हैं।

एक-एक रग जानना—भली भाँति परिचित होना।

उ०—मुझको चलानेकी चेष्टा करना व्यर्थ है ; मैं तुम्हारी एक-एक रग जानता हूँ।

एक न सुनना—बिलकुल न मानना।

उ०—माधवने बहुत चिरौरी की, पर तुम्हारे भाईने एक न सुनी।

एक सौ चवालीस लगाना—जबान बन्द करना।

उ०—पण्डित वृषमध्वज शर्मा दो मासतक राजनीतिक भाषण न कर सकेंगे, क्योंकि उनपर एक सौ चवालीस लगा दी गयी है।

एकादशीका खाया द्वादशीको निकलना—एक दिनका लिया किसी दूसरे दिन देना पड़ना।

उ०—बहुत लालच न करो, एकादशीका खाया द्वादशीको निकल जाता है।

एड़ियां -गड़ना } कठिन परिश्रम करना,
एड़ी-चोटीका पसीना एक करना } कष्ट उठाना।

उ०—(अ) यादवने बहुत एड़ियां रगड़ीं, पर कुछ हाथ न लगा।

(ब) उसने एड़ो-चोटीका पसीना एक कर दिया, तब सफल हुआ।

———

(ऐ)

ऐंचा-तानीमें पड़ना—झगड़ेमें फँसना।

उ०—चलके आरामसे बैठो; व्यर्थ क्यों ऐंचा-तानीमें

ऐंठ दिखाना—घमण्ड करना।

उ०—मैं तुम्हारी वीरतासे भली भाँति परिचित हूं; मुझे अधिक ऐंठ न दिखाओ।

ऐंठ जाना—असन्तुष्ट होना।

उ०—क्यों साहब, यह कहाँका न्याय है कि हँसी उड़ाई दूसरोंने, और तुम ऐंठ गये हमसे ?

ऐंठ लेना—ठग लेना

उ०—तुम बड़े धूर्त्त हो; इस गरीब आदमीसे भी कुछ न कुछ ऐंठ ही लिया।

ऐंठ लेना—कुढ़ना।

उ०—कोई हँसता है हँसने दो, तुम क्यों ऐंठ लेते हो।

ऐंठ निकलना—घमण्ड दूर होना।

उ०—अभीतक कोई मिला नहीं है; जरासी देरमें सारी ऐंठ निकल जायगी।

ऐंठ ढीली करना—घमण्ड तोड़ना।

उ०—मेरे साथ बहुत तीन पाँच न किया करो; किसी दिन सारी ऐंठ ढीली कर दूँगा।

ऐंडा-बैंडा चलना—बुरे मार्गपर चलना।

उ०—अब पछतानेसे कुछ नहीं बनता; जब ऐंडा बैंडा चलते थे, तब परिणाम एक दिन भी न सोचा।

ऐरा-गैरा रमाना— } साधारण व्यक्ति समझना।
ऐसा-वैसा समझना }

उ०—(अ) तुमने कोई ऐरा-गैरा रमाया होगा, मैं तुमको ठीक करके छोड़ूँगा।

(ब) उसको ऐसा-वैसा न समझना, वह बड़ा योगी है।

ऐसी-तैसी करना—सब कुछ बुरा-भला उपाय करना।

उ०—उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ; तुम सब अपनी ऐसी तैसी करके बैठ रहे।

(ओ)

ओखलीमें सिर देना—जान बूझकर आपत्तिमें पड़ना।

उ०—अब रोते क्यों हो? तुमने स्वयं ओखलीमें सिर दिया था।

ओटा-माई खेलना—भेद छिपाना।

उ०—हमको पहलेसे ही सब पता है; तुम हमसे क्या ओटा-माई खेलते हो।

ओड़े मिलाना—बहाने बनाना।

उ०—उनसे दो घंटेतकके लिये गाड़ी माँगी थी, दुनिया भरके ओड़े मिलाने लगे।

ओर-छोर न मिलना—भेद न चलना।

उ०—परमात्माकी लीला अपार है; इसका कुछ ओर-छोर नहीं मिलता।

ओढ़नीकी बतास लगना—स्त्रीके प्रेममें फँसना।

उ०—जिस विद्यार्थीको ओढ़नीकी बतास लग जाती है, उसका पढ़ना-लिखना कठिन हो जाता है।

ओले पड़ना—आपत्ति आना।

उ०—मातादीनके समान मन्दभाग्य कौन होगा? बेचारा जहाँ गया वहीं ओले पड़े।

ओल्हा करना—भेद छिपाना।

उ०—पंडितजी, अन्दर चले आइये; आप तो घरके आदमी है, हम आपसे क्या ओल्हा करेंगे।

ओस पड़ना—बेरौनकी होना।

उ०—करामातअली! आज तुम्हारी महफिलमें ओस क्यों पड़ी हुई है?

ओसरा ताकना—बारी की प्रतीक्षा करना।

उ०—लोग अपना काम कर-करके चले जा रहे हैं, और तुम अभीतक बैठे हुए ओसरा ही ताक रहे हो।

(औ)

औकातपर आना—असलियत प्रकट होना।

उ०—वह बहुत डींग मारा करता था; अब अपनी औकातपर आ गया।

औकातपर रहना—शक्तिके अनुसार चलना।

उ०—माधव! अधिक उछलकर चलना ठीक नहीं होता; अपनी औकातपर रहो।

औकात बसर होना—निर्वाह होना।

उ०—किसीको क्या खबर है कि हम किस प्रकार औकात बसर करते हैं।

हम लख्ते-जिगर खायँ ग़मे-हिज्रमें कबतक।
इन टुकड़ों पे अपनी बसर औक़ात न होगी।

औखे दिन आना—दुःखप्रद समय आना।

उ०—जब मनुष्यके औखे दिन आते हैं, तब अपने भी मुँह फेर लेते हैं, दूसरोंकी तो बात ही क्या?

औघट घाट बचाकर चलना—आपत्तियोंसे सावधान रहना।

उ०—जो लोग अपने जीवनको अच्छा बनाना चाहते हैं, उनको औघट-घाट बचाकर चलना आवश्यक है।

औदक होना—डरसे चौंक पड़ना।

उ०—जबसे इस बच्चेने भालू देखा है, इसको रातमें कभी-कभी औदक हो जाती है।

औंधे मुँह गिरना—पराजित होना।

उ०—उसका मुकाबिला करनेकी चेष्टा न करो; तुम अवश्य औंधे मुँह गिरोगे।

औने-पौने दे डालना—अधिक-कम दामका विचार किये बिना बेच देना।

उ०—उसको रुपयेकी आवश्यकता थी, इसलिये उसने अपना नया मकान औने-पौनेमें दे डाला।

औने-पौने करना—व्यापारमें छल-कपट करना।

उ०—मैं तुम्हारी दुकानसे इसलिये सौदा नहीं लेता कि तुम सदा औने पौने करते हो।

औरका और हो जाना—बिल्कुल बदल जाना।

उ०—केवल एक महीनेकी बीमारीमें तुम तो और-के-और हो गये।

औले-बरसौले करना—ढँगसे कार्य न करना।

उ०—उसकी स्त्रीको कुछ नहीं आता; दिनभर औले-बरसौले करती रहती है।

औसान खता होना—होश बिगड़ना।

उ०—जङ्गलमें व्याघ्रको देखते ही उसके औसान खता हो गये।

औसान खता करना—होश खो देना।

उ०—जिस समय निर्भय होकर वह मैदानमें आता है, अच्छे-अच्छोंके औसान खता कर देता है।

बेहोश बना देना औसान खता करना।
उस चश्मे-फ़सूँगरको आता नहीं क्या करना॥

'सिफ़त'

(क)

कंघी-चोटीसे अवकाश न मिलना—बनाव-सिंगारमें संलग्न रहना।

उ०—आजकलके विद्यार्थियोंको कंघी-चोटीसे ही अवकाश नहीं मिलता।

कच्चा दिल करना—उदास होना।

उ०—जो होना था सो हो गया; अब तुम कच्चा दिल क्यों करते हो?

कच्चा करना—झूठा सिद्ध करना।

उ०—जबतक तुम उसको चार आदमियोंके सामने कच्चा न करोगे, वह बाज न आयगा।

कच्चा होना—लज्जित होना।

उ०—जब मैंने उसकी सब पोल खोल दी, तब वह बड़ा कच्चा हुआ।

कच्चा होना—झूठा सिद्ध होना।

उ०—यदि साफ़-साफ़ न कहोगे, तो तुमको सबके सामने कच्चा होना पड़ेगा।

कच्ची गोलियां न खेलना—अनुभवी होना।

उ०—यदि वह बड़ा चालाक है, तो मैं भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेला हूँ; उसकी नस-नस पहचानता हूँ।

कच्चे घड़ेकी चढ़ना—बहुत घमण्ड होना।

उ०—वह किसीकी एक न सुनेगा; उसको आजकल कच्चे घड़ेकी चढ़ी हुई है।

कचूमर निकालना—बुरी हालत करना।

उ०—बहुत अण्ड-बण्ड न बोलो; तुम जानते हो कि मैंने उस दिन मारते-मारते तुम्हारा कचूमर निकाल दिया था।

कञ्चन बरसना—खूब धन मिलना।

उ०—तुम्हारे घर रात-दिन कञ्चन बरसता है, परन्तु तुमसे इतना भी नहीं होता कि किसीकी सहायता ही कर दो।

गज़ब है मुफ़्लिसोंकी लक्ष्मी माता नहीं बनती।
टकेवालोंके घरपर रात-दिन कञ्चन बरसता है॥

कट जाना—लज्जित होना।

उ०—मोहन! कुछ कारण अवश्य है जो तुम यादवको देखते ही कट जाते हो।

कटे जाना—कुढ़ते रहना।

उ०—तुमको किसीकी हंसी दिल्लगी ही नहीं भाती; तुम बैठे-बैठे क्यों कटे जाते हो?

कटेपर नमक छिड़कना—दुःखितका जी दुखाना।

उ०—क्या भद्रता इसीका नाम है कि सान्त्वना देनेके बदले तुम कटेपर नमक छिड़कते हो?

कठपुतली बनना—दूसरोंके कहने-सुननेमें चलना।

उ०—हम जानते हैं तुम आजकल मोहनके हाथोंकी कठ-पुतली बने हुए हो।

कड़ककर बोलना—सक्रोध बोलना।

उ०—यह कहाँकी सभ्यता है कि सीधी-सादी बातपर भी इतना कड़ककर बोलते हो?

कड़ियाँ झेलना—दुःख सहना।

उ०—उसने लड़कीका विवाह ऐसे मूर्खके साथ किया है कि उसको यावज्जीवन कड़ियाँ झेलनी पड़ेंगी।

कण्टक निकलना—दुःख दूर होना।

उ०—धैर्य्यसे काम लो; किसी न किसी दिन शीघ्र तुम्हारा कण्टक अवश्य निकलेगा।

कण्टक निकलना—विघ्न दूर होना।

उ०—समझमें नहीं आता, क्या होना है; एक कण्टक निक-लता नहीं कि दूसरा उपस्थित हो जाता है।

कण्ठगत करना—खा लेना।

उ०—वैद्यजी, औषधि तो आपकी बड़ी लाभप्रद है, परन्तु इसको कण्ठगत करते हुए बड़ा जी मचलाता है।

कण्ठस्थ करना—जबानी याद करना।

उ०—जो विद्यार्थी ब्राह्मी बूटीका नियमानुकूल सेवन करता है, वह सुगमतासे अपना पाठ कण्ठस्थ कर लेता है।

कतर-ब्योंत करना—काट-छाँट करना; कमी करना।

उ०—तुम बड़े विचित्र जीव हो; भला आवश्यक बातोंमें भी कोई कतर-ब्योंत करता है ?

कतराके जाना—बचकर निकलना।

उ०—जबसे उसके साथ मेरा झगड़ा हुआ है वह सदा मुझसे कतराके जाता है।

था गैर भी साथ उनके कतराके गये मुझसे।
यह खैर हुई वरना झगड़ा ही हुआ होता॥

कदम बढ़ाना—चला जाना।

उ०—कुछ लेना हो ले लीजिये, वरना कदम बढ़ाइये।

कदम बढ़ाना—अग्रसर होना।

उ०—मैं इस मामलेमें कदम बढ़ाता तो हूँ, परन्तु तुम लोगों-को साथ देना होगा।

कदम बढ़ाना—तेज चलना।

उ०—इस चालसे वहाँ चार घण्टेमें भी नहीं पहुँच सकते; जरा कदम बढ़ाओ।

कनखियोंसे देखना—तिरछा देखना।

उ०—वह कभी-कभी तुम्हारी ओर कनखियोंसे देख लेता है।

इधर देख लेना उधर देख लेना।
कनखियोंसे उसको मगर देख लेना ॥

कन्धा लगाना—सहायता करना।

उ०—यह धार्मिक कार्य है, तुम भी कन्धा लगाओ।

कन्धा डालना—साहस छोड़ बैठना।

उ०—आधा कार्य समाप्त भी नहीं हुआ; तुमने अभीसे कन्धा डाल दिया।

कपड़ोंसे होना—स्त्रीका मासिकधर्मकी अवस्थामें रहना।

उ०—उसकी स्त्री भोजन नहीं बनाती क्योंकि वह आजकल कपड़ोंसे है।

कपड़े उतारना—ठगना।

उ०—तुम्हारी दुकानसे कोई सौदा लेकर क्या करे? तुम तो ग्राहकके कपड़े उतारते हो।

कपड़े उतारना—लूटना।

उ०—पहले इस सड़कपर एक लुटेरा रहता था जो पथिकोंको मारता और उनके कपड़े उतारता था।

कपाल-क्रिया करना—सिर फोड़ना।

उ०—यदि मुझसे अधिक अकड़ोगे, तो अभी तुम्हारी कपाल-क्रिया कर दूँगा।

कपास तौलना—मूर्ख होना।

उ०—काला अक्षर भैंस बराबर, तिसपर भी पण्डित बनते हो! और तुम्हारे विचारसे हम पढ़-लिखकर भी कपास ही तौलते हैं।

कपाट खुलना—ज्ञान उत्पन्न होना।

उ०—सूरदास अन्धे थे, परन्तु भजनके प्रतापसे उनके कपाट खुल गये थे।

कब्रमें पैर लटकाना—मरण-समय समीप होना।

उ०—उमराव खाँ! तुम कब्रसे पैर लटकाए हुए हो, फिर भी झूठ बोलना नहीं छोड़ते।

कमर बांधना } प्रस्तुत होना, तत्पर होना।
कमर कसना } कटिबद्ध होना।

उ०—(अ) तुमको लज्जा नहीं आती? ब्राह्मण होकर लूट-मारपर कमर बांधते हो।

(ब) परीक्षा समीप आ पहुँची, सावधान हो जाओ और परिश्रमपर कमर कसो।

'नसीम जागो, कमरको बाँधो, उठाओ बिस्तर कि रात कम है।

कमर सीधी करना—थकावट मिटाना; लेटना।

उ०—प्रातःकालसे फिरते-फिरते दोपहर हो गया है, जरा कमर सीधी कर दो।

कमर टूटना—निराश होना।

उ०—पुत्रके मरनेसे उसकी कमर टूट गयी।

कमर टूटना—उत्साहभङ्ग होना।

उ०—बार-बार असफल होनेसे उसकी कमर टूट गयी।

कमर तोड़ना—उत्साह हीन करना।

उ०—आपत्तियोंके अनवरत आनेसे मेरी कमर तोड़ दी।

कमर खोलना—कार्यकी समाप्तिपर विश्राम लेना।

उ०—किसान लोग बड़े सबेरे उठते हैं और रात्रिके दस बजे कमर खोलते हैं।

कमान हो जाना—झुक जाना।

उ०—शिवनाथ! यह क्या बात है कि तुम भरी जवानीमें ही कमान हो गये?

कम्बल डालना—कम्बल अथवा कोई कपड़ा डालकर अविदित रूपसे मारना।

उ०—यदि वह अपनी धूर्त्ततासे बाज न आए, तो किसी दिन उसके ऊपर कम्बल डालो।

करतार रूठना—भाग्य पोच पड़ना।

उ०—विमलाने कहा—"किसीका दोष नहीं है; आजकल मेरा करतार ही रूठ गया है।"

करते-धरते न बनना—असमर्थ होना।

उ०—पण्डितजी, जो कुछ करना है आप ही करें, उसके करते-धरते कुछ न बनेगा।

करवट न बदलना—स्वीकार न करना।

उ०—उसके पिताने बहुत कुछ समझाया, परन्तु उसने करवट न बदली।

करवटें बदलना—बिस्तरपर बेचैन रहना।

उ०—तुमको दूसरेका दुःख क्या मालूम? मैं दर्दसे रातभर करवटें बदलता रहा।

करवटें बदलना—परिवर्त्तन होना।

उ०—किसी वस्तुका सदा एक स्थितिमें रहना असम्भव है; संसार बराबर करवट बदलता रहता है।

दिन जो दुश्मनके फिरे मेरे भी फिरने चाहिएँ।
क्या ज़माना एक ही करवट बदलकर रह गया॥

करम फूटना—मन्दभागी होना।

उ०—सरलाने दुःखी होकर कहा—"मेरा करम उसी दिन फूट गया था जब मैं इस घरमें आई थी।"

करतल-तल कर करना—माँगना।

उ०—ईश्वर किसीको वह दिन न दिखाए कि करतल-तल कर करना पड़े।

कल पड़ना
कल पाना } चैन मिलना।

उ०—श्याम और यादव घनिष्ट मित्र हैं। न श्यामको यादवके देखे बिना कल पड़ती है, न यादव श्यामको देखे बिना कल पाता है।

कलमा पढ़ना—विश्वास रखना।

उ०—आजकल तो तुम भी उसका ही कलमा पढ़ते हो।

जपते हैं तेरी माला, पढ़ते हैं तेरा कलमा।
अय हुस्नके परमेसुर हमपर भी दया करना॥

कलमा पढ़ना—मुसलमान बनना।

उ०—दिल्लीकी जामे मसजिदमें कुछ ईसाइयोंने कलमा पढ़ा।

कलई खुलना—भेद प्रकट होना।

उ०—कहाँतक छिप-छिपकर बुराइयाँ करोगे? किसी न किसी दिन तुम्हारी सब कलई खुल जायगी।

कलई खोलना—गुप्त बुराइयाँ प्रकट करना।

उ०—अधिक अकड़ न दिखाओ; मैं तुम्हारी नस-नस पहचानता हूँ, सारी कलई खोल दूँगा।

कलेजा धक्-धक् होना—घबराहट होना।

उ०—आज न जाने क्यों मेरा कलेजा धक्-धक् हो रहा है?

कलेजा निकालकर धर देना—मर्मकी बात प्रकट करना; कठिन परिश्रम द्वारा कोई प्रशंसनीय बात उत्पन्न कर देना।

उ०—पढ़ाना-लिखाना क्या, मैंने अपना कलेजा निकाल कर रख दिया है।

नामेको मेरे पढ़ना जरा देख-भाल कर।
काग़ज़ पे रख दिया है कलेजा निकाल कर॥

कलेजा बढ़ना—प्रोत्साहित होना।

उ०—मित्र-मण्डलीके पीठपर होनेके कारण उसका कलेजा बढ़ गया है।

कलेजा रखना—साहस होना।

उ०—मुकाबिलेमें आओ यदि कुछ कलेजा रखते हो।

कलेजा खाना—बहुत तङ्ग करना।

उ०—तुम्हारा सब प्रबन्ध अभी हुआ जाता है, क्यों कलेजा खा रहे हो?

कलेजा ठण्डा होना—शान्ति मिलना।

उ०—जब अपनी आँखोंसे तुम्हारी दुर्दशा देख लूँगा, तब मेरा कलेजा ठण्डा होगा।

कलेजा थामना—कड़ा जी करना।

उ०—तुमको जो कुछ करना हो, जी खोलकर करो; हम कलेजा थामे हैं।

'कलेजा थाम लो हाथोंसे डरजाओगे कमसिन हो।'

कलेजा थामकर रह जाना—जी मसोसकर रह जाना।

उ०—जगदीशने जब परीक्षामें असफल होनेका समाचार सुना, तब बेचारा कलेजा थामकर रह गया।

रह गये लाखों कलेजा थामकर।
आँख जिस जानिब तुम्हारी उठ गई॥

कलेजा छलनी होना—चुभनेवाली बातोंसे जी दुखना, चोट पहुंचाना।

उ०—छज्जूराम! तुम छाज-सा मुँह लेकर यहाँ न फटका करो, तुम्हारी बातोंसे हमारा कलेजा छलनी हो गया है।

कलेजा फटना—बड़ा दुःख होना।

उ०—तुमको हँसी सूझती है, किसीका कलेजा फटा जाता है।

कलेजा मुँहको आना—जी घबराना।

उ०—तुम्हारी दुःखभरी कहानी सुनकर कलेजा मुँहको आता है।

कलेजा तर होना—बड़ी प्रसन्नता होना।

उ०—पाँचसौकी थैली अनायास ही मिल गई, आज तो तुम्हारा कलेजा तर हो गया।

कलेजा पसीजना—दया आना।

उ०—इस स्त्रीका रोना सुनकर मेरा कलेजा पसीज गया।

कलेजा निकालना—बहुत जी दुखाना।

उ०—अब उसकी अवस्थापर दया करो; क्यों उसका कलेजा निकालते हो?

कलेजा बांसों उछलना—अत्यधिक प्रसन्न होना।

उ०—अपने विवाहका समाचार सुनकर मोहनका कलेजा बाँसों उछल रहा है।

कलेजेमें छेद करना—बहुत जी दुखाना।

उ०—तुम्हारी बातोंने मेरे कलेजेमें छेद कर दिया है।

कलेजेसे लगाकर रखना
कलेजेमें बिठाना } अधिक प्रेम करना।

उ०—(अ) मैं जिसको कलेजेसे लगाकर रखता था, वह अब मेरा कलेजा खाता है।

(ब) आखिर उठा न ले गया! सब दण्ड-कमण्डल, और कलेजेमें बिठाओ उसको।

कलेजेपर हाथ धरना—अपने दिलसे पूछना।

उ०—मोहन! जरा कलेजेपर हाथ धरके कहो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या कुछ नहीं किया है।

कलेजेसे लगाना—प्रेम करना।

उ०—तेजपाल! जिसको तुम कभी कलेजेसे लगाते थे आज वह तुम्हारे कलेजेमें छेद करता है।

कलेजेको मसलना—दिलको चोट पहुंचाना।

उ०—यह कहांका न्याय है कि जो तुम्हें दिलसे प्रेम करता है, तुम उसके कलेजेको मसलते हो?

इलाही खैर कीजे आज दम रुक-रुकके चलता है।
कोई बैठा हुआ दिलमें कलेजेको मसलता है॥

कसर निकलना—दण्ड मिलना।

उ०—उनको करने दो जो कुछ करते हैं, एक दिन सब कसर निकल जायगी।

कसर निकालना—दण्ड देना, बदला लेना।

उ०—मैं काम धन्धेसे निपटारा पा लूँ, तो उसकी सब कसर निकालूँगा।

कसौटीपर कसना—जाँच-पड़ताल करना; परखना।

उ०—मैं उसे अनेक बार कसौटीपर कस चुका हूँ, वह विश्वास करने योग्य व्यक्ति है।

कहा-सुनी हो जाना—तकरार होना।

उ०—मैं माधवके साथ नहीं बोलता; एक दिन उससे मेरी कहा-सुनी हो गई थी।

कहींका न छोड़ना—नष्ट-भ्रष्ट कर देना।

उ०—तुम्हारी संगतिने सुखरामको कहींका न छोड़ा।

कांखमें कतरनी रखना—कपटसे हानि पहुँचाना।

उ०—वह देखनेमें बड़ा भोला-भाला जान पड़ता है, परन्तु कांखमें कतरनी रखता है।

कागज काले करना—व्यर्थ लिखना।

उ०—इस पुस्तकमें मुझे तो कोई कामकी बात मिली नहीं, केवल कागज काले कर रखे हैं।

कागज पूरे होना—जीवन समाप्त होना।

उ०—न जाने उस पापीके कागज कब पूरे होंगे?

कागज गुम होना—मृत्यु न आना।

उ०—अच्छे-अच्छे आदमी तो संसारसे उठते जा रहे हैं; इस दुष्टके कागज कहाँ गुम हो गये?

कागजी घोड़े दौड़ाना—व्यवहारमें कुछ लाना, केवल समाचार फैलाना।

उ०—भारतमें आजकल ढोंगका प्राबल्य है, केवल कागजी घोड़े दौड़ाये जाते हैं।

कागरौल करना—कौवोंकी भांति कोलाहल करना।

उ०—क्या तुम लोगोंको कुछ काम नहीं है जो यहाँ दो घंटेसे कागरौल कर रहे हो?

कांटा-सा खटकना—बहुत अखरना।

उ०—मैंने वह भोजनालय इसलिये छोड़ दिया कि वहाँ मेरा भोजन करना भी उन दुष्टोंके दिलमें कांटा-सा खटकता था।

कांटे बोना—हानि पहुँचाना।

उ०—उसने तुम्हारे लिए जो कुछ किया है सबको विदित है, और तुम उसके लिये सदा कांटे बोते रहते हो।

कांटेसे कांटा निकालना—शत्रु द्वारा शत्रुका नाश करना।

उ०—तुम देखोगे कि मैं स्वयं अलग रहकर किस प्रकार कांटेसे कांटा निकालता हूँ।

कांटोंपर पाव रखना—दुःखप्रद स्थितिमें पड़ना।

उ०—शत्रुओंकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ रही है, इसलिये अब तुम यहां कांटों पर पांव न रखो।

कांटोंपर लोटना—कठिन दुःख भोगना।

उ०—कौन जानता है कि जो आज चैनकी बंशी बजा रहा है, कल उसे कांटोंपर लोटना पड़े ?

रखते न थे चमनमें जो पाँव फर्शे गुल पर।
तेरी गलीमें अब वो काँटो पे लोटते हैं॥

कांटोंकी शय्यापर सोना—दुःखमय जीवन बिताना।

उ०—तुम्हारी मित्रताको लेकर क्या करूँ ? तुम गुलछर्रे उड़ाते हो और मैं कांटोंकी शय्यापर सोता हूँ।

कांटोंमें हाथ पड़ना—विपत्तिमें फँसना।

उ०—यदि देखभालकर पांव रखते, तो कांटोंमें हाथ क्यों पड़ता ?

काँटोंमें घसीटना—लज्जित करना।

उ०—जो कुछ बात है मैं समझता हूँ। आप मुझे काँटोंमें क्यों घसीटते हैं?

काटपर रहना—विरुद्ध रहना।

उ०—कुछ न कुछ कारण तो अवश्य है जो वह सदा तुम्हारी काटपर रहता है।

काट-कूटमें रहना—अनिष्ट करना।

उ०—मोहन! तुम सदा दूसरोंकी काट-कूटमें क्यों रहते हो?

काट करना—विरोध करना।

उ०—मैंने उसको कितनी ही बार देखा है, वह सदा मेरी काट करता है।

काट-छाँट करना—भाँजी मारना; रुकावट डालना।

उ०—यदि रामपाल काट-छाँट न करता, तो तुम्हारा काम अवश्य बन जाता।

काट खानेको दौड़ना—चिड़चिड़ेपनसे बोलना।

उ०—वह बड़ा विचित्र जन्तु है; यदि उससे बात कीजिये तो काट खानेको दौड़ता है।

काट खानेको दौड़ना—अत्यन्त भयानक प्रतीत होना।

उ०—रामके चले जानेपर अयोध्या नगरी काट खानेको दौड़ती थी :

काट खानेको दौड़ता है घर।
सगे-दीवाना बन गया है घर॥

काटेका मन्त्र न होना—अत्यन्त भयानक एवं हानिप्रद होना।

उ०—मोहन! रामशरणसे सावधान रहना, उसके काटेका मन्त्र नहीं है।

काटो तो बदनमें खून न होना—अत्यन्त भयभीत होना।

उ०—सशस्त्र डाकुओंके दलको देखकर अमरनाथकी वह हालत थी कि काटो तो बदनमें खून नहीं।

काठमें पांव ठोकना—बन्दी करना।

उ०—यदि तुम मुवाफीदार साहबके गाँवमें राजनीतिक व्याख्यान दोगे, तो वे तुम्हारा काठमें पाँव ठोक देंगे।

कानपर जूँ न भरना—ध्यान न देना।

उ०—तुमको रात-दिन समझाता हूँ, पर तुम्हारे कानपर जूँ नहीं चलती।

कान भरना—पिशुनता करना।

उ०—तुम्हारी वहां कौन सुननेवाला था? तुम्हारे विरुद्ध उस दुष्टने लालाजीके कान भर दिये होंगे।

कान पकड़ना—किसी बुरे कामको फिर न करनेका प्रण करना।

उ०—मोहनने कहा—"मैं आज कान पकड़ता हूँ कि अबसे किसीके झगड़ेमें न पड़ूंगा।"

कान देना—ध्यानपूर्वक सुनना।

उ०—तुम्हारा लड़का इतना ढीठ हो गया है कि गुरुकी बातोंपर भी कभी कान नहीं देता।

कान काटना—बड़ी चालाकी करना, धोखा देना।

उ०—कल्याणको आप निरा बालक न समझिये; वह अच्छे अच्छोंका कान काटता है।

कान न होना—न लगना, ग्रहण न करना।

उ०—आप कितनी ही अच्छी-अच्छी बातें सुनाइये, उसको एक भी कान न होगी।

कान होना—केवल सुननेसे विश्वास कर लेना।

उ०—यह बात प्रायः सत्य ही है कि बड़े आदमियोंके कान होते हैं, आँखें नहीं होतीं।

कान खड़े होना—चौंकना; सावधान होना।

उ०—उसकी गोलमाल बातें सुनकर मेरे भी कान खड़े हो गये।

कान खुलना—सावधान होना; होश आना।

उ०—कृष्ण! इतनी हानि उठानेपर भी यदि तुम्हारे कान खुल गये तो गनीमत है।

कान खोलना—सावधान करना।

उ०—रामगोपाल! मैंने पहले ही तुम्हारे कान खोल दिये थे कि इस मामिलेमें बदनामी अवश्य होगी।

कानमें पड़ना—सुननेमें आना।

उ०—यह बात तो मेरे कानमें भी पड़ी थी, परन्तु मैं इसका अभिप्राय नहीं समझा था।

कान पड़ा शब्द सुनाई न देना—बड़ा कोलाहल होना।

उ०—ऐसे स्थानपर पढ़ना-लिखना बड़ा कठिन है; यहाँ तो कान पड़ा शब्द सुनाई नहीं देता।

कान खाना—कोलाहल करना।

उ०—तुमसे चुप-चाप नहीं बैठा जाता? तुम लोग दो घण्टे-से कान खा रहे हो।

कान धरकर सुनना—बड़े ध्यानसे सुनना।

उ०—जगदीश बड़ा अच्छा लड़का है; वह अपने मित्रोंकी बातें कान धरकर सुनता है।

कानमें डाल देना—सुना देना।

उ०—और सब कुछ तो कहोगे ही, जरा इतना उनके कानमें और डाल देना कि मेरा आना कल न हो सकेगा।

कानतक पहुँचना—सुननेमें आना।

उ०—जरा हमारी प्राथना भी पण्डितजीके कानतक पहुँचा देना।

हजार नाला मेरा आसमानतक पहुँचे।
नहीं उमीद कभी उसके कानतक पहुँचे॥

कानके कीड़े मर जाना—सुननेमें अत्यन्त कटु प्रतीत होना।

उ०—उसकी बातें सुनते-सुनते मेरे कानके कीड़े मर गये।

कान खींचना
कान कसना }—दण्ड देना

उ०—जबसे पुलिसने इन लोगोंके कान खींच दिये हैं, ये सब ठीक हो गये हैं।

कान मूँद बैठना—सुननेकी इच्छा न करना।

उ०—तुमसे कभी अपनी रामकहानी कह दिया करते थे, सो तुम भी कान मूँद बैठे।

कान बजना—बिना शब्दके शब्द प्रतीत होना।

उ०—यहां तो किसीने कुछ भी नहीं कहा; क्या तुम्हारे कान बजते हैं?

कानमें फूँकना—चुपकेसे सुना देना।

उ०—तुमने न जाने उसके कानमें क्या फूँका कि वह हमसे बिफर गया।

कान पक जाना—सुननेसे अरुचि हो जाना।

उ०—उसके उलाहनोंसे मेरे कान पक गये।

काना-फूसी करना—कानमें धीरे-धीरे भेदकी बात कहना।

उ०—यादव! तुम कुछ पढ़ते-लिखते भी हो या सदा काना-फूसी ही करते रहते हो?

कानी कौड़ी पास न होना—नितान्त निर्धन होना।

उ०—ये डींग तो मारते हैं दुनिया भरकी, और कानी कौड़ी पास नहीं है।

कानूनी शिकञ्जेमें खींचना—अभियोग चलाना।

उ०—जहां मैंने उसको कानूनी शिकञ्जेमें खींचा कि वह सीधा हुआ।

कानेको काना कहना—अप्रिय सत्य बोलना।

उ०—बात ठीक है, परन्तु कानेको काना कहना भी तो उचित नहीं।

कानोंको न लगना—विश्वास न आना।

उ०—यही बात मैंने भी सुनी थी, परन्तु मेरे कानोंको नहीं लगी।

कानोंपर हाथ धरना—अपरिचित बन जाना।

उ०—मैं उनके पास जाकर क्या करूँगा? अब तो वे मेरे नामसे कानोंपर हाथ धरते हैं।

घर किया था दिलमें 'इन्शा' के जिन्होंने वाह वा!
धर गये वो आज दोनों हाथ अपने कानपर॥

'इन्शा'

कानोंपर हाथ रखना—आश्चर्य प्रकट करना।

उ०—जब गिद्धने कहा कि बिड़ाल जाति मांस-भक्षण करती है, तो बिड़ालने कानोंपर हाथ रख लिये।

कानोंमें तेल डालना—सुननेकी इच्छा न करना।

उ०—तुम उसके पास मुझे अपनी राम-कहानी सुनानेके लिये भेजते हो; वह कानोंमें तेल डाले बैठा है।

कानों-कान खबर न होना—बिल्कुल गुप्त रहना।

उ०—ठाकुर साहब! आप चिन्ता न करें; इस बातकी किसी-को कानों-कान खबर न होगी।

काफिया तङ्ग होना—विवश होना।

उ०—जब तुम प्रश्नोंकी झड़ी लगा देते हो, तब उसका काफिया तङ्ग हो जाता है।

काफूर होना—भाग जाना, गायब हो जाना।

उ०—उसने विदेशमें इतना धन कमाया कि थोड़े दिनोंमें ही घरकी गरीबी काफूर हो गई।

काम कर जाना—प्रभाव डालना।

उ०—स्वामीजी! आपका उपदेश काम कर गया; उसने फिर कभी अपने पिताका सामना नहीं किया।

काम न देना—बेकार हो जाना।

उ०—बुढ़ापेमें मनुष्यके हाथ-पांव तक काम नहीं देते।

काम छत्तीस होना—प्रयोजन सिद्ध होना।

उ०—तुम मोहनलालके पास जाओ; ईश्वरकी कृपासे तुम्हारा सब काम छत्तीस हो जायगा।

काम आना—मारा जाना।

उ०—योरोपीय महासमरमें संसारके अनेक वीर काम आये।

काम निकालना—अभीष्ट सिद्ध करना।

उ०—तुमको किसीके बुरे-भलेसे क्या लेना? तुम अपना काम निकाल लो।

काम तमाम करना—मार डालना।

उ०—उस वीरने तलवारके एक हाथमें ही शत्रुका काम तमाम कर दिया।

उलटी हो गयीं सब तदबीरें कुछ न दवाने काम किया।
देखा इस बीमारियेदिलने आखिर काम तमाम किया॥

कायँ कायँ लगाए रखना—कलह करना।

उ०—मैं तुम्हारे घर इसलिये आना नहीं चाहता हूँ कि तुम-लोग दिनभर कायँ-कायँ लगाये रखते हो।

काया-पलट होना—बड़ा परिवर्त्तन होना।

उ०—देखते-देखते देशकी काया पलट होगई।

कारी लगना—गहरी चोट पहुँचाना।

उ०—वधिकका एक ही बाण मृगके ऐसा कारी लगा कि वह धाराशायी होगया।

काल-चक्रमें पड़ना—आपत्तिमें फँसना।

उ०—गोपालका भाई दो सालसे काल-चक्रमें पड़ा हुआ है।

कालकवलित होना—मर जाना।

उ०—पण्डित छज्जूराम गतवर्ष काशीमें काल-कवलित हो गये।

काला अक्षर भैंस बराबर होना—कोरा मूर्ख होना।

उ०—यह सब जानते हैं कि तुमको काला अक्षर भैंस बरा-बर है, तिसपर भी तुम अपनेको पण्डित समझते हो।

कालिख लगना—कलङ्कित होना।

उ०—यदि उन लोगोंमें बैठना उठना न छोड़ोगे, तो एक दिन तुमको कालिख अवश्य लगेगी।

किंकर्त्तव्य विमूढ़ होना—कर्त्तव्य न सूझना।

उ०—पीछे चलनेवालोंका क्या दोष है जब नेता ही किंक-र्त्तव्यविमूढ़ हो गया है?

किनारा करना—अलग होना।

उ०—सम्पत्तिमें अनेक मित्र बन जाते हैं, विपत्तिमें सब किनारा कर जाते हैं।

किनारे लगना—पूर्ण होना; समाप्त होना।

उ०—आप धैर्य्य रखिये; सब कार्य अब किनारे लगा।

किनारे लगाना—पार उतारना; कार्य करना।

उ०—हमारा बेड़ा मझधारमें पड़ा हुआ है; इसे आप ही किनारे लगायेंगे।

किनारे लगाना—समाप्त करना।

उ०—जगदीशकी भली चलाई; बाप-दादाकी कमाई सब खा-पीकर किनारे लगाई।

किनारे हो जाना—मार्ग छोड़ देना।

उ०—मारकण्डेय! गाड़ी आ रही है, झटसे किनारे हो जाओ।

हम जो रोनेपर उतारे हो गये।
हटके सब दरिया किनारे हो गये॥

किया आगे आना—कर्मका फल मिलना।

उ०—घबराओ नहीं, तुम्हारा किया तुम्हारे आगे आयगा।

किया-कराया बराबर करना—सब परिश्रम नष्ट कर देना।

उ०—मैं तीन दिनसे इस कार्यमें लगा हुआ था; उसने आकर सब किया-कराया बराबर कर दिया।

किरकिरा होना—बिगड़ जाना।

उ०—रामके न होनेसे आजके प्रीति-भोजका सब आनन्द किरकिरा हो गया।

किरकिरी होना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—वह बहुत दिनोंसे उछलता-कूदता फिरा करता था, आज उसकी सब किरकिरी हो गई।

किवाड़ खुलना—किसी गरीबका विवाह होना।

उ०—परमात्माकी दयासे आज मातादीनके किवाड़ खुल जायंगे।

किस चक्कीका पीसा खाना—बहुत मोटा होना।

उ०—सेठ माठूमल तीन आदमियोंकी जगह अकेले घेरकर बैठते हैं; न जाने किस चक्कीका पीसा खाते हैं।

किस नींद सोना—असावधान रहना।

उ०—शारदा-ऐक्टके होते हुए भी अनेक बाल-विवाह होते रहते हैं; न जाने भारत-निवासी किस नींद सो रहे हैं?

किस्मत लड़ना—भाग्य अनुकूल होना।

उ०—अपना-सा प्रयत्न तो सभी कर रहे हैं, पर देखिये किसको किस्मत लड़ती है।

लिया है बोसए-क़ातिल लिपट कर।
लड़ा दी जान तब क़िस्मत लड़ी है॥

किस्मत फूटना—भाग्य मन्द पड़ना।

उ०—जिसका तुम्हारे साथ सम्बन्ध जुड़ता है, उसकी किस्मत फूट जाती है।

किस्मत खुलना—अच्छे दिन आना।

उ०—अभी तो सब कारबार बन्द पड़ा है; देखिये कब किस्मत खुलती है?

किस्सा खतम होना
किस्सा तमाम होना } झगड़ा मिटना।

उ०—चलो, मेरा ही दोष सही, अब यह किस्सा खतम होने दो।

किस्सा तमाम करना—झगड़ा मिटाना

उ०—आज दो घंटे तो अवश्य लग गये, पर मैंने भी किस्सा तमाम करके ही छोड़ा।

किसी गिनतीमें न होना—कुछ महत्व न रखना।

उ०—उसका साथ देनेवाला एक कृष्णकुमार है, सो वह किसी गिनतीमें नहीं है।

कीच उछालना—नीचता करना।

उ०—मैं उससे भली भाँति परिचित हूं; वह जहाँ बैठेगा वहीं कीच उछालेगा।

कीचमें पत्थर फेंकना—नीच व्यक्तिको छेड़ना।

उ०—मधुसूदनके स्वभावको जानते हुए भी तुम कीचमें पत्थर फेंकते हो।

कील-कांटेसे ठीक होना—ठिकानेसे वस्त्रादि पहनना।

उ०—जबतक वह कील-काँटेसे ठीक होता है, तुम भोजन कर लो।

कुछ भी न समझना—ध्यानमें न लाना; आरंगमें न लाना।

उ०—तुमने उसे आसमानपर चढ़ा रखा है, पर वह तुम्हें कुछ भी नहीं समझता है।

कुछका कुछ समझ लेना—यथार्थ अभिप्राय न समझना।

उ०—उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं है, इसलिये वह कुछ-का-कुछ समझ लेता है।

कुटिल नीतिका अवलम्बन करना—गहरी चाल चलना।

उ०—मैं तुमसे कह चुका हूं कि उस दुष्टके साथ तुम भी कुटिल नीतिका अवलम्बन करो।

कुण्ठित छुरीसे गला रेतना—बड़ी हानि पहुँचाना।

उ०—उसके हृदयमें दया कहाँ? वह तो रात-दिन गरीबोंका गला कुण्ठित छुरीसे रेतता है।

कुतार होना—काम बिगड़ना।

उ०—तुमको हँसी सूझ रही है, हमारा कुतार हो गया।

कुत्ता काटना—पागल होना।

उ०—मैं किसीके झगड़ेमें क्यों पड़ूं? क्या मुझे कुत्तेने काटा है?

कुत्तेकी मौत मरना—बड़ी दुर्दशा होकर देहान्त होना।

उ०—उसने ऐसे-ऐसे अनर्थ किये कि वह कुत्तेकी मौत मरेगा।

कुत्तेकी नींद सोना—अचेत होकर न सोना।

उ०—रामगोपाल सदा कुत्तेकी नींद सोता है।

कुन्दी करना—बहुत पीटना।

उ०—सरलाने आज अपने पुत्रकी कुन्दी कर डाली है।

कुरसी देना—आदर करना।

उ०—रामदास अब साधारण व्यक्ति नहीं रहा है; उसको बड़े-बड़े आदमी कुरसी देते हैं।

कुराड़ा पिटना—भयंकर हानि होना।

उ०—गत वर्ष समयपर वर्षा नहीं हुई, इसलिये खेतीका कुराड़ा पिट गया।

कुराड़ा पीटना—बड़ी भारी हानि पहुँचाना।

उ०—रामदयाल कहींका भी न रहा; कल चोरोंने उसका कुराड़ा पीट दिया।

कुलबुला उठना—घबरा जाना—

उ०—श्याम! धैर्य्य धारण करो; तुम तो जरासे कष्टसे कुलबुला उठते हो।

कुल्हियामें गुड़ फोड़ना—गुप्त रूपसे कार्य करना।

उ०—मुझे क्या पता था कि तुमलोग कुल्हियामें गुड़ फोड़ोगे?

कुएंमें भङ्ग पड़ना—सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—कार्य बिगड़ना आश्चर्यकी बात नहीं है जब कि तुम्हारे यहाँ कुएँमें भङ्ग पड़ी हुई है।

कुएं-पोखर ढूंढ़ना—बहुत खोज करना।

उ०—उसका कहीं भी कुछ पता नहीं चला; मैंने सब कुएँ पोखर ढूँढ़ डाले।

कूच बोलना—चल देना।

उ०—दो-तीन दिन सहारनपुर ठहरकर सेनाने मेरठको कूच बोल दिया।

कूजेमें दरिया भरना—विस्तृत वर्णनको संक्षिप्त करके लिखना।

उ०—उस पुस्तकको पढ़ोगे तो मालूम होगा कि लेखकने कूजेमें दरिया भर दिया है।

कूट कूटकर भरना—आधिक्य होना।

उ०—सोहनमें, सच पूछिये तो, झूठ कूट-कूट कर भरा हुआ है।

कूड़ेपर फुलेल डालना—कृतघ्नके साथ उपकार करना।

उ०—उसके लिए धन और समय खोकर पता चला कि मैंने कूड़ेपर फुलेल डाला है।

कूद कूदना—(व्यङ्गमें) बड़ा भारी कार्य करना।

उ०—दूसरोंको क्या कहते हो? तुम्हारा भी अवसर आ रहा है, देखेंगे तुम कौनसी कूद कूदोगे।

कूप-मण्डूक बनना—अपने अल्प ज्ञानपर अकड़ना एवं अधिक जाननेकी चेष्टा न करना।

उ०—घरसे बाहर कभी निकले नहीं, तुम लोग तो कूपमण्डूक बने हुए हैं।

केंचुली बदलना—शारीरिक अवस्थामें अच्छा परिवर्तन होना।

उ०—इस बार तो मनसब रायकी केंचुली बदल गई है।

कैंडा बदलना—ढंग परिवर्तित करना।

उ०—वह बड़ा चालाक आदमी है; उसके साथ तुमको भी कैंडा बदलना पड़ेगा।

कैंडेपर लाना—ढंगपर लाना।

उ०—आप चिन्ता न करें; मैं थोड़े दिनोंमें ही उसको अपने कैंडेपर ले आऊँगा।

कैंडेपर आना—अनुकूल होना।

उ०—मैं प्रयत्न कर रहा हूँ, किसी-न-किसी दिन, आशा है, वह कैंड़ेपर आ जायगा।

कोई दमका मेहमान होना—मरणासन्न होना।

उ०—अब चिकित्सासे कुछ लाभ नहीं; वह तो कोई दमका मेहमान हो रहा है।

कोख उजड़ना—सन्तान मर जाना।

उ०—गत वर्ष उस बेचाराका सुहाग लुट गया था; आज उसकी कोख भी उजड़ गई।

कोख खुलना—प्रथम सन्तान होना।

उ०—परमात्माकी असीम कृपासे आज सरलाकी कोख खुली है।

कोदों देकर पढ़ना—भलीभाँति पढ़ना-लिखना न जानना।

उ०—तुमसे यह साधारण चिट्ठी भी नहीं पढ़ी जाती; क्या कोदों देकर पढ़े हो ?

कोरट होना—बड़ी भारी हानि पहुंचना।

उ०—गत वर्ष तो कुछ लाभ हो भी गया था; परन्तु इस बार तो हमारा कोरट हो गया।

कोरट करना—बरबाद कर देना।

उ०—तुमने इस बार उसका कोरट कर दिया।

कोर दबना—लचना।

उ०—रामलालको बुलाओ; उससे ही अमरनाथकी कोर दबती है।

कोरा टालना—कुछ भी न देना।

उ०—मैं उसके सामने हाथ फैलाकर लज्जित नहीं होता चाहता हूँ; मुझे विश्वास है कि वह मुझे कोरा टालेगा।

कोरा रखना—कुछ न सिखाना।

उ०—मास्टर साहब ! आपके पास दो सालतक हमारा लड़का रहा, परन्तु आपने उसे कोरा ही रखा।

कोरा रह जाना—कुछ भी न मिलना।

उ०—तुमको तो थोड़ा-बहुत मिल भी गया, परन्तु हम तो कोरे ही रह गये।

कोरा जवाब देना—निराशा-जनक उत्तर देना।

उ०—मैं पहले ही उससे सवाल करना नहीं चाहता था; देख लिया, उसने कोरा जवाब दे दिया।

कोरी पटियापर लिखना—नवीन कार्य आरम्भ करना।

उ०—सुधार करनेवाले पूर्वारंभ कार्यको छोड़कर प्रायः कोरी पटियापर लिखते हैं।

कोरी-कोरी सुनाना—खूब डाँट बताना।

उ०—सीतारामने रामनारायणको बुरा-भला कहा, रामनारायणने भी सीतारामको कोरी-कोरी सुनाई।

कोसों दूर रहना—कुछ प्रयोजन न रखना।

उ०—मैं ऐसे झगड़ोंसे सदा कोसों दूर रहता हूं।

कोसों दूर भागना—अरुचि होना, घृणा करना।

उ०—(अ) रामदेव भङ्ग-पानसे कोसों दूर भागता है।

(ब) मैं उसके पास किसलिये जाऊँ जब कि वह मुझसे कोसों दूर भागता है?

कौड़ीको भी न पूछना—निकम्मा समझा जाना।

उ०—घरमें बैठे भले ही धन्ना सेठ बनो, बाहर तुमको कोई कौड़ीको भी नहीं पूछता है।

कौड़ी कामका भी न होना—किसी अर्थका भी न होना।

उ०—इन फलोंको लेकर मैं क्या करूँगा? ये तो कौड़ी कामके भी नहीं हैं।

कौड़ीके तीन-तीन होना—दुर्दशा होना; बहुत ही सस्ता होना।

उ०—आम अभी चले ही हैं, इसलिये महंगे बिकते हैं; दस दिनके बाद कौड़ीके तीन-तीन हो जायंगे।

कौड़ी-कौड़ीको मोहताज होना—रुपये-पैसेसे बहुत तंग होना।

उ०—जबतक उसका पिता जीवित रहा, उसने खूब मौज उड़ाई; अब वह कौड़ी-कौड़ीको मोहताज हो गया है।

कौड़ियोंके मोल लेना—बहुत ही सस्ता खरीदना।

उ०—इन पुस्तकोंको मुझे बेच दो। मैं अच्छे दाम देता हूँ; तुमने तो कौड़ियोंके मोल ली है।

कौवे बोलना—उजाड़ होना।

उ०—जहां कल अनेक प्रकारके राग-रंग हो रहे थे, आज वहां कौवे बोल रहे हैं।

पांचों नौबत बाजती, होत छतीसों राग।
सो मन्दिर खाली पड़ा बोलन लागे काग॥

क्या पड़ना—क्या प्रयोजन होना।

उ०—लेनेमें न देनेमें, भला मुझे क्या पड़ी है कि वहां जाऊँ?

रिन्दे-ख़राब-हालको ज़ाहिद न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू॥

क्या मुँह दिखाना—क्या उत्तर देना।

उ०—रामने कहा—"लक्ष्मणको खोकर अयोध्याको किस प्रकार लौटूंगा और सुमित्राको क्या मुँह दिखाऊंगा?"

कृपा-पात्र बनना—कृपाका अधिकारी होना।

उ०—परमात्माकी कृपा अवश्य होगी; तुम कृपा-पात्र तो बनो।

क्रोध थूकना—शान्त हो जाना।

उ०—पण्डितजी, उसको बकने दीजिये, वह मूर्ख है; आप क्रोध थूक दीजिये।

क्रोध पी जाना—गुस्सेको दबाना।

उ०—आज वह इसलिये बच गया कि मैं गुरुजीकी उपस्थितिके कारण क्रोध पी गया।

क्रोध-भाजन बनना—अपने ऊपर क्रोध कराना।

उ०—तुम जानते हो कि वह बड़ा विकट व्यक्ति है; फिर तुम उसके क्रोध-भाजन क्यों बनते हो?

क्षीर-शर्करा होना—अत्यन्त घनिष्ठ मेल होना।

उ०—राम और श्यामकी कुछ न पूछो; वे तो आजकल क्षीर-शर्करा हो रहे हैं।

———

(ख)

खचाखच भरना—बहुत भीड़ होना।

उ०—माघ मेलेके कारण आज गाड़ी खचाखच भरी हुई है।

खट-पट होना—लड़ाई-झगड़ा होना।

उ०—आज उमराव और शिवनाथमें कुछ खटपट हो गई है।

जब कि दो मूज़ियोमें हो खट-पट।
अपने बचनेकी फ़िक्र कर झटपट॥

खटका लगा रहना—भय बना रहना।

उ०—यह स्थान सुरक्षित नहीं है; यहाँ कुछ न कुछ खटका लगा ही रहता है।

लगा रहता था हमको हर घड़ी सैयादका खटका।
क़फ़समें भी न की दिल खोलकर आहो-फ़ुग़ाँ हमने॥
'दिनकर'

खटाईमें पड़ना—कुछ निश्चय न होना, झमेलेमें पड़ना।

उ०—देखिये क्या निर्णय होता है; अभी तो मामिला खटाईमें पड़ा हुआ है।

खटाईमें डालना—झमेलेमें डालना, बड़ा विलम्ब करना।

उ०—कितने ही दिनों बाद तो तुमको एक काम सौंपा; तुमने तो उसे भी खटाईमें डाल दिया।

खट्टा खाना—असन्तुष्ट होना।

उ०—मैंने तुमको कहा क्या ? तुम तो ज़रा-सी बातपर खट्टा खा जाते हो ।

खड़े-खड़े बुलाना—बहुत थोड़ी देरके लिये बुलाना ।

उ०—पण्डितजी ! आपको पिताजीने खड़े-खड़े बुलाया है; कोई आवश्यक कार्य है ।

खप जाना—बरबाद होना ।

उ०—इस स्त्रीके प्रेममें अनेक व्यक्ति खप गये, परन्तु यह किसीकी न हुई ।

खबर लेना—दण्ड देना ।

उ०—मैं आपको वचन देता हूँ कि उस दुष्टकी बहुत जल्दी खबर लूँगा ।

खम ठोकना—लड़नेको प्रस्तुत होना ।

उ०—खाली खम ही ठोकते हो या कुछ दम भी रखते हो ?

खयाली घोड़े दौड़ाना—मन-मानी कल्पनाएँ करना ।

उ०—शिवशम्भू शर्मा खटियापर लम्बी ताने खयाली घोड़े दौड़ा रहे थे ।

खयाली पुलाव पकाना—केवल कल्पना करना ।

उ०—नारायण ! कुछ परिश्रम भी करते हो या खाली खयाली पुलाव पकाते रहते हो ?

खरी-खरी सुनाना—स्पष्ट बात कहना ।

उ०—मैं किसीसे डरनेवाला नहीं हूँ; मैं सदा खरी-खरी सुनाता हूँ।

खरी-खोटी सुनाना—बुरा-भला कहना।

उ०—यदि तुम उससे छेड़-छाड़ करोगे; तो वह भी तुमको खरी-खोटी सुनायेगा।

खरीदारकी आँख देखना—मूल्यका अनुमान लगाना।

उ०—अभीसे क्या कह सकता हूँ कि इसका कितना रुपया मिलेगा; पहले खरीदारकी आँख तो देख लूँ।

खलबली मचना—आतङ्क छाना।

उ०—डाकुओंके आक्रमणसे समस्त नगरमें खलबली मची हुई है।

खली-गुड़ एक भाव करना—भले-बुरेका अन्तर न रखना।

उ०—जहाँ लोग खली गुड़ एक भाव करते हैं, वह स्थान विद्वान्के रहने योग्य नहीं है।

खाक भी न होना—कुछ भी न कर सकना।

उ०—रामचरण, तुम जानते हो कि जो लोग डींग मारा करते हैं, उनसे खाक भी नहीं होता।

खाक फाँकना—बहुत झूठ बोलना।

उ०—उसको और काम ही क्या है? दिनभर खाक फाँकता रहता है।

खाक छानना—भटकना।

उ०—हीरके प्रेममें राँझा जङ्गलों और पहाड़ोंकी खाक छानता फिरता था।

खाक डालना—दबाना, छिपाना।

उ०—जो हुआ सो हुआ, अब इस झगड़ेपर खाक डालो।

खाकमें मिलाना—बरबाद करना।

उ०—उसने अपने कुलकी मर्यादाको खाकमें मिला दिया।

'फ़लक ग़रूर न कर ख़ाकमें मिलाके मुझे।'

खाकमें मिलना—नष्ट होना।

उ०—जो देशके लिये खाकमें मिल गये, आज खेद है, उनका कोई नाम तक नहीं जानता।

'मिल गये खाकमें हम तुमको ख़बर ख़ाक नहीं।'

खाक बरसना—बेरौनकी होना; उजाड़ होना।

उ०—समयकी विचित्र गति है; जो स्थान कल आमोद-प्रमोदका केन्द्र बना हुआ था, वहाँ आज खाक बरस रही है।

खाक उड़ाना—शोक करना।

उ०—मित्रकी मृत्युपर मधुसूदन खाक उड़ा रहा है।

फ़ातहा देंगे न पानी पे भी दो रोज़के बाद।
ता-हरे-गोर हैं जो ख़ाक उड़ाते आये॥

खाकर डकार न लेना—चुपचाप दबा लेना।

उ०—जिसकी दिनरात प्रशंसा करते रहते हो, वह दूसरोंका माल खाकर डकार भी नहीं लेता।

खांड़ेकी धारपर चलना—महा कठिन कार्य करना।

उ०—किसीसे प्रेम करना खाँड़ेकी धारपर चलना है।

खानेको दौड़ना—प्रकुपित होना।

उ०—यह कहाँकी सभ्यता है कि जब तुमसे कोई बात करता है, तो तुम खानेको दौड़ते हो?

खार खाना—द्वेष रखना; कुढ़ना।

उ०—यदि वह दूसरोंके पास उठता बैठता है, तो तुम खार क्यों खाते हो?

खार खाना—चोट सहना।

उ०—लैलाके प्रेममें मजनूंने खार खाया।

'किसी गुलफ़ामकी उलफ़तमें खाए खार बैठे हैं।'

खिंच बैठना } मनमुटाव हो जाना।
खिंच जाना }

उ०—तुम तो हमसे जरासी बातपर खिंच बैठे।

कुछ उनकी शिकायत है हमको न उदू की है।
वो हमसे जो खिंच बैठे क़िस्मतकी ये खूबी है॥

खिचड़ी पकाना—गुप्तरूपसे षड्यंत्र रचना।

उ०—अमरनाथ और जगदीश दो दिनसे कुछ खिचड़ी पका रहे हैं।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना—अति कोमलाङ्ग होना।

उ०—प्रेमनाथका खिचड़ी खाते तो पहुँचा उतरता है, भला वह पाँच मीलकी चढ़ाई कैसे चढ़ेगा?

खिंचा रहना—वैमनस्य रखना।

उ०—मैं उनके घर नहीं जाना चाहता, क्योंकि वे आजकल मुझसे कुछ खिंचे रहते हैं।

खिल उठना—प्रसन्न होना।

उ०—ईश्वरदत्त गजटमें अपना नाम देखकर खिला उठा।

खिलखिलाकर हंसना—जोरसे हँसना।

उ०—जब कभी उनके सामने मैं अपना दुःख रोता हूँ, तो वे खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं।

खिसक जाना—चुप-चाप चल देना।

उ०—जबतक भाषण होता रहा, सब बैठे सुनते रहे और जब चन्देको अपील की गयी, तो अनेक लोग खिसक गये।

खिसिया जाना—असन्तुष्ट हो जाना।

उ०—जो जरा-सी बातपर खिसिया जाता है, मैं ऐसे आदमीसे हँसी-दिल्लगी नहीं करना चाहता।

खींच-तान होना—वैमनस्य होना।

उ०—इस गाँवके ब्राह्मणोंमें कुछ खींच-तान हो गई हैं, इसलिये सभामें भी एक साथ बैठना नहीं चाहते।

खींच-तानमें पड़ना—झगड़ेमें पड़ना।

उ०—मुझे इस विषयमें कुछ न कहो; मैं कभी किसी खींच-तानमें नहीं पड़ता।

खीर-सी खाकर रह जाना—कुछ वश न चलना।

उ०—मैं सच कहता हूँ कि इस मामिलेमें तुम सब-के-सब खीर-सी खाकर रह जाओगे।

खुदाईमें ढेले फेंकना—परमात्माके प्रति कृतघ्न होना।

उ०—उसके पास ईश्वरका दिया सब कुछ है, तथापि झींकता ही रहता है। मैं तो यह कहता हूँ कि वह खुदाईमें ढेले फेंकता है।

खुल पड़ना
खुल जाना } मनका भेद प्रकट कर देना; संकोच छोड़ देना।

उ०—(अ) जब तुम उससे प्रेमपूर्वक बातें करोगे, तो वह खुल पड़ेगा।

(ब) वह यहाँ प्रतिदिन आता है, और हँसी-दिल्लगी करता है; वह अब हमलोगोंसे खुल गया है।

खुलकर खेलना—स्वच्छन्द रहना।

उ०—उसको हानि-लाभका ध्यान नहीं; वह आजकल खूब खुलकर खेलता है।

खुल खेलना—बे-तकल्लुफ़ होना; निःसंकोच होना।

उ०—पहले कुछ दिनोंतक तो मोहन हमलोगोंसे हिचकता रहा; परन्तु अब तो वह खूब खुल खेलता है।

उन्हींसे फिर आखिरको खुल खेलते हैं।
वो करते हैं जिनसे हिजाब अव्वल अव्वल॥

'दाग़'

खूनके घूट पीना—कठिन चोट सहना।

उ०—वह दूसरोंके हाथसे यदि प्यालेपर प्याला लेता है, तो तुम खूनके घूँट क्यों पीते हो?

खूनके घूँट पीकर रह जाना—कठिन चोट सह जाना।

उ०—जब हीराका विवाह कन्हूके साथ हो गया, तो राँझा खूनके घूँट पीकर रह गया।

खूनसे हाथ रंगना—हनन करना।

उ०—जिसके लिये हम सदा अपना खून बहानेको तैयार रहे, वह आज हमारे खूनसे हाथ रँगना चाहता है।

खूनसे तलवार रंगना—खड्ग द्वारा वध करना।

उ०—वह कहता है कि मैं तुम्हारे खूनसे तलवार रगूँगा।

तलवार खूंसे रँग ले अरमान रह न जाये।
आशिक़के सिर पे कोई अहसान रह न जाये॥

खून सफेद होना } अत्यन्त भयभीत होना।
खून सूखना }

उ०—जब चारों ओरसे गोलीकी आवाज सुनाई दी, तो उसका खून सफेद हो गया (खून सूख गया)। (देखो 'लहू सफेद होना')

खूनका प्यासा बन जाना—वध करनेपर उतारू होना।

उ०—नारायण जिस जगदीशको प्राणोंसे प्रिय समझता था, वही जगदीश इस समय उसके खूनका प्यासा बन गया है।

खून-भरी आंखोंसे देखना—अत्यन्त प्रकुपित होना।

उ०—इस गरीबको खूनभरी आंखोंसे क्यों देखते हो?

खून बहाना—जानसे मार डालना।

उ०—उसने वीरतापूर्वक संग्राम-भूमिमें अनेक शत्रुओंका खून बहाया है।

खून बिगड़ना—रक्त-सम्बन्धीय कोई रोग होना।

उ०—फोड़े-फुंसियोंका होना सिद्ध करता है कि तुम्हारा खून बिगड़ गया है।

खून उबलना—क्रोध आना।

उ०—उस चाण्डालको देखकर मेरा खून उबल पड़ता है।

खून लगाकर शहीदोंमें दाखिल होना—बिना कुछ किये प्रसिद्ध होनेकी चेष्टा करना।

उ०—भारतमें आजकल ऐसे अनेक व्यक्ति मिलेंगे, जो खून लगाकर शहीदोंमें दाखिल होते हैं।

खेत रहना—संग्राममें मारा जाना।

उ०—योरोपीय महासमरमें अनेक भारतीय वीर भी खेत रहे।

खेल बिगड़ना—बना-बनाया कार्य बिगड़ जाना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यदि तुम उसको साथ ले जाओगे, तो तुम्हारा सब खेल बिगड़ जायगा।

खेल बिगाड़ना—बनी-बनाई बात बिगाड़ देना।

उ०—सब बातें निश्चित हो चुकी थीं; बस उस बूढ़ेने सब खेल बिगाड़ दिया।

खोकर सीखना—हानि उठाकर अनुभव प्राप्त करना।

उ०—मनुष्य प्रायः कुछ खोकर ही सीखते हैं।

खोद कुरेल करना—छान-बीन करना।

उ०—जब तुमको इस बातसे कुछ प्रयोजन ही नहीं है, तो इतनी खोद-कुरेल क्यों करते हो ?

खोद-खोदकर पूछना—बहुत तर्क-वितर्क करना।

उ०—न्यायाधीशको साधारण उत्तरसे सन्तोष न होगा; वह प्रत्येक बातको खोद-खोद कर पूछेगा।

खोपड़ी सुहलाना
खोपड़ी पिलपिली करना } सिरपर अधिक मार देना।
खोपड़ी शुद्ध करना

उ०—(अ) अधिक अण्ड-बण्ड बोलोगे, तो तुम्हारी खोपड़ी सुहला दूँगा।

(ब) यदि गाली-गलौजपर उतरोगे, तो तुम्हारी खोपड़ी पिलपिली कर दूँगा।

(स) यदि फिर अशुद्ध लिखोगे, तो तुम्हारी खोपड़ी शुद्ध कर दूँगा।

खोपड़ी रंगना—सिर फोड़कर रक्त बहाना।

उ०—सीधी तरह चले जाओ, वरना तुम्हारी खोपड़ी रँग दूँगा।

खोपड़ी गंजी करना—मारते-मारते सिरके बाल उड़ा देना।

उ०—नारायणने आज श्यामकी खोपड़ी गंजी कर दी।

खोया जाना—बरबाद होना।

उ०—गोपाल किसीके प्रेममें पड़कर खोया गया।

आप ही 'अमीर' तुम खोये गये।
यारकी जुस्तजूको निकले थे॥

'अमीर'

(ग)

गई न करना—टाल न करना।

उ०—कल मैंने उसको तुम्हारे कहनेसे छोड़ दिया था; आज मैं कदापि गई न करूँगा।

न आए अगर यार पैमाँ-शिकन।
अजल तू न आनेमें करना गई॥

'अमीर'

गई करना—टाल करना, शान्त होना।

उ०—यदि शिवराम नहीं मानता तो न सही, नारायण! तुम तो गई करो।

गगन-भेदी पताका फहराना—प्रभावशाली शासन होना।

उ०—इस समय भारतमें अंगरेजोंकी गगन-भेदी पताका फहरा रही है।

गङ्गा नहा लेना—किसी बड़े कार्यसे निवृत हो जाना।

उ०—गङ्गाप्रसाद तो गङ्गा नहा चुके, हमारी एक परीक्षा अभी शेष है।

गङ्गाजली उठाना—गङ्गाजल हाथमें लेकर शपथ लेना।

उ०—मैं सब रुपया देनेको प्रस्तुत हूँ यदि न्यायालयमें गङ्गा-दीन गङ्गा-जली उठाता है।

गङ्गा-लाभ होना—देहान्त होना।

उ०—पण्डित गङ्गारामको कल प्रातःकाल चार बजे गङ्गालाभ हो गया।

गट कर जाना—शीघ्रतासे पी जाना।

उ०—सुराहीमें केवल एक लोटा जल था, उसे केवलराम गट कर गया।

गट्टा-सी सुनाना—स्पष्ट कहना।

उ०—मैं लाग-लपेट नहीं जानता; जरा उसे पास आने दो; ऐसी गट्टा-सी सुनाऊँगा कि सदा याद रखेगा।

गठरी मारना—माल अपहरण करना।

उ०—मेरे पास क्या धरा है? अपने भाईके पास जाओ, उसने आज खूब गठरी मारी है।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—मनमुटाव उत्पन्न करनेवाली पुरानी बातें छेड़ना।

उ०—नारायण! जो हुआ सो हुआ, शान्त हो जाओ; अब गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ते हो?

गढ़े में पड़ना—पतित होना।

उ०—जगदीश ! अपने पूर्वजोंकी ओर ध्यान दो ; नीचोंके साथ रहकर गढ़ेमें क्यों पड़ते हो ?

गढ़े में पड़ना—नष्ट होना।

उ०—मुझे उससे कोई प्रयोजन नहीं है ; मेरी ओरसे वह गढ़ेमें पड़े।

गढ़े में गिरना—आपत्तिमें फँसना।

उ०—मैं कहांतक तुम्हारी सहायता करूँ ? तुम तो जान-बूझकर गढ़ेमें गिरते हो।

गत बनाना—दुर्दशा करना; पीटना।

उ०—मैंने उसकी वह गत बनाई कि वह अब इधर आनेका नाम तक नहीं लेता।

गधेको बाप बनाना—मूर्खका आदर करना।

उ०—लोग स्वार्थवश प्रायः गधेको बाप बनाते हैं।

गधेपर चढ़ाना—अप्रतिष्ठित करना।

उ०—उन्होंने सोहनको पहले आसमानपर चढ़ाया था, अब गधेपर चढ़ाते हैं।

गधे चराना—निरा मूर्ख रहना।

उ०—वह वेदान्तके सिद्धान्तोंको क्या समझ सकता है उसने जीवनभर गधे चराये हैं।

गधैया-चि-पों करना—बकवाद करना।

उ०—उसको सब लोग जानते हैं, वह रात-दिन गधैया-चि-पों करता ही रहता है।

गधोंको हलुवा खिलाना—मूर्खोंका सम्मान करना।

उ०—पण्डितजी! जहाँ गधोंको हलुवा खिलाया जाता है, वहाँ विद्वान्‌को सूखी रोटी भी नहीं मिल सकती है।

गप्प मारना—निरर्थक बातें कहना।

उ०—वासुदेवने पढ़ना-लिखना छप्परपर रख दिया, दिन-रात गप्प मारता फिरता है।

गप्प मारना—झूठ बोलना।

उ०—मुझे पूर्ण विश्वास है कि राम मदिरा-पान नहीं कर सकता; यादव गप्प मारता है।

गम खाना—शान्ति धारण करना।

उ०—वह आता-जाता प्रतिदिन मुझसे छेड़-छाड़ करता है, आप ही बतलाइये कि मैं कहाँतक गम खाऊँ?

गम गलत करना—मन बहलाना।

उ०—यहाँ दिनभर बैठा-बैठा क्या करूँ? जरा देरके लिये गंगारामके पास जाकर गम गलत कर लेता हूँ।

गयन्दका भार गधेपर धरना—योग्यके करने योग्य कार्य अयोग्य व्यक्तिको सौंपना।

उ०—मैं नहीं चाहता कि नानकचन्द प्रबन्धकर्त्ता बनाया जाय; तुम लोग गयन्दका भार गधेपर धरते हो।

जोग अजोग विचारे बिना सिर सौंपत भार महा अति तापै ।
गाडर ऊँट किसान करै यह बात कहो कहि जात है कापै ॥
'सिंह' जू काग सुहावन होइ तौ काहेको कोउ मरालहि थापै ।
काम परे पछिताहिंगे वे जे गयन्दको भार धरैं गदहा पै ॥
'सिंह'

गया-गुजरा जानना—तुच्छ समझना ।

उ०—तुम सबके सब मोहनके पीछे क्यों पड़े हो ? क्या तुमने उसको गया-गुजरा जान रखा है ?

'सोज' के क़त्ल पर कमर मत बाँध ।
ऐसा जाना है क्या गया-गुज़रा ॥
'सोज़'

गरम होना—क्रोध करना ।

उ०—गुरुजी ! मैं कहाँतक ठण्डा रहूं ? वह ज़रा-ज़रा सी बातपर गरम हो जाता है ।

गरदन नापना—गलेपर आक्रमण करना ।

उ०—उसके साथ अधिक छेड़-छाड़ न किया करो; किसी दिन ऐसी गरदन नापेगा कि सब चौकड़ी भूल जाओगे ।

गरदनपर सवार रहना—पीछा न छोड़ना ।

उ०—उसने नाकमें दम कर दिया, दिन-रात मेरी गरदनपर सवार रहता है ।

गरदनपर सवार होना—पीछे पड़ना ।

उ०—वह मेरा रुपया कैसे न देगा ? मैं अभी उसकी गरदन-पर सवार होता हूं ।

गरदनपर छुरी फेरना—अत्याचार करना।

उ०—तुम लोग दिन-रात गरीबोंकी गरदनपर छुरी फेरते हो।

गरदन काटना—हानि पहुँचाना।

उ०—क्या तुम इसीलिये हमारी गरदन काटते हो कि हम तुम्हारे लिये गरदन कटानेको प्रस्तुत रहते हैं?

गरदन झुकाना—अधीन होना।

उ०—उस प्रभावशाली संन्यासीके सामने सब गरदन झुकाते हैं।

उठाया है अगर ख़ञ्जर, रुकावट क्या, झिझक कैसी।
करो अब क़त्ल हमने शौक़से गरदन झुकाई है॥

'दिनकर'

गरदन झुकना—अधीन होना, नम्र बनना।

उ०—अमेरिकामें स्वामी रामतीर्थका वह प्रभाव था कि उनके सामने प्रत्येक व्यक्तिकी गरदन झुक जाती थी।

गरदन उठानेका अवकाश न मिलना—अति संलग्न रहना।

उ०—परीक्षाकी तैयारीके कारण मुझे आजकल गरदन उठानेका अवकाश नहीं मिलता है।

गरदन उठाना—प्रतिवाद करना।

उ०—जब हमने गरदन उठाई, तब उसका अत्याचार बन्द हुआ।

गरदन मारना—हनन करना।

उ०—राजाने चोर और शराबीको छोड़ दिया और जुवारी की गरदन मारी।

गरुड़ दाएँ होना—समय अनुकूल होना।

उ०—आज तुम्हारे गरुड़ दाएँ हो गया; अब चिन्ता कि बात की है?

गरेबां चाक करना—प्रेमोन्मत्त होना।

उ०—लैलाकी धुनमें मजनूंने अपना गरेबाँ चाक कर डाला था।

जिहि मग दौरत निरदई, तेरे नैन कजाक।
तिहि मग फिरत सनेहिया, किये गरेबाँ चाक॥
'रसनिधि

गरेबांमें मुँह छिपाना—लज्जित होना।

उ०—जब उससे कुछ उत्तर न बना, तो उसने गरेबाँमें मुँह छिपा लिया।

गर्द भी न पाना—खोज न मिलना।

उ०—प्रभञ्जनने तुम्हारा टोपी उड़ाकर न जाने कहाँ फेंकी है अब तुम उसकी गर्द भी न पाओगे।

गर्द भी न पाना—तुलनामें न ठहर सकना।

उ०—रामपाल दर्शन-शास्त्रका सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी है; तुम उसकी गर्द भी नहीं पा सकते।

गला रेतना—अत्याचार करना।

उ०—क्या हुआ यदि किसीने उसकी गरदन नाप दी ? वह रोज़ गरीबोंका गला रेतता था।

गला सूखना—पिपासित होना।

उ०—दौलतरामको ठण्डा जल पिलाओ, उसका गला सूख गया है।

गला भारी होना—गलेमें रोगके कारण साफ़ न बोल सकना।

उ०—माधव आज न जा सकेगा, क्योंकि दो दिनसे उसका गला भारी हो रहा है।

गला छुड़ाना—जान बचाना; छुटकारा पाना।

उ०—पहले उस दुष्टसे गला छुड़ाओ और काम फिर करना।

गला घोंटना—बरजोरी करना।

उ०—रामलालकी इच्छा पढ़नेकी नहीं है, उसका मामा उसका गला घोंटता है।

गला काटना—कष्ट पहुँचाना, अत्याचार करना।

उ०—जिसके लिये तुम गला कटवानेको तैयार रहा करते थे, अब वह स्वयं तुम्हारा गला काटता है।

गला फँसना—विवश होना।

उ०—मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता; इस समय मेरा गला बुरी तरह फँसा हुआ है।

गला फँसाना—आपत्तिमें डालना।

उ०—आप तो वहाँसे चलते हुए, और मेरा गला फँसा दिया।

गली-गली मारा फिरना—दुर्दशा होना।

उ०—घर बेचकर मदिरा-पान करते हो; एक दिन गली-गली मारे फिरोगे।

गले पड़ी बजना—विवश होकर करना।

उ०—मैं अपनी इच्छासे उसको नहीं पढ़ा रहा हूँ, यह तो गले पड़ी बज रही है।

गलेका हार होना—अति प्रिय बनना।

उ०—आजकल जगरांश उमरावके गलेका हार हो रहा है।

अगर क़िस्मतमे लैलाके गलेका हार हो जाता।
ज़माने भरकी नजरोंमें खटकता ख़ार हो जाता॥

गलेका हार होना—सिर होना; चिपट जाना।

उ०—यदि तुमने उसे जरा भी छेड़ा, तो वह तुम्हारे गलेका हार हो जायगा।

छेड़ा जनूँ जो तूने इसे फिर तो जान ले।
तेरे गलेका हार मेरा पैर हन हुआ॥

गले मढ़ना—इच्छाके विरुद्ध सौंपना।

उ०—मुझे आजकल पढ़ानेका अवकाश नहीं मिलता; आप इस लड़केको मेरे गले क्यों मढ़ते हैं?

गले पड़ना—ऊपर पड़ना।

उ०—पुरुषार्थ करो और आनन्दसे रहो; तुम क्यों किसीके गले पड़ते हो?

गलेसे लगाना—प्यार करना।

उ०—जिसे कभी प्रसन्न होकर गलेसे लगाया करते थे; वही आज तुम्हारा गला रेत रहा है।

गलेमें धनका जोर होना—धनके मदसे अकड़कर बोलना।

उ०—आजकल रुपया ही सब कुछ है; उसके गलेमें धनका जोर है, इसलिये ठीक हो है।

गहरी छनना—आनन्दमें समय कटना।

उ०—तुम हमसे क्यों बातें करोगे? आजकल तो गहरी छनती है।

गहरी चाल चलना—बड़ा छल करना।

उ०—उससे सावधान रहना चाहिये, वह अब कोई गहरी चाल चलेगा।

गहरे होना—आनन्द होना; प्राप्ति होना।

उ०—मातादीन! इस वर्ष तुम्हारे गहरे हो गये क्योंकि अन्न अच्छा हुआ है; भाव तेजीपर है।

आपकी जिसको मुयस्सर ख़ाके पा हो जायगी।
उसके गहरे होगे उसकी किमिया हो जायगी॥

'सिफ़त'

गाजर बेचना—कोलाहल करना।

उ०—तुम लोग दो घण्टेसे क्यों गाजर बेच रहे हो?

गाजर-मूली समझना—अत्यन्त निर्बल जानना।

उ०—हम तुम्हारी मरम्मत कर देंगे; क्या तुमने हमको गाजर-मूली समझा है ?

गांठ लेना—अपने पक्षमें कर लेना।

उ०—तुम किस नींद सो रहे हो ? तुम्हारे एक साथीको उन धूर्त्तोंने गाँठ लिया है।

गांठ बांधना—प्रण करना।

उ०—मैंने उस दिनसे गाँठ बाँध ली है अब किसीके झगड़ेमें न पड़ूँगा।

गांठमें बांधना—अच्छी तरह स्मरण रखना।

उ०—आज तुम मेरी बात गाँठमें बाँध लो; वह तुम्हें अवश्य धोखा देगा।

गांठसे जाना—खर्च होना।

उ०—तुम क्यों रुकावट डालते हो ? तुम्हारी गाँठसे क्या जाता है ?

गांठ काटना—जेब कतरना।

उ०—मेलेमें सावधान होकर घूमना चाहिये; वहाँ ठग सीधे आदमियोंकी गाँठ काट लेते हैं।

गांठ काटना—अत्यन्त महँगा बेचना।

उ०—तुम्हारी दूकानसे सौदा क्या लें; तुम तो गाँठ काटते हो।

गाड़ी चल पड़ना—कार्य चालू होना।

उ०—अब कोई चिन्ताकी बात नहीं है; हमारी गाड़ी चल पड़ी है।

गाड़ी रुक जाना—चलता हुआ कार्य बन्द हो जाना।

उ०—अबतक तो सब प्रबन्ध हो जाता, क्या करें, हमारी गाड़ी ही रुक गयी।

गाड़ी कड़ खा जाना—चलते कार्यमें विघ्न उपस्थित हो जाना।

उ०—आपका रुपया लौटानेमें विलम्ब इसलिये हुआ कि हमारी गाड़ी कड़ खा गयी थी।

गाढ़ी छनना—घनिष्ट मित्रता होना।

उ०—आजकल तो राम और श्यामकी गाढ़ी छनती है।

गाल तमतमा उठना—प्रकुपित हो जाना।

उ०—यादवने जब शङ्करको धूर्त्त कहकर पुकारा, तो उसके गाल तमतमा उठे।

गाल बजाना—बकवाद करना।

उ०—तुम्हारी वीरता किसको विदित नहीं है? क्यों गाल बजाते हो?

वृथा मरहु जनि गाल बजाई।
मन-मोदक नहिं भूख बुझाई॥
'तुलसी'

गारा मालूम होना—अत्यन्त सारहीन प्रतीत होना।

उ०— तुम्हारा काव्य, सच पूछो तो, पुराने कवियोंके काव्यके सामने गारा मालूम होता है।

गारा मालूम होना—स्वादरहित जान पड़ना।

उ०—आजका हलुआ तो गारा मालूम होता है।

गिन-गिनकर बदले लेना—बहुत तंग करना।

उ०—हम नहीं जानते थे कि तुम हमसे गिन-गिनकर बदले लोगे।

तुमने बदले हमसे गिन-गिनके लिये।
हमने क्या चाहा था इस दिनके लिये॥

गिन-गिनकर पाँव रखना—बहुत धीरे-धीरे चलना।

उ०—यहाँसे काशी दस मील है; इस प्रकार गिन-गिनकर पाँव रखोगे, तो कब पहुँचोगे?

गिरगिटकी तरह रंग बदलना—एक बातपर न रहना।

उ०—मैं ऐसे व्यक्तिका विश्वास नहीं करता, जो गिरगिटकी तरह रंग बदलता रहता है।

गिरह टटोलना—कुछ लेनेकी इच्छा करना।

उ०—मैं उसके पास कुछ सहायताके लिये गया था; वह उलटा मेरी ही गिरह टटोलने लगा।

गिरहसे जाना—खर्च होना।

उ०—तुम चाहे जैसे चलो, मेरी गिरहसे क्या जाता है?

गिरहसे कुछ नहीं जाता है, पी भी ले जाहिद।
मिले जो मुफ्त तो क़ाजीको भी हराम नहीं॥

'दाग़'

गिरह पड़ जाना—मन-मुटाव हो जाना।

उ०—पहले तो वे दोनों बड़े मित्र थे, पर अब उनमें किसी कारणसे गिरह पड़ गयी है।

गीदड़-भबकियां दिखाना—झूठ-मूठ डराना।

उ०—जो व्यक्ति उसको नस-नस पहिचानता है, उसको वह गीदड़-भबकियाँ दिखाता है।

गुञ्जा-माणिक एक समान करना—विद्वान् और मूर्खमें भेद न जानना।

उ०—तुम्हारे यहां बड़ा अन्धेर है; तुम लोग तो गुञ्जा-माणिक एक समान करते हो।

जितै न कोऊ पारखी, सो थल नहिं बुध जोग।
गुञ्जा-माणिक एक सम, कर जहाँ जड़ लोग॥

गुट्ट बांधना—दल-बन्दी करना।

उ०—आजकल सभा-सोसाइटियोंमें प्रभावशाली लोग अपने-अपने गुट्ट बांध लेते हैं।

गुड़ गोबर कर देना—काम बिगाड़ देना।

उ०—हमलोगोंने कार्य सिद्ध कर लिया था, पर तुमने इस समय आकर सब गुड़ गोबर कर दिया।

गुड्डा बांधना—बदनाम करना।

उ०—उसने सबके सामने हमारी बात खोली, हमने उसका गुड्डा बांधा; इसमें हुआ क्या?

गुथ पड़ना—लड़ बैठना।

उ०—नारायण ! तुम्हारे मस्तिष्कमें कुछ विकार तो उत्पन्न नहीं हो गया ? तुम जिसे देखते हो, उससे ही गुथ पड़ते हो।

गुत्थी सुलझाना—निर्णय करना।

उ०—जीव ब्रह्मकी समस्या बड़ी टेढ़ी है; इस गुत्थीको दार्शनिक ही सुलझा सकते हैं।

गुद्दीपर बुद्धि होना / **गुद्दी पीछे मति होना** — अवसरपर ठीक बात न सूझना; निरा मूर्ख होना।

उ०—जयदेवसे गवाही न दिलवाओ; उसकी गुद्दीपर बुद्धि है, न जाने क्या कह बैठे।

गुर निकलना—उपाय मिलना।

उ०—आप भी सोचिये, मैं भी सोचता हूं; कोई-न-कोई गुर निकल ही आयगा।

गुरुसे कान फुँकवाना—गुरु-मन्त्र लेना।

उ०—देवदत्तने आज गुरुसे कान फुँकवाया है।

गुल खिलना—विचित्र घटना होना; बखेड़ा खड़ा होना।

उ०—इस मामलेमें आगे चलकर गुल खिलेंगे।

गुल खिलाना—बखेड़ा खड़ा करना, विचित्र घटना घटित करना।

उ०—ज़रा उसको अधिकार मिलने दो; फिर देखना क्या-क्या गुल खिलाता है!

भड़की हुई है आग-सी फूलोंसे बागमें।
सारे ये गुल खिलाए हुए बाग़बांके हैं॥

'दिनकर'

गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द करना।

उ०—यादवका भाई कोतवाल है, बाप मुनसरिम है, किसी बातको चिन्ता नहीं; खूब गुलछर्रे उड़ाता है।

गूँगेका गुड़ खाना—निज अनुभव प्रकट न कर सकना।

उ०—जबतक मनुष्य ब्रह्मको नहीं पाता, तबतक ही उसके विषयमें बात करता है; जब उसको पा लेता है, तो गूंगेका गुड़ खा लेता है।

केते पारिख पचि मुए, कीमति कही न जाय।
'दादू' सब हैरान हैं, गूंगेका गुड़ खाय॥

'दादू'

गूलरका फूल लेना—अप्राप्य वस्तुकी इच्छा करना।

उ०—उसको आकाशमें उड़नेवाले घोड़ेकी धुन सवार है; मानो वह गूलरका फूल लेना चाहता है।

कहते हैं मालवीजी हम होमरूल लेंगे।
दीवाने हो गये हैं गूलरका फूल लेंगे॥

(किसीने व्यङ्गसे कहा था।)

गूलरका फूल हो जाना—लापता होना।

उ०—मुझको देवदत्तका कुछ पता नहीं है; वह तो गूलरका फूल हो गया।

गूलरका पेट फुड़वाना—भेद प्रकट कराना।

उ०—बस चुप रहो, मुझसे गूलरका पेट क्यों फुड़वाते हो?

गोड़ आंसू आना—दुःख होना।

उ०—तुम क्यों नहीं खड़े हो जाते? तुम्हारे क्या गोड़ आँसू आते हैं?

गोरख-धन्धेमें पड़ना—झंझटमें फँसना।

उ०—तुम्हारे मामिलेमें क्या खड़े हुए, हम तो गोरख-धन्धेमें पड़ गये।

गोली मारना—छोड़ देना।

उ०—नकली बन्दूक लेकर क्या करोगे? इसको गोली मारो।

गौं निकलना—स्वार्थ-सिद्ध होना।

उ०—उसकी गौं निकल गई; अब तुम्हारी मैत्रीसे उसे क्या प्रयोजन?

ग्रन्थियां खोलना—जटिल समस्याएँ हल करना।

उ०—बीज पहले हुआ था या वृक्ष पहले हुआ, जीव और ब्रह्ममें भेद कैसे हुआ—ये ग्रन्थियाँ कौन खोल सकता है?

(घ)

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—जब मैंने सबकी उपस्थितिमें उसका कच्चा चिट्ठा खोला, तब उसपर घरों पानी पड़ गया।

घर उजड़ना—कुल-सम्पत्तिका नाश होना।

उ०—जुवा खेलना बहुत बुरा व्यसन है, इसके कारण अनेक घर उजड़ गये हैं।

घर काटने दौड़ना—घरमें मन न लगना।

उ०—जबसे उसकी स्त्रीका देहान्त हुआ है, उसको घर काटने दौड़ता है।

घरका रास्ता लेना—भाग जाना।

उ०—जब उसने देखा कि यहाँ दाल न गलेगी, तब उसने घरका रास्ता लिया।

घर करना—आकृष्ट करना।

उ०—तुमने उसके दिलमें ऐसा घर किया है कि अब वह तुम्हारा ही कलमा पढ़ता है।

घर करना—पति बनाना; खसम करना।

उ०—उसकी बातोंसे प्रकट होता है कि वह अवश्य घर करेगी।

तीतर बरणी बादली, रण्डा-कजल-रेख।
वह बरसे, यह घर करे, यामें मीन न मेख॥
'भड्डली'

घरका दीपक बुझ जाना—इकलौते पुत्रका देहान्त होना।

उ०—रामनाथके लिये संसार अन्धकारमय हो गया क्योंकि उसके घरका दीपक बुझ गया है।

घरकी मूछें ही मूछें होना—मिथ्या अभिमान करना।

उ०—अमरनाथ करके क्या दिखाता? घरकी तो मूछें ही मूछें हैं।

घरके घर रहना—न लाभ होना न हानि।

उ०—हमको इस बार व्यापारमें बड़ी हानि उठानी पड़ी; आप तो घरके घर रहे।

घर-घर पूजा होना—अधिक आदर होना।

उ०—आज भारतमें तुलसीदासकी रामायणकी घर-घर पूजा होती है।

घर-घाटसे खोना—सब प्रकारसे नष्ट-भ्रष्ट करना।

उ०—तुम्हारी चौकड़ीने, यदि सच पूछो, उसको घर-घाटसे खो दिया है।

घर बैठे गङ्गा आना—अनायास सम्पत्ति मिलना।

उ०—तुम्हें अब किस बातकी चिन्ता है? तुम्हारे तो घर बैठे गंगा आ गयी है।

घर भर देना—अधिक परिमाणमें सम्पति देना।

उ०—रामदेवकी ससुरालवाले खाली बातें ही नहीं बनाते थे; उन्होंने तो उसका घर भर दिया है।

घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधरना।

उ०—किसीकी हानि और लाभसे तुम्हें क्या? तुम्हारा तो घर बन गया।

घर बसना—घरकी स्थिति सुधरना।

उ०—दूसरोंके घर उजड़नेसे तुम्हारा घर बसा तो क्या बसा!

घर बसना—विवाह होना।

उ०—वहाँसे मिलना-विलना तो क्या था, पर उसका घर बस गया है।

घर-फूँक तमाशा देखना—सम्पत्तिका नाश करके आनन्द करना।

उ०—आज तुम घर फूँक तमाशा देखते हो; कल लोग तुम्हारा तमाशा देखेंगे।

घरमें चूहे कूदना—
घरमें भूंजी भांग भी न होना } नितान्त निर्धन होना।

उ०—मातादीन अपने बच्चोंकी शिक्षाका प्रबन्ध कैसे करे? उसके घरमें तो चूहे कूदते हैं।

घरमें तो भूँजी भाँग भी आती नहीं नजर॥
रहनेके अब मकानको बेचेंगे जल्दतर॥
'ताहिर'

घरमें डाल लेना—जोरू बना लेना।

उ०—पण्डितजी, उसने किसी नीच स्त्रीको घरमें डाल लिया है, इसलिये उसका हुक्का-पानी बन्द हो गया।

घर पड़ना—जोरू बनना।

उ०—वह स्त्री, जो कल रामपुरसे आई थी, रामदीनके घर पड़ गयी है।

घरसे बाहर न निकलना—संसारका अनुभव न होना।

उ०—वह इन बातोंको क्या समझे; कभी घरसे बहार तो निकला ही नहीं है।

वादिये इश्ककी सैरें कोई हमसे पूछे।
खिज़्र क्या जाने, कभी घरसे न बाहर निकला॥

घर सिरपर उठाना—घरमें अधिक कोलाहल करना।

उ०—विश्वनाथ! पुस्तक पढ़ते हो या घर सिरपर उठाते हो?

घरतक पहुँचाना—पूर्ण करना।

उ०—जो काम आपने मुझे दिया था, मैंने उसे घरतक पहुँचा दिया है।

घस्से पिलाना—धोखा देना।

उ०—तुम हो बड़े चालाक; आज घासीरामको भी घस्से पिला हो दिये।

घाट-घाट का पानी पीना—संसारका अनुभव प्राप्त करना।

उ०—तुमको घर-घाटका न छोड़ूँगा; तुम मुझे नहीं जानते, मैंने घाट-घाटका पानी पीया है।

घात लगाना—हानि पहुंचानेका अवसर देखना।

उ०—लोमड़ी, जो बहुत देरसे घात लगाए बैठी थी, शिकार उठाकर चम्पत हुई।

घातमें रहना—ताकमें रहना।

उ०—मुझे आप असावधान न समझें; मैं सदा उससे बदला लेनेकी घातमें रहता हूँ।

घाव हरा होना—पुराने दुःखका स्मरण होना।

उ०—उसके पिताकी मृत्युके सम्बन्धमें बातचीत करनेसे उसका घाव हरा हो जाता है।

घावपर नमक छिड़कना—दुःखित व्यक्तिको अधिक दुखित करना।

उ०—जगदीश इस बार परीक्षामें असफल हो गया है; उसको छेड़कर उसके घावपर क्यों नमक छिड़कते हो?

घास खोदना
घास काटना } व्यर्थ समय खोना।

उ०—चार साल काशी-विश्वविद्यालयमें रहकर क्या तुमने घास ही खोदा है?

घास काटना—मन लगाकर कार्य करना।

उ०—सुरेन्द्र! तुम तो घास काटते हो; ऐसे पढ़नेसे कुछ भी लाभ नहीं होता।

घास खा जाना—बावला होना।

उ०—यह समय पढ़ने-लिखनेका है, घूमने-फिरनेका नहीं; तुम तो घास खा गये हो।

घिग्घी बँधना—अत्यन्त भयभीत होना।

उ०—चारोंका दल देखते ही उस स्त्रीको घिग्घी बँध गयी।

घीके दीपक जलाना—हर्ष मनाना।

उ०—महेन्द्र! मित्रों सहित परीक्षामें उत्तीर्ण हो गये हो; अब तो घीके दीपक जलाओ।

घुट-घुटकर बातें होना—बड़े प्रेमपूर्वक बोलना।

उ०—आज तो घनश्यामसे घुट-घुट बातें हो रही हैं, घीसाराम!

घुट-घुटकर मरना—बड़े कष्टसे शरीर छोड़ना।

उ०—जो दूसरोंका गला घोटते हैं, वे घुट-घुटकर मरते हैं!

न तड़पने की इजाजत है न फरियाद की है।
घुटके मर जाऊँ यह मरजी मेरे सैयाद की है।

घुटने टेकना—आत्म-समर्पण करना; अधीन होना।

उ०—और किसीका क्या दोष? तुम्हारे नेताने ही घुटने टेक दिये।

घुटनोंमें सिर देकर बैठना—चिन्तित होना।

उ०—वह परीक्षामें उत्तीर्ण नहीं हुआ, इसीलिए घुटनोंमें सिर दिये बैठा हुआ है।

घुन लगना—आन्तरिक व्याधिसे अति दुर्बल होना।

उ०—रामपालको तो ऐसा घुन लग गया है कि उसका पनपना ही कठिन हो रहा है।

घुमाकर नाक पकड़ना—बहुत लपेट लेकर अभिप्राय पर आना।

उ०—बात एक ही होती है; अन्तर केवल इतना है कि मैं एकदम नतीजेपर आता हूँ, और तुम घुमाकर नाक पकड़ते हो।

घुमा-फिराकर बातें करना—स्पष्ट न बोलना।

उ०—साफ क्यों नहीं कहते कि तुम जाना नहीं चाहते? घुमा-फिराकर बातें क्यों करते हो?

घुल जाना—अति दुर्बल हो जाना।

उ०—रामनाथ अपने पिताकी मृत्युके शोकमें घुल गया।

घुसर-पुसर करना—धीरे-धीरे परामर्श करना।

उ०—तुम बहुत देरसे क्या घुसर-पुसर कर रहे हो।

घोड़ेके आगे गाड़ी रखना—उल्टी युक्ति देना।

उ०—तुम्हारे साथ शास्त्रार्थमें आनन्द इसलिये नहीं आता कि तुम घोड़ेके आगे गाड़ी रखते हो।

घोड़े बेचकर सोना—निश्चिन्त सोना।

उ०—रामकिशोरकी परीक्षा समाप्त हो गयी; इसीलिये घोड़े बेचकर सो रहा है।

घोड़ेपरसे सवार उतारना—बड़ा चालाक होना।

उ—तुम अपने भाईको भोला-भाला न समझो; वह घोड़े-परसे सवार उतार लेता है।

(च)

चंगपर लाना—फंसाना, अनुकूल करना।

उ—तुम घबराओ नहीं; मैं किसी-न-किसी प्रकार उसको चंगपर ले आऊँगा।

चंगुलमें फँसना—परवश हो जाना।

उ०—मैंने तुमको बहुत सावधान किया, तथापि तुम उस धूर्त्तके चंगुलमें फँस ही गये।

चकनाचूर हो जाना—बिल्कुल टूट जाना।

उ०—शीशा नाजुक तो होता ही है, गिरते ही चकनाचूर हो गया।

चकमा देना—धोखेमें डालना।

उ०—तुम हो बड़े चालाक; कल उस भोले-भाले पथिकको भी चकमा दे गये।

चकाचौंध होना—प्रकाशकी अधिकताके कारण दिखाई न देना।

उ०—सूर्यकी ओर देखनेसे आँखें चकाचौंध हो जाती है।

चक्करमें डालना—मार्गसे विचलित करना; झगड़ेमें फँसाना।

उ०—जो दूसरोंको चक्करमें डालते हैं, वे एक-न-एक दिन आप भी चक्करमें पड़ जाते हैं।

चक्करमें पड़ना—धोखेमें आना।

उ०—तुम जानते-बूझते उन लोगोंके चक्करमें पड़ गये।

चक्करमें पड़ना—झंझटमें फँसना।

उ०—तुम्हारे साथ व्यापारमें साझा करके हम एक प्रकारके चक्करमें पड़ गये।

चक्की-चूल्हेकी चिन्तामें रहना—आजीविकाकी चिन्तामें लगना।

उ०—गरीब लोग रात-दिन चक्की-चूल्हेकी चिन्तामें रहते हैं।

चक्की पीसना—कड़ा परिश्रम करना।

उ०—गरीब लोग रात दिन चक्की पीसते हैं; तब चूल्हा जलता है।

चक्खी पड़ जाना—मज़ा पड़ जाना।

उ०—तुम्हारे भाईको चोरीकी चक्खी पड़ गयी; अब उसका पढ़ना-लिखना गया।

चखौतियां करना—आनन्द करना।

उ०—दोनोंके पास जागीरें हैं, किसी बातकी चिन्ता नहीं; रात-दिन खूब चखौतियाँ करते हैं।

चचा बनाकर छोड़ना—दुर्गति करना।

उ०—तुम तो अपने समान दूसरेको चालाक नहीं मानते, पर नारायण भी तुमको चचा बनाकर छोड़ेगा।

चचा हो जाना—चालाकीमें बढ़ जाना।

उ०—तुम तो थे ही, पर भतीजा तुम्हारा भी चचा हो चला है।

चटकर जाना—झटपट खा जाना।

उ०—जिस पाकको प्रस्तुत करनेमें मुझे तीन दिन लगे थे, तुम उसे तीन मिनटमें चट कर गये।

न हलुवा बन कि चटकर जायँ भूके।
न कडुवा बन कि जो चक्खे सो थूके॥

चट कर जाना—दूसरेकी वस्तु लेकर न देना।

उ०—दो दिनके लिये सामान माँग कर ले गये थे, तुम उसको चट ही कर गये।

चटनी हो जाना—खूब पिस जाना।

उ०—इस औषधिको और न रगड़ो, यह तो चटनी हो गयी है।

चटा देना—घूँस देना।

उ०—अजी, वह कभी मानने वाला नहीं था, तुमने उसको कुछ चटा दिया होगा।

चट्टे-पट्टे लड़ाना—इधर-उधर की लगाकर लड़ाई कराना।

उ०—मोहन! अपने भाईको समझाओ कि चट्टे-बट्टे लड़ाना भले आदमियोंका काम नहीं।

चढ़ बनना—सुयोग मिलना।

उ०—यदि तुम असावधान रहोगे, तो पछताओगे और औरोंकी चढ़ बनेगी।

चढ़ा लेना वा चढ़ा जाना—पी जाना।

उ०—दो सेर दूध लिया था, क्या सब-का-सब तुम अकेले ही चढ़ा गये ?

जब ग़म हुआ चढ़ा लीं दो बोतलें इकट्ठी।
मुल्लाकी दौड़ मसजिद, 'अकबर' की दौड़ भट्टी॥
'अकबर'

चना डालकर खानेमें साझा करना—थोड़ा-सा योग देकर बराबरका साझी बनना।

उ०—तुम्हारे साथ किसीकी कैसे निभ सकती है ? तुम तो चना डालकर खानेमें साझा करते हो।

चबा-चबाकर बातें करना—स्पष्ट न कहना।

उ०—यदि इस कार्यमें तुम हमारी सहायता करना नहीं चाहते, तो साफ कह दो; चबा-चबाकर बातें क्यों करते हो ?

चम्पत हो जाना—भाग जाना।

उ०—गोपाल ! मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता; मैं भली भांति जानता हूँ कि तुम्हारा स्वार्थ निकला और तुम चम्पत हुए।

चरका देना—आघात पहुंचाना।

उ०—उस दुःखित-हृदयको चलते-चलते तुम भी चरका दे गये।

चरण छूना—विनती करना।

उ०—पण्डितजी ! वह आपके चरण छूता है; उसपर दया कीजिये ।

चरण छूना—प्रणाम करना।

उ०—देवदत्तकी आपमें बड़ी श्रद्धा है, वह प्रातःकाल उठकर सबसे पहले आपके चरण छूता है ।

चरबी चढ़ना—बहुत मोटा हो जाना ।

उ०—दातारामर्में, भाईजी, शक्ति कुछ भी नहीं है, केवल चरबी चढ़ी हुई है ।

चल जाना—अनबन हो जाना ।

उ०—कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी उससे चल गयी है ।

मेरे घर आपका आना नहीं खाली है इल्लतसे ।
रकीबांसे मेरी जाँ आज शायद चल गयी होगी ॥

'दिनकर'

चल जाना—प्रचलित होना ।

उ०—भारतमें आजकल जापानकी अन्य वस्तुओंके साथ-साथ जापानी जूता भी खूब चल गया है ।

बूट डासनने बनाया, हमने इक मजमूँ लिखा ।
मुल्कमें मज़मूँ न फैला, और जूता चल गया ॥

'अकबर'

चल जाना—फट जाना ।

उ०—शुकदेव तुम्हारी धोती बीस जगहसे चल गयी है; अब यह न चलेगी।

चलता करना—भेजना, टालना।

उ०—वह आज प्रातःकाल मेरे पास भी एक बखेड़ा लेकर आया था; मैंने तो उसको चलता किया।

चलती गाड़ीमें रोड़ा अटकाना—होते हुए कार्यमें विघ्न डालना।

उ०—केशव! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो तुमने हमारी चलती गाड़ीमें रोड़ा अटकाया है?

दम जो सीनेसे चला राहमें फोड़ा अटका।
चलती गाड़ीमें दिया इश्कने रोड़ा अटका॥

'जौक़'

चलते बैलको आर लगाना—कार्य करनेवालेपर ही अधिक भार डालना।

उ०—एक कार्य समाप्त होते ही दूसरा सौंप दिया; तुम भी चलते बैलको ही आर लगाते हो।

चलते हाथ-पाँव उठ जाना—किसीका आश्रित होकर न मरना।

उ०—आगे चलकर न जाने उसकी क्या गति होती; अच्छा हुआ, बेचारा चलते हाथ-पाँव उठ गया।

चल देना—मर जाना।

उ०—विमलके पिता तीन सालसे बीमार पड़ थे, आज प्रातःकाल चल दिये।

चल निकलना—धूर्त बन जाना; बे अदब हो जाना; असभ्य हो जाना।

उ०—बाबू रामस्वरूप! आप अपने लड़केको बिल्कुल नहीं समझाते; वह आजकल बहुत चल निकला है।

चल बसना—मर जाना।

उ०—तुम कभी किसीके काम नहीं आते; इस सम्पत्तिका क्या होगा जब तुम किसी दिन सब छोड़कर चल बसोगे?

चल सकना—वश होना।

उ०—मैंने तुमसे अनेक बार कह दिया है कि मेरा वहाँ कुछ नहीं चल सकती है।

चसका पड़ना—मजा पड़ना।

उ०—ताराचन्दके भाईको जुवे और चोरीका चसका पड़ गया है।

चहल पहल मचना—खूब रौनक होना।

उ०—तुम्हारी बैठकमें रात-दिन चहल-पहल मची रहती है।

चाँद निकलना (किधरसे)—बहुत दिनोंके उपरान्त किसीसे भेंट होना।

उ०—रामानन्दने चन्द्रदत्तको देखकर कहा—आज किधरसे चाँद निकल आया है?

चाँदीका जूता मारना—घूस देना।

उ०—तुमको क्या चिन्ता है ? जहाँ चाँदीका जूता मारा कि काम बना।

चाँदी होना—अधिक लाभ होना।

उ०—चौड़ेमें लुटे हम ; तुम्हारा क्या बिगड़ा ? तुम्हारी तो चाँदी है।

चाकरी करना—कुछ महत्व न रखना।

उ०—तुम देवदत्तकी तुलना क्या करोगे ? तुम तो उसके सामने चाकरी करते हो।

चाट देना—बान डालना।

उ०—तुमने उसको ताशकी ऐसी चाट दी है कि वह दिन-भर खेलता ही रहता है।

चाट जाना—खा लेना।

उ०—आश्चर्यकी बात है कि तुम दोनों चार आदमियोंका भोजन चाट गये।

चाट पड़ना
चाट लगना } बान पड़ना।

उ०—रामनाथको मीठा खानेकी चाट पड़ गयी है।

चादर उतार डालना—निर्लज्ज हो जाना।

उ०—उसने ऐसी चादर उतार डाली है कि उसपर तुम्हारे उपदेशका रंग नहीं चढ़ सकता है।

चादर तानकर सोना—निश्चिन्त हो जाना।

उ०—आपकी परीक्षा आज समाप्त हो जायगी; आप तो अब चादर तानकर सोइयेगा।

चादर देखकर पांव फैलाना—शक्तिके अनुसार कार्य करना।

उ०—सुखराम सुखपूर्वक रहता है क्योंकि वह चादर देख-पाँव फैलाता है।

चादर देखकर पाँव फैलाना—आयका विचार करके व्यय करना।

उ०—जो लोग चादर देखकर पाँव फैलाते हैं, वे चादर तानकर सोते हैं।

चादर डालना—विधवाके साथ विवाह करना।

उ०—और कहीं काम नहीं बनता, तो जोगमायापर ही चादर डालो; वह भी बहुत दुःखी है।

चादरसे बाहर पाँव फैलाना—आयसे अधिक व्यय करना।

उ०—जब वह चादरसे बाहर पाँव फैलाता है, तो ऋणी होना निःसन्देह है।

चादरसे बाहर पाँव फैलाना—शक्तिके बाहर कार्य करना।

उ०—आपत्तिमें आपही फँसोगे, जब चादरसे बाहर पाँव फैलाते हो।

चार आँसू गिराना—शोक मनाना।

उ०—गैर भी ऐसे अवसरपर चार आँसू गिरा देता है, अपने होते हुए तुमसे तो इतना भी न हुआ।

चार चांद लगाना—सम्मान बढ़ाना।

उ०—इस पुस्तकके प्रकाशनने प्रोफेसर यदुनाथकी कीर्त्तिको चार चाँद लगा दिये हैं।

चारपाईपर पड़ना—बीमार होना।

उ०—अमीरसिंह चार महीनेसे चारपाईपर पड़ा हुआ है।

चारपाईसे लग जाना—रोगसे अत्यन्त दुर्बल होना।

उ०—चरणदास चार महीनेसे चारपाईपर पड़नेके कारण चारपाईसे लग गया है।

चार पैसे हाथमें होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना।

उ०—प्रत्येक कार्यमें उसका पाँव इसीलिये उठता है कि उसके हाथमें चार पैसे हैं।

चार बातें सुनना—बुरा-भला कहना।

उ०—जब कभी वह आता है, चार आदमियोंके सामने मुझे चार बातें सुना जाता है।

चारों खाने चित्त आना—बुरी तरह पराजित होना।

उ०—मैंने तुमसे कह दिया है कि यदि उसका मुकाबिला करोगे, तो चारों खाने चित्त आओगे।

चाल चलना—आचरण करना।

उ०—वह ऐसी चाल चलता है कि सब उसकी प्रशंसा करते हैं।

काम वह कर कि पसे-मर्ग तुझे याद करें।
चाल वह चल कि ज़मानेमें तेरा नाम रहे॥

चाल चलना—कपटाचरण करना।

उ०—चन्दूलाल ऐसी चाल चलता है कि बड़े-बड़े चालाक देखते रह जाते हैं।

चाल दिखाना—चला जाना।

उ०—अधिक झमेला न करो; अब चाल दिखाओ।

चाल पड़ना—रिवाज होना।

उ०—आजकल दीपावलीके अवसरपर आतिशबाजीकी चाल पड़ गयी है।

चाल पड़ना—दाँव लगना।

उ०—सन्तोष किये बैठे हैं, कभी-न-कभी हमारी भी चाल पड़ेगी।

चालपर चलना—अनुसरण करना।

उ०—लाला माठूलाल सांवलिया सदा अपने पूर्वजोंकी चाल पर चलते हैं।

चाल पर चलना—पक्षमें होना।

उ०—मुझे तुम्हारा विश्वास नहीं है; मैं जानता हूँ कि तुम भी उन्हीं लोगोंकी चालपर चलोगे।

चालमें आना—धोखेमें पड़ना।

उ०—वह बड़ा चालाक है; पण्डितजी! आप किसकी चालमें आ गये।

चाहकी आंखसे देखना—प्रेम करना।

उ०—तुम भी तो आजकल उसको चाहकी आँखसे देखते हो।

चाहकी आँखसे जोबनको जो देखा तो कहा।
कहीं यह माल मिला जाता है ललचाने से॥
'अमीर'

चिकनी-चुपड़ी बातें करना—चिरौरी करना।

उ०—धनीराम धनिकोंमें बैठकर चिकनी-चुपड़ी बातें करता है।

चिकनी-चुपड़ी बातें करना—धोखा देनेवाला मधुर भाषण करना।

उ०—कितने ही सरल-स्वभाव व्यक्ति उसके धोखेमें पड़ जाते हैं क्योंकि वह बड़ी चिकनी-चुपड़ी बातें करता है।

चिङ्गारियां लगना—बुरा मालूम होना।

उ०—उसको कहने दो जो कुछ कहता है; तुम्हारे क्यों चिङ्गारियाँ लगती है।

चिङ्गारी छोड़ना—झगड़ा करना।

उ०—वह धूर्त्त चुपचाप बैठनेवाला नहीं है; फिर कोई चिङ्गारी छोड़ेगा।

चिड़िया फंसाना—किसी मालदार आसामीको धोखेसे वशमें करना।

उ०—उसने एक ऐसी चिड़िया फँसाई है कि उसकी आजीविकाकी चिन्ता उड़ गई।

चिड़िया फँसाना—किसी स्त्रीको बहकाकर काबूमें लाना।

उ०—वह दुष्ट सदा कोई-न-कोई चिड़िया फँसाता और मौज उड़ाता है।

चित करना—पराजित करना।

उ०—बलराम बड़ा बलवान है; चिन्तारामको चुटकियोंमें चित कर देगा।

चित करना—हानि पहुँचाना।

उ०—तुम तो दौलतरामकी बड़ी प्रशंसा किया करते थे, हमको तो वह चालीस रुपयेको चित कर गया।

चितापर पाँव रखना—मरनेके दिन समीप होना।

उ०—लाला भाऊमल चितापर पाँव रखे बैठे हैं, पर झूठ बोलना अब भी धर्म ही समझते हैं।

चित्तपर चढ़ना—मनको भाना।

उ०—वह तुम्हारे चित्तपर क्या चढ़ा, तुम्हारा तो चेहरा ही उतर गया।

यह कौन तेरे चितपे चढ़ा है बता मुझे।
'जुरअत' कुछ इन दिनोंमें तेरा मुँह उतर गया॥

'जुरअत'

चितसे उतरना—अरुचि होना।

उ०—वह कम्बल मेरे चित्तसे उतर गया था, इसलिये मैंने बेच डाला।

चितसे उतरना—विस्मरण होना।

उ०—उसको जानता तो अवश्य हूँ, परन्तु उसका नाम मेरे चित्तसे उतर गया है।

चिन्ता सवार रहना—फिकिर लगा रहना।

उ०—यह भी कोई जीवन है कि रात-दिन एक-न-एक चिन्ता सवार रहती है।

चित्र खींचना—सम्यक् प्रकारसे वर्णन करना।

उ०—पण्डित तपोधन शास्त्रीने अपनी पुस्तकमें हमारी सामाजिक स्थितिका अच्छा चित्र खींचा है।

चित्र बन जाना—चुपचाप बैठ जाना।

उ०—मैं ही क्या कहता सुनता; तुम तो वहाँ चित्र बन गये।

चिराग जल चुकना—शक्ति न रहना।

उ०—पण्डित बलदेवजी कभी सचमुच बलदेव ही थे; अब तो उनका चिराग जल चुका है।

चिराग ठण्डा होना—पुरुषार्थ समाप्त होना।

उ०—वृद्धावस्थाके कारण चौधरी वीरसिंहका चिराग ठण्ढा हो गया है।

चिराग बुझना (घरका)—इकलौता पुत्र मरना।

उ०—जबसे ठाकुर सर्दूलसिंहके घरका चिराग बुझा है, वे अत्यन्त शोकातुर रहते हैं।

चिराग लेकर ढूँढना—बहुत खोजना।

उ०—तुम तो मूर्ख हो; चिराग लेकर ढूँढोगे, तो ऐसा गुरु न मिलेगा।

न पूछिए मेरे रोज़े-सियाहकी ज़ुल्मत।
चिराग़लेके भी ढूँढा तो आफताब न था॥

चिलमपर आग भी न रखवाना—अत्यन्त तुच्छ समझना।

उ०—तुम जैसोंसे तो हमारे चौधरी साहब चिलमपर आग भी नहीं रखवाते।

चिल्ल-पों करना—रोना-चिल्लाना।

उ०—जो होना था सो हो गया; अब व्यर्थ क्यों चिल्ल-पों कर रहे हो।

चींउँटीके पर निकलना—मृत्यु समीप आना।

उ०—हमारे साथ उसकी छेड़-छाड़ सिद्ध करती है कि चीउँटीके पर निकल आये है।

चीं बोलना—हार मानना।

उ०—आज तो उसके सामने तुम्हारे मित्र भी चीं बोल गये।

चीं बुलाना—हार स्वीकार कराना।

उ०—मैंने भी निश्चय कर लिया है कि उसको चीं बुलाए बिना न छोड़ूँगा।

घाम में अण्डे देना—कठोर घाम पड़ना।

उ०—आप इस समय बाहर न जायँ; एक बजा है, चील अण्डे दे रही है।

चुटकियोंमें उड़ाना—दिल्लगीमें टालना।

उ०—तुमको कोई अपना दुःख क्या सुनाए; तुम तो सुनकर चुटकियोंमें उड़ा देते हो।

चुटकियोंमें होना—अत्यन्त शीघ्र होना।

उ०—आप घबरायें नहीं, आपका काम चुटकियोंमें हुआ जाता है।

चुटकी लेना—चुभती हुई बात कहना।

उ०—पण्डितजी, रामदास बड़ा धूर्त्त है; कल बातें करते हुए उसने ऐसी चुटकी ली कि मुझे बुरा मालूम हुआ।

चुप लग जाना—कुछ न कहना।

उ०—यहाँ तो दुनिया भरकी बातें बनाते रहे; वहाँ पहुँचते ही तुम्हें चुप लग गयी।

क्यों 'दाग़' के सवालसे चुप लग गयी तुम्हें।
आया नहीं जवाब समझ-बूझकर भी क्या॥

'दाग़'

चुल्लूभर पानीको भी न पूछना—बिल्कुल काम न आना।

उ०—आजकल सावधान रहना चाहिये; बीमार पड़ जाओगे, तो कोई चुल्लूभर पानीको भी न पूछेगा।

चुल्लूभर पानीमें डूब मरना—लज्जासे मुँह न दिखाना।

उ०—जगदीश ! पुरुष होकर स्त्रियोंकी भाँति आचरण करते हो, कहीं चुल्लूभर पानीमें डूब मरो ।

तुमको यह हौसला न करना था ।
चुल्लू पानीमें डूब मरना था ॥

चुल्लूमें उल्लू होना—थोड़ी-सी मदिरा पीकर संज्ञाहीन होना ।

उ०—तुम ऐसे चुल्लूमें उल्लू होते हो कि घण्टों बाद सुध आती है ।

चूँ न करना—कुछ भी प्रतिवाद न करना ।

उ०—इतना अत्याचार होता है, पर कोई चूँ नहीं करता ।

चूँ-चकार करना—आपत्ति करना ।

उ०—शङ्करके अतिरिक्त और कोई छात्र नहीं है, जो चूँ-चकार करे ।

चूड़ियां पहनना—कायर बनना ।

उ०—शत्रुके भयसे क्या तुम भी चूड़ियाँ पहनते हो ?

चूड़ियां पहनना—विधवाका पति कर लेना ।

उ०—उस स्त्रीने, जो कल रामपुरसे आयी थी, आज रामस्वरूपपर चूड़ियाँ पहन ली हैं ।

चूड़ियां फूटना—विधवा होना ।

उ०—सरलाने दुःखित होकर कहा—"ईश्वर करे चम्पाकी चूड़ियाँ फूटें ।"

चूलसे चूल मिलाना—ठीक बिठाना ; जोड़ना ।

उ०—आप चिन्ता न कीजिये; उसने ऐसा चूलसे चूल मिला दिया है कि अब यह जल्दी न टूटेगा।

चूल्हा-न्यौत करना—घरके सब लोगोंको भोजनके लिए निमंत्रित करना।

उ०—पुत्रके विवाहके उपलक्षमें लाला आशारामने समस्त गाँवमें चूल्हा-न्यौत किया है।

चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना।

उ०—यह भी कोई जीवन है कि चार-चार दिनतक चूल्हा नहीं जलता।

चूल्हेमें पड़ना—नष्ट होना।

उ०—श्यामाने अपने पतिसे कहा—"जो बन्धु-बान्धव सुख-दुःखमें काम नहीं आते, वे चूल्हेमें पड़ें।

चेहरा उतरना—उदास होना।

उ०—मोहन! आज तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है?

चेहरा उतरना—मुँह पिचकना।

उ०—तीन दिनसे उसको ऐसा ज्वर चढ़ा कि उसका चेहरा उतर गया।

चेहरेपर हवाइयाँ उड़ना—भयभीत होना।

उ०—वनमें सिंहकी गर्जना सुनकर उसके चेहरेपर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

चैनकी बंशी बजाना
चैनकी छनना } सुखपूर्वक जीवन बिताना।

उ०—आजकल श्याम मथुरामें चैनकी बंशी बजा रहा है; रामकी अयोध्यामें चैनकी छन रही है।

चोचले बघारना—इतराना।

उ०—उसके हाथमें चार पैसे हैं; रात-दिन चोचले बघारता रहता है।

चोट उभरना—दुःखकी पुनरावृत्ति होना।

उ०—इस स्थानपर उसके दो भाइयोंकी मृत्यु हुई थी; अतः इसके दर्शनसे उसकी चोट उभर आती है।

चोटपर चोट लगना—दुःखमें दुःख होना।

उ०—जबतक मनुष्यके बुरे दिन रहते हैं, चोटपर चोट लगती ही रहती है।

चोटपर चोट लगना—दुःखितको दुःख देना।

उ०—तुमको उस दीनकी दशापर तनिक भी दया नहीं आती; तुम बराबर चोटपर चोट लगाते रहते हो।

चोटी हाथमें होना—वशमें होना।

उ०—चाहे जिधर घुमाओ; उसकी चोटी तुम्हारे हाथमें है।

चोटें करना—आक्रमण करना।

उ०—तुम अपनी त्रुटियोंपर कभी ध्यान नहीं देते; सदा दूसरोंपर ही चोट करते रहते हो।

चोला बदलना—एक शरीर छोड़कर दूसरा धारण करना।

उ०—आदमी कभी मरता नहीं है, केवल चोला बदलता है।

आत्मा हूँ मैं बदल डालूँगा पलमें चोला।
क्या बिगड़ेगी अगर मेरी क़ज़ा आयेगी॥

चौकड़ी भरना—मृगका छलांगें मारना।

उ०—सायंकालका समय था; मृग चौकड़ी भर रहे थे।

खुशीसे हिरन चौकड़ी भर रहे हैं।
किलोलें हरे खेतमें कर रहे हैं॥

चौकड़ी भूलना—घबरा उठना; सुध-बुध न रहना।

उ०—उसके पञ्जेमें पड़ते ही तुम सब चौकड़ी भूल गये।

चौकन्ना होना—सावधान होना।

उ०—जबसे तुमने उसे धोखा दिया है, तबसे वह भी चौकन्ना हो गया है।

चौकस रहना—सावधान रहना।

उ०—जबसे अमरनाथके कमरेका ताला टूटा है, तबसे वह बहुत चौकस रहता है।

चौका लगाना—सत्यानाश करना।

उ०—चार दिन हुए चोरोंने उसके घरमें चौका लगा दिया।

चौकी भरना—देवी-देवताओंकी पूजा करना।

उ०—होलीकी रात्रिमें कितने ही लोग चौकी भरते हैं।

चौखट चूमना—अधीनता स्वीकार करना।

उ०—हम तुमको दिखला देंगे कि आज जिसकी निन्दा करते हो, कल उसीकी चौखट चूमोगे।

चौड़ेमें लुटना—बरबाद होना।

उ०—मंगलानन्द! आज तुम तो मौज उड़ाते रहे, और हम चौड़ेमें लुट गये।

चौथ निकलना—अधिकार होना।

उ०—अपने घरका रास्ता लो; क्या यहाँ तुम्हारी चौथ निकलती है?

चौपट करना—बरबाद करना; बड़ी हानि पहुँचाना।

उ०—इस बार अतिवृष्टिने हमारे प्रान्तके किसानोंको चौपट कर दिया।

चौपट होना—नष्ट होना।

उ०—क्या करें, कहाँ जायँ? पैसा हाथमें नहीं, व्यापार सब चौपट हो गया।

———

(छ)

छकड़ी भूलना—चिन्तामय जीवन होना।

उ०—गरीब आदमी गृहस्थ-आश्रममें पड़कर सब छकड़ी भूल जाता है

भूल गये राग रंग, भूल गये छकड़ी।
तीन चीज याद रही, नोन तेल लकड़ी॥

छक्के छूटना—साहस न रहना।

उ०—छुट्टनलालको देखते ही छज्जूरामके छक्के छूट गये।

छक्के छुड़ाना—परास्त करना।

उ०—शिवाजीने अनेक बार मुगलोंके छक्के छुड़ा दिये थे।

छक्के-पञ्जे उड़ाना—आनन्द करना।

उ०—तुमको किसीके सुख-दुःखकी क्या पड़ी है? तुम तो रात-दिन मित्रोंकी चौकड़ीमें छक्के-पञ्जे उड़ाते हो।

छटपटा उठना—व्याकुल होना; घबरा जाना।

उ०—तुम तो साधारण आपत्तिमें ही छटपटा उठते हो।

छठीका दूध याद आना—सब आनन्द भूल जाना; कठिन कष्ट पड़ना।

उ०—आज बड़ा ही कठिन मुकाबिला था; मैं तो अपनी जानता हूं, मुझे तो छठीका दूध याद आ गया है।

दिखाओ वीरताके हाथ, ऐसे पैंतरे बदलो।
कि दुश्मन चौकड़ी भूले, छठीका दूध याद आए॥
'दिनकर'

छठीके पोतड़े तक न धुलना—कुछ भी अनुभव न होना।

उ०—यह कार्य किसी बुद्धिमान व्यक्तिको सौंपना था; लेकिन दे दिया उसको, जिसके छठीके पोतड़े तक नहीं धुले हैं।

छत्र-छायामें रहना—अधीन रहना।

उ०—कुछ लोग पूर्ण स्वाधीनताके पक्षमें हैं, दूसरे कहते हैं हम अङ्गरेजोंकी छत्र-छायामें रहेंगे।

छप्पन टके खर्च होना—अधिक व्यय होना।

उ०—इस कार्यको तो तुम भी कर सकते हो, इसमें कौनसे छप्पन टके खर्च होते हैं?

छप्पन टके मिलना—अधिक लाभ होना।

उ०—तुम ही चले जाओ; मुझे वहाँ जानेसे कौनसे छप्पन टके मिलेंगे?

छप्परपर रख देना—छोड़ देना।

उ०—जबसे वह चाण्डाल-चौकड़ीके पञ्जेमें पड़ा है, उसने पढ़ना-लिखना सब छप्परपर रख दिया है।

छप्पर फाड़ कर देना—बिना परिश्रम किये देना।

उ०—भगवानकी लीला अद्भुत है, जिसको उसे देना होता है, उसको छप्पर फाड़कर देता है।

छप्पर फूंस न होना—नितान्त निर्धन होना।

उ०—छबीले लाल छक्के-पञ्जे उड़ा रहा है और उसके भाई छज्जूरामके छप्परपर फूँस भी नहीं है।

छातीके किवाड़ खोलना—उदारता पूर्वक व्यय करना।

उ०—अपने पुत्रके विवाहमें लाला मनसब रायने छातीके किवाड़ खोल दिये।

छातीका पत्थर टलना—दुःख दूर होना।

उ०—राम-राम करके आज उसकी छातीका पत्थर टला है!

छाती कूटना—छातीपर आघात पहुँचाकर शोक करना।

उ०—उस स्त्रीने पति-वियोगमें छाती कूट डाली।

छाती खोलकर चलना—निर्भय होकर चलना।

उ०—राम किसीका ऋणी नहीं है, इसलिये बाजारमें छाती खोलकर चलता है।

छाती जलना—दुःख होना।

उ०—शीतलप्रसाद! दूसरोंको अभिवृद्धि देखकर तुम्हारी छाती क्यों जलती है?

छाती जलाना—दुःख देना।

उ०—तुम्हारा मन्दाचरण तुम्हारे माता-पिताकी छाती जलाता है।

छाती जुड़ाना—शान्ति मिलना।

उ०—जिसे देखकर कभी छाती जुड़ाती थी, उसे देखकर अब जी जलता है।

छाती ठोकना—जी कड़ा करना।

उ०—पहले छाती ठोक लो, फिर लड़ाई पर जाना।

छाती ठोकना—साहस दिखाना।

उ०—श्याम तुमसे कदापि डरनेवाला नहीं है; देखो वह छाती ठोक रहा है।

छाती ठण्डी करना—मन सन्तुष्ट करना।

उ०—उसने अपना अधिकार छोड़ दिया; तुम अब तो अपनी छाती ठण्डी करो।

छाती तले रखना—प्रेमपूर्वक पास रखना।

उ०—जिसे बरसों छातीतले रखा, आज वही छातीपर मूँग दल रहा है।

छाती पत्थर बनना—हृदय कठोर होना।

उ०—आपत्तियाँ सहते-सहते छाती पत्थर बन जाती है।

छातीपर पत्थर रखना—कष्ट सहना।

उ०—आज मैं छातीपर पत्थर रखकर तुमको पृथक् कर रहा हूं।

छातीपर सांप लोटना—ईर्ष्यावश दुःख होना।

उ०—किसीकी वृद्धि देखकर उसकी छातीपर साँप लोटता है।

लोटते हैं साँप सीने (छाती) पर 'अमीर'।
देखकर फ़ुरक़त की शब काली घटा॥

'अमीर'

छातीपर मूँग दलना
छातीपर कोदों दलना } कष्ट पहुँचाना।

उ०—जिसको छातीसे लगाकर प्रसन्न होते हो, वही किसी समय तुम्हारी छातीपर मूँग दलेगा।

मूँग छातीपर जो दलते हैं किसीको देखना।
जूतियोंमें दाल उनकी अय 'ज़फ़र' बँट जायगी॥

'ज़फ़र'

छातीपर धरकर ले जाना—मरण समय साथ ले जाना।

उ०—इतना धन तुम्हारे पास है, परन्तु न तुम स्वयं भोगते हो, न किसीको देते हो; क्या इसको छातीपर धरकर ले जाओगे?

छातीपर बाल होना—वीर होना।

उ०—हमारे साथ वह लड़ सकता है, जिसकी छातीपर बाल हों।

छाती पक्की करना—दृढ़ता धारण करना।

उ०—पहले छाती पक्की कर लो, फिर इस कामका नाम लेना।

छाती पीटना—शोक मनाना।

उ०—जो होना था सो हो गया, अब छाती क्यों पीटते हो?

छाती भर आना—दिल दुखी होना।

उ०—जब मैंने उसको अपनी रामकहानी सुनाई, उसकी छाती भर आयी।

छातीसे लगाना—प्यार करना।

उ०—यदि संसारमें उसका कोई होता, तो उसको छातीसे लगाता।

छान डालना } बहुत खोज करना।
छान मारना }

उ०—तमाम बाजार छान डाला, परन्तु इस प्रकारका चाकू नहीं मिलता।

"ज़माना छान मारा है, यह दुनिया देखी-भाली है"।

छापा मारना—लूट लेना।

उ०—आज डाकुओंने सेठ घनश्यामदासके घरपर गहरा छापा मारा है।

छायातक न पड़ना—कुछ भी प्रभाव न पड़ना।

उ०—पिताके सदाचारकी सदासुखके आचरणपर छायातक नहीं पड़ी है।

छावनी छाना—अधिक समयतक ठहरना।

उ०—भेजा था सौदा लेनेके लिये, तुम वहाँ छावनी ही छा बैठे।

छिपा रुस्तम निकलना—योग्य सिद्ध होना।

उ०—माधव तो छिपा रुस्तम निकला ; कल कवि-सम्मेलनमें ऐसी कविता सुनाई कि सब फड़क उठे।

छिपा रुस्तम निकलना—बड़ा दुष्ट सिद्ध होना।

उ०—तुम तो राघवको बड़ा सीधा बतलाते थे ; वह तो छिपा रुस्तम निकला।

छिद्रान्वेषण करना—दोष निकालना।

उ०—अपने दोषोंको छिपाते हो और दूसरोंका छिद्रान्वेषण करते हो।

छींकते ही नाक कटना—अपराध करते ही दण्ड मिलना।

उ०—वह अपनेको बहुत चालाक समझता था; परन्तु कल तो उसकी छींकते ही नाक कटी।

छींकते घरसे चलना—अशुभ मुहूर्त्तमें घरसे निकलना।

उ०—आज कुछ पिटनेकी जीमें है ; क्या छींकते घरसे चले हो ?

छींटे डालना—चुभती हुई बातोंका संकेत करना।

उ०—शास्त्रीजीने आजके लेखमें तुमपर भी कुछ छींटे डाले हैं।

छीछालेदर करना—दुर्दशा करना।

उ०—कांग्रेस-नेता कभी कौंसिलोंकी छीछालेदर करते हैं; कभी कौंसिल-प्रवेशपर मरते हैं।

छुट्टी पाना—मुक्त होना।

उ०—छुट्टनलालने तो आज परीक्षासे छुट्टी पाई।

छुरीतले दम लेना—दुःखमय जीवन विताना।

उ०—हमारे भाग्यमें आनन्द बदा ही नहीं; हम सदा छुरीतले दम लेते हैं।

छुरी तेज करना—सताना, दुःख देना।

उ०—तुम कहाँके भले निकलकर आये; तुम भी गरीबोंकी गरदनपर छुरी तेज करते हो।

छूतक न जाना—लेशमात्र भी न होना।

उ०—भद्रदत्तको छल छूतक भी नहीं गया है।

छू मन्तर हो जाना—भाग जाना।

उ०—तुमलोग मुझ अकेलेको बखेड़ेमें फँसाकर सब-के-सब छू मन्तर हो गये।

(ज)

जगह कर जाना—प्रभाव डालना; चुभ जाना।

उ०—तुम्हारे शब्द मेरे मनमें जगह कर गये।

जग हंसाई होना—अपयश फैलना।

उ०—जगदीश! मैं सच कहता हूँ कि मेरा कुछ न बिगड़ेगा; उलटी तुम्हारी ही जग हँसाई होगी।

जगह पकड़ना
जगह करना } निवास-स्थान बना लेना।

उ०—रोगने उसके शरीरमें ऐसी जगह पकड़ी है कि वह पनपने नहीं पाता।

जङ्गलमें मङ्गल होना—शून्य स्थानपर आनन्द होना।

उ०—धनका चमत्कार है कि आज यहाँ जङ्गलमें मङ्गल हो रहा है।

जटल हांकना—अनर्गल बातें करना।

उ०—उसको और काम ही क्या है? दिनभर बैठा हुआ जटल हाँकता रहता है।

जड़में तेल देना—विनाश करना।

उ०—जिस घासीरामको तुम मित्र समझते हो, वही तुम्हारी जड़में तेल दे रहा है।

जड़ उखाड़ना—नाश करना।

उ०—एक वे लोग थे जिन्होंने इस संस्थाको अपने रक्तसे सींचा था, एक तुम हो जो इसकी जड़ उखाड़ते हो।

जड़ें छोड़ना—जमकर बैठ जाना।

उ०—तुमसे कहा था कि रामगोपालको साथ लेकर शीघ्र लौटना, पर तुमने वहां जड़ें छोड़ दीं।

जन्तरीमें खींचना—अधिक कष्ट देना।

उ०—किसी दिन तुमको जन्तरीमें ऐसा खींचूँगा कि सीधे हो जाओगे।

जन्म-घुट्टीमें दिया जाना—आरम्भसे अभ्यस्त होना।

उ०—दूसरोंको ठगना तो जनेश्वरको जन्म-घुट्टीमें दिया गया है।

जबानपर चढ़ा रहना—खूब याद रहना; कहनेका अभ्यास होना।

उ०—तुम्हारी जबानपर सदा सबल सिंह ही चढ़ा रहता है।

जबानपर चढ़ जाना—कहनेका अभ्यास होना।

उ०—पहले कुछ दिनोंतक परिश्रम करना पड़ेगा, फिर यह मंत्र तुम्हारी जबानपर चढ़ जायगा।

जबान एक होना—बात न बदलना।

उ०—आप विश्वास कीजिये, मेरी जबान सदा एक होती है।

जबान बदलना—मुकरना।

उ०—तुमने पहले उसको वचन दिया और अब जबान बदलते हो यह उचित नहीं है।

जबान हिलाना—बोलना।

उ०—क्या सब कुछ मैं ही करूँगा? तुम भी तो जबान हिलाओ।

जबानतक न हिलाना—कुछ न कहना।

उ०—वह मुझे गालियाँ देता रहे और मैं जबान तक न हिलाऊँ, यह नहीं हो सकता।

जबानपर आना
जबानपर लाना } कहना।

उ०—(अ) मैं तुम्हारे उपकारसे इसलिये बचता हूँ कि वह किसी दिन तुम्हारे जबानपर अवश्य आयगा।

(ब) अच्छे आदमी भलाई करके कहीं जबानपर लाते हैं?

जबानी जमाखर्च करना—बनावटी सहानुभूति दिखाना।

उ०—यह बात नहीं कि तुम मेरे लिए कुछ करनेको समर्थ नहीं हो, परन्तु तुम तो जबानी जमा-खर्च करते हो।

जबानी जमा-खर्च करना—केवल कहना ही कहना।

उ०—यहाँ सब जबानी जमा-खर्च करते हैं, काम करनेवाला एक भी दृष्टिगोचर नहीं होता।

जबान देना—वचन देना।

उ०—मैं आपको जबान देता हूँ कि आपके साथ कभी धोखा न करूँगा।

जबानको लगाम न होना—सभ्यता-पूर्वक न बोलना।

उ०—जिस आदमीको जबानको लगाम नहीं है, उसके साथ बातचीत करना मूर्खता है।

जमघट रहना—भीड़भाड़ होना।

उ०—तुम्हारी बैठकमें सदा लफङ्गोंके जमघट रहते हैं।

जमानेकी लहरके साथ चलना—परिस्थितिके अनुसार कार्य करना।

उ०—लाभ हो या हानि, मैं सदा जमानेकी लहरके साथ चलता हूँ।

जमीनमें गड़ जाना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—मैं तो उसकी बातें सुनकर जमीनमें गड़ गया, परन्तु तुम बैठे हँसते रहे।

बेपर्दा नज़र आईं जो कल चन्द बीबियाँ।
'अकबर' ज़मींमें ग़ैरते-क़ौमीसे गड़ गया॥
पूछा जो उनसे आपका पर्दा वो क्या हुआ।
कहने लगीं कि अक्ल पे मर्दोंको पड़ गया॥

'अकबर'

जमीनपर पाँव न रखना—बहुत अभिमान होना।

उ०—उसको अच्छी जगह क्या मिल गई है, वह तो जमीन पर पाँव ही नहीं रखता है।

जमीन-आसमान एक करना—बड़ी खोज करना।

उ०—तुम्हारे लिये जमीन-आसमान एक कर दिया, पर तुम्हारा कहीं पता न चला।

जमीन-आसमानके कुलाबे मिलाना—बहुत झूठ बोलना; गहरी चालें चलना।

उ०—उसकी एक कही, वह तो जमीन-आसमानके कुलाबे मिलाता है।

जमीनका गज बनना—अधिक देशाटन करना।

उ०—आजकल संसारमें अंगरेज-जाति जमीनका गज बना रही है।

जल-जलकर भस्म होना—क्रोधावेषमें दुखी होना।

उ०—शांतिसे बात करो, जल जलकर भस्म क्यों होते हो?

जली-भुनी कहना—कठोर शब्द कहना।

उ०—मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूँ; मेरे विषयमें तुम जब कहोगे जली-भूनी कहोगे।

जलेको जलाना—दुःखितको दुःख देना।

उ०—जानकीदास! सचमुच तुम बड़े दुष्ट हो, जो जलेको जलाते हो।

जलेपर नमक छिड़कना—क्रोधितको उत्तेजित करना।

उ०—वह शांत भी न होने पाया था कि तुमने जलेपर नमक छिड़क दिया।

जलेपर नमक छिड़कना—दुखितको दुःख देना।

उ०—वह परीक्षामें असफल हो गया है; चुभती हुई बातें कहकर तुम और जलेपर नमक छिड़कते हो।

जवाब देना—जो जैसा करे उसके साथ वैसा वर्ताव करना।

उ०—अगर मैंने उसको नीचताका जवाब न दिया तो वह भी क्या जानेगा ?

जवाब होना—सादृश्य होना ।

उ०—इस मकानका द्वार तुम्हारे मकानके द्वारका जवाब है ।

जवाब दे देना—बेकार हो जाना ।

उ०—वृद्धावस्थामें हाथ-पैर प्रायः जवाब दे देते हैं ।

जहर लगना—बहुत बुरा मालूम होना ।

उ०—जीवन सिंह ! तुमको जवाहरलालकी बातें जहर लगती हैं ।

जहर दिखाई देना—घृणा होना ।

उ०—उसको उरदकी दाल जहर दिखाई देती है ।

जहांका तहां खपा देना—वहीं मार डालना ।

उ०—यदि अधिक तीन-पाँच करोगे, तो जहाँका तहाँ खपा दूँगा ।

जागतेको जगाना—समझदारको समझाना ।

उ०—सरदारजी! सोतेको तो सब जगाते हैं, जागतेको कौन जगाए ?

जांच-पड़ताल करना—परीक्षा करना ।

उ०—वह पहले खूब जांच-पड़ताल कर लेता है, तब किसीसे मित्रताका सम्बन्ध जोड़ता है ।

जाड़ा चढ़ना—भय प्रतीत होना ।

उ०—माधवको परीक्षाके नामसे जाड़ा चढ़ता है।

जादू चलाना—फँसाना।

उ०—जङ्गबहादुरने जगदीशपर अच्छा जादू डाला है।

जादू चल जाना—किसीकी बातोंका प्रभाव पड़ना।

उ०—यह माना कि तुम बहुत चालाक हो, परन्तु यहाँ म्हारा जादू चल जाय, यह संभव नहीं।

जादू जगाना—मंत्र सिद्ध करना।

उ०—मैं प्रति वर्ष दीपावली और होलीकी रात्रिको जादू गाता हूँ।

जा धमकना—अकस्मात् पहुँच जाना।

उ०—हमलोग भोजन बना ही रहे थे कि भजनलाल भी ा धमका।

जान आना—शक्ति आना।

उ०—ज्वरने उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल कर दिया था; ब कुछ जान आयी है।

जानपर बनना—जान जानेका भय होना।

उ०—तुमको हँसी सूझ रही है, यहाँ जानपर बनी हुई है।

जानपर खेलना—जान जोखिममें डालना।

उ०—तुममें ऐसा एक भी नहीं है, जो उसकी जान बचानेके ए जानपर खेल जाय।

कौदक मिज़ाज चाहनेवाले नहीं तेरे।
खेलेंगे जानपर अगर आयेंगे बातपर॥

जान पड़ना—शक्ति आना।

उ०—दूध-घीका सेवन किये बिना तुम्हारे शरीरमें जान कैसे पड़ेगी ?

जान चुराना—बचना।

उ०—विद्वान् बननेको जी चाहता है और परिश्रमसे जान चुराते हो।

जानसे हाथ धोना—जीवन खोना।

उ०—जो यमुनापर जान देता है, वह जानसे हाथ धोता है।

जानका जञ्जाल बनना—अरुचिकर होना।

उ०—जीवन सिंहको जगन्नाथका साथ जानका जञ्जाल बन रहा है।

जानका जञ्जाल हो जाना—अत्यन्त दुःखप्रद होना।

उ०—साझेका व्यापार हमारी जानका जंजाल हो गया है।

जान खाना
जान लेना } तङ्ग करना।

उ०—कल तुम्हारा सब रुपया लौटा देंगे, व्यर्थ क्यों जान खाते हो ?

जानको रोना—शाप देना; विवश होकर सन्तोष करना।

उ०—हमको झगड़ेमें फँसाकर अलग हो गये, अब हम करें क्या, तुम्हारी जानको रोते हैं।

अब रह ही क्या गया जो रक़ीबोंका डर करें।
हम तो बुरोंकी जानको पहिले ही रो चुके॥

जान खोना—अधिक कष्ट सहना।

उ०—इसमें कुछ न मिलेगा, तुम व्यर्थ जान खोते हो।

जानके लाले पड़ना—जीवनकी चिन्ता होना।

उ०—किसका खेल तमाशा! यहाँ तो जानके लाले पड़े हुए हैं।

जान मारकर काम करना—भरसक प्रयत्न करना।

उ०—गरीब लोग दिनभर जान मारकर काम करते हैं, तब कहीं रातको भोजन मिलता है।

जानमें जान आना—सन्तोष मिलना, धैर्य्य बँधना।

उ०—मैं बहुत घबरा रहा था, तुमको देखकर जानमें जान आई है।

जान-बूझकर कुएँमें गिरना—अपनी इच्छासे हानि उठाना; आपत्तिमें फँसना।

उ०—तुम जान-बूझकर कुएँमें गिरते हो गिरो, हम क्या करें?

जानका लागू होना—मार डालनेकी इच्छा करना।

उ०—उससे सावधान रहना, वह तुम्हारी जानका लागू हो रहा है।

जान देना—अधिक प्रेम करना।

उ०—जानकी प्रसाद! जिसपर तुम जान देते हो, वह किसी दिन तुम्हारी जानका गाहक हो जायगा।

असर अय नालए—दिल तुझमें पैदा क्यों नहीं होता।
मैं जिसपर जान देता हूँ वह अपना क्यों नहीं होता॥

जान लड़ा देना—प्राणोंको जोखिममें डालना।

उ०—तुमने मेरी जानकी रक्षा की है; सच जानो, किसी दिन अवसर पड़नेपर तुम्हारे लिये जान लड़ा दूँगा।

लिया है बोसए-क़ातिल लिपटकर।
लड़ा दी जान तब क़िस्मत लड़ी है॥

जानसे जाना—मरना।

उ०—तुम आनन्द करो, वह अपनी जानसे गया।

जान छूटना—आपत्तिसे छुटकारा पाना।

उ०—एक आपत्तिसे जान छूटी न थी, दूसरी उपस्थित हो गई।

जान छुड़ाना—आपत्तिसे बचाना।

उ०—उसने मेरा नाकमें दम कर दिया है; उस दुष्टसे किसी प्रकार मेरी जान छुड़ाओ।

जान भारी होना—जीवन दुःखप्रद होना।

उ०—धनके अभावके कारण भरतकी जान भारी हो रही है।

जान सूखना—भयभीत होना।

उ०—व्याघ्रको देखते ही उसकी जान सूख गयी।

जान निकलना—दुखप्रद प्रतीत होना।

उ०—किसी गरीबकी सहायता करते तुम्हारी जान निकलती है।

जान बेचेकी रोटी खाना—जान-जोखिमकी आजीविका होना।

उ०—उस व्यक्तिका जीवन भी कोई जीवन है, जो जान बेचेकी रोटी खाता है।

जान होमना—कठिन आपत्ति सहना; कठिन परिश्रम करना।

उ०—हम जान होमते हैं, तब चार पैसे पाते हैं।

जान दूभर होना—जीवन असह्य प्रतीत होना।

उ०—राग-रङ्गमें जी कैसे लगे जब कि जान दूभर हो जाय।

दिल किया नज्र जो मैंने तो कहा ठुकराकर।
जान अपनी जिसे दूभर हो वो पाले दिलको॥

जानका गाहक बन जाना—प्राण लेनेपर उतारू हो जाना।

उ०—जिसको जानसे अधिक जानते थे, वही तुम्हारी जानका गाहक बन गया है।

जान-बूझकर मक्खी निगलना—अपने हाथोंसे अपने खोटे दिन बुलाना।

उ०—तुम लाख कहो, वह जान-बूझकर मक्खी न निगलेगा।

जान डालना—प्रोत्साहित करना प्रभावशाली बना देना।

उ०—पण्डित जनार्दनके ओजस्वी भाषणने जौनपुरकी जनता-में जान डाल दी है।

जान डालना—जोरदार बनाना; प्रभावशाली बना देना।

उ०—मुहाविरोंका प्रयोग भाषामें जान डाल देता है।

जामेसे बाहर होना—बहुत अकड़ दिखाना।

उ०—जानते हैं तुम जान साहबके नौकर हो, इतना जामेसे बाहर क्यों होते हो?

जामेसे बाहर होना—अत्यन्त प्रकुपित होना।

उ०—मुझको कमरेके भीतर देखते ही वह जामेसे बाहर हो गया।

जामेमें न समाना—अत्यन्त प्रसन्न होना।

उ०—पचास रुपयेकी जगह क्या मिल गई है, वह जामेमें हो नहीं समाता।

जाल फैलाना—षड्यन्त्र रचना।

उ०—धूर्त्त लोग तरह तरहके जाल फैलाते और भोले-भाले आदमियोंको फँसाते हैं।

जाल डालना—धोखा देना।

उ०—हमको मालूम न था कि तुम इस प्रकार जाल डालोगे।

जालमें फंसना—धोखेमें आ जाना।

उ०—मैं उसको जानता न था, इसलिये उसके, जालमें फँस गया।

जिगर जलना } शोकातुर होना।
जिगर फटना }

उ०—(अ) उसके साथ हँसी-दिल्लगी न करो, उसका जिगर जल रहा है।

(ब) उसका दुःख देखकर मेरा जिगर फटा जाता है।

जिगरका होना—साहस होना।

उ०—ऐसे कामोंमें आगे बढ़नेके लिये जिगर होना चाहिये।

जिस हांड़ीमें खाना उसीमें छेद करना—उपकारके बदलेमें अपकार करना।

उ०—दुष्ट मनुष्योंका स्वभाव है कि जिस हांड़ीमें खाते हैं, उसीमें छेद करते हैं।

जिसकी छायामें बैठना उसीकी जड़ काटना—हितकारीका अहित करना।

उ०—तुम जिस वृक्षकी छायामें बैठते हो, उसकी जड़ काटते हो।

जिह्वाग्र होना—खूब याद होना।

उ०—जितने पाठ आपने पढ़ाये हैं, सब जिह्वाग्र हैं।

जी उकताना
जी उचट जाना } मन न लगना।
जी ऊब जाना

उ०—तुम कैसे आदमी हो, तुम्हारा जी ऊबता ही नहीं; सिनेमा देखते-देखते मेरा तो जी उकता गया है।

जी कांपना—डर लगना।

उ०—तुम्हारे सामने आते हुए उसका जी कांपता है।

जीका जञ्जाल बन जाना—दुःखप्रद होना।

उ०—तुम्हारा प्रेम तो, जीवनलाल, यदि सच पूछो, हमारे जीका जञ्जाल बन गया है।

जीका बोझ हलका होना—चिन्तासे छूटना।

उ०—परीक्षा समाप्त होनेपर मेरे जीका बोझ हलका होगा।

जीकी जीमें रहना—इच्छा-पूर्ति न होना।

उ०—बम्बई चलो, अब अवसर है, फिर जीकी जीमें रह जायगी।

जीको मारना—मनको वशमें करना।

उ०—सच्चा साधु जीको मारता और संसारसे विरक्त होता है।

जी चुराना—सुस्ती करना; बहाना बनाना।

उ०—जो विद्यार्थी पढ़ने-लिखनेसे जी चुराता है, वह यावज्जीवन धक्के खाता है।

जी छूट जाना—हताश हो जाना।

उ०—जीवन शङ्करका जीवनसे जी छूट गया।

क़फ़ससे छुटकर जी छूट बैठा। उड़ा जाता नहीं है आशियां तक।

जी छोटा करना—उदास होना।

उ०—इस बार यदि परीक्षामें सफल नहीं हुए, न सही, जी छोटा क्यों करते हो?

जी जलाना—दुःखी करना।

उ०—यदि तुम अपने माता-पिताका जी जलाओगे, तो तुमको भी शान्ति न मिलेगी।

जीजानसे जुट जाना—संलग्न हो जाना।

उ०—इस वर्ष राधारमण अध्ययनमें जी-जानसे जुट गया है।

जी टँगा रहना—खटका बना रहना।

उ०—सरलाका पति परदेशमें है, इसलिये उसका जी टँगा रहता है।

जी-टूट जाना—उत्साह-हीन हो जाना।

उ०—परीक्षामें बार-बार अनुत्तीर्ण होनेसे विद्यार्थीका जी टूट जाता है।

जी डूबना—हताश होना।

उ०—अब उससे कोई काम होना कठिन है क्योंकि उसका जी डूब गया है।

जीती मक्खी निगलना—जान बूझकर आपत्तिमें पड़ना।

उ०—तुम चाहे बुरा मानो या भला, मुझसे जीती मक्खी निगली जाय, यह संभव नहीं।

जी दहल जाना—घबराहट होना।

उ०—तुम किस खेतके बथुआ हो, सिंहको देखकर अच्छे-अच्छोंका जी दहल जाता है।

जी दब जाना—निरुत्साह हो जाना।

उ०—अब मुझसे किसी कामके लिये भी नहीं उठा जाता क्योंकि मेरा जी दब गया है।

जी न भरना—तृप्त न होना।

उ०—इतना पैसा किसके घरसे आयगा ? सिनेमा देखनेसे तुम्हारा कभी जी ही नहीं भरता है।

जी निकलना—दुःख प्रतीत होना।

उ०—वह महा कृपण है; किसीको एक पैसा देते हुए उसका जी निकलता है।

जी पक जाना—तङ्ग आ जाना।

उ०—प्रति दिन तुम्हारी बेढंगी बातें सुनते-सुनते मेरा जी पक गया है।

जी पर बनना—संकटापन्न होना।

उ०—तुम लोगोंको राग-रंगकी सूझी है, यहाँ जीपर बन रही है।

जीभपर रखना—चखना।

उ०—कल एक सेर रसगुल्ले आये थे, मुझसे कसम ले लो जो मैंने एक भी जीभपर रखा हो।

जी भर आना—शंकातुर होना।

उ०—किसीको दुःखमें देखकर मेरा जी भर आता है।

जीभ लपलपाना—लालच करना; खानेकी इच्छा करना।

उ०—(अ) उस जगहके लिये तुम्हारी जीभ भी लपलपा रही है।

(ब) मैं समझ गया, चमचमके लिये तुम्हारी जीभ लपलपाती है।

जीभ निकल जाना—बड़ा कष्ट पड़ना।

उ०—घासका बोझ इतना भारी था कि उसको घर तक लानेमें बेचारे घिस्सूकी जीभ निकल गयी।

जी भरकर देखना—इच्छापूर्वक देखना।

उ०—मृत्युके समय यदि सरला होती, तो अन्तिम बार अपनी माताको जी भरकर देख लेती।

'उनको जी भरकर न देखा दिलमें अरमां रह गया।'

जीभके आगे नाचना—सदा चर्चा करना।

उ०—गौतम और कणादको कौन जाने? आजकल विद्यार्थियोंकी जीभके आगे तो शेक्सपियर और मिल्टन नाचते हैं।

जीभका लपरके लेना—खानेको ललचाना।

उ०—कहीं हलुवा बन रहा है और तुम्हारी जीभ लपरके ले रही है।

जीभ चलती रहना—बकते रहना; कुछ न कुछ खाते रहना।

उ०—(अ) जगन्नाथकी जीभ सदा चलती ही रहती है।

(ब) घूमते-फिरते भी उसकी जीभ चलती रहती है।

जीभ पकड़ना—बोलनेसे रोकना।

उ०—मैं सुनता न रहता, तो क्या करता? कहीं उसकी जीभ पकड़ी जाती है?

जीभ बिगाड़ना—चटोरा बना देना; असभ्य बना देना।

उ०—(अ) तुम्हारी माताने तुम्हारी जीभ बिगाड़ी है।

(ब) माताएँ लाड़-प्यारमें बच्चोंकी जीभ बिगाड़ देती हैं।

जीभ सँभालकर बोलना—सभ्यतापूर्वक बात करना।

उ०—यदि जीभ सँभालकर न बोलोगे, तो तुम्हारी जीभ निकाल लूँगा।

जीभि जोग अरु भोग जीभ बहु रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग जीभि लै कैद करावै॥
जीभि स्वर्ग लै जाय जीभि सब नरक दिखावै।
जीभि मिलाव राम जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि बाँट सहारे तोलिये।
'वैताल' कहै विक्रम सुनो जीभ सँभारे बोलिये॥

'वैताल'

जी भारी करना—उदास होना; रञ्ज करना।

उ०—बसन्त! तुम बावले हो गये हो, जो हलकी-सी बातके लिए इतना जी भारी करते हो।

जीमें बैठ जाना—निश्चय हो जाना।

उ०—जो बात उसके जीमें बैठ जायगी, वह उसे किये बिना न छोड़ेगा।

जीमें जी आना—धैर्य्य हो जाना।

उ०—अपने पुत्रको कुशलपूर्वक देखकर जीवनके जीमें जी आया।

जीमें खुभ जाना—पसन्द आ जाना।

उ०—यदि यह छड़ी तुम्हारे जीमें खुभ गयी हो, तो इसे तुम ही ले लो।

जीवनका दीपक बुझना—देहान्त होना।

उ०—बड़े दुःखकी बात है कि आज जीवनरामके जीवनका दीपक बुझ गया।

जीवनकी घड़ियां गिनना—मृत्यु समीप आना।

उ०—उसका हाल क्या बताऊँ? वह तो जीवनकी घड़ियाँ गिन रहा है।

जीसे गुजर जाना—बरबाद हो जाना।

उ०—प्रेम-सागरमें प्रवेश कर कितने ही जीसे गुजर गये।

जीसे उतरना—रुचि न रहना।

उ०—जो चीज मेरे जीसे उतर जाती है, मैं उसको पास भी नहीं रखता हूँ।

जी-हुजूर बनना—अफ़सर बनना।

उ०—लाला शोभाराम जबसे जी-हुजूर बने हैं, काले आदमीसे बात नहीं करते।

जी-हुजूर होना—चाटुकार होना।

उ०—यदि मैं जी हुजूर होता, तो मुझको भी इस समय कोई अच्छी जगह मिल जाती।

जुल देना—चाल चलना; धोखा देना।

उ०—मैं तुमको सज्जन समझता था, पर कल तुम मुझे भी जुल दे गये।

जुवा डाल देना—साहस त्याग देना।

उ०—काम बनता तो कैसे बनता जब तुमने बीचमें ही जुवा डाल दिया।

जूएको कन्धेसे उतारना—स्वतन्त्र हो जाना।

उ०—कबतक परतन्त्र रहोगे? तुम भी जूएको कन्धेसे उतारो।

जूड़ी चढ़ना—भयभीत होना।

उ०—स्कूलमें गणितका घण्टा आते ही उसको जूड़ी चढ़ जाती है।

जूड़ी आना—कष्ट प्रतीत होना।

उ०—क्या बनारस जाते तुमको जूड़ी आती है?

जूत पड़ना—हानि होना; घाटा पड़ना।

उ०—तुम्हारे साथ व्यापार करनेसे उसको यह लाभ हुआ कि सात सौ रुपयेका जूत पड़ा।

जूत-पतरङ्ग होना
जूते-पैजार होना
जूता चलना } लड़ाई होना।

उ०—(अ) कल तो उन लोगोंमें जूत-पतरङ्ग हो ही गयी थी, आज सुनते हैं, फिर जूत-पैजार होनेको है।

(ब) जहां कल प्याली चलती थी, आज वहां जूता चलता है।

जूता लगना—हानि उठाना।

उ०—उसको चार सौ रुपयेका घाटा गत मासमें था, तीन सौका जूता इस मासमें लगा।

जूता लगना—लज्जित होना।

उ०—कल सभामें उसको ऐसा जूता लगा कि सदा स्मरण रहेगा।

जूता लगाना—अपमान करना।

उ०—तुम जिनकी मित्रताका दम भरते थे, कल उनकी उपस्थितिमें ही तुमको जूता लगा।

जूतियां चटखाते फिरना—निकम्मा फिरना।

उ०—इस नगरमें अनेक नवयुवक जूतियाँ चटखाते फिरते हैं।

जूतियां चटखाते फिरना—निर्धन होना।

उ०—पिताकी कमाई मदिरा-पानमें खोकर अब वह जूतियाँ चटखाता फिरता है।

जूतियां सीधी करना—सेवा करना; अधिक सम्मान करना; चाटुकारिता करना।

उ०—वे साधारण साधु नहीं हैं, बड़े-बड़े धनी उनकी जूतियाँ सीधी करते हैं।

जूतियोंमें दाल बंटना—लड़ाई-झगड़ा होना।

उ०—भारतीय हिन्दू-मुसलमान कभी एक होते हैं, तो कभी जूतियोंमे दाल बँटती है।

मूँग छातीपर जो दलते हैं किसी दिन देखना।
जूतियोंमें दाल उनकी ए 'ज़फ़र' बँट जायगी॥
'ज़फ़र'

जूतियां तोड़ना—व्यर्थ प्रयत्न करते फिरना।

उ०—जब किसी प्रकारके लाभकी सम्भावना ही नहीं तो मैं जूतियाँ तोड़ता क्यों फिरूँ?

जूतेकी नोकपर मरना—अति तुच्छ समझना; अनादर करना।

उ०—वह तुम्हारी भेंटको जूतेकी नोकपर मारता है।

जूते चाटना—चिरौरी करना।

उ०—वह तो तुम्हारी ओर कभी ध्यान भी नहीं देता; तुम ही उसके जूते चाटते हो।

जूतेसे बात करना—जूता मारना।

उ०—मैं तुम्हारे समान दुष्टोंके साथ जूतेसे बात करता हूँ।

जेबमें पड़े रहना—तुलनामें न आना।

उ० तुम्हारे सदृश गवैये तो माधवको जेबमें पड़े रहते हैं।

जेबसे जाना खर्च होना।

उ०—मैं उसके कार्यमें रुकावट क्यों डालूँ, मेरी जेबसे क्या जाता है?

जेबसे जाना—हानि होना।

उ०—कामका काम बिगड़ा, पचास रुपये जेबसे गये।

जैसा देश वैसा वेश बनाना—परिस्थितिके अनुकूल चलना।

उ०—जो व्यक्ति जैसा देश वैसा वेश बनाता है, वह आज-कल सुखसे रहता है।

जैसा हो देश भेस भी वैसा ही चाहिये।
जङ्गलको, करके चाक गरेबाँ न जाइये॥

जोड़ न होना—अद्वितीय होना।

उ०—संसारमें आगरेके ताजमहलका जोड़ नहीं है।

जोड़-तोड़ चलना—चालें चलना।

उ०—वह बार-बार अपमानित हो चुका है, तथापि उसके जोड़-तोड़ चलते ही रहते हैं।

गैरोंके बन्द बन्द किये यारने जुदा।
पर उनके जोड़-तोड़ बराबर चले गये॥

जोड़-तोड़ करना—उपाय निकालना।

उ०—मेरे लिये कुछ-न-कुछ जोड़-तोड़ करना ही पड़ेगा।

जौहर करना—शत्रुओंके रक्तसे होली खेलकर प्राण देना।

उ०—प्राचीन कालमें भारतमें अनेक क्षत्रिय जौहर करते थे।

जौहर खुलना—परीक्षा होना।

उ०—घबराओ नहीं, कल तक तुम्हारे जौहर भी खुल जायंगे।

जाँ-निसारोंमें है सच्चा कौन, झूठा कौन है।
यार अभी खुल जायेंगे जौहर जरा शमशीर खींच॥

जौहर दिखाना—गुण प्रकट करना।

उ०—चुप-चाप क्यों बैठे हुए हो? तुम भी अपने जौहर दिखाओ।

ज्ञान लड़ना
ज्ञान खाना } अनुकूलता होना।

उ०—(अ) हमारा ज्ञान लड़ेगा, तो कुछ धान हम भी खरीद लेंगे।

(ब) तुम दाम बहुत माँगते हो, हमारा ज्ञान कैसे खा सकता है?

ज्ञान लड़ाना—उपाय निकालना।

उ०—उसने बहुत कुछ ज्ञान लड़ाया, परन्तु उसे सफलता न हुई।

———

(झ)

झक्का-बावल करना—व्यर्थ झगड़ना।

उ०—जो बात है स्पष्ट कहो, झक्का-बावल क्यों करते हो ?

झक्का-बावल होना—व्यर्थ बोल-चाल होना।

उ०—मैं जानता हूं, वहाँ झक्का-बावल होगी, इसलिये मैं जाना नहीं चाहता हूँ।

झक्का-बावलमें पड़ना—व्यर्थ बखेड़ेमें पड़ना।

उ०—तुम अपना काम करो, क्यों झक्का-बावलमें पड़ते हो ?

झख मारना—व्यर्थ बोलना।

उ०—यहाँ बैठे हुए तुम जो एक घण्टेसे झख मार रहे हो, तुम्हें कुछ और काम है या नहीं ?

झख मारना—विवश होना।

उ०—तुम ठहर जाओ, वह झख मारेगा और यहाँ आयगा।

झगड़ा मोल लेना—जान-बूझकर लड़ाई करना।

उ०—उसको कोई कहाँ तक समझाए, वह तो झगड़ा मोल लेता फिरता है।

झटक लेना—ठग लेना।

उ०—क्यों जी ! तुम बड़े दुष्ट हो; तुमने उस गरीब विद्यार्थी-से भी दो रुपये झटक लिये।

झटका जाना—दुर्बल होना।

उ०—श्यामसुन्दर! तुम तो दो दिनके ज्वरमें इतने झटके गये जैसे कोई दो महीनेका बीमार हो।

झड़ी लगा देना—अधिक परिमाण वा संख्यामें उपस्थित करना।

उ०—आजकी सभामें पण्डित तपोधन शास्त्रीने प्रत्यक्षवादके विरुद्ध युक्तियोंकी झड़ी लगा दी।

झण्डा गाड़ना—अधिकार जमाना।

उ०—मुगलोंको परास्तकर शिवाजीने सिंह-गढ़पर अपना झण्डा गाड़ दिया।

झण्डे गड़ना—प्रसिद्ध होना।

उ०—लखनऊके कुम्हारोंके संसारमें झण्डे गड़े हुए हैं।

झपट लेना— छीन लेना।

उ०—यह कुत्ता बच्चोंके हाथसे खाने-पीनेकी चीज झपट लेता है।

झपट होना—छेड़छाड़ होना।

उ०—कल दशाश्वमेध घाटपर पण्डित बुद्धिसागर और बलभद्र शर्माकी झपट हो गयी।

झल्ला उठना—भड़क जाना।

उ०—तुम्हारा उन बातोंसे बिल्कुल सम्बन्ध न था, तुम व्यर्थ ही झल्ला उठे।

झांसा देना—धोखेमें डालना।

उ०—कल तो अच्छा झाँसा दिया; हम दो घण्टेतक तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहे।

झांसेमें आना—धोखेमें पड़ना।

उ०—बाबू साहब ! वह बड़ा चालाक है; आप उसके झाँसेमें आ गये !

झाड़ पड़ना—डाँटा जाना।

उ०—आज बहुत देर हो गयी है; घर पहुँचनेपर मुझपर अवश्य झाड़ पड़ेगी।

झाड़ होकर लिपटना—पीछा न छोड़ना।

उ०—वह टलनेवाला आसामी नहीं है, वह तो तुमको झाड़ होकर लिपटा है।

झाड़ू फेरना—नष्ट कर देना।

उ०—यह तुमने अच्छा नहीं किया जो आशारामकी समस्त आशाओंपर झाड़ू फेर दी।

झाड़ू मारना—तिरस्कार करना।

उ०—मैं तो अपमान-जनक लाभको झाड़ू मारता हूँ।

झूठ सच कहना—निन्दा करना।

उ०—तुम मेरे विषयमें सदा झूठ-सच कहते रहते हो।

झूठी पत्तल चाटना—दूसरोंकी प्रयुक्त की हुई वस्तुका प्रयोग करना।

उ०—दामोदर ! तुम कविता नहीं करते, तुम तो झूठी पत्तल चाटते हो।

लाया साख बनाय कर इत उत अच्छर काट।
कह 'कबीर' कबलग जिये झूठी पत्तल चाट॥

'कबीर'

झोंपड़ी डालना—अधिक देर तक ठहरना।

उ०—तुमसे शीघ्र लौटनेको कहा था, तुमने वहाँ झोंपड़ी ही डाल दी।

(ट)

टकसाल हो जाना—केन्द्र बन जाना।

उ०—टीकारामका घर तो धूर्त्तोंकी टकसाल हो गया है।

टकराते फिरना—खोजते फिरना।

उ०—हम प्रातःकालसे टकराते फिर रहे हैं, कहीं भी उसका पता नहीं मिला है।

टकराते फिरना—छेड़ उठाते फिरना।

उ०—जब तुम्हारा इस बातसे सम्बन्ध ही नहीं है, तो तुम लोगोंसे व्यर्थ क्यों टकराते फिरते हो ?

टकराते फिरना—भटकते फिरना।

उ०—उनके घरका पता जानते नहीं, भला हम कहाँ-कहाँ टकराते फिरेंगे।

टकराते फिरना—दुःख उठाते फिरना।

उ०—राणाप्रताप देश के लिये बन-बन टकराते फिरते थे।

टकसाली बात कहना—विश्वासनीय बात कहना।

उ०—रामदेवको लोग इसलिये प्यार करते हैं कि वह टकसाली बात कहता है।

टकटकी बँधना—निर्निमेष देखना।

उ०—शकुन्तलाके रूप और लावण्यसे आकृष्ट होकर उसकी ओर दुष्यन्तकी टकटकी बँध गई।

टका-सा जवाब देना—साफ इनकार करना।

उ०—मैं ऐसे आदमीसे सवाल नहीं करता, जो टका-सा जवाब दे।

टक्कर खाना—हानि उठाना।

उ०—मनुष्य अनेक बार टक्कर खाता है, तब बुद्धि आती है।

टक्कर झेलना—चोट सहना, सम्मुख डटा रहना।

उ०—(अ) वह मरण-पर्यन्त टक्कर झेलता रहा।

(ब) यहाँ कौन है जो उसकी टक्कर झेलेगा ?

टक्कर लेना—मुकाबिला करना।

उ०—मुझे विश्वास नहीं कि तुम यादवसे टक्कर ले सकोगे।

टक्करका होना—बराबर होना।

उ०—तुम्हारा घोड़ा निःसन्देह मोहनके घोड़ेकी टक्करका है।

टक्कर लगना—हानि पहुँचना।

उ०—जब उसको बार-बार टक्कर लगेगी, तब उसकी बुद्धि ठिकाने आयेगी।

टक्कर मारना—कठिन परिश्रम करना।

उ०—मैंने बहुत टक्कर मारी, परन्तु यह सवाल समझमें नहीं आया।

टट्टीकी आड़में शिकार खेलना—छल-कपटसे काम लेना।

उ०—कौन नहीं जानता कि तुम रात-दिन टट्टीकी आड़में शिकार खेलते हो?

टट्टीकी आड़में शिकार खेलना—छिपकर दुष्कृत्य करना।

उ०—मेरे सामने उमरावकी प्रशंसाके पुल न बाँधो; मैं खूब जानता हूँ कि वह टट्टीकी आड़में शिकार खेलता है।

टट्टीमें छेद करना—भेद खोलना।

उ०—मुझसे अधिक छेड़ छाड़ न करो; अभी टट्टीमें छेद कर दूँगा, तो तुम जमीनमें गड़ जाओगे।

टट्टी में छेद करना—उपद्रव करना।

उ०—वह नाच जहाँ कहीं जाता है, टट्टीमे छेद करता है।

टट्टू पार होना—कार्य सिद्ध होना।

उ०—तुम्हारा तो टट्टू पार हुआ, मझदारमें रह गये हम।

टण्डीरा लद जाना—मर जाना।

उ०—अमरनाथ क्या अमरौती खाकर आया है? एक दिन उसका भी टण्डीरा लद जायगा।

टण्डीरा लद जाना—बिगड़ जाना।

उ०—विलास प्रियतामें बड़े-बड़ोंका टण्डीरा लद जाता है, तुम तो किस गिनतीमें हो ?

टपक पड़ना—ललचाना।

उ०—कोई सुन्दर व्यक्ति देखा कि टपक पड़े, फिर भी समझते हो अपनेको ब्रह्मचारी।

> नहीं है दुख्तरे-रिज़-सा भी कोई हुस्न-परस्त।
> टपक पड़ी ये जहाँ कोई नौजवां देखा॥

टपक पड़ना—अकस्मात आना।

उ०—ये बातें हो ही रही थीं कि शुकदेव भी टपक पड़ा।

टरक-धांस लगाना—रुकावट पैदा करना।

उ०—हम न जानते थे कि तुम हमारे मामिलेमें भी टरक-धाँस लगाओगे।

टरका देना—खाली टाल देना; कुछ भी न देना।

उ०—वह तो तुम्हारे पास बड़ी आशासे आया था ; तुमने उसे टरका ही दिया।

टससे मस न होना—बिलकुल प्रभावित न होना; न मानना।

उ०—आप उसको कितना ही समझायें, वह कदापि टससे मस न होगा।

टांक लेना—लिख देना।

उ०—जो बातें कामकी होती हैं, जेम्स अपनी नोट-बुकमें टाँक लेता है।

टांक रखना—स्मरणके लिये लिख रखना।

उ०—इन सब बातोंको टाँक रखो, कभी काम आयेंगी।

टांका-पाना मिलना—झगड़ा निश्चित होना।

उ०—जगन्नाथ और मुरलीधरका टाँका-पाना मिल गया है।

टांके देना—सीना।

उ०—इस कपड़ेमें टाँके दे देते, तो कुछ दिनोंतक और चल जाता।

रहने दे बस यूँही अय जर्राह तू टाँके न दे।
हँसते हैं चाके-गरेबां ज़ख्मे-दामनदार पर॥

'नासिख़'

टांकी लगना—गृह निर्मित होना।

उ०—रामगोपाल इस नगरके एक धनी-मानी व्यक्ति हैं, उनके यहाँ बारह महीने टाँकी लगी रहती है।

टांके टूटना—साहस न होना।

उ०—उसके टाँके टूट गये, इसलिये उससे अब कुछ न हो सकेगा।

टांके खोलना—भेद प्रकट करना।

उ०—अभी सब टाँके खोल दूँगा, तो भागते नजर आओगे।

टांग अड़ाना—बीचमें बोलना; हस्तक्षेप करना।

उ०—तुम किसीके मामिलेमें क्यों टाँग अड़ाते हो ?

टांग तलेसे निकालना—नीचा दिखाना; परास्त करना।

उ०—बहुत अभिमान न करो, तुम्हारे जैसे उसने कितने ही टाँग तलेसे निकाले हैं।

टांग तलेसे निकलना—हार मान लेना।

उ०—यदि तुम इस श्लोकका अर्थ बता दो, तो मैं तुम्हारी टाँग तलेसे निकल जाऊँगा।

टांग तोड़ना—व्यर्थ फिरना।

उ०—उसे और कुछ काम नहीं है, दिन भर टाँग तोड़ता फिरता है।

टांग तोड़ना—अल्प योग्यतापर घमण्ड करना।

उ०—मैं कालीचरणसे भली भाँति परिचित हूं; वह अंगरेजी-की बहुत टाँग तोड़ता है।

टांगें रह जाना—थक जाना; क्लान्त हो जाना।

उ०—आज प्रातःकाल चार बजे उठा था; तबसे फिरते-फिरते टाँगें रह गईं।

टांडा लदना—मर जाना।

उ०—कल सायंकालके सात बजे टीकारामका टाँडा लद गया।

टांवा देना—धोखेमें डालना।

उ०—यह बात तो मेरी आँखों देखी है, तुम मुझको भी टांवा देते हो!

टाट-पलाण उठा लेना—सब सामान उठा लेना।

उ०—तीन दिन हुए यहांसे अपना टाट-पलाण उठा ले गया।

टाट उलटना—दीवालिया बनकर बैठ जाना।

उ०—लाला बधाऊमलने टाट उलट दिया, अब उनसे रुपया प्राप्त होना असम्भव हो गया है।

टाट खुजलाना—पिटनेको जी चाहना; हानि उठानेकी इच्छा करना।

उ०—क्या तुम्हारी टाट खुजलाती है जो सुखपूर्वक बैठे-बिठाए इस झगड़ेमें पड़ते हो?

टापते फिरना—दिक होना।

उ०—वह अपना काम निकालकर चलता हुआ, तुम अब टापते फिरो।

टापते रह जाना—कुछ न मिलना।

उ०—तुमको कुछ तो मिल गया; यहाँ तो टापते ही रह गये।

टापा-टोई करना—खोजना।

उ०—वसुदेव! बहुत देरसे क्या टापा-टोई कर रहे हो?

टायं-टायं करना—व्यर्थ बोलना।

उ०—दो घण्टेसे बैठे हुए टाँय टाँय कर रहे हो, अपना काम क्यों नहीं दूँखते?

टायं-टायं फिस होना—बदनामी होना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस मामिलेमें तुम्हारी टाँय-टाँय फिस होगी।

टाँय-टांय फिस होना—कुछ परिणाम न होना।

उ०—कौन नहीं जानता था कि तुम्हारे आन्दोलनकी टाँय-टाँय फिस होगी?

टाल-मटोल करना—बहाना बनाना।

उ०—तुमको टाल-मटोल करते-करते आज चार मास बीत गये हैं।

टिटकारी पर लगाना—संकेतपर चलाना।

उ०—जबसे तुमने उसको टिटकारीपर लगाया है, वह किसीकी नहीं सुनता है।

टिप्पस लगाना—स्वार्थसिद्धका ढंग जमाना।

उ०—तुम तो किसी-न-किसी प्रकार अपनी टिप्पस लगा ही लेते हो।

टिम्मी लगाना—झगड़ा कराना।

उ०—दाताराम! तुम बड़े दुष्ट हो, जहाँ जाते हो वहीं टिम्मी लगाते हो।

टीका-टिप्पणी करना—समालोचना करना।

उ०—अवकाश मिलनेपर उस वक्तव्यपर टीका-टिप्पणी करूँगा।

टीका भेजना—कन्याका सम्बन्ध स्थापित करना।

उ०—वसन्तपञ्चमीपर टीका भेज दो, विवाह वैसाखमें कर दिया जायगा।

टीप जमाना—सिरपर थप्पड़ मारना।

उ०—यह ऐसे न मानेगा, गोपाल! एक टीप और जमाओ।

टीप-टाप दिखाना—शान दिखाना।

उ०—लड़केके विवाहके अवसरपर देखना, लाला नन्दराम कैसी टीप-टाप दिखाते हैं।

टीप-टाप झाड़ना—घमण्ड मिटाना।

उ०—यहाँसे चुपचाप चले जाओ, वरना तुम्हारी सारी टीप-टाप झाड़ दूँगा।

टीप-टल्लो दिखाना—प्रभुत्व प्रकट करना।

उ०—वह किसीसे कम नहीं है, वह इस अवसरपर अपनी टीप-टल्लो अवश्य दिखायेगा।

टीस उठना—दर्द होना।

उ०—रात्रिके समय उसके कलेजेमें ऐसी टीस लगती है कि वह व्याकुल हो जाता है।

इक टीस-सी दिलमें उठती है इक दर्द जिगरमें होता है।
हम रातको बैठे रोते हैं जब मौजसे आलम सोता है॥

टुकड़ा लगना—आजीविकाका प्रबन्ध हो जाना।

उ०—परमात्माकी दयासे उसका टुकड़ा लग गया है, इसलिए अब वह निश्चिन्त है।

मिलता है लख्ते-दिल मुझे सरकारे-इश्क़ से।
अच्छी जगह नसीबने टुकड़ा लगा दिया॥

टुकड़े लग जाना—मस्ता जाना।

उ०—टुकड़ा लगते ही उसको टुकड़े लग गये, अब तो वह सीधे मुँह बात भी नहीं करता है।

टुकड़े सीधे करना—भोजनोपरान्त लेटना।

उ०—चलेंगे, जल्दी क्या है? जरा टुकड़े सीधे कर लें।

टुकड़ोंपर पड़ना—भोजनके लालचवश किसीका आश्रित होना।

उ०—लाभचन्द आजकल मामाके टुकड़ोंपर पड़ा हुआ है।

टुकड़-गदाई करना—किसीके घरपर भोजनके लिये पड़े रहना।

उ०—जिन लोगोंसे पुरुषार्थ नहीं होता, वे ही टुकड़े गदाई करते हैं।

टुकड़ोंपर आ पड़ना—केवल भोजनार्थ सेवा करना।

उ०—बापकी कमाई व्यसनोंमें खोकर वह अब बहनोईके टुकड़ोंपर आ पड़ा है।

टुकड़ोंका साँसा पड़ना—अत्यन्त निर्धन होना।

उ०—तुम दूध-घीकी बात करते हो, यहाँ आजकल टुकड़ोंका साँसा पड़ रहा है।

टुक-टुक देखना—विवश होना; कुछ न कर सकना।

उ०—वह एक घण्टेतक खरी खोटी सुनाता रहा और तुम टुक-टुक देखते रहे।

टुकड़े तोड़ना—अनायास निर्वाह करना।

उ०—तुमको क्या चिन्ता है? तुम तो चचाके घर टुकड़े तोड़ते हो।

टुटपूँजिया होना—दीवाला निकलना।

उ०—धनीराम किसी समय बड़ा धनिक व्यक्ति था, कुछ दिनोंसे टुट-पूँजिया हो गया है, तो क्या है?

टूट पड़ना—आक्रमण करना।

उ०—गाँववाले अपनी-अपनी लाठियाँ लेकर एकदम डाकुओं-पर टूट पड़े।

टूट पड़ना—कमी पड़ना।

उ०—यदि दस-बीस रुपयेकी टूट पड़ेगी, तो मैं भेज दूँगा।

टूटमें पड़ना—धनकी हानि उठाना।

उ०—व्यापार मन्द होनेके कारण वह टूटमें पड़ गया है।

टूटी बाँह गलेमें पड़ना—किसीका भार अपने ऊपर पड़ना।

उ०—मैं तो पहलेसे ही जानता था कि टूटी बाँह मेरे गलेमें पड़ेगी।

टूटी शाखाओंमें फल लगना—किसी बातमें हताश हो जानेके बाद फिर आशाकी झलक दिखाई देना।

उ०—तुम्हारी टूटी शाखाओंमें फल लग रहे हैं, अब तुम्हारे हर्षका क्या ठिकाना है ?

टेंटुवा लेना—गलेपर आक्रमण करना।

उ०—इस बातको अच्छी तरह समझ लो कि तुमने गाली दी, और मैंने टेंटुवा लिया।

टेकसे न डिगना—मान-मर्य्यादा न छोड़ना।

उ०—मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपनी टेकसे कदापि न डिगेगा।

टेक रख लेना—इज्जत बचा लेना।

उ०—उस धूर्त्तने तो अपनी करनीमें कसर न छोड़ी थी, परन्तु तुमने हमारी टेक रख ली।

टेक रह जाना—लाज बनी रहना।

उ०—हम हानि-लाभका विचार नहीं करते; प्रसन्नता इस बातकी है कि ईश्वरकी कृपासे हमारी टेक रह गयी।

टेक जाना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—उसकी टेक जाये या रहे, उसको इस बातकी चिन्ता ही नहीं है।

टेढ़ा होना—घमण्ड करना; अकड़ना।

उ०—वह टेढ़ा होता है, हुआ करे, हमारा परमात्मा तो सीधा है।

चर्ख़ टेढ़ा ही रहा और सैकड़ों बांके जवां।
टेढ़े होकर ज़ेरे-चर्ख़-पीर सीधे हो गये॥

टेढ़ी नजरसे देखना—प्रकुपित दृष्टिसे देखना। असन्तुष्ट होना।

उ०—हमसे क्या अपराध हुआ है, जो आप आज टेढ़ी नजर से देख रहे हैं ?

टेढ़ी खीर होना—कठिन काम होना।

उ०—आपके लड़केका सीधा करना तो टेढ़ी खीर हो गया है!

टेढ़ी चाल चलना—छल-कपटका व्यवहार करना।

उ०—जो आदमी सदा टेढ़ी चाल चलता है, उसके साथ सीधे आदमीकी नहीं निभ सकती है।

टेढ़ी आंखसे देखना—बुरी दृष्टिसे देखना।

उ०—उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो उसे तुम टेढ़ी नजर से देखते हो।

टेढ़ी भवें सीधी होना—क्रोध शान्त होना।

उ०—वह उपाय तो बताओ जिससे तुम्हारी टेढ़ी भवें सीधी हो सकें।

टोपी उछालना—हर्ष प्रकट करना।

उ०—यादव ! आज क्या मिल गया है जो इस प्रकार टोपी उछाल रहे हो ?

टोपी बदलना—किसीको मित्र बनाना।

उ०—बड़े खेदकी बात है कि पहले तुमने उससे टोपी बदली, और अब मन बदलते हो।

टोह लगाना—खोज करना।

उ०—रामस्वरूपसे कहो कि उस पुस्तककी टोह शीघ्र लगाये।

(ठ)

ठकुर-सुहाती कहना—हाँमें हाँ मिलाना।

उ०—आजकल वह व्यक्ति अच्छा समझा जाता है, जो ठकुर-सुहाती कहता है।

ठट लगना—भीड़ होना।

उ०—भाषण आरम्भ होनेके पूर्व ही मनुष्योंके ठट लग गये।

ठट लगना—अधिक परिमाणमें होना।

उ०—इस वर्ष समयपर वर्षा होनेके कारण अन्नके ठट लग गये।

ठठरी हो जाना—दुर्बल हो जाना।

उ०—रामप्रसाद! तुम तो तीन दिनके ज्वरमें ही ठठरी हो गये हो।

ठण्ड खाना—शीतका आक्रमण होना।

उ०—वैद्यजी! यादवको कोई गरम औषधि दीजिये; क्योंकि वह परसों ठण्ड खा गया।

ठण्डा पड़ना—शोभाका बिगड़ जाना।

उ०—तुम्हारे जानेके पूर्व ही सब जलसा ठण्डा पड़ चुका था।

ठण्डा होना—क्रोध शान्त होना।

उ०—एक बार गरम होकर वह बड़ी देरमें ठण्डा होता है।

ठण्डा कर देना—मार डालना।

उ०—तुम्हारा भाई अपनी दाढ़ गरम करनेके लिए कितने ही पक्षियोंको ठण्डा कर देता है।

ठण्डा हो जाना—मर जाना।

उ०—जब उन लोगोंने देखा कि वह ठण्डा हो गया है, तब उसको झोपड़ियोंमें फेंक कर चले गये।

ठण्डा पड़ना—शान्त होना।

उ०—जब तक वह ठण्डा पड़े तुम इसी जगह चुपचाप खड़े रहो।

ठण्डे चूल्हे बैठना—कुछ न करना; निराश होकर बैठना।

उ०—लोग कहाँसे कहाँ पहुँच गये और आप ठण्डे चूल्हे ही बैठे हुए हैं।

ठण्डे सांस भरना—शोकातुर होना।

उ०—चोरोंने सब घर खाली कर दिया है, इसलिए वह ठण्डे साँस भर रहा है।

ठन जाना—अनबन होना।

उ०—हमको ऐसा प्रतीत होता है कि किसी न किसी दिन उससे अवश्य ठन जायगी।

ठस्सेसे निकलना—बन-सँवरकर चलना।

उ०—वह जब-कभी भी बाजारसे निकलता है, बड़े ठस्सेसे निकलता है।

ठाट बदलना—रहन-सहनमें परिवर्तन करना।

उ०—इस बार तो लाला घमण्डी लालने सब ठाट बदल दिया है।

ठाट-बाटसे रहना—शानसे रहना।

उ०—चार पैसे हाथमें हैं, इसलिए वह ठाट-बाटसे रहता है।

ठाट लेना—निश्चय कर लेना; संकल्प करना।

उ०—मैंने ठान ली है कि जब तक उससे अपमानका बदला न लूँगा, चैनसे न बैठूँगा।

ठिकाना करना—आजीविकाका सामान करना।

उ०—इस प्रकार कबतक बीतेगी? रामनाथ तुम भी अपना ठिकाना करो।

ठिकाना करना—विवाह करना।

उ०—तुम्हारा कथन सोलह आने ठीक है, परन्तु पैसेके बिना ठिकाना कैसे करूँ?

ठिकाने आना—ठीक बात कहना।

उ०—इतनी देर मत्था-पच्ची करने पर तुम ठिकाने आये।

ठिकाने न रहना—विचलित हो जाना।

उ०—तुममें सबसे बड़ा दोष यह है कि शास्त्रार्थ करते समय तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती है।

ठिकाने लगना—यथोचित योग्य होना।

उ०—हमको तो हर्ष इस बातका है कि तुम्हारा परिश्रम ठिकाने लग गया।

ठिकाने लगना—काममें आना।

उ०—इस खद्दरके थानको सुरक्षित रख दो, कभी-न-कभी ठिकाने लग जायगा।

ठिकाने लगाना—उपयोगमें लगाना।

उ०—यह दरी मेरे काम तो आती ही नहीं, इसलिए इसको तुम ही ठिकाने लगाओ।

ठिकाने लगाना—समाप्त कर देना।

उ०—कल एक सेर मिठाई लाया था, तुम लोगोंने सब खा-पीकर ठिकाने लगाई।

ठिकानेकी बातें होना—उचित कहना।

उ०—जिस जगह ठिकानेकी बातें होती हैं, मैं वहीं बैठना-उठना ठीक समझता हूँ।

लिया नाम वाइज़ने जब उसके घरका।
कहा मैंने अब हैं ठिकानेकी बात॥

ठीक बनाना—दण्ड देना।

उ०—तुम निश्चिन्त रहो, अवकाश मिलनेपर मैं उसको अवश्य ठीक बनाऊँगा।

ठी-ठी करना—हँसना।

उ०—बराबरके कमरेमें प्रोफेसर साहब बैठे हुए हैं, और तुम लोग ठी-ठी कर रहे हो।

ठेका लेना—उत्तरदायी बनना।

उ०—जो अध्यापक तुम्हारे लड़केको पास करानेका ठेका ले, उसके पास ले जाओ।

ठेकेदार बनना—उत्तरदायी बनना।

उ०—संसारको सुखी बनानेके लिये कितने ही व्यक्ति ठेके-दार बने, परन्तु संसार सुखी न हुआ।

ठोकरपर ठोकर खाना—दुःखपर दुःख सहना।

उ०—जब मनुष्यके बुरे दिन होते हैं, वह ठोकरपर ठोकर खाता है।

ठोकरोंमें पड़ना—अत्यन्त नम्र होकर किसीकी सेवामें लगना; किसीके अधीन रहना।

उ०—पण्डितजी, इस बालकको कुछ पढ़ा दीजिये; यह आप-की ठोकरोंमें पड़ा रहेगा।

ठोकर खाते फिरना—मारे-मारे फिरना।

उ०—कुछ लोग समझते हैं कि पढ़ना-लिखना व्यर्थ है क्योंकि आज-कल पढ़े-लिखे ठोकर खाते फिरते हैं।

ठोक-बजाकर लेना—जाँच करके लेना।

उ०—यदि इस हँड़ियाको ठोक-बजाकर लेते, तो धोखा न खाते।

ठोकरोंमें उड़ाना—कुछ प्रतिष्ठा न करना; अति तुच्छ समझना।

उ०—जो साधारण व्यक्तिकी प्रेमसहित साधारण भेंटको ठोकरोंमें उड़ाता है, वह महा नीच है।

ठोक-बजाकर देखना—भली भांति जाँचना।

उ०—इस समय आप इसको खूब ठोक-बजाकर देख लीजिये, मैं फिर वापस न लूँगा।

ठोकर खाकर सँभलना—हानि उठाकर सावधान होना।

उ०—यह भी तो अच्छा ही हुआ कि वह ठोकर खाकर सँभल गया।

ठोकर लगना—हानि उठाना।

उ०—भाईजी! यह व्यापार है, इसमें अनेक बार ठोकर लगती है तब लाभ होता है।

ठोके देना—बोली मारना।

उ०—वह असन्तुष्ट होकर घरसे न निकल जाय, तो क्या करे? तुम उसको ठोके देते रहते हो।

ठोड़ीमें हाथ देना—अनुनय-विनय करना।

उ०—मैंने बहुत उसकी ठोड़ीमें हाथ दिया, परन्तु वह टससे मस न हुआ।

ठोड़ी पकड़ना—चिरौरी करना।

उ०—उसकी ठोड़ी पकड़ो, चरण छुओ, उसको तुम पर अवश्य दया आयगी।

(ड)

डकार जाना—दूसरेकी वस्तुको अपने अधिकार कर लेना।

उ०—हमारा ही माल डकार गये, और हमको ही आंखें दिखाते हो।

डकारतक न लेना—चुप-चाप हर लेना।

उ०—हमको दोष देते हो, अपनी तो कहो, दूसरोंका माल हजम करके डकारतक नहीं लेते।

डङ्क मारना—कष्ट देना।

उ०—वह काला साँप है, ऐसा डङ्क मारता है कि आदमी पानी नहीं माँगता।

डङ्का बजना—प्रसिद्ध होना।

उ०—अमेरिकामें आज भी स्वामी रामतीर्थका डङ्का बज रहा है।

डङ्का बजना—प्रसार होना।

उ०—जिधर देखिये, उधर ही चोरी और डकैतीका डङ्का बज रहा है।

डंकेकी चोट कहना—स्पष्ट कहना ; खुल्लम-खुल्ला कहना।

उ०—मुझे जो कुछ कहना होता है, डंकेकी चोट कहता हूँ।

डट जाना—जम जाना।

उ०—वीर सिंह शत्रुके सामने वीरतापूर्वक डट जाता है।

डण्डा खींचना—मारनेके अभिप्रायसे डण्डा उठाना।

उ०—इधर मैंने डण्डा खींचा और उधर वह दुम दबाकर भागा।

डण्डी मारना—कम तोलना।

उ०—तुम सौदा भी महँगा बेचते हो और डण्डी भी मारते हो।

डण्डे बजाते फिरना—व्यर्थ फिरना।

उ०—इस नगरमें अनेक नवयुवक आजकल डण्डे बजाते फिरते हैं।

डांट-फटकार देना—बुरा-भला कहना, धमकाना।

उ०—कुछ और भी देना जानते हो या सदा डाँट-फटकार ही देते हो ?

डांवा-डोल फिरना—परेशान फिरना।

उ०—मैं तीन माससे इसी प्रकार डाँवा-डोल फिर रहा हूँ, कुछ समझमें नहीं आता कि क्या करूँ।

डाटकर खाना—अधिक खाना।

उ०—इतना डाटकर क्यों खाते हो जो बैठा भी नहीं जाता।

डाटकर भरना—दबा-दबाकर भरना।

उ०—इतना डाटकर भर दिया है कि अब इसमें बिलकुल जगह नहीं है।

डाढ़ें मारना—जोरसे रोना।

उ०—कल रात एक स्त्री इस प्रकार डाढ़ें मार रही थी कि सुननेवालेका कलेजा काँप उठता था।

डायनको बच्चा सौंपना—किसी चीजको जोखिममें डालना।

उ०—यह कहाँ कि बुद्धिमत्ता है कि पहले डायनको बच्चा सौंपते हो, और फिर सिरपर हाथ धरकर रोते हो?

डींग मारना—मिथ्याभिमान करना।

उ०—उसका विश्वास कदापि न करना चाहिये, वह केवल डींग मारा करता है।

डुगडुगी पीटना—प्रसिद्ध करना।

उ०—तुमने ही उसकी डुगडुगी पीटी थी, तुम ही अब उसकी भेद उड़ाते हो।

डूब जाना—लीन हो जाना।

उ०—वह गणितके प्रश्नोंमें ऐसा डूब जाता है कि उसको अपने शरीरकी भी सुध नहीं रहती।

डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाना—किसीसे मत न मिलना।

उ०—यहाँ तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाता है।

डेढ़ ईंटकी मसजिद अलग बनाना—सबसे भिन्न मत रखना।

उ०—मियाँ बशीर अहमद सदा अपनी डेढ़ ईंटकी मसजिद अलग ही बनाते हैं।

डेरा-डण्डा उखाड़ लेना—रहना छोड़ देना।

उ०—उन्होंने यहाँसे तीन दिन हुए अपना डेरा-डण्डा उखाड़ लिया।

डोरपर लगाना—सधाना; मार्गपर लाना।

उ०—तुमने धीरे-धीरे उसको खूब डोरपर लगा लिया है।

डोरी ढीली छोड़ना—देखभाल कम करना।

उ०—मैंने इधर डोरी ढीली छोड़ दी, उधर वह असावधान हो गया।

डौल लगाना—उपाय निकालना।

उ०—मुझे आपके रुपयेकी बड़ी चिन्ता है; शीघ्र ही-कुछ न कुछ डौल लगाऊँगा।

(ढ)

ढिढोरा पीटना--जगह-जगह कहते फिरना।

उ०--इस भेदको और कोई नहीं जानता था, तुमने ही इसका ढिढ़ोरा पीटा है।

ढिंढोरा पिट जाना—अपयश फैल जाना।

उ०—सब जगह तुम्हारा ढिढोरा पिट गया है, परन्तु तुमको लज्जा नहीं आती।

ढई देना—जमकर बैठना।

उ०—यदि उसने मेरा रुपया न दिया, तो मैं उसके द्वारपर ढई दे दूँगा।

ढकोसले बांधना—अनर्गल बातें कहना।

उ०—जो तुम्हारे घर तकका भेद जानता है, उसके सामने ढकोसले क्यों बांधते हो?

ढचर बांधना—आकार स्थापित करना।

उ०—पहले मैं इसका ढचर बाँध लूँ, फिर दूसरी बात सोचूँगा।

ढचर बैठाना—उपाय निकालना।

उ०—कभी हमारे कामका ढचर भी बैठाओगे या अपनी ही चिन्तामें लगे रहोगे?

ढबपर चढ़ना—वशमें होना।

उ०—तुम एक बार जहाँ मेरे ढबपर चढ़े कि मैंने सभी पुरानी कसर निकाली।

ढब आना—ढङ्ग जानना।

उ०—तुमको उससे मिलनेका अच्छा ढब आता है, इसलिए तुम स्वयं ही उसके पास जाओ।

ढब पड़ना—टेव पड़ना।

उ०—जिस बालकको छोटी-छोटी चीजें चुरानेका ढब पड़ जाता है, वह पीछे बड़ा चोर हो जाता है।

ढबपर लाना—ठीक करना।

उ०—मैं उसको ढबपर ला सकता हूँ, परन्तु मुझे तीन मास-तक बिलकुल अवकाश नहीं है।

ढब निकालना—उपाय ढूँढ़ना।

उ०—बेढब कविसे मिलनेका ढब निकाल रहा हूँ।

ढर्रे जानना—उपाय मालूम होना।

उ०—तुम व्यापारके ढर्रे जानते हो, इसलिए मोहनको तुम्हारे पास छोड़ता हूँ।

ढर्रेपर लगाना—अनुकूल बना लेना।

उ०—मैं जानता हूं, तुम किसी न किसी भांति उसको ढर्रेपर लगा लोगे।

ढर्रेपर लाना—वशमें करना।

उ०—उसको एक बार ढर्रेपर ले आओ, फिर सब काम बना-बनाया है।

ढर्रेसे बातें करना—बड़े ढङ्गसे बोलना।

उ०—जब कभी वह मुझसे मिलता है, ढर्रेसे बातें करता है।

ढाई दिनकी बादशाहत पाना—अल्पकालके लिए अधिकार मिलना।

उ०—वह बेचारा अभिमान क्या करेगा? उसने कुल ढाई दिनकी तो बादशाहत पाई है।

ढाणे चढ़ना—काबूमें आना।

उ०—यदि उसके ढाणे चढ़ गये, तो सब चौकड़ी भूल जाओगे।

ढील डालना—विलम्ब करना।

उ०—यदि तुम ज़रा भी ढील डालोगे, तो सब काम बिगड़ जायगा।

ढूँढ़कर लड़ाई मोल लेना—जान-बूझकर लड़ बैठना।

उ०—जब तुम ढूँढ़कर लड़ाई मोल लेते हो, तो दूसरेको दोष नहीं दे सकते।

ढेर कर देना—मार डालना।

उ०—यदि अधिक तीन-पाँच करोगे, तो यहीं ढेर कर दूँगा।

ढेर हो जाना—मर जाना।

उ०—ये लोग तो ढेर हो गये, अब हमको अपने घर चलना चाहिये।

ढेर हो जाना—मर जाना।

उ०—लाला सौदागर मल तो आज ढेर हो गये हैं।

ढेर लगा देना—अधिक परिणाम वा संख्यामें उपस्थित करना।

उ०—आज फुटवाल-मैचमें मसूरी-टीमने वह हाथ दिखाये कि देहरा-टीमके पाँव उखड़ गये, और थोड़े समयमें ही 'गोलों' के ढेर लगा दिये।

ढोबरा फूटना—दुर्दशा होकर मरना।

उ०—तुम्हारे जैसे पापियोंका ऐसी जगह ढोबरा फूटता है, जहाँ पानी न मिले।

ढोबरा हाथमें लेना—भिक्षा माँगना।

उ०—जब तुमने ढोबरा हाथमें ले लिया, तब टुकड़ोंका क्या साँसा ?

———

(त)

तकलेके बल निकलना—दण्ड मिलना।

उ०—उस दुष्टका सूचित कर देना कि किसी दिन तकलेके बल अवश्य निकलेंगे।

तकदीर आजमाना—भाग्यके भरोसे कोई काम करना।

उ०—उसका पुरुषार्थमें विश्वास नहीं है, तभी तो वह सब जगह तकदीर आजमाता है।

तकदीर फूट जाना—भाग्यका प्रतिकूल होना।

उ०—इतना प्रयत्न करनेपर भी यदि सफलता न हुई, तो समझ लेना चाहिये कि उसकी तकदीर फूट गयी है।

तकदीर सीधी होना—भाग्य अनुकूल होना।

उ०—यदि अहमद हुसेनकी तकदीर सीधी है, तो आसमान टेढ़ा होकर क्या करेगा।

तकदीरको ठोकना—भाग्यको दोष देना।

उ०—तुम कार्य करते समय परिणाम नहीं सोचते, इसी लिए तकदीर ठोकते हो।

तकदीर सो जाना—बुरा समय आना।

उ०—कभी-कभी जागते रहनेपर भी मनुष्यकी तकदीर सो जाती है।

ख्वाबमें था वस्ल उनसे अब जुदाई हो गई।
आँख मेरी क्या खुली, तकदीर मेरी सो गई॥

तङ्ग आना—विरक्त हो जाना।

उ०—मैं इस व्यापारसे तङ्ग आ गया ; अब कुछ दूसरा धन्धा देखता हूँ।

तख्ता उलटना—क्रान्ति करना।

उ०—जो लोग किसी देशका तख्ता उलटते हैं, उनको फाँसी-का तख्ता मिलता है।

तटस्थ हो जाना—सम्बन्ध न रखना।

उ०—उस चौकड़ीसे तटस्थ हो जाओ, वरना बेमौत मारे जाओगे।

तत्ता खाना—जल्दी करना।

उ०—जो व्यक्ति प्रत्येक बातमें तत्ता खाता है, वह प्रायः हानि उठाता है।

तन आना—असन्तुष्ट होना।

उ०—तुम तो अकारण ही तन आते हो, यह बात अच्छी नहीं है।

तन जाना—अनबन हो जाना।

उ०—सुनते हैं कि रूस और जापानमें फिर तन गयी है।

तन-तनकर चलना—घमण्डसे चलना।

उ०—जो तन-तनकर चलता है, वह अवश्य ठोकर खाता है।

तन-तनके जो चलता है वह शोख़ कमान अबरू।
एक एकसे कहता है होता है शबाब ऐसा॥

तनमें जान पड़ना—शान्ति मिलना।

उ०—वह बहुत देरसे व्याकुल हो रहा था; अब तुमको देखकर उसके तनमें जान पड़ी है।

तपस्या निष्फल होना—परिश्रम वृथा जाना।

उ०—क्या तुम्हारा यह विश्वास है कि तपोधन शर्माकी तपस्या निष्फल होगी? कदापि नहीं।

तपड़ा उलट देना—दिवालिया बन जाना।

उ०—उसने तपड़ा उलट दिया है; अब रुपया किससे वसूल करोगे?

तमाम करना—समाप्त करना।

उ०—क्या तमाम अत्याचार उस गरीबपर ही तमाम करोगे?

क्यों किया ग़ैरपर सितम तूने।
यह हमीं पर तमाम करना था॥

'अमीर'

तरस खाना—दया करना।

उ०—उस भूखे भिखारीपर इस नगरमें यदि किसीने भी तरस खाया हो, तो उससे पूछ लो।

तरह दे जाना
तरह देना } किसी बातको दबा देना; ढँक देना।

उ०—वे उसकी बातोंको सदा तरह देते रहते हैं, जिससे वह शोख बनता जाता है।

तरसा-तरसाकर देना—थोड़ा-थोड़ा देना।

उ०—जो कुछ देना है, एक बार दे दो, तरसा-तरसाकर क्यों देते हो ?

तरसा तरसाकर मारना—तड़पा-तड़पाकर मारना।

उ०—नन्दने शकटारके बच्चोंको बन्दी-गृहमें तरसा-तरसाकर मारा था।

तरारे मारना—जोश दिखाना।

उ०—केवल तरारे ही मारते रहोगे या कुछ करके भी दिखाओगे ?

तर्क-वितर्कमें पड़ना—अधिक छान-बीन करना।

उ०—जो व्यक्ति तर्क-वितर्कमें पड़ता है, वह किसी निर्णय पर नहीं पहुंचता।

तलब बुझाना—आवश्यकता पूरी करना।

उ०—तुम अपनी तलब बुझाओ, तुमको दूसरोंकी भूख-प्याससे क्या प्रयोजन ?

तलवा खुजलाना—यात्रा करनेकी इच्छा होना।

उ०—तीन दिनसे तलवा खुजला रहा है, और पासमें पैसा नहीं है।

तलवा न टिकना—एक स्थानपर जमकर न रहना।

उ०—वह आपको कैसे मिल सकता है, घरपर कभी उसका तलवा ही नहीं टिकता।

तलवार की धारपर दौड़ना—महा कठिन कार्य करना।

उ०—जो किसीको प्यार करता है वह तलवारकी धारपर दौड़ता है।

अतिछीन मृणालके तारहुते तेहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुई बेह ते द्वार सको न तहाँ परतीतिको टाँड़ो लदावनो है॥
'कवि बोधा' अनी धनी नेजहुते चढ़ि तापे न चित्त डरावनो है।
यह प्रेमको पन्थ कराल महा तरवारिकी धार पै धावनो है॥

'बोधा कवि'

तलवारके घाट उतारना—खड्ग द्वारा हनन करना।

उ०—उस युद्धमें अनेक व्यक्ति तलवारके घाट उतारे गये थे।

तलवारके हाथ दिखाना—तलवारसे युद्ध करना।

उ०—खड्गसिंहने तलवारके ऐसे हाथ दिखाये कि शत्रुओंके पाँव उखड़ गये।

तलवारसे बात करना—तलवारक प्रयोग करना।

उ०—वह शत्रुओंके साथ तलवारसे बात करता है।

तलवार म्यानमें करना—मारकाटका विचार छोड़ना; शान्त हो जाना।

उ०—अब उसने अपनी तलवार म्यानमें कर ली है।

तलपट करना—नाश करना।

उ०—जुवे और मदिराने संसारमें घरके घर तलपट कर दिये हैं।

तलपट होना—नष्ट होना।

उ०—भाईकी असामयिक मृत्युके कारण उसका सब व्यापार तलपट हो गया है।

तली-तपड़ी उठा ले जाना—कुछ शेष न छोड़ना।

उ०—कल रात कुछ चोर लाला मनसब रायकी तली-तपड़ी उठा ले गये।

तलुवे चाटना—चाटुकार बनना; चिरौरी करना।

उ०—कल तुम जिसकी निन्दा किया करते थे, आज उसीके तलुवे चाटते हो।

तलुओंसे लगना—अपनेको अत्यन्त तुच्छ समझना।

उ०—जितना वह गरीब तुम्हारे तलुओंसे लगता है, उतना ही तुम उसके सिरपर चढ़े जाते हो।

तलुओंसे आग लगना—चोट पहुंचना।

उ०—जब वह तुमको उमरावके साथ घूमते हुए देखता है, तो उसके तलुओंसे आग लग जाती है।

आशिके-दिल खूँ शुदाके आग तलुओंसे लगी।
गैरके सीने पै वो पाये-हिनाई देखकर॥

तस्मा लगा न रखना—साफ गरदन उड़ा देना।

उ०—मोहनने तलवारका एक हाथ ऐसा मारा कि सोहनका तस्मा लगा न रखा।

तस्मे खींचना—बहुत मारना।

उ०—मैंने उसके तस्मे ऐसे खींचे कि उसने इस मार्गसे आना-जाना भी छोड़ दिया।

तहलका पड़ना—आतङ्क छाना।

उ०—आजकल यहाँ डाकुओंका ऐसा तहलका पड़ा हुआ है कि कितने ही लोग गाँव छोड़कर चले गये हैं।

तहको पहुँचना—मम जानना।

उ०—यह विषय इतना गंभीर है कि साधारण व्यक्ति इसकी तहको नहीं पहुंच सकता।

तह तोड़ डालना—अधिक खाना।

उ०—काम करते तो तुम्हारा दम निकलता है, परन्तु जब खानेको बैठते हो, तो रोटियोंकी तह तोड़ डालते हो।

तांता बँध जाना—लगातार आना।

उ०—स्वामीजीका भाषण सुननेके लिए स्त्री-पुरुषोंका तांता बँध गया है।

ताक लगाना—घातमें रहना।

उ०—लोमड़ी, जो ताक लगाये बैठी थी, शिकार उठाकर चम्पत हुई।

ताक-झांक करना—छिपकर देखना।

उ०—जो व्यक्ति ताक-झाँक करता है, वह कहीं-न-कहीं फँस जाता है।

'दाग' फिर ताक-झाँक करते हैं।
अब गिरे अब फँसे कहीं न कहीं॥

'दाग'

ताक-थेई मचवाना—अपमानित करना।

उ०—तुम स्वयं अप्रतिष्ठित हुए और साथमें उस भद्रपुरुषकी भी ताक-थेई मचवाई।

ताकमें रहना—अवसर देखना।

उ०—मैं भी ताकमें रहता हूँ, किसी दिन वह मिला और मैंने खबर ली।

ताड़ लेना—जान लेना।

उ०—मैंने पहिले ही ताड़ लिया था कि तुम कुछ धूर्त्तता अवश्य कराेगे।

तान उड़ाना—गाना।

उ०—गोविन्दराम! सुन रहे हो कोई क्या अच्छी तान उड़ा रहा है?

तानकर सोना—निश्चिन्त रहना।

उ०—तुम तो तानकर सोते हो, और यहाँ शीतके कारण रतजगा करना पड़ता है।

तानके मारना—जोरसे मारना।

उ०—मैंने एक थप्पड़ ऐसा तानकर मारा कि उसका मुँह फिर गया।

ताने-बानेमें लगा रहना—चिन्तामें पड़ा रहना।

उ०—मेरा हाल कुछ न पूछिये, दिन-रात ताने-बानेमें लगा रहता हूँ।

तार बँधना—क्रम चलना।

उ०—न जाने कौन याद कर रहा है ? आज तो हिचकियों-का तार बंध गया है ?

तार बांधना—प्रभाव जमाना।

उ०—आज तो पण्डित तारादत्तने भरी सभामें तार बाँध दिया है।

तार बांधना—किसी कार्यको अनवरत करते रहना।

उ०—तुम तो कहते थे कि वह गाना नहीं जानता, उसने तो कल गानेका तार बाँध दिया।

तार बँध जाना—आनन्द आ जाना।

उ०—तनसुखरायके आनेसे आजकी बैठकमें तार बँध गया है।

तार टूटना—क्रम बन्द हो जाना।

उ०—आँधी ऐसे कुसमय उठी कि गाने-बजानेका तार टूट गया।

तार न टूटना—क्रम बँधा रहना।

उ०—एक बार जब वह बात आरम्भ कर देता है, तो घण्टों तार नहीं टूटता है।

तार-तार कर डालना—बिलकुल फाड़ डालना।

उ०—कल रातको लड़ते लड़ते छुज्जूने जगदीशका पाजामा तार-तार कर डाला।

तार जमना—स्थिति ठीक होना।

उ०—अभी व्यवसाय आरम्भ किया है, जब कुछ तार जम जायगा, तब आपका रुपया चुका दिया जायगा।

तार बिगड़ना—स्थिति ठीक न रहना ।

उ०—उसका तार ऐसे कुसमय बिगड़ा है कि अब सँभलना कठिन है ।

तार-कुतार होना—काम बिगड़ना ।

उ०—तारादत्तका तार-कुतार हो गया; वह इस वर्ष काशी न जा सकेगा ।

तार-कुतार होना—मरणासन्न होना ।

उ०—कलसे ताराचन्दका तार-कुतार हो रहा है; परमात्मा कुशल करे ।

तारे तोड़ना—आश्चर्यजनक कार्य करना ।

उ०—तारादत्त इस प्रकार तारे तोड़ता है कि देखनेवाले वाह-वाह करने लगते हैं ।

तारे छिटकना—रात्रिमें आकाश निर्मल होना ।

उ०—बाहर आकर देखो, कैसे तारे छिटक रहे हैं, बादलका पता भी नहीं ।

तारे गिनना—किसीकी प्रतीक्षामें रातभर जागना ।

उ०—तुमको खबर भी नहीं कि तुम्हारी यादमें कोई रातभर तारे गिनता है ।

तारे दिखाई देना—कठिनतामें पड़ना ।

उ०—मैंने उसके विरुद्ध किया ही क्या है ? उसको अभीसे तारे दिखाई देने लगे ।

तारोंकी छांवमें जागना—प्रातःकाल उठना ।

उ०—जो मनुष्य तारोंकी छाँवमें जागता है, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

ताल-मेल खाना—अनुकूल होना; निभना।

उ०—मैं तुमको अपने साथ रखना नहीं चाहता; जिससे तुम्हारा ताल-मेल खाये, उसके पास रहो।

ताल ठोकना—लड़नेको प्रस्तुत होना।

उ०—दूर खड़े हुए क्या ताल ठोकते हो, समीप आकर वीरता-की बानगी दिखाओ।

तालियां बजाना—बदनाम करना।

उ०—उसकी मित्रताका मजा तब आयगा, जब लोग तुम्हारी तालियाँ बजायेंगे।

तालूमें कांटे पड़ना—अधिक प्यास लगना।

उ०—झाड़ियोंमें घूमते-घूमते तालूमें कांटे पड़ गये; एक लोटा ठण्डे जलका ला दीजिये।

तालूसे जीभ न लगने देना—बराबर बोलते रहना।

उ०—न जाने उसकी खोपड़ी किस धातुसे निर्मित हुई है कि वह तालूसे जीभ नहीं लगने देता।

तालूसे जीभ न लगना—बकवाद करते रहना।

उ०—मदिरा पीकर उसके पिताकी तालूसे जीभ नहीं लगती।

तावमें आना—भड़कना।

उ०—एक घण्टेसे उसकी हँसी उड़ा रहे थे, जब उसने कुछ कह दिया, तो आप तावमें आ गये।

ताव खाना—क्रोधित होना।

उ०—केवल ताव क्यों खाते हो ? लो थोड़ा ठण्डा पानी भी पी लो।

तिक्का-बोटी करना—टुकड़े बना देना।

उ०—जङ्गलमें डाकुओंने बाबा मस्तफ़ाकी तिक्का-बोटी कर डाली।

तिनका न रहना—कुछ भी शेष न रहना।

उ०—चोरोंने उसके घरमें ऐसी झाड़ू फेरी कि दाँत कुरेलने-को तिनका भी न रहा।

तिनके चुनवाना—पागल बनाना।

उ०—हीरके वियोगने रांझेसे अनेक दिनों तक जङ्गलमें तिनके चुनवाए।

बाइसे-बहशत हुई वे-ऐतनाई आपकी।
तिनके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी॥

तिनकेका पहाड़ कर दिखाना—थोड़ी सी बातको बहुत बढ़ा देना।

उ०—तुम्हारा यह चमत्कार क्या कुछ कम है जो तिनकेको पहाड़ कर दिखाते हो ?

तिया-पांचा करना—छिन्न-भिन्न करना।

उ०—ले-देकर एक बीघा गन्ना बचा था ; तुमने उसका भी तिया-पाँचा कर डाला।

तिलकी ओट पहाड़ होना—साधारण बातमें किसी बड़े रहस्यका छिपना।

उ०—जादू नहीं, मन्तर नहीं, केवल तिलकी ओट पहाड़ है।

तिल-मिला उठना—तड़क उठना।

उ०—मैंने एक ऐसी टीप जमायी कि उमराव तिलमिला उठा।

तिलका ताड़ बनाना—छोटी-सी बातको अधिक बढ़ाकर कहना।

उ०—पलककी झपकमें तिलका ताड़ बना देते हो, क्या यह प्रशंसाकी बात नहीं है?

तिल धरनेको जगह न रहना—बड़ी भीड़ होना।

उ०—नाटक-भवनमें कल तिल धरनेको भी जगह न रही।

तिलाञ्जलि देना—सम्बन्ध-विच्छेद करना; त्यागना।

उ०—शिवनाथके उपदेशसे जगदीशने अपने पिताको तिलां-जलि दे दी है।

तीखी चितवनसे देखना—बुरा भाव रखना।

उ०—मेरे समान सीधे व्यक्तिको भी आप तीखी चितवनसे देखते हैं।

तीन-पांच करना—झगड़ा करना, आपत्ति करना।

उ०—एक तरबूज है, यदि तुम तीन-पाँच करोगे, तो मैं इसका तिया-पाँचा कर दूँगा।

तीन-तेरह करना—तितर-बितर करना।

उ०—घरमें चार व्यक्ति मिल-जुल कर रहते थे, तुम्हारी कर्कशा स्त्रीने तीन-तेरह कर दिये।

तीन टांगका घोड़ा बनाना—मालमें झूठ-मूठ दोष दिखाना।

उ०—तुमको न लेना हो, न लो, तीन टाँगका घोड़ा क्यों बनाते हो ?

तीनों लोक दिखाई देना—विकट परिस्थितिमें पड़ना।

उ०—तुम्हारी आँखें तब खुलेंगी जब तीनों लोक दिखायी देंगे।

तीर हो जाना
तीर बन जाना } दौड़कर जाना।

उ०—जब वह प्रेमपूर्वक कमआन (come on) कहती तो तुम उसकी ओर तीर हो जाते हो।

तीर कर देना—उड़ा देना।

उ०—तुमको लज्जा नहीं आती कि उसकी पुस्तकें तीर कर दीं और उसीको आँखें दिखाते हो।

तीर लगना—चोट पहुँचना।

उ०—उस कमान-अबरूकी आँखें देखकर यादवके तीर लगता है।

तीस मारखाँ बनना—झूठी वीरताका अभिमान करना।

उ०—तुम जैसे वीर हो, सब जानते हैं; क्यों बड़े तीस मारखाँ बनते हो ?

तुर्की तमाम होना—मान-मर्दन होना।

उ०—केवल एक चपतमें उसकी सब तुर्की तमाम हो जायेगी।

तुर्की-बतुर्की जवाब देना—बराबरी करना, मुकाबिला करना।

उ०—जब मैं कोई सवाल पूछता हूँ, तो आपका पुत्र तुर्की-बतुर्की जवाब देता है।

तुम्बा बदली करना—दो व्यक्तियोंमें झगड़ा कराना।

उ०—कश्मीरी लालकी प्रकृतिसे तुम परिचित ही हो; वह सदा तुम्बा-बदली करता ही रहता है।

तुल जाना—तत्पर हो जाना।

उ०—जब यादव किसी बातपर तुल जाता है, तो उसे किये बिना नहीं छोड़ता।

तुला हुआ हाथ पड़ना—जाँचकर मारना, लक्ष्य न चूकना।

उ०—उसकी खोपड़ीपर मेरा एक ऐसा तुला हुआ हाथ पड़ा कि वह आँखें माँगने लगा।

तूती बोलना—प्रसिद्ध होना; ख्याति फैलना; चलना।

उ०—हम तो यह देखते हैं कि आजकल हर जगह तुम्हारी ही तूती बोल रही है।

तूफान खड़ा करना—उपद्रव मचाना।

उ०—उस दुष्टको छेड़कर तुमने एक और तूफान खड़ा कर दिया है।

तृण भी न समझना—अत्यन्त तुच्छ समझना।

उ०—तुम उसका गुण-गान करते नहीं थकते हो, और वह तुमको तृण भी नहीं समझता।

तृण-रज्जुसे हाथी बांधना—प्रबल शत्रुको अल्प शक्ति द्वारा वशमें करनेकी चेष्टा करना।

उ०—क्या उसको मोहनकी शक्तिका पता नहीं है? यदि है, तो वह तृण रज्जुसे हाथी क्यों बाँधता है?

तेग ओछी पड़ना—पूरा वार न होना।

उ०—तेग ओछी पड़ी, इसलिए वह साफ बच गया।

तेग तो ओछी पड़ी थी गिर पड़े हम आपसे।
दिलको क़ातिलके बढ़ाना कोई हमसे सीख जाय॥

'ज़ौक़'

तेलकी कचौड़ियोंपर गवाही देना—अल्प लोभसे झूठी साक्षी देना।

उ०—तिलकराम बड़ा ही निलंज्ज है; वह तेलकी कचौड़ियों-पर गवाही देता है।

तेल निकालना—कड़ा काम करना।

उ०—इस कड़ी धूपमें क्यों अपना तेल निकाल रहे हो? थोड़ी देर ठण्डमें विश्राम करो।

तेल जल चुकना—शक्ति समाप्त होना।

उ०—अब उससे सहायताकी आशा रखनी व्यर्थ है क्योंकि उसका तेल जल चुका है।

तेवर बुरी दिखाई देना—प्रेम-भावमें अन्तर पड़ना।

उ०—आजकल उनके तेवर बुरे दिखाई दे रहे हैं। कारण परमात्मा जाने।

तेवर बदल जाना—बेमुरौवत हो जाना।

उ०—तुम तो उसके प्रेमका बड़ा दम भरते थे; अब तुम्हारे तेवर क्यों बदल गये ?

तेवरका बल खुलना—क्रोध-शान्त होना।

उ०—उसके तेवरका बल तब खुलेगा, अब तुम अबड़-बबड़ बकना बन्द करोगे।

तेवर बिगड़ना—क्रोधित होना।

उ०—किसीने कुछ कहा, और तुम्हारे तेवर बिगड़े, यह भी कोई अच्छी बात है ?

तेवर अच्छे न होना—प्रेम-भाव न होना।

उ०—हमको बुरा बताते हो, तेवर तुम्हारे अच्छे नहीं हैं।

हम रहें तो किस तरह अच्छे रहें।
आज तेवर आपके अच्छे नहीं॥

तोड़ेके तोड़े उठ जाना—अधिक व्यय होना।

उ०—धनिकोंके विवाहमें तोड़े-के-तोड़े उठ जाते हैं, दो-चार सौकी क्या गिनती है ?

तोता-चश्मी करना—बे-मुरौवत होना।

उ०—यदि तोतारामने तोता-चश्मी की है, तो आश्चर्यकीकी बात नहीं।

तोतेकी तरह आंखें फेरना—बेवफाई करना।

उ०—जो व्यक्ति तोतेकी तरह आँखें फेर लेता है, उसको दिल देना मूर्खता नहीं तो क्या है ?

तोतेकी तरह पढ़ना—बिना समझे-बूझे पढ़ना।

उ०—तुलाराम तोतेका तरह पढ़ता है, इसीलिए परीक्षामें सफल नहीं होता।

तोर-मोर भूल जाना—उदार बन जाना।

उ०—प्रेममें पड़कर मनुष्य तोर-मोर भूल ही जाता है।

त्योरियोंपर बल डालना—प्रकुपित होना।

उ०—ललित मोहन! आज तुम्हारे पिता त्योरियोंपर बुरी तरह बल डाले हुए हैं।

ये तलवारें किसके गलेपर चलेंगी।
कि बल त्योरियों पर वो डाले हुए हैं॥

त्योरी चढ़ाना—क्रोध करना।

उ०—अब तुम उसके दिलसे इतने उतर गये हो कि तुमको देखते ही वह त्योरी चढ़ा लेता है।

त्योरीमें बल पड़ना—क्रोध प्रकट करना।

उ०—शारीरिक बल क्षीण होनेके कारण साधारण बातपर भी उसकी त्योरीपर बल पड़ता है।

त्रयताप-पीड़ित होना—सब प्रकारसे दुःखित होना।

उ०—पण्डित बहुगुणानन्द आजकल दुर्भाग्यवश त्रय-ताप-से पीड़ित हो रहे हैं।

त्रय-तापका धावा बोलना—सब प्रकारकी आपत्तियाँ आना।

उ०—जिसपर त्रय तापने धावा बोल दिया हो, उसके जीवनका अनुमान कौन कर सकता है?

त्राहि-त्राहि करना—दयाके लिये पुकारना।

उ०—जनता त्राहि-त्राहि कर रही है, परन्तु कोई नहीं सुनता।

त्रिदोष-ग्रस्त होना—बुद्धि ठिकाने न रहना।

उ०—तुम तो इस समय त्रिदोष-ग्रस्त हो रहे हो, कहीं एकान्त स्थानमें जाकर चुपचाप बैठो।

त्रिशंकु बन जाना—कहींका भी न रहना।

उ०—इस आन्दोलनमें अनेक व्यक्ति त्रिशंकु बन गये हैं।

त्रैलोक्य-राज्य भोगना—सब प्रकारसे ऐश्वर्य-शाली होना।

उ०—लाला त्रिलोकीनाथ आजकल त्रैलोक्य-राज्य भोग रहे हैं।

———

(थ)

थरथरी छूटना—शीतसे काँपना, घबराना।

उ०—तुमको तो बुरी तरह थरथरी छूट रही है; कम्बल ओढ़कर आगके पास बैठो।

थर्रा जाना—काँपना, डर जाना।

उ०—जब मैंने एक धमकी दी और लाठी तानी, तो वह थर्रा गया।

थल बेड़ा लगना—कार्य-सिद्ध होना।

उ०—ईश्वरकी कृपासे इस बार अवश्य थल बेड़ा लगेगा।

थाँग लगाना—खोज करना।

उ०—आप निश्चिन्त रहें, लालाजी! मैं इस चोरीकी थाँग अवश्य लगाऊँगा।

थाह मिलना—भेद मालूम होना।

०—प्रयत्न करनेपर इस मामिलेकी सब थाह मिल जायगी।

थाह लेना—मनका भाव जानना।

उ०—उससे किसी प्रकारकी आशा न कीजिये; मैं उसकी थाह ले] का हूँ।

थूककर चाटना—कहकर मुकर जाना; प्रतिज्ञा भंग करना।

उ०—क्या तुमने उसे सहायताका वचन नहीं दिया था ? यदि ऐसा है, तो फिर थूककर क्यों चाटते हो ?

थूक बिलोना—निरर्थक बातें करना ।

उ०—तुम्हारे पास बैठकर कोई क्या करे ? तुम तो दिनभर थूक बिलोते रहते हो ।

थू-थू करना—निन्दा फैलाना, घृणा करना ।

उ०—तुमने काम ही ऐसा किया है कि लोग थू-थू करेंगे ।

थू-थू होना—निन्दा फैलना ।

उ०—अब सब जगह तुम्हारी थू-थू होगी ।

थैलीका मुँह खोलना—खूब खर्च करना ।

उ०—पौत्रके विवाहके अवसरपर देखना, लालाजी थैलीका मुँह खोल देंगे ।

थोड़ा होना—रञ्ज करना ; उदास होना ।

उ०—वह स्वयं अधिक कष्ट उठाएगा; तुम व्यर्थ क्यों थोड़े होते हो ?

थोथरा सुजाना—क्रोध करना ।

उ०—तुम भी तो उसकी हँसी उड़ाते हो ; यदि उसने कुछ कह दिया, तो थोथरा क्यों सुजाते हो ?

———

(द)

दक्षिण भुजा बनना—सर्वोच्च सहायक बनना, विश्वास-पात्र बनना।

उ०—लाला बानूमल आजकल शास्त्रीजीकी दक्षिण-भुजा बन रहे हैं।

दण्ड-कमण्डलु उठाना—अपनी सामग्री लेकर चलते बनना।

उ०—स्वामी सदानन्द यहांसे आज अपना दण्ड कमण्डलु उठा ले गये हैं।

दधीचिकी हड्डी बन जाना—इतना कठिन हो जाना कि काटे कटे न गलाये गले।

उ०—प्रातःकालसे पका रहा हूँ, यह खिचड़ी तो दधीचिकी हड्डी बन गयी है, इसे अब कौन खा सकता है?

साल छः सातकी दाल दराय कै साहु कह्यो यह लेहु नई है।
फूंक दई लकड़ी बहुतेरिक साँझसे आधिक रात भई है॥
खाय लियो अकुलायके काचहि चाकरी चूल्हे निहारि गई है।
खोय दियो मुजरा दरवारको दाल दधीचिको हाड़ भई है॥

दबक जाना—छिप जाना।

उ०—देवदत्त बहुत देरसे यहां बैठा हुआ था; आपकी ओर देखते ही दबक गया।

दबा दबाकर हाथ मारना—खूब प्राप्ति करना।

उ०—गत वर्ष शक्करके व्यापारियोंने खूब दबा-दबाकर हाथ मारे।

दबाव डालना—विवश करना।

उ०—वह सीधी तरह कदापि न मानेगा; आप उसपर दबाव डालिये।

दबे पांव चलना—धीरे-धीरे चलना जिससे आहट न हो।

उ०—दुर्गादत्त! दबे पाँव क्यों चलते हो? क्या तुम किसीके चोर हो?

दबे मुर्दे उखाड़ना—पुरानी बातोंको याद दिलाना।

उ०—जाओ, दोनों शान्तिसे बैठो, दबे मुर्दे क्यों उखड़ते हो?

दम उलटना—जी घबराना।

उ०—तङ्ग और अँधेरी गलियोंमें चलनेसे उसका दम उलटता है।

दम उलटना—मृत्युके समय श्वास उखड़ना।

उ०—अब बचनेकी आशा नहीं है क्योंकि उसका दम उलट रहा है।

दम उलझना—श्वास रुकना।

उ०—सीनेमें कुछ गड़बड़ है जिससे उसका दम उलझता है।

दम उलझना—जी घबराना।

उ०—मैं बाहर जाता हूँ क्योंकि यहाँ मेरा दम घुट रहा है।

दम करना—फूँक लगाना।

उ०—वह साधु पानीपर दम करता और रोगियोंको पिलाता है।

दम खींचना—श्वास रोकना।

उ०—वह मरा नहीं है; उसने केवल दम खींच रखा है।

दम भरना—दावा करना; अभिमान करना।

उ०—यदि मेरे सामने उस दुष्टकी मैत्रीका दम भरोगे, तो मारते-मारते दम निकाल दूँगा।

दम न मारना—कुछ न कहना; चुपचाप बैठे रहना।

उ०—तुम दम तो लो, मैं अभी चलता हूँ; वह मेरी उपस्थितिमें दम न मारेगा।

दम घोट-घोट कर मारना—बहुत दुःख देकर मारना।

उ०—उसने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम उसको दम घोट-घोटकर मार रहे हो?

दम तोड़ना—मरना।

उ०—बीमार दम तोड़ चुका है, और आप डाक्टरको बुलाने जा रहे हैं।

क्यों न दम तोड़ कि जिसपर दम निकलता है मेरा।
'नासिख़' इन रोज़ों रक़ीबों का वह हमदम हो गया॥

'नासिख़'

दम तोड़ रहा है तेरा बीमारे-मुहब्बत।
वह कोसनेका वक्त है ज़ालिम कि दुआका॥

दमपर आ बनना—आपत्तिमें फँसना।

उ०—किसीके दमपर आ बनी हैं, और तुमको हँसी सूझ रही है।

हंसा बोला किया गैरोंसे तू मैंने न की उफ़ तक।
तेरी महफिलमें दमपर आ बनी लेकिन दम न मारा॥

दम साधना—श्वास रोकना।

उ०—वह साधु इस प्रकार दम साधता है कि बिल्कुल मृतकके समान बन जाता है।

दममें आना—धोखेमें आना।

उ०—दोष तुम्हारा ही है जो तुम जान-बूझकर उसके दममें आ गये।

दम देना—चाहना; अत्यन्त प्रिय समझना।

उ०—और तो और आजकल तो शिवनाथ भी जगदीशपर दम देता है।

तू वफ़ा करती जो अय उम्रे-रवाँ क्या होता।
बेवफ़ाई पै तेरी सैकड़ों दम देते हैं॥

दममें दम होना—जीवित रहना।

उ०—जबतक दममें दम है, उससे बदला लिये बिना न छोड़ूँगा।

दम फूलना—हाँपना।

उ०—ऊँचाईपर चढ़नेसे दामोदरका दम फूलता है।

दम चुराना—मृतवत् बन जाना।

उ०—जब जाल-हस्त धीवर तड़ागपर पहुंचे, तो उस मछलीने दम चुरा लिया।

दम लेनेकी फुरसत न मिलना—अत्यन्त संलग्न होना।

उ०—मुझको दम लेनेकी फुरसत नहीं मिलती, वह कहता है कि तुम मेरे विरुद्ध प्रचार करते फिरते हो।

दम लेना—विश्राम करना।

उ०—तुम दस मिनट दम लो, मैं अभी उसकी खबर लेता हूं।

दम देना—सहारा देना।

उ०—नानकने उसको कुछ दम दे दिया है, इसलिए वह उछल रहा है।

दम नाकमें आना—तंग होना।

उ०—उस दुष्टके अत्याचारोंसे दम नाकमें आ गया है।

या रब शबे-फुरकतसे दम नाकमें आया है।
किस रोज मेरे घरसे यह दूर बला होगी॥

'दिनकर'

दम निकलना—मरना।

उ०—सेठजी! किसी दिन आपका दम निकल जायगा और यह सब धन यहीं पर धरा रह जायगा।

दम निकलना—आपत्ति आना।

उ०—वहाँ बैठे-बैठे हुकुम चलाते हो, यहाँ आते हुए तुम्हारा दम निकल रहा है।

दम निकालना—मारना।

उ०—अधमरा तो कर दिया, फिर भी पीट रहे हो, क्या तुम बिल्कुल ही इसका दम निकालोगे?

दम निकालना—बोलना।

उ०—यदि ज़रा भी दम निकाला, तो बे-मौत मारे जाओगे।

दम टूटना—थक जाना।

उ० · आरम्भमें तो अच्छा दौड़ा, परन्तु अन्तमें उसका दम टूट गया।

दम-पट्टी देना—चाल चलना।

उ०—मेरा दम उलझ रहा है; मुझे दम-पट्टी क्यों देते हो? जाओ अपना काम करो।

दरिया-दिलीकी धूम होना—उदारताकी ख्याति होना।

उ०—सेठ दामोदर दासकी दरिया-दिलीकी धूम हो रही है।

न छोड़ा तिश्ना-लब बाकी कोई पाँवोंके छालोंने।
मेरी दरिया-दिलीकी धूम है ख़ारे-बयाबाँमें॥

दरिया-दिल बनना—उदार बनना।

उ०—कभी किसी प्यासेको चुल्लूभर पानी नहीं देते और बनते हैं दरिया-दिल।

दर्पणमें मुख देखना—अपने अवगुणोंपर दृष्टि डालना।

उ०—पहिले दर्पणमें अपना मुख देखो, फिर दूसरोंके दोष निकालना।

दलदलमें फँस जाना—भारी आपत्तिमें पड़ना।

उ०—गत वर्ष मैं दलदलमें फँस गया, इसीलिए कुछ कर न सका।

दह जाना—हानि पहुँचाना।

उ०—मित्रानन्दका मित्र तो हमको भी दह गया।

दहीके धोखे चूना खाना—ठगा जाना।

उ०—कैसे फिर रहे हो? कहीं दहीके धोखे चूना तो नहीं खा गये हो।

दांत-काटी रोटी खाना—घनिष्ठ प्रेम करना।

उ०—इनकी कुछ न पूछो, आजकल तो वे दाँत-काटी रोटी खाते हैं।

दांत किट किटाना—क्रोधित होना।

उ०—आपका अपराधी हरिमोहन है, आप मुझपर क्यों दाँत किटकिटाते हैं।

दांत तोड़ना—परास्त करना।

उ०—उसने अच्छे-अच्छोंके दाँत तोड़ दिये हैं; तुम्हारे हाथ-पाँव तोड़ना क्या कठिन है?

दांतसे दांत बजना—कठिन शात पड़ना।

उ०—आज तो दाँतसे दाँत बज रहे हैं; सुरेश! अँगीठीमें आग उठा लो।

दांत पीसकर रह जाना—क्रोधको सह लेना।

उ०— आज तो वह अमरनाथ पर दाँत पीसकर रह गया।

दांत रखना—लेनेकी इच्छा करना।

उ०—मैं जानता हूँ उसपर तुम भी दाँत रखते हो, और तुम्हारे साथीकी भी जीभ लपलपाती है।

दांत रखना—खानेकी अधिक इच्छा करना।

उ०—बड़ी कठिनतासे उसने पावपर खिचड़ी पकाई है, उसपर तुम भी दाँत रखते हो।

दांत किचकिचाना—क्रोध करना।

उ०—हमसे हाथ मिलाओ, उस गरीबपर क्या दाँत किच-किचाते हो ?

दांत पीसना
दांत मींजना } क्रोध करना।

उ०—अभीतक तो तुमने हरी-हरी चुगी है, जब चक्की पीसनी पड़ेगी, तब दाँत पीसोगे।

दांत तेज करना—खानेको प्रस्तुत होना।

उ०—कमाते हुए दम निकलता है, घरमें बैठे दाँत तेज करते हो।

दांत खट्टे करना—पराजित करना, थका देना।

उ०—शिवाजीने मुगलोंके दाँत खट्टे कर दिये थे।

दांत निकालना—मुँह फैलाकर हँसना।

उ०—सभ्यता सीखो, चार आदमियोंमें बैठकर मूर्ख दाँत निकालते हैं।

दांता-किल-किल रखना—कलह रखना।

उ०—वह अपनी माताके साथ आठ पहर दाँता-किलकिल रखता है।

दांतों तले अंगुली दबाना—अत्यधिक शोक करना।

उ०—आज आप किस कारणसे दाँतोंतले अंगुली दबा रहे हैं?

दांतोंमें अंगुली दबाना—आश्चर्य प्रकट करना।

उ०—उस योगीके चमत्कारको देखकर लोग दाँतोंमें अंगुली दबाते हैं।

दांतोंमें तिनका दबाना—अत्यन्त नम्र होना, क्षमा माँगना।

उ०—जिसको कल तिनकेके समान नहीं समझते थे, आज तुम उसीके सामने दाँतोंमें तिनका दबाते हो।

दांतोंमें तिनका दबाना—प्राण-भिक्षा माँगना।

उ०—जो मनुष्य दांतोंमें तिनका दबाता है, उसपर मैं आक्रमण नहीं कर सकता।

दांतों पसीना आना—कठिन परिश्रम करना।

उ०—आजीविका-उपार्जन करनेमें गरीबोंको दांतों पसीना आता है।

दांतोंमें पैसा चिपकाना—अति कृपण होना।

उ०—जिसके दाँतोंमें पैसा चिपकता है, वह किसीको कौड़ी भी नहीं दे सकता।

दांतोंसे कौड़ियां पकड़ना—अत्यन्त कृपण बनना।

उ०—तुम उससे परिचित नहीं हो, वह दाँतोंसे कौड़ियाँ पकड़ता है।

दांव चुकाना—बदला देना।

उ०—अच्छा, सावधान रहना। किसी दिन मैं भी अवश्य दाँव चुकाऊँगा।

दांव चूकना—अवसर खो देना।

उ०—तुम दाँव चूक गये; कल सबके सामने उसकी मरम्मत करनी चाहिये थी।

दांव ताकना—अवसरकी प्रतीक्षा करना।

उ०—मैं उस दिनके अपमानको भूला नहीं हूं; केवल दाँव ताक रहा हूं।

दांव देना—धोखा देना।

उ०—दौलतराम! तुम बड़े चलते-पुर्जे हो; हमको भी दाँव देते हो।

दांव पड़ना—अनुकूलता होना; अवसर मिलना।

उ०—मेरा दाँव पड़ने दो, उसको कभी-कभीकी कसर निकालूँगा।

दांवपर चढ़ना—वशमें होना।

उ०—घबराओ नहीं, किसी-न-किसी दिन वह तुम्हारे दाँवपर अवश्य चढ़ेगा।

दाईसे पेट छिपाना—भेदीसे भेद छिपाना।

उ०—जो बात है साफ कहो, दाईसे पेट क्यों छिपाते हो?

दाएं-बाएं देखना—सावधान होना।

उ०—लुटेरोंको देखकर उसने दाएँ-बाएँ देखा, और अपने हथियार सँभाले।

दाएं-बाएं करना—छिपाना।

उ०—अब उसके पास वह पुस्तक न मिलेगी; उसने कभीकी दाएँ-बाएँ कर दी होगी।

दाग देना—गहरी चोट लगाना।

उ०—पुत्रकी मृत्युने उसको बड़ा गहरा दाग दिया है।

है है मेरा फूल ले गया कौन।
है है मुझे दाग दे गया कौन॥

'नसीम'

दाग लगाना—कलङ्कित करना।

उ०—जो व्यक्ति अपने वंश, जाति और देशको दाग लगाता है, उसका मरना ही अच्छा है।

'पुत्र वहीं मर जाय जो कुलको दाग लगावे।'

दाढ़ गरम होना—भोजन करना।

उ०—रामदासके प्रीति-भोजमें आज तो तुम्हारी दाढ़ गरम होगी।

दाढ़ तले आना—काबूमें आना।

उ०—जिस दिन तुम उसकी दाढ़ तले आ जाओगे, वह तुम्हें खा जायगा।

दाढ़ तले जीरा दबना—मजा पड़ जाना।

उ०—वह चोरी नहीं छोड़ सकता, क्योंकि उसकी दाढ़ तले जीरा दब गया है।

दाढ़ी उखाड़ लेना—अपमानित करना।

उ०—मेरा रुपया दे दो, वरना चार आदमियोंमें तुम्हारी दाढ़ी उखाड़ लूँगा।

दानकी बछियाके दांत देखना—बिना मूल्यकी वस्तुमें दोष ढूँढ़ना।

उ०—तुम तो महामूर्ख हो जो दानकी बछियाके दाँत देखते हो।

दाने देखना—बदला लेना; दण्ड देना।

उ०—उसको दिल खोलकर उछल-कूद लेने दो; किसी दिन उसके दाने अवश्य देखूँगा।

दाने-दानेको मोहताज होना—अधिक दुर्दशा होना।

उ०—अपने दुष्कृत्योंके कारण आज वह दानेको मोहताज हो रहा है।

दामन फैलाना
दामन पसारना } माँगना।

उ०—जो किसीके सामने दामन फैलाता है, दामन पसारना नहीं रहता।

तकदीरका जो है वह पहुँचेगा आप ही।
फैलाइये न हाथ न दामन पसारिये॥

दाल-दलिया होना—कुछ-न-कुछ लाभ हो जाना।

उ०—पुरुषार्थ करते हो, ईश्वरकी कृपासे दाल-दलिया हो ही जायगा।

दाल-रोटी चलाना—साधारण रीतिसे निर्वाह करना।

उ०—धन तो बड़े भाग्यसे मिलता है; हाँ, परमात्मा दाल रोटी चला रहा है।

दाल न गलना—न निभना; वश न चलना।

उ०—अपनी खिचड़ी अलग पकाओ, यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी।

दालमें काला होना—सन्देह होना।

उ०—मैं पहले ही समझ गया था कि कुछ दालमें काला है।

दाहिने आना—अनुकूल होना।

उ०—घबराते क्यों हो ? कभी तो राम दाहिने आयेंगे।

दिग्दर्शन कराना—स्पष्ट रूपसे वर्णन करना।

उ०—इस पुस्तकमें पण्डित बलदेव मिश्रने भारतीय सामाजिक स्थितिका अच्छा दिग्दर्शन कराया है।

दिन होली रात दिवाली रहना—बड़े आमोद-प्रमोदसे जीवन बीतना।

उ०—धन-कुबेरोंके घर सदा दिन होली, रात दिवाली होती है।

दिनसे रात करना—अधिक समय लगा देना।

उ०—तुमको जब कहीं किसी कामको भेजा जाता है, तो तुम दिनसे रात कर देते हो।

तुझे नामाबर क़सम वहीं दिनसे रात करना।
कोई एक बात पूछे तू हजार बात करना॥

दिन लगना—घमण्ड करना।

उ०—जहां एक बार भी पेटभर भोजन नहीं मिलता था, वहां अब दिनमें चार बार हाथ साफ करता है; इसीलिए उसे दिन लगे हैं।

दिन आना—अन्तिम समय आना; विनाशकाल उपस्थित होना।

उ०—तुम्हारी धूर्त्तता सूचित करती है कि तुम्हारे दिन आ गये हैं।

दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ना—खूब उन्नति होना।

उ०—उसकी शठता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

दिन भारी हो जाना—जीवन दुःखप्रद होना।

उ०—धनाभावके कारण आजकल उसके दिन भारी हो रहे हैं।

दिनको दिन, रातको रात न समझना—कठिन परिश्रम करना; अत्यन्त संलग्न रहना।

उ०—तुमको पढ़ानेमें मैं दिनको दिन, रातको रात नहीं समझा।

दिन फिरना—भाग्य अनुकूल होना।

उ०—सुनते हैं बारह सालमें घूरेके दिन भी फिरते हैं, फिर तुम क्यों घबराते हो?

दिन जो दुश्मनके फिरे मेरे भी फिरने चाहिए।
क्या जमाना एक ही करवट बदलकर रह गया॥

दिन बुरे आना—भाग्य पोच पड़ना।

उ०—जिस मनुष्यके दिन बुरे आते हैं, उसकी बुद्धि भी काम नहीं करता।

'देखिये किस्मतकी खूबी दिन बुरे आने लगे।

दिनमें तारे नज़र आना—विकट-स्थितिमें फँसना; अधिक घबराना।

उ०—बीमारको रात्रिका ध्यान आते ही दिनमें तारे नजर आने लगते हैं।

खयाले-शबे-गमसे घबरा रहे हैं।
हमें दिनमें तारे नजर आ रहे हैं॥
'रियाज़'

दिन काटना
दिन भरना } दुःखसे जीवन-निर्वाह करना।

उ०—तुम नहीं जानते हम किस प्रकार अपने दिन काटते हैं।

दिनोंको धक्के देना—दुःखसे समय बिताना।

उ०—मैं भी तुम्हारी तरह दिनोंको धक्के दे रहा हूँ।

दिमाग बिगड़ना—अभिमान होना।

उ०—वह काले आदमीसे बात नहीं करता, क्योंकि आज-कल उसका दिमाग बिगड़ा हुआ है।

दिमाग चाटना }
दिमाग खाना } मस्तिष्कको कष्ट देनेवाली व्यर्थ बातें करना।

उ०—वह जब कभी यहाँ आता है, मेरा दिमाग चाट जाता है।

दिमाग खाली करना—मस्तिष्कको कष्ट देना।

उ०—गोपालके मस्तिष्कमें गोबर भरा है, उसके साथ कौन दिमाग खाली करे।

दिमाग सातवें आसमान पर होना—अत्यन्त घमण्डी होना।

उ०—चार पैसे हाथमें हैं, इसलिए उसका दिमाग सातवें आसमानपर है।

दिमाग लड़ाना—बहुत सोचना।

उ०—मैंने भी बहुत दिमाग लड़ाया, परन्तु यह विषय मेरी समझमें नहीं आया।

दिमाग होना—अभिमान होना।

उ०—धनिकोंके पास बैठनेसे उसको भी दिमाग हो गया है।

ऐसी क्या बू समा गयी तुमको।
हमसे जी इस कदर दिमाग हुआ॥

दिया खाना—आश्रित रहना।

उ०—मैं क्या उसका दिया खाता हूँ जो उससे हर बातमें दबूँ।

दिये तले अंधेरा होना—दूसरोंको शिक्षा देना और स्वयं कुछ न करना।

उ०—उपदेशकजीका क्या दोष है, आजकल बुद्धि-मार्तण्ड भारतमें दिये तले अंधेरा ही हो रहा है।

दिलपर बिजली गिरना—बड़ी गहरी चोट पहुँचना।

उ०—यह क्या कारण है कि वह हँसता है तो तुम्हारे दिल-पर बिजली गिरती है ?

दिल फट जाना—घृणा होना।

उ०—मैं श्यामसे बात नहीं करना चाहता क्योंकि उससे मेरा दिल फट गया है ?

दिल मिलाना—प्रेम करना।

उ०—जो तुमसे दिल मिलाता है, तुम उससे आँख क्यों नहीं मिलाते ?

दिल क्या मिलाओगे कि हमें हो गया यक़ीं।
तुमसे तो ख़ाकमें भी मिलाया न जायगा॥

दिल छीन लेना—आसक्त कर लेना।

उ०—जब किसीने उसका दिल छीन लिया, तो वह कलेजा थामकर रह गया।

दिलसे उतर जाना—अप्रिय होना।

उ०—पहिले वह तुम्हारे चित्तपर चढ़ा था, अब वह तुम्हारे दिलसे उतर गया। क्या चढ़ाव उतार है!

वो हसीन हैं तो हुआ करें, वो शकील हैं तो मैं क्या करूँ।
मेरी हसरतोंका किया है खूँ मेरे दिलसे अब वो उतर गये॥

दिल दहलना—भयभीत होना।

उ०—रात्रिके समय जब जङ्गलमें सिंह गरजते हैं, तो अच्छे-अच्छों का दिल दहलने लगता है।

दिलका मैला होना—कपटी होना।

उ०—जो आदमी दिलका मैला होता है, वह कभी साफ बात नहीं करता।

दिल न मिलना—प्रेम न होना।

उ०—जब हमसे तुम्हारा दिल नहीं मिलता, तो आँख मिलानेसे क्या लाभ है।

इस जाहरी मिलनेसे न मिलना ही भला है।
जब दिल ही तेरा मुझसे सितमगर नहीं मिलता॥

दिल आना—आसक्त होना।

उ०—जब किसीपर किसीका दिल आता है, तो उसका धैर्य्य, चैन, आराम सभी कुछ चला जाता है।

दिल जाना—प्रेममें फँसना।

उ०—दिल गया सो गया, जानकी कुशल मनाओ।

तुम जो हँसते हो, तुम्हें क्या मिल गया।
हम जो रोते हैं, हमारा दिल गया॥

मशरबे-इश्क़में कैसी हैं ये उल्टी बातें।
दिलके जानेको ये क्यों कहते हैं आना दिलका॥

'अमीर'

दिल बढ़ाना—प्रोत्साहन देना।

उ०—वह तो निरा मिट्टीका माधो है, उसका दिल कहाँ तक बढ़ाऊँ ?

दिल छलनी कर देना—दिलको अनेक आघात पहुँचाना।

उ०—जगदीशने ठोके दे-दे कर छज्जूरामका दिल छलनी कर दिया है।

दिल तोड़ना—निराश करना।

उ०—दिल बढ़ाना तो एक ओर रहा, तुम उलटा मेरा दिल तोड़ते हो।

दिल तो न मेरा तोड़ो वायदा तो जरा कर लो।
चाहे तो वफा करना चाहे न वफा करना॥

'सिफत'

दिल हिला देना—तड़पा देना।

उ०—पण्डित दलपति शर्माके भाषणने जनताका दिल हिला दिया।

दिलका गुब्बार निकालना—बुरी-भली कहना।

उ०—आज तो उसने खूब दिल खोलकर दिलका गुब्बार निकाला है।

दिल कुढ़ना—दिल दुःखी होना।

उ०—तुम जान-बूझकर वही काम करते हो, जिससे मेरा दिल कुढ़ता है।

दिल खट्टा होना—घृणा होना।

उ०—उसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया कि उससे मेरा दिल खट्टा हो गया।

दिलकी भड़ास निकालना—विरोधके कारण किसीको बुरी-भली कहना।

उ०—तुमने कौनसी कमी की है? तुमने भी खूब दिलकी भड़ास निकाली है।

दिलके फफोले फोड़ना—मनका दुःख प्रकट करना; अरमान निकालना।

उ०—मैं तो पहले ही जानता था कि तुम आज दिलके फफोले फोड़ोगे।

दिलका फफोला फूटना—मनका शोक दूर होना।

उ०—चलो अच्छा हुआ, आज तुम्हारे दिलका फफोला भी फूट गया।

दिलका दिलमें रह जाना—मनकी इच्छाका पूर्ण न होना।

उ०—उससे बात भी न हो सकी, आज तो दिलकी दिलमें रह गयी।

दिल लगाना—प्रेम करना।

उ०—जो किसीसे दिल लगाता है, वह दुनियाभरकी आपत्ति मोल लेता है।

आबरू इश्के-बुतांमें न गँवाये कोई॥
जान देदे बखुदा, दिल न लगाये कोई॥

दिलमें चुभना—दिलको बुरा लगना।

उ०—तुम सदा ऐसी बात कहते हो, जो मेरे दिलमें चुभती है।

चुभती है मेरी बात तेरे दिलमें हमेशा।
यह मेरी जबां है, कोई नशतर तो नहीं है॥

दिल मारना—इन्द्रिय-संयम करना।

उ०—जो मनुष्य दिल मारता है, वह सदा सुखी रहता है।

दिलमें गड़ जाना—भा जाना, अच्छा लगना।

उ०—शकुन्तलाका लावण्य दुष्यन्तके दिलमें गड़ गया।

दिलमें घर करना—दिलमें समाना।

उ०—जबसे किसीने उसके दिलमें घर किया है, तबसे वह न घरका रहा है न घाटका।

दिलपर साँप लोटना—चोट लगना; रंज पहुँचना।

उ०—किसीको अलकें देखकर उसके दिलपर साँप लोटते हैं।

दिलपर हाथ धरे फिरना—व्याकुल हुए फिरना।

उ०—पहिले उसको दिल दे दिया, अब दिलपर हाथ धरे फिरते हो।

दिलमें समाना—प्रेम होना।

उ०—उसके दिलमें कोई ऐसा समाया है कि अब उसकी आँखोंमें दूसरा समाता ही नहीं है।

दिल पसीजना—दया आना।

उ०—उस संगदिलको दिल देकर तुम आशा न करो कि उसका दिल पसीजेगा।

दिल हाथमें लिये फिरना—व्याकुल होना।

उ०—पहिले किसीको दिल दे दिया, अब दिल हाथमें लिये फिरते हो।

दिलपर हाथ रखना—सान्त्वना देना।

उ०—दिलपर हाथ तो रखते हो, कहीं दिलपर आँख तो नहीं रखते?

दिल फिरना—इच्छा न करना।

उ०—उसके हाथों इतना कष्ट उठाया कि उसके प्रेमसे हमारा दिल फिर गया।

दिल फीका हो जाना—दिल हट जाना।

उ०—उसकी बनावटी मीठी बातोंसे मेरा दिल फीका हो गया है।

दिल ठिकाने लगाना—सान्त्वना देना।

उ०—दिल लेकर भूल गये, कभी हमारा दिल तो ठिकाने लगाया होता।

दिल ठिकाने लगाना—मनको वशमें करना।

उ०—पद-पदपर ठोकर खिलानेवाले दिलको ठिकाने लगाओ।

दिल ठोकना—निश्चय करना।

उ०—कहीं बादमें मुझको दोष देने लगो, इसलिए काशी चलनेके पूर्व सब प्रकारसे अपना दिल ठोक लो।

दिल चुराना—दिल छीनना; मोहित करना।

उ०—दिल चुराना था, चुरा लिया, अब आंखें न चुराओ।

'दिल चुराया है, तो वह आँख मिलायें क्योंकर॥'

सामने बैठके जो दिलको चुराये कोई।

ऐसी चोरीका पता ख़ाक लगाये कोई॥

दिल उमड़ना—दुःखी होना।

उ०—किसीको दुःखमें देखकर मेरा दिल उमड़ आता है।

दिल थाम कर रह जाना—चोट सह लेना।

उ०—जब किसीने उसका दिल छीन लिया, तो वह दिल थाम कर रह गया।

दिल बुझ जाना—उत्साहहीन हो जाना।

उ०—उसने कहा—"मुझे बुझा हुआ पानी क्यों देते हो? मेरा तो जीवनसे दिल बुझ गया है।"

दिल बुझना—उदासीन हो जाना।

उ०—जिसके दिलमें ईश्वरीय प्रकाश आ जाता है, सांसारिक बातोंसे उसका दिल बुझ जाता है।

दिल अटकना—आसक्त होना।

उ०—जबसे उसका दिल अटका है, उसको एक विचित्र लटक सवार हो गयी है।

दिल खुलना—संकोच दूर होना, निर्भय होना।

उ०—पहले तो वह यहाँ आता हुआ बहुत घबराता था, परन्तु अब उसका दिल खुल गया है।

दिल खिलना—प्रसन्न होना।

उ०—परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका समाचार सुनते ही उसका दिल खिल गया।

दिल ठण्डा होना—शान्ति मिलना।

उ०—क्या उसको भट्टीमें झोंककर ही तुम्हारा दिल ठण्डा होगा?

दिल भारी करना—शोकातुर होना।

उ०—हलकी-सी बातके लिए क्यों इतना दिल भारी करते हो?

दिल भटकना—इच्छा होना; तरसना।

उ०—बड़े दिनकी छुट्टियोंमें अवश्य घर आओ, क्योंकि तुम्हें देखनेको हमारा दिल भटकता है।

दिल दूना होना—साहस बढ़ना।

उ०—तुम्हारे आनेसे उसका दिल दूना हो गया है।

दिल मसलना—दिलको चोट पहुँचाना।

उ०—क्या तुमको इसीलिए दिल दिया था कि तुम दिल मसलोगे?

दिल मचलना—मोहित होना; मन चलना।

उ०—मुनिके आश्रममें शकुन्तलाको देखते ही दुष्यन्तका दिल मचल गया।

दिल पकड़ा जाना—आसक्त होना।

उ०—क्या तुम्हारा दिल पकड़ा गया जो दिल पकड़े फिर रहे हो?

दिल पकड़कर रह जाना—चोट सह लेना।

उ०—जिस समय उसने सभामें मुझपर आक्रमण किया, मैं दिल पकड़कर रह गया।

दिल थामना—धैर्य्य-धारण करना।

उ०—तुम दिल तो थामो, अभी सब काम बना जाता है।

दिलकी घुण्डी खोलना—मनकी बात प्रकट करना।

उ०—दिल तो ले लिया, अब जरा दिलकी घुण्डी भी खोलो।

दिलकी घुण्डी खोलना—प्रसन्न होना।

उ०—जब उसने वहाँ जाना बन्द कर दिया, तब तुमने दिलकी घुण्डी खोली।

दिलमें रखना—गुप्त रखना।

उ०—वह भेदकी बातोंको सदा अपने दिलमें रखता है।

दिलमें रखना—प्रिय समझना।

उ०—जो तुमको दिलमें रखता है, तुम उसका दिल मसलते हो। प्रेम इसीका नाम है!

दिल लेना—मोहित करना।

उ०—जबसे किसीने उसका दिल ले लिया है, वह बेदिल हो गया है।

पहिले तो ले लिया दिल ज़ालिम ने चाल चलकर।
अब जान माँगता है तेवर बदल-बदल कर॥

दिलको लगना—हृदयपर प्रभाव पड़ना।

उ०—आपकी बातें ही ऐसी हैं, जो सबके दिलको लगती हैं।

दिल देखना—हृदयकी परीक्षा करना।

मैंने कहा—"दिल देखते हो या दिल लेते हो?"
उसने कहा—"दिल देखकर ही तो दिल लेंगे।"

दिलकी कली खिलना—प्रसन्न-वदन होना।

उ०—मोहनके मधुर हास्यके झोंकेसे रामके दिलकी कली खिल जाती है।

दिलसे दिलको राह होना—पारस्परिक प्रेमका प्रभाव होना।

उ०—उसको भी कुछ-न-कुछ दुःख अवश्य होता होगा, क्योंकि दिलसे दिलको राह होती है।

'दिलसे दिलको राह है उनको खबर हो जायगी।'

दिल सर्द हो जाना—उत्साह न रहना।

उ०—इस आन्दोलनकी सरगर्मियोंसे उसका दिल सर्द हो गया है।

दिलमें गिरह पड़ जाना—मनमुटाव होना।

उ०—गिरीशकी आरसे मेरे दिलमें गिरह पड़ गयी है।

'गिरह पड़ जायगी दिलमें बड़ी मुश्किलसे निकलेगी।'

दिल चाक कर देना—गहरी चोट पहुँचाना।

उ०—किसीने उसका दिल चाक कर दिया, फलतः उसने अपना गरेबाँ चाक कर डाला।

'दुख़्तर कुम्हारकी ने मटकाके चश्म अपनी'
दिल चाक कर दिया है फिरता हूँ लोटा लोटा॥

दिलसे धुवां उठना—आह भरना।

उ०—उसके सीनेके अन्दर आग लगी है, इसीलिए दिलसे धुवाँ उठता है।

दिलसे करना—जी लगाकर करना।

उ०—आप जो काम बतलायेंगे, मैं उसे दिलसे करूँगा।

दिलका बुखार निकालना—बुरी-भली कहना।

उ०—अब तो तुमने भी अपने दिलका बुखार निकाल लिया है।

दिल पक जाना—अत्यन्त व्यथित हो जाना।

उ०—जगदीश! तुम यहांसे चले जाओ, तुम्हारे दुर्व्यवहारसे मेरा दिल पक गया है।

दिल जलाना—दुःख पहुँचाना।

उ०—जो पुत्र अपने माता-पिताका दिल जलाता है, वह फल-फूल नहीं सकता।

दिल दुखाना—दुःख पहुँचाना।

उ०—किसीका दिल लेकर दिल दुखाते हो, यह उचित नहीं है।

दिल चलना—किसी वस्तुकी इच्छा होना।

उ०—धनको छिपाकर रखना चाहिये, क्योंकि इसको देख मुनिका भी दिल चल जाता है।

दिल धड़कना—भयभीत होना।

उ०—जङ्गलमें सिंह अथवा व्याघ्रको देखकर उसका दिल धड़कने लगता है।

दिल धड़कना—व्याकुल होना।

उ०—बहुत देरसे तुम्हारे मित्र धर्मानन्दका दिल धड़क रहा है।

दिल तड़पना—व्याकुल होना।

उ०—न जाने किसकी यादमें उसका दिल तड़प रहा है।

दिल तड़पता है तो कहती हैं ये आँखें रोकर।
अब तो देखी नहीं जाती है तबाही तेरी॥

'अमीर'

दिल धक्से हो जाना—एकदम घबरा उठना।

उ०—रात्रिके समय बन्दूककी आवाज सुनकर उसका दिल धक्से हो गया।

दिल धुकड़-पुकड़ होना—मन डावाँ-डोल होना।

उ०—आज न जाने क्यों मेरा दिल धुकड़-पुकड़ हो रहा है।

दिल देना—आसक्त होना, मोहित होना।

उ०—जो तुमको दिल देता है, तुम उसकी जान लेते हो, यह कहाँका न्याय है ?

दिल तो देता हूँ मगर देख लो टूटा-फूटा।
फिर न फेरूँगा कभी पीछे बखेड़ा निकले॥

दिल भर आना—रोनेकी अवस्थामें हो जाना, दुःख होना।

उ०—परीक्षामें अनुत्तीर्ण होनेका समाचार सुनकर उसका दिल भर आया।

दिल पाना—मनका भेद जानना।

उ०—मैंने उसका दिल पा लिया है; वह तुम्हारे साथ कदापि विश्वासघात न करेगा।

दिल बैठ जाना—साहस टूट जाना।

उ०—गत वर्षकी असफलताके कारण उसका दिल बैठ गया है, इसलिए वह इस बार चुनावमें खड़ा न होगा।

दिलकी लगी बुझाना—मनका दुःख शान्त करना।

उ०—क्या तुम उसको इस आशासे दिल देते हो कि वह तुम्हारे दिलकी लगी बुझाएगा ?

दिलका गवाही देना—निश्चय होना।

उ०—यदि मेरा दिल गवाही देगा, तो मैं उसकी देख-भालका उत्तरदायित्व लूँगा।

दीपकमें बत्ती पड़ना—सायंकाल होना।

उ०—कल जिस समय मैं गया, दीपकमें बत्ती पड़ चुकी थी।

दीवारके कान होना—मुँहसे निकलते ही प्रकट होनेकी सम्भावना होना।

उ०—सुनते हैं दीवारके कान होते हैं, इसलिये धीरे-धीरे बातचीत करो।

दुकान बढ़ाना—दुकान बन्द करना।

उ०—आपके नौकरके आनेके पूर्व मैं दुकान बढ़ा चुका था।

दुधारू गायकी लात खाना—स्वार्थवश कटु वचन सहना।

उ०—उसको सहनशील न समझो, वह केवल दुधारू गायकी लात खाता है।

दुनियासे उठना—मरना।

उ०—बड़े-बड़े लोग दुनियासे उठ गये, परन्तु वह समझता है कि मैं सदा बैठा रहूँगा।

दुनियाकी हवा लगना—प्रपंचोंमें फँसना।

उ०—जिसको दुनियाकी हवा लग जाती है, उसका ईश्वर-भजनमें मन नहीं लगता।

दुनियासे कूच करना—मरना।

उ०—कल दिनको दो बजे लाला दुनीचन्द दुनियासे कूच कर गये।

दुनियाका कुत्ता बनना—सांसारिक विषयोंमें लिप्त होना।

उ०—जो व्यक्ति दुनियाका कुत्ता बन जाता है, वह सदुपदेश देनेवालेको देखकर भौंकता है।

दुन्द मचाना—कोलाहल करना ।

उ०—न जाने इन लोगोंने इतनी देरमें क्यों दुन्द मचा रखा है ।

दुन्दुभी देना—संग्रामकी घोषणा करना ।

उ०—सुनते हैं रूसने जापानको दुन्दुभी दे दी है ।

मानहु मदन दुन्दुभी दीन्हीं ।
मनसा विश्व विजय कहं कीन्हीं ॥

'तुलसी'

दुम दबाकर भागना—बहुत तेजीसे भागना ।

उ०—बहुत वीरताकी डींग न मारो, जब जङ्गलमें सिंहको देखोगे, तो दुम दबाकर भागोगे ।

दुम दबाकर भागना—भयभीत होकर चुपचाप चल देना ।

उ०—वह यहाँ एक घण्टेसे बैठा हुआ था, आपको देखते ही दुम दबाकर भाग गया ।

दुममें नमदा बाँधना—दुर्गति करना ।

उ०—यादव किसी दिन दामोदरको दुममें नमदा बाँधेगा ।

दुर-दुर होना—तिरस्कार होना ।

उ०—यदि दुष्कृत्योंसे बाज न आओगे, तो दुनियामें तुम्हारी दुर दुर होगी ।

दुर्भाग्यका वाहन होना—बड़ा कङ्गाल होना ।

उ०—दुर्गादत्तकी दशा न पूछो, वह तो बेचारा आजकल दुर्भाग्यका बाहन हो रहा है ।

दुह लेना—धन हर लेना।

उ०—इन दुष्टोंने दरबारको दुह लिया, फिर भी पेट नहीं भरा।

दुह लेना—सार खींच लेना।

उ०—तुलसीदासने अपनी रामायणमें सब शास्त्रोंको दुह लिया है।

दुहाई देना—शरण चाहना।

उ०—कोई पथिक देरसे आपके द्वारपर दुहाई दे रहा है; उसकी सुधि लीजिये।

दुहाई देना—न्याय चाहना।

उ०—उसने घरसे चलकर राजाके द्वारपर दुहाई दी।

दुनियाका पीकदान बनना—संसारमें निन्दित होना।

उ०—जीवन! यह भी कोई जीनेमें जीना है जो तुम दुनियाका पीकदान बनकर जी रहे हो।

दूजका चांद होना—कभी-कभी दिखायी देना।

उ०—सूरज नारायण तो, भाईजी, आजकल दूजका चाँद हो गये हैं।

दूधका दूध और पानीका पानी करना—न्याय करना।

उ०—वह दूधका दूध और पानीका पानी करता है, इसीलिए दूर-दूरतक विख्यात है।

दूधकी मक्खी निकालकर फेंक देना—किसी विरोधीको किसी स्थानसे निकाल देना।

उ०—अब सब प्रकारसे शान्ति रहेगी, क्योंकि तुमने दूधकी मक्खीको निकाल कर फेंक दिया है।

दूधके दांत न टूटना—बाल्यावस्था होना।

उ०—अभी उसके दूधके दाँत भी न टूटे थे कि उसकी माताका देहान्त हो गया।

दूधके दांत न टूटना—अनुभवहीन होना।

उ०—वह हमको उपदेश देता है, जिसके अभीतक दूधके दाँत भी नहीं टूटे हैं।

दूधकी नदियाँ बहना—सम्पत्तिशाली होना।

उ०—एक समय था जब भारतवर्षमें दूधकी नदियां बहती थीं।

दूधों नहाना पूतों फलना—सब प्रकारका आनन्द भोगना।

उ०—ब्राह्मणने प्रसन्न होकर इस प्रकार आशीर्वाद दिया—"ईश्वरकी दयासे दूधों नहाओ और पूतों फलो।"

दूनकी लेना—डींग मारना।

उ०—मैं सच कहता हूँ वह तुमको एक कौड़ी न देगा; वह केवल दूनकी लेता है।

दूने होना—अधिक लाभ होना।

उ०—दयाराम ! निश्चय जानो कि इस बार नीलके व्यापारमें तुम्हारे दूने होंगे ।

दूरसे नमस्कार करना—घृणा करना ।

उ०—शास्त्रीजी ! मैं ऐसे महात्माओंको दूरसे नमस्कार करता हूँ ।

दूरकी सोचना—दूरदर्शी होना ।

उ०—जो आदमी तुम्हारे समीप बैठा है, बड़ी दूरकी सोचता है ।

दूरकी कहना—बुद्धिमत्ताकी बात कहना ।

उ०—जरा उसके पास जाकर सुनो, वह बड़ी दूरकी कहता है।

दूसरा रङ्ग न चढ़ना—स्वभाव न बदलना ।

उ०—वह ऐसे रङ्गमें रङ्गा हुआ है कि उसपर दूसरा रंग न चढ़ेगा ।

दूसरोंके अशकुनके लिए अपनी नाक कटाना—दूसरोंको हानि पहुंचानेके लिए अपने आपको आपत्तिमें डालना ।

उ०—जो व्यक्ति दूसरोंके अशकुनके लिए अपनी नाक कटाता है, उसकी प्रशंसा कौन करेगा ?

दूसरोंका मुंह देखना—दूसरोंसे सहायताका इच्छुक होना ।

उ०—हाथ-पाँव हिलाते नहीं, बैठे-बैठे दूसरोंका मुँह देखते हो ?

देख-भाल कर पांव उठाना—सावधान होकर कार्यमें पड़ना।

उ०—जो व्यक्ति देख-भाल कर पाँव उठाता है, वह कभी ठोकर नहीं खाता।

देख-भाल करना—तलाश करना।

उ०—उनसे कह देना कि मैं उस पुस्तककी देख-भाल कर रहा हूँ, यदि मिल गयी, तो भेज दूँगा।

देख-भालकर चलना—सोच-समझकर काम करना।

उ०—जो आदमी देख-भालकर चलता है; वह धोखा नहीं खाता।

देखते रह जाना—विस्मित हो जाना।

उ०—जब योगीराजका आसन पृथ्वीसे दो हाथ ऊपर उठा, सब लोग देखते रह गये।

देते ही बनना—देनेको विवश होना।

उ०—जब चार भले आदमी चन्दा लेने आते हैं, तो देते ही बनता है।

देवतासे राक्षस बनना—सन्मार्ग त्यागकर कुमार्ग-ग्रहण करना।

उ०—देवराजने देवतासे राक्षस बनकर अपने कुलको कलङ्कित कर दिया है।

दो कौड़ीकी हो जाना—अप्रतिष्ठित हो जाना।

उ०—यदि कोई दो बातें उलटी-सीधी कह बैठा, तो तुम्हारी इज्जत दो कौड़ीकी हो जायगी।

दो बातें करना—थोड़ी बातचीत करना।

उ०—कृपया दो मिनट ठहरिये, मैं पण्डितजीसे दो बातें कर लूँ।

दो-चार होना—समानता करना।

उ०—अच्छे-अच्छे विद्वान् उनको सिर झुकाते हैं, तुम उनसे क्या दो-चार होगे?

दो-दो दानेको फिरना—भोजन न मिलना; दुर्दशा होना।

उ०—जो माता-पिताका अनादर करता है, वह दो-दो दाने को फिरता है।

दो-दो हाथ हो जाना—लड़ाई हो जाना।

उ०—व्यर्थ प्रलापसे क्या प्रयोजन? आओ आज हमारे तुम्हारे दो-दो हाथ हो जायँ।

दो पाटोंके बीचमें आना—कठिन आपत्तिमें पड़ना।

उ०—जिस दिन दो पाटोंके बीचमें आओगे, सब चौकड़ी भूल जाओगे।

चलती चक्की देखके दिया कबीरा रोय।
दो पाटोंके बीच आ साबित रहा न कोय॥

'कबीर'

दो नावोंपर पांव रखना—दो पक्षोंका अवलम्बन करना।

उ०—इधर हो जाओ या उधर, दो नावोंपर पाँव क्यों रखते हो?

दोनों हाथोंमें लड्डू होना—सब प्रकार आनन्द ही आनन्द होना।

उ०—कृष्णने अर्जुनसे कहा—"यदि विजय पायी, तो राज्य करोगे, यदि मर गये, तो स्वर्ग पाओगे, तुम्हारे दोनों हाथोंमें लड्डू है।"

दोनों हाथोंसे नमस्कार करना—अरुचि होना।

उ०—मैं तो ऐसे मित्रोंको दोनों हाथोंसे नमस्कार करता हूँ।

दोनों हाथोंसे नमस्कार करना—घृणा करना।

उ०—वह तुम्हारे घरको दोनों हाथोंसे नमस्कार करता है।

दोनों हाथोंसे दस्तार (पगड़ी) थामना—सावधान होकर प्रतिष्ठा बचाना।

उ०—जहाँ दोनों हाथोंसे दस्तार थामनी पड़े, मैं ऐसी सभाको दोनों हाथोंसे नमस्कार करता हूँ।

'मीर' साहब ज़माना नाजुक है। दोनों हाथोंसे थामिये दस्तार॥

'मीर'

दौंगड़ा बरसना—अधिकता होना।

उ०—जब कभी यादव हमारी बैठकमें आकर गरजता है। तो हँसीका दौंगड़ बरसता है।

दौड़-धूप करना—प्रयत्न करना।

उ०—बहुत दौड़-धूप कर रहा हूँ परन्तु कहींसे रुपया ही नहीं मिल रहा है।

दृष्टिसे गिरना—प्रतिष्ठा भङ्ग होना।

उ०—चन्दा हड़प कर जानेके कारण उसका भाई जनताकी दृष्टिसे गिर गया है।

द्रवी-भूत होना—दयाभाव उत्पन्न होना।

उ०—किसीको दुःखमें देखकर जिसका हृदय द्रवीभूत नहीं होता, वह मनुष्य नहीं भूत है।

द्वार झांकना—सहायताके लिए जाना।

उ०—जब तुमको आवश्यकता होगी, तो तुम किसका द्वार झाँकोगे?

द्वारपर मस्तक घिसना—चिरौरी करना।

उ०—बहुत अभिमान न करो; दिखा दूँगा, कल उसके द्वार-पर मस्तक घिसोगे।

द्वार खुल जाना—उपाय निकल आना।

उ०—दादाकी दयासे द्वारिका प्रसादके लिए उन्नतिका द्वार खुल गया।

द्वारपर हाथी झूमना—सौभाग्यशाली होना।

उ०—वेषपर न जाओ, इनके द्वारपर हाथी झूमते हैं।

द्विविधामें पड़ना—सन्देहमें पड़ना।

उ०—तुम तो यहां खड़े होकर द्विविधामें पड़ गये; अपने घर चलकर बैठो।

द्वितीयाका चांद होना—कभी-कभी मिलना।

उ०—चन्दूलाल तो आजकल द्वितीयाका चाँद हो गया है।

(ध)

धकसे होना—अकस्मात् घबरा उठना।

उ०—तुम बड़े वीर हो, पटाखेकी आवाज़से ही तुम्हारा कलेजा धकसे हो गया।

धक्का लगना—हानि पहुँचना।

उ०—धनीरामको इस साल धानके व्यापारमें बड़ा धक्का लगा है।

धक्का लगना—दुःख मिलना।

उ०—उमरावकी मृत्युसे जगदीशको बड़ा धक्का लगा है।

धक्के खाते फिरना—दुर्दशा होना।

उ०—वह आजकल पढ़ना-लिखना छोड़कर धक्के खाता फिरता है।

धक्के चढ़ना—काबूमें आना।

उ०—किसी दिन मेरे धक्के चढ़ गये, तो तुम्हारी कभी-कभीकी कसर निकालूँगा।

धक्के देना—अपमान करना।

उ०—मैंने तो उसे यहाँ बहुतेरे धक्के दिये किन्तु वह यहांसे डिगा ही नहीं।

धक्के पड़ना—अपमान होना।

उ०—शिवनाथ जहाँ जाकर खड़ा होता है, बेचारेको वहीं धक्के पड़ते हैं।

धज्जियां उड़ाना—टुकड़े-टुकड़े करना।

उ०—राँझेने हीरके प्रेममें अपने गरेबानकी धज्जियाँ उड़ा दीं।

धज्जियां उड़ाना—लज्जित करना।

उ०—तुमने भरी सभामें आज उसकी खूब धज्जियाँ उड़ायीं।

धड़पर सिर न होना—मरनेको सदा प्रस्तुत रहना।

उ०—मैं तुमको यह बतला देना चाहता हूँ कि जिसके साथ तुमने विरोध ठाना है, उसके धड़पर सिर नहीं है।

लोककी लाज औ सोक प्रलोकका वारिये प्रीतिके ऊपर दोऊ।
गांवको गेहको देहको नातो सनेहमें हांतो करै पुनि सोऊ॥
'बोधा' सुनीति निवाह करै धर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ।
लोककी भीत डेरात जो मीत तौ प्रीतिके पैंडे परे जनि कोऊ॥

'बोधा कवि'

धड़क खुल जाना—निडर हो जाना।

उ०—तुम्हारे लड़केकी धड़क खुल गयी है, इसलिए अब वह बराबर विषके घूंट पी रहा है।

धता बताना—डांट देना; तिरस्कार करना।

उ०—वह तुम्हारे यहां रोज आकर अड्डा जमाता है, उसको धता क्यों नहीं बताते हो?

धता बताना—चलता करना।

उ०—कल वह धूर्त्त मेरे पास भी आया था, मैंने तो उसको धता बतायी।

धमा-चौकड़ी जमाना—एक स्थानपर बैठकर कोलाहल करना।

उ०—म्युनिसिपल स्कूलमें नित्य प्रति ये पांचों धमा-चौकड़ी जमाते हैं।

धर दबाना—पकड़कर भूमिपर पटक देना।

उ०—क्या तुम उससे निर्बल हो? यदि नहीं, तो पाजीको किसी दिन धर दबाओ।

धर दबाना—पराजित करना।

उ०—उस धींगको एक छोटे-से छात्रने धर दबाया।

धरतीपर रहना—अभिमान न करना।

उ०—अधिक आसमानमें न उड़ो, भले आदमियोंकी भाँति धरतीपर रहो।

धरती कुरेदना—लज्जित होना।

उ०—मैं एक ऐसी बात कह दूँगा कि वह धरती कुरेदने लगेगा।

धरती दिखाना—भूमिपर पटक देना।

उ०—वह बहुत आसमानपर उड़ता है, उसको किसी दिन धरती दिखाओ।

धर लेना—पकड़ लेना।

उ०—चोर भागा तो बड़ी तेजीसे, परन्तु धर्मानन्दने मिनटों-में धर लिया।

धर-पकड़ करना—गिरफ्तार करना।

उ०—आजकल पुलिस चोरोंकी बड़ी धर-पकड़ कर रही है।

धरा जाना—पकड़ा जाना।

उ०—इन लोगोंकी संगतिमें उठो-बैठोगे, तो किसी दिन तुम भी धरे जाओगे।

धरा रह जाना—निकम्मा हो जाना।

उ०—समयकी गति विचित्र है; भीलोंने गोपियाँ लूट लीं और अर्जुनका धनुष धरा रह गया।

वक्त आने दो ज़रा तुम सब धरे रह जायंगे।
धमकियाँ देते हो क्या हमको तुफंगो-तीरकी॥

'दिनकर'

धराशायी करना—मार डालना।

उ०—महाभारतमें एक द्रोणने अनेक वीर धराशायी कर दिये थे।

धरी जाना न उठाई जाना—कुछ निर्णय न होना।

उ०—तुम ऐसी बात कहते हो जो धरी जाय न उठाई जाय।

धर्म निभाना—कर्त्तव्य-पालन करना।

उ०—तुमने तो उसके साथ जैसी की है संसार जानता है, परन्तु वह तुम्हारे साथ अब भी अपना धर्म निभा रहा है।

धर्मके दूने होना—खूब लाभ होना (व्यापारमें)।

उ०—दयाराम! धर्मके दूने तो हो गये, फिर भी झींकते ही रहते हो।

धसक उठना—किसी बातकी व्यर्थ इच्छा हो जाना।

उ०—चौधरी धर्मसिंहको भी कभी-कभी लीडरीकी धसक उठती है।

धांग देना—फँसा देना।

उ०—आज पुलिसने जगदीशके सब मित्रोंको धाँग दिया है।

धांधली मचाना—व्यर्थ झगड़ा करना।

उ०—तुम लोग सदा धाँधली मचाते हो, इसीलिए मैंने यहाँ आना-जाना छोड़ दिया है।

धाक बाँधना
धाक जमाना }—प्रभाव जमाना।

उ०—तुम लोगोंने आजकल धामपुरमें अच्छी धाक बाँधी है।

धाक पड़ना—आतङ्क छाना।

उ०—आजकल यहाँ चारों ओर सुलताना डाकूकी धाक पड़ी हुई है।

धान तुलवाना—काम पड़ना।

उ०—मैं क्या जानूँ धनसिंह कौन है? क्या मैंने उसके यहाँ कभी धान तुलवाये हैं?

धार चढ़ाना—तेज करना।

उ०—धर्मात्मन्! आज इस कुण्ठित छुरीपर धार क्यों चढ़ा रहे हो?

धारोधार बह जाना—रुक न सकना।

उ०—इस बार कोई आन्दोलन उठने दो, दिखा दूँगा कि तुम भी धारोंधार बह जाओगे।

धारोधार रोना—अधिक रोना।

उ०—तुम यहाँ बैठे हँस रहे हो, और तुम्हारा मित्र उमराव धारोंधार रो रहा है।

धावा बोलना—आक्रमण करना।

उ०—जिस समय सिकन्दरने भारतपर धावा बोला, पाञ्चाल-के राजाने बड़ी वीरतासे उसका सामना किया।

धावा बोलना—किसी कार्यको बड़े आवेशके साथ आरम्भ करना।

उ०—इस बार उसने परीक्षाकी तैयारीपर बड़े जोरसे धावा बोला है।

धींगा-धांगी करना—जबरदस्ती करना।

उ०—धींगा-धाँगी करनेसे ईश्वरको सत्ता सिद्ध न होगी, तुमको अटूट युक्तियाँ देनी चाहिये।

धींगा-मस्ती करना—उत्पात करना।

उ०—तुम्हारे लिए संसारमें कुछ काम नहीं रहा, इसीलिए दिनभर धींगा-मस्ती करते रहते हो।

धुएं उड़ाना—छिन्न-भिन्न कर देना।

उ०—कल प्रभञ्जनने अनेक वृक्षोंके धुएँ उड़ा दिये।

धुएं उड़ाना—नष्ट करना।

उ०—तुमने दो दिनमें ही दो मन लकड़ियोंके धुएँ उड़ा दिये।

धुकधुकी बंधना—भयभीत होना।

उ०—उस दिनकी घटनाका ध्यान आते ही धर्मेंद्रकी धुकधुकी बँध जाती है।

धुन बंधना—ध्यान लगना।

उ०—मस्तराम मौजी जीव है, जिधर धुन बँध गयी, बँध गयी।

धुनके रख देना—बहुत पीटना।

उ०—श्यामा साधारण अपराधपर भी अपने लड़केको धुनकर रख देती है।

धुन सवार होना—किसी बातके पीछे पड़ना।

उ०—धीरेन्द्रने पहिले हारमोनियम सीखा, अब उसको सितारकी धुन सवार है।

धुर्रे उड़ाना—टुकड़े-टुकड़े करना।

उ०—तुमने नये लिहाफके दो दिनमें धुर्रे उड़ा दिये हैं।

धुर्रे उड़ाना—लज्जित होना।

उ०—कल सबके सामने तुमने धर्मेन्द्रके ऐसे 'धुर्रे' उड़ाये कि वह वहाँ खड़ा न रह सका।

धुवांधार भाषण देना—प्रभावशाली वक्तृता करना।

उ०—पण्डित धर्मेन्द्रनाथ शास्त्रीने आर्य समाज मन्दिरमें खद्दरपर एक धुवाँधार भाषण दिया।

धूनी रमाना—जमकर बैठना।

उ०—तुमने धनीरामका धन-अपहरण किया है, इसलिए वह तुम्हारे द्वारपर धूनी रमायेगा।

उठेंगे फैसला करके किसी दिन अपनी किस्मतका।
फकीरोंने तेरे दरपर अटल धूनी रमायी है॥

'दिनकर'

धूपमें बाल सफेद करना—अनुभवशून्य जीवन अतिवाहित करना।

उ०—क्या तुम समझते थे कि लाला कालूरामने धूपमें बाल सफेद किये हैं?

धूलमें मिल जाना—नष्ट हो जाना।

उ०—यादवका सब परिश्रम धूलमें मिल गया है।

धूलकी रस्सी बटना—असम्भव कार्य करना।

उ०—जो उसको ठीक मार्गपर लानेका प्रयत्न करता है, वह धूलकी रस्सी बटता है।

धूलमें मिलाना—बरबाद करना।

उ०—तुमने प्रेमकी आड़में अनेक नवयुवकोंको धूलमें मिला दिया है।

धूल डालना—छिपाना।

उ०—जो हुआ सो हुआ, अब इस झगड़ेपर धूल डालो।

धूल डालना—छोड़ देना।

उ०—वह तुम्हारी मैत्रीपर धूल डाल चुका है।

धूल फांकना—निकम्मा फिरना।

उ०—खाना खाकर तुम दिन भर धूल फाँकते फिरते हो, क्या इसमें कुछ आनन्द आता है।

धूल उड़ना—शोभा रहित हो जाना।

उ०—मेलेमें जाकर क्या लोगे? वहाँ तो आज धूल उड़ रही है।

धूल झाड़ना—मार-पीट द्वारा घमण्ड दूर करना।

उ०—किसी दिन एक सुदृढ़ लाठीसे तुम्हारी धूल झाड़ूँगा।

धोती ढीली होना—डर जाना।

उ०—तुम ऐसे वीर हो कि जंगलमें गीदड़को देखते ही तुम्हारी धोती ढीली हो गयी।

धो देना—मिटा देना।

उ०—सुबोधने अपने कुलके कभी-कभोके कलङ्क धो दिये हैं।

धो देना—दूर कर देना ।

उ०—उसने तुम्हारे सब आक्षेपोंको धो दिया है ।

धो देना—मारना ।

उ०—सुरेन्द्र बिगड़ते क्यों हो ? तुमने उसके ऊपर पानी फेंका, उसने तुमको धो दिया ।

धौल जमाना—घूँसा मारना ।

उ०—मैंने एक ऐसा धौल जमाया कि वह चक्कर खाकर भूमिपर गिर पड़ा ।

ध्यानपर चढ़ना—स्मरण होना ।

उ०—भुलानेका बहुत प्रयत्न करनेपर भी उसका नाम तुम्हारे ध्यानपर चढ़ा ही रहता है ।

ध्यानसे उतरना—भूल जाना ।

उ०—तुम्हारे विषयमें कुछ उनसे कहना चाहता था, परन्तु उस समय तुम्हारा नाम ध्यानसे उतर गया ।

ध्वजा फहराना—शासन करना ।

उ०—चन्द्रगुप्तने चाणक्यकी सहायतासे कितने ही छोटे-छोटे राज्योंपर विजय प्राप्त कर ध्वजा फहरायी ।

———

(न)

नका-चकी रहना—अनबन रहना।

उ०—पहिले तो दोनों दात-काटी रोटी खाते थे ; परन्तु अब कुछ दिनोंसे उनमें नका-चकी रहती है।

नका-चकी हो जाना—झगड़ा हो जाना।

उ०—शिवनाथ और उमराव अली एक-दूसरेसे नहीं बोलते, क्योंकि उनमें नका-चकी हो गयी है।

नक्कारेकी चोट कहना—खुल्लम-खुल्ला कहना।

उ०—मैंने तुमसे नक्कारेकी चोट कह दिया था कि मैं तुमको इस वर्ष नहीं पढ़ाऊँगा।

नकेल डालना—वशमें करना।

उ०—तुमने उसके ऐसी नकेल डाली है कि वह पालित पशुके समान तुम्हारे पीछे पीछे चलता है।

नकेल हाथमें होना—वशमें होना।

उ०—पहिले यह तो मालूम करो कि नेकीरामकी नकेल किसके हाथमें है।

नक्कू बनना—बदनाम होना।

उ०—आज कल समस्त नगरमें नेकीराम ही नक्कू बन रहा है।

नक्कू बनना—(बुरे अर्थमें) अग्रसर होना।

उ०—बुरा हो या भला, तुम हरेक काममें अवश्य नक्कू बनते हो।

नख-शिख वर्णन करना—पूर्णतया वर्णन करना।

उ०—किसी उर्दू कविने दमयन्तीका अच्छा नख-शिख वर्णन किया है।

नग्न-नृत्य करना—खुल्लम-खुल्ला अत्याचार करना।

उ०—संसार देखता है कि तुम आजकल नग्न-नृत्य कर रहे हो।

नजरका पाँव फिसलना—दृष्टि न जमना।

उ०—सुनते हैं उस सुन्दरीके सौन्दर्यपर नजरका पाँव फिसलता है।

नजला गिराना—दूषित करना, बुरा प्रभाव डालना।

उ०—नानकचन्द! कुछ पता भी है, यह सब नजला तुमपर ही गिराया जा रहा है।

नजला ढलना—दोष निकलना।

उ०—मैं जानता हूं सब नजला तुमपर ही ढल रहा है।

नजरमें जँचना—पसन्द आना।

उ०—यदि यह कम्बल तुम्हारी नजरमें जँच गया हो, तो ले लो; सस्ते महँगेका विचार न करो।

नजरपर चढ़ना—प्रिय बनना।

उ०—पहिले नन्दराम तुम्हारे दिलसे उतर गया था, अब वह फिर तुम्हारी नजरपर चढ़ गया है।

नजर लग जाना
नजर हो जाना } —बुरी दृष्टिका प्रभाव पड़ना।
नजर खा जाना

उ०—छुन्नूकी माता कहती है कि उसको एक भिखारिनकी नजर लग गयी है और तुम कहते हो कि उसको नानककी नजर खा गयी है।

नजरोंमें गड़ना—पसन्द आना।

उ०—मैं जानता हूं नानकी नाइनकी नजाकत तुम्हारी नजरोंमें गड़ गयी है।

नजरोंसे गिरना—सम्मान न रहना।

उ०—एक वह समय था कि लोगोंने तुमको आसमान पर चढ़ाया था, एक यह दिन है कि तुम सबकी नजरोंसे गिर गये हो।

चढ़ गया जबसे फ़लकपर मेरी आहोंका धुआँ।
गिर गयी खल्ककी नजरोंसे घटा सावनकी॥

नटखटी करना—धूर्त्तता करना।

उ०—हेड मास्टरसे तुम्हारी रिपोर्ट की जायगी कि क्लासमें नटवर नटखटी करता है।

नथने फुलाना—क्रुद्ध होना।

उ०—यदि कोई कहता है कि जवानीमें तुम्हारा मुँह चिपक गया है, तो तुम नथने क्यों फुलाते हो?

नपी-तुली कहना—बिल्कुल ठीक बात कहना।

उ०—मानो चाहे न मानो, शंकर कहता है नपी-तुली।

नमक-हलाली करना—स्वामीका हित करना।

उ०—तुमको किस बातका अभिमान है? तुमसे अधिक तो कुत्ता नमक-हलाली करता है।

नमक-हरामी करना—स्वामीका अहित करना।

उ०—वह जहाँ-कहीं रहता है नमक-हरामी करता है।

नमक खाना—नौकरी करना।

उ०—ननकूने तुम्हारा नमक खाया है, इसलिए वह तुम्हारे विरुद्ध कोई कार्य न करेगा।

नमक-मिरच लगाना—बातको बढ़ाकर कहना।

उ०—तुम लोग नमक-मिरच क्यों लगाते हो? जो बात है वही कहो।

नमक छिड़कना—अधिक कष्ट देना।

उ०—जब उसका प्रेम-पात्र उसके घावपर नमक छिड़कता है, तो उसको मजा आता है, और तुम्हारे मिरचें लगती हैं।

नमस्कार करना—छोड़ देना।

उ०—प्यारेलाल आपके उपदेशसे गाँजा और मदिराको नमस्कार कर चुका है।

नया गुल खिलना—विचित्र घटना घटित होना।

उ०—आगे चलकर इस मामिलेमें कोई नया खुल खिलेगा।

नरक भोगना—दुर्गति होना।

उ०—उसको लाठीसे उसके पिताका स्वर्गवास हो गया है, इसलिए अब वह यावज्जीवन नरक भोगेगा।

नशा उतर जाना—
नशा हरन होना— } दुष्टता छोड़कर ठीक मार्गपर आना।

उ०—अब उसका नशा उतर गया है, इसलिये सबके साथ भद्रतापूर्वक व्यवहार करता है।

नसीब न होना—प्राप्त न होना।

उ०—उसके पिताने दुःखित होकर कहा—"ईश्वर करे तुझे रोटी नसीब न हो।"

नसीब जागना—भाग्य अनुकूल होना।

उ०—जब आदमीका नसीब जागता है, बिगड़े हुए काम भी बन जाते हैं।

नसीब सो जाना—भाग्य प्रतिकूल होना।

उ०—जब तुम्हारा नसीब ही सो गया, फिर कोई क्या कर सकता है?

जाही चुका था घर में मैं दीवार फाँद कर।
दरबाने-यार जाग उठा सो गया नसीब॥

नसीब लड़ना—काम बन जाना, भाग्य अनुकूल होना।

उ०—जब हमारा नसीब लड़ेगा, उनसे आपसे आप मेल हो जायगा।

मक़्तलमें देखकर मुझे बेकस हुआ वो नर्म।
उस जङ्गजूसे सुलह हुई, लड़ गया नसीब॥

'अमीर'

नक्षत्र ऊंचाईपर होना—भाग्यशाली होना।

उ०—तुम्हारे कहनेसे नागेश्वर नीच नहीं हो सकता; उसका नक्षत्र ऊँचाईपर है।

नाकपर मक्खी न बैठने देना—चिड़चिड़ा स्वभाव होना।

उ०—जो नाकपर मक्खी नहीं बैठने देता है, उसके मुँहपर मक्खियाँ भिनकती हैं।

नाक-भौं चढ़ाना—अप्रसन्न होना।

उ०—नानकको देखकर तुम सदा नाक-भौं क्यों चढ़ाते हो?

नाक रगड़ना—अधीन होना।

उ०—जाता है जाने दो, वह सौ बार आयगा, और नाक रगड़ेगा।

नाक रगड़वाना—नीचा दिखाना।

उ०—जो सीधे-मुँह बात नहीं करता था, आज मैंने उससे नाक रगड़वा ली है।

नाकका बाल होना—अति प्रिय होना।

उ०—वह आजकल तुम्हारी नाकका बाल हो रहा है।

नाकमें दम करना—तङ्ग करना।

उ०—उस पाजीने इस गरीब विद्यार्थीका नाकमें दम कर दिया है।

नाकमें दम होना—बहुत दुःखी होना।

उ०—उस दुष्टके हाथों मेरा नाकमें दम है।

लहज़ा लहज़ा दिले-आशिक़ प सितम होता है।
हिज्रकी रात भी क्या नाकमें दम होता है॥
'दिनकर'

नाक कटना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—बड़ी लज्जाकी बात है कि तुम्हारे पीठपर होते हुए कल चार आदमियोंमें उसकी नाक कट गयी।

नाक कटवाना—अप्रतिष्ठित करना।

उ०—तुमको लज्जा नहीं आयी कि पिताकी नाक कटवाकर नक्कू बन गये।

नाकपर टका मारना—तुरन्त मजदूरी देना।

उ०—मैं नाकपर टका मारता हूँ, इसीलिए मेरा काम ठीक समयपर होता है।

नाकपर हाथ धरना—निर्लज्ज होना।

उ०—उसपर भला-बुरा कहनेका प्रभाव नहीं पड़ सकता, क्योंकि उसने नाकपर हाथ धर लिया है।

नाक-मुंह सिकोड़ना—घृणा करना।

कैसा विचित्र लड़का है जो दूध-पीते नाक-मुँह सिकोड़ता है।

नाककी सीध जाना—बिना रुके चले जाना।

उ०—आप नाककी सीध चले जाइये, आगे चौधरी हुलास वर्माका ही मकान है।

नाक पकड़े दम निकलना—अत्यन्त दुर्बल होना।

उ०—किसीसे हाथा-पाई क्यों करते हो जब तुम्हारा नाक पकड़े दम निकलता है।

नाक रह जाना—मान-मर्यादा बच जाना ।

उ०—गनीमत जानो जो आज चार आदमियोंमें तुम्हारी नाक रह गयी ।

नाक न होना—लज्जा न होना ।

उ०—उसका उदाहरण देने चले हो, जिसके नाक ही नहीं है ।

नाक समझा जाना—सर्वश्रेष्ठ माना जाना ।

उ०—एक समय वह भी था, जब कि भारत संसारकी नाक समझा जाता था ।

नाक रखना—इज्जत बचाना ।

उ०—वह तुम्हारे प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करता है, क्योंकि तुमने उसको नाक रख ली है ।

नाकपर क्रोध करना—क्रोधित होनेमें देर न लगना ।

उ०—कुछ न पूछिये, भाई जी ! क्रोध तो उसकी नाकपर रहता है ।

नाके बन्द करना—विवश करना !

उ०—जब उस दुष्टके नाके बन्द करोगे, तब वह कहीं काबूमें आयगा ।

नाकों चने चबाना—बहुत तंग करना ।

उ०—क्या मुँह बनाते हो, किसी दिन तुम्हें नाकों चने चबाऊँगा ।

नाकों-नाक भरना—ठाटकर भरना ।

उ०—बैठ कैसे सकते हो जब नाकों-नाक पेट भर लेते हो ?

नाखूनोंमें पड़ा रहना—अत्यन्त सुगम होना।

उ०—ऐसे गुर तो उसके नाखूनोंमें पड़े रहते हैं।

नाग खिलाना—भयानक कर्म करना।

उ०—भूदेव साधारण व्यक्ति नहीं है; तुम नाग खिलाते हो, जो उसके साथ विरोध करते हो।

नाच नचाना—दिक करना।

उ०—जगदीश! तुमको लज्जा नहीं आती जो साधारण बातोंपर माता-पिताको नाच नचाते हो।

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
जाहि हिये लखि आनन्द ह्वै जड़ मूढ़ हिये 'रसखानि' कहावैं।
ताहि अहीरकी छोहरियाँ छछिया भर छाछ पै नाच नचावैं॥

(रसखानि)

नाड़ी छूटना—मर जाना।

उ०—कल सायंकालके तीन बजे रामदेवकी नाड़ी छूट गयी।

नाड़ी टटोलना
नाड़ी परखना } मनका भाव जानना।

उ०—मैंने उसकी नाड़ी टटोल ली है, उससे कुछ आशा नहीं। तुम नानककी नाड़ी भी परख देखो।

नादिरशाही होना—घोर अत्याचार होना।

उ०—आजकल संसारमें सब जगह नादिरशाही हो रही है।

नादिरी हुक्म देना—कड़ी आज्ञा करना।

उ०—तुम नादिरी हुक्म देते हो, इसीलिए तुम्हारे पास कोई नौकर नहीं ठहरता है।

नानी याद आना—घबरा जाना।

उ०—वह अपने मामासे मिलने जा रहा था ; मार्गमें डाकुओं-को देखकर नानी याद आ गयी।

नानी मर जाना—लज्जित हो जाना।

उ०—जब सबके सामने उसके नानाने उसकी पोल खोली, तो उसकी नानी मर गयी।

नामपर थूकना—बदनाम होना।

उ०—संसार तुम्हारे नामपर थूकेगा, तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी।

नाम लेना छोड़ देना—भूल जाना ; अरुचि हो जाना।

उ०—जबसे उसकी आँख फूटी है, उसने हांकीका Hockey नाम लेना छोड़ दिया है।

नाम रखना
नाम धरना } दोष निकालना।

उ०—दूसरोंका नाम धरते फिरते हो, अपनी त्रुटियों पर कभी ध्यान नहीं देते। धिक्कार है !

नाम चलना—प्रसिद्ध होना।

उ०—परोपकारके कारण थोड़े ही दिनोंमें उस साधुका नाम चल गया है।

नाम चलता रहना—स्मृति बनी रहना।

उ०—अच्छे आदमी मर जाते हैं, परन्तु संसारमें उनका नाम चलता रहता है।

नामसे भागना—घृणा करना।

उ०—जो मेरे नामसे भागता है, वह मेरा काम कैसे करेगा ?

नाम कमाना—यश प्राप्त करना।

उ०—बापने तो कुलको कलंकित ही कर दिया था, परन्तु पुत्रने अच्छा नाम कमाया है।

नाम होना—प्रसिद्ध होना।

उ०—उसने वीरताके ऐसे कार्य किये कि संसारमें उसका नाम हो गया।

नाम लेना—स्मरण करना।

उ०—परमात्माका नाम लो, आड़े समय वही काम आता है।

नाम लेवा न रहना—वंश नष्ट होना।

उ०—उसके मर जानेके उपरान्त, उसका कोई नाम लेवा न रहेगा।

नाम खोना—धब्बा लगाना।

उ०—तुमने तो बाप-दादाका नाम भी खो दिया है।

नाम जपना—विश्वास करना।

उ०—छज्जूरामको संसारसे काम नहीं, वह तो केवल जगदीशका नाम जपता है।

नाम रह जाना—स्मृति रहना

उ०—कविवर खुसरोकी बदौलत संसारमें चम्मो साकनका नाम भी रह गया है।

नाम निकलना—बदनाम होना।

उ०—जबसे तुम चाण्डाल-चौकड़ीमें घुसे हो, तुम्हारा नाम निकल गया है।

हम तो बे-नामों-निशाँ आपकी उलफ़तमें हुए।
आपका नाम निकलना था सितमगर निकला॥

नाम कर जाना—प्रसिद्ध हो जाना।

उ०—सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र संसारमें नाम कर गये।

नाम धो डालना—भुला देना।

उ०—उसके दाँतोंने संसारसे मोतियोंका नाम धो डाला।

नाम डुबोना—कीर्ति खोना।

उ०—यादवने अपने बाप-दादाका नाम डुबो दिया है।

नाल गड़ना—अधिकार होना, कब्ज़ा होना।

उ०—जगदीशके घरमें उमरावकी नाल गड़ी है, इसीलिए तो उसके मन्दिरसे नहीं निकलता।

निकलते ही नहीं मसजिदसे वाइज़।
खुदाके घरमें नाल उनकी गड़ी है॥
(अमीर)

निगाहपर पढ़ना—पसन्द आना।

उ०—कभी कोई तुम्हारी निगाहपर चढ़ता है, तो कभी कोई तुम्हारी नजरसे गिरता है, तुम एक विचित्र जीव हो।

निगाहें मोटी करना—प्रेम न रखना।

उ०—यदि तुम निगाहें मोटी कर लोगे, तो क्या मैं पतला हो जाऊँगा ?

निगाह दौड़ाना—ध्यान पूर्वक देखना।

उ०—बहुत कुछ निगाह दौड़ाता हूँ, परन्तु कोई उपाय ही नहीं दिखायी देता।

निगाहमें न जँचना—पसन्द न आना।

उ०—बजाजने कितनी ही धोतियाँ निकाल कर तुम्हारे सामने रखीं परन्तु तुम्हारी निगाहमें एक भी न जँची।

निढाल होना—उदास होना।

उ०—यौवन ढल जानेसे वेश्या निढाल होती है।

नित्य कूवां खोदना और पानी पीना—रोज पैदा करना और खाना।

उ०—नित्यानन्दके पास धन कहाँ धरा है ? वह बेचारा नित्य कुवाँ खोदता और पानी पीता है।

निद्रा-भङ्ग होना—सावधान होना।

उ०—जब सब धन लुट जायगा, तब तुम्हारी निद्रा भङ्ग होगी। तुमको भङ्ग ही ऐसी चढ़ी है।

निन्नानवेके फेरमें पड़ना—कृपणता से धन संग्रह करना।

उ०—बाबूनन्द सिंह जबसे निन्नानवेके फेरमें पड़े हैं, साग-सब्जी भी नहीं खरीदते; केवल नमकसे रोटी खाते हैं।

निष्कपट बनाना—विघ्न-बाधा मिटाना।

उ०—चाणक्यने चन्द्रगुप्तके राज्यको निष्कपट बना दिया।

निहाल करना—मालामाल करना।

उ०—निहालचन्दको उसके ससुरने निहाल कर दिया है।

निहाल होना—सब प्रकारसे आनन्द मिलना।

उ०—एक ऐसी युक्ति बताऊँगा कि तुम सदाके लिए निहाल हो जाओगे।

नीचा दिखाना—लज्जित करना।

उ०—उसको किसी दिन ऐसा नीचा दिखाऊँगा कि कभी आँख ऊँची न कर सकेगा।

नीचा दिखाना—पराजित करना।

उ०—मैं भी न्याय-शास्त्री हूँ, किसी दिन उसको शास्त्रार्थमें नीचा दिखाऊँगा।

नीचेका दम नीचे और ऊपरका दम ऊपर रह जाना—भयातुर होना।

उ०—रात्रिके समय जब डाकुओंने अपनी बन्दूकें चलायीं, तो मोहनका नीचेका दम नीचे और ऊपरका दम ऊपर रह गया।

नींव डालना—आरम्भ करना।

उ०—आज इस पुस्तककी नींव डालता हूँ, दो-तीन मासमें समाप्त हो जायगी।

नेपथ्यके नेपथ्यमें ही रहना—प्रकट न होना।

उ०—तुम तो पढ़-लिखकर नेपथ्यके नेपथ्यमें ही रह गये।

नोंक-झोंक रहना—छेड़-छाड़ रहना।

उ०—गालिब और ज़ौककी सदा नोक-झोंक रहती थी।

नोंक-झोंक करना—छेड़छाड़ करना।

उ०—वह हमसे भी नोक-झोंक करता है। क्या हमारे स्वभावसे परिचित नहीं है?

नोन-सत्तू बाँधके पीछे पड़ना—धुनमें लग जाना।

उ०—इस वर्ष तुम नोन-सत्तू बाँधके परीक्षाके पीछे पड़े हो; अवश्य सफल होगे।

नौका पार लगाना—कार्य बनाना।

उ०—मैं बहुत अनुगृहीत हूँगा। किसी प्रकार इस बार मेरी नौका पार लगाइये।

नौका डूबना—काम बिगड़ना।

उ०—आलसियोंकी नौका मझधारमें डूबती है।

नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना।

उ०—वह आपको देखते ही नौ दो ग्यारह हो गया।

(प)

पक्का-पोढ़ा करना—निश्चय करना।

उ०—यदि तुमने सब कुछ पक्का-पोढ़ा कर लिया है, तो मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।

पगड़ी उतारना—अपमानित करना।

उ०—उसको सिर चढ़ानेका फल यह हुआ कि दुष्टने चार आदमियोंके सामने आपकी पगड़ी उतार ली।

पगड़ी उछालना—निन्दा करना।

उ०—यह कहांकी सभ्यता है कि तुम भले आदमियोंकी पगड़ी उछालते हो ?

पगड़ी बदलना—मैत्री करना।

उ०—मैं तुमसे आज पगड़ी तो बदलता हूँ, परन्तु यह ध्यान रहे कि कल तुम्हारा मन न बदल जाय।

पगड़ी बंधना—स्थानापन्न होना।

उ०—समस्त सम्पादकीय विभागमें आपके अतिरिक्त और कोई व्यक्ति नहीं है, जिसके सिर सम्पादकीय पगड़ी बँधे।

पगड़ीकी लाज होना—बड़प्पनका ध्यान होना।

उ०—यदि आपको पगड़ीकी लाज होती, तो आप ऐसा निन्दनीय कार्य न करते।

पगड़ीकी लाज रखना—प्रतिष्ठा बचाना।

उ०—कल हमारी भद् होने हीको थी कि आप आ पहुंचे और पगड़ीकी लाज रख ली।

पगड़ी संभालना—मान-मर्यादा बचाना।

उ०—लालाजी, बड़ी विकट स्थिति उपस्थित है, किसी प्रकार पगड़ो सँभालिये।

पगड़ीकी लाज गंवाना—बड़प्पन खोना।

उ०—यदि आप इन धूर्तोंको अपनाएँगे, तो एक दिन अवश्य पगड़ीकी लाज गँवायेंगे।

पगड़ी उतरना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—कल भरी सभामें शोभारामके पिताकी पगड़ी उतर गयी।

पगड़ी बंधना—मान्य होना।

उ०—माना कि वह नीच है, परन्तु तुम्हारे सिर कौन-सी पगड़ी वँधी हुई है।

पचड़ा लेकर बैठ जाना—विवादग्रस्त विषय आरम्भ करना।

उ०—हम तुमसे एक विषयमें परामर्श लेने आये थे, पर तुम अपना ही पचड़ा लेकर बैठ गये।

पचने लगना—अखरना।

उ०—किसीको उन्नत अवस्थामें देखकर तुम्हारे सदा पचने लगते हैं।

पछाड़ खाकर गिरना—संज्ञाहीन होना।

उ०—ऐसा थप्पड़ मारूँगा कि पछाड़ खाकर गिरोगे।

पञ्चत्वको प्राप्त होना—मर जाना।

उ०—पण्डित पञ्चानन पञ्जाबमें पञ्चत्वको प्राप्त हो गये।

पञ्जेमें करना—वशमें करना।

उ०—तुमको आजतक यह भी पता नहीं कि उसने तुम्हारे भाईको पञ्जेमें कर लिया है।

पञ्जे झाड़कर लिपटना—बुरी तरहसे पीछे पड़ना।

उ०—वह इस प्रकार पंजे झाड़कर लिपटता है कि अच्छे-अच्छे चौकड़ी भूल जाते हैं।

पञ्जे झाड़कर पीछे पड़ना—बहुत तङ्ग करना।

उ०—यदि मैं जानता कि तुम इस प्रकार पंजे झाड़कर पीछे पड़ोगे, तो तुमसे ऋण न लेता।

पञ्जेमें पड़ना—वशमें होना।

उ०—चतुर्भुज जबसे उस चौकड़ीके पंजेमें पड़ा है, हमसे बात ही नहीं करता।

पञ्जेमें होना—वशमें होना।

उ०—वह आजकल चौधरीके पंजेमें है, इसलिए तुम्हारे पक्षकी बात कदापि न कहेगा।

पञ्जेसे निकलना—स्वाधीन होना।

उ०—जिस जातिमें संगठन होता है, वही दूसरोंके पंजेसे निकल सकती है।

पञ्जा मारना—झपटा मारना।

उ०—तुम्हारे कुत्तेने ऐसा पंजा मारा कि रामनाथका बच्चा घबरा उठा।

पट हो जाना—कार्य्य अथवा रोजगार नष्ट हो जाना।

उ०—व्यवसाय पट हो गया, एक सालसे हाथपर हाथ धरे बैठे हैं, आपको चन्दा कहांसे दें ?

पटपट बोलना—बिना रुकावट बोलना।

उ०—पहिले बोलनेमें उसको बड़ा कष्ट मालूम होता था, परन्तु अब तो खूब पट-पट बोलता है।

पट पड़ना—बन्द हो जाना।

उ०—हड़तालके कारण आज समस्त बाजार पट पड़ा हुआ है।

पट सकना—निभ सकना।

उ०—वह स्वतन्त्र विचारका व्यक्ति है, मुझे आशा नहीं कि तुम्हारी उससे पट सकेगी।

पटरा कर देना—बड़ी हानि पहुँचाना।

उ०—इस बार अनावृष्टिने किसानोंका पटरा कर दिया है।

पटरा हो जाना—बड़ा ह्रास पहुँचना।

उ०—गत वर्ष नीलके व्यवसायमें नीलमणि शर्माका पटरा हो गया था।

पटकी देना—परास्त करना।

उ०—पटवधन शर्माने आज उस धूर्त्तको अच्छी पटकी दी है।

पट्टीमें आना—बहकानेमें आना।

उ०—आश्चर्यकी बात है कि तुम जानते-बूझते उसकी पट्टीमें आ गये।

पट्टी पढ़ाना—बहकाना।

उ०—उमरावने जगदीशको ऐसी पट्टी पढ़ायी है कि वह घरका रहा है न घाटका।

पट्टा लिखवा लेना—अधिकार प्राप्त करना।

उ०—क्या तुमने इस भूमिका पट्टा लिखवा लिया है जो दूसरोंको खेलनेसे रोकते हो?

पड़ा पाना—अनायास मिलना।

उ०—क्या तुम समझते हो कि हमने यह कम्बल पड़ा पाया है?

पतला हाल करना—तंग करना।

उ०—मैं भी तुम्हारा ऐसा पतला हाल करूँगा कि सारा मुटापा झड़ जायगा।

पतंगे लगना—अखरना, असन्तुष्ट होना।

उ०—मैं नहीं समझता कि पतिरामके यहाँ आनेसे तुम्हारे पतंगे क्यों लगते हैं?

पत्ता-तोड़ भागना—अति द्रुततर दौड़ना।

उ०—तुम्हारे आते ही वह ऐसा पत्ता-तोड़ भागा कि उसने पीछे फिरकर भी न देखा।

पत्ता खड़कना—थोड़ी-सी आहट होना।

उ०—रात्रिके समय कहीं पत्ता खड़का और वह घबराया।

पत्तातक न हिलना—हवा बन्द हो जाना।

उ०—आज बड़ा ही गरम है, देखते न हो कि पत्तातक नहीं हिलता है।

पत्ता न हिल सकना—कुछ भी न हो सकना।

उ०—कुछ लोगोंका विश्वास है कि ईश्वरकी इच्छाके बिना पत्तातक नहीं हिल सकता है।

पत गँवाना—प्रतिष्ठा खोना।

उ०—यदि पतित लोगोंमें बैठोगे, तो पत अवश्य गँवाओगे।

पत रखना—लाज रखना।

उ०—जो दूसरोंकी पत रखता है, दूसरे उसकी पत रखते हैं।

पत्ता तक न खड़कना—पूर्ण नीरवता होना।

उ०—रात्रि कैसी भयानक प्रतीत होती है, कहीं पत्तातक नहीं खड़कता।

पताका फहराना—शासन होना।

उ०—आज भारतवर्षमें अंगरेजोंकी पताका फहरा रही है।

पतेकी कहना—युक्ति युक्त बात कहना।

उ०—वह कहता तो पतेकी है, तुम मानो, न मानो, यह तुम्हारी इच्छा है।

पनपने न देना—अच्छा न होने देना।

उ०—तुमको रोग ही ऐसा लगा हैं कि जो तुमको कभी पनपने न देगा।

पत्ते-पत्तेसे परिचित होना—सब बातोंको जानना।

उ०—यदि इस बागकी सैर करनेकी इच्छा है, तो किसी ऐसे व्यक्तिको खोजो जो पत्ते-पत्तेसे परिचित हो।

पत्ता-पत्ता छानना—सूक्ष्म-अन्वेषण करना।

उ०—पण्डित परमानन्दने दर्शन-शास्त्रमें पत्ता-पत्ता छान रखा है।

पत्ता काटना—निकाल देना।

उ०—इस दुष्टसे मेरा नाकमें दम है, इसलिए आज इसका पत्ता काटता हूँ।

पत्थरकी लकीर बन जाना—अमिट हो जाना।

उ०—हमारी बातोंको हँसीमें न उड़ाया करो; हम जो कुछ कहते हैं पत्थरकी लकीर बन जाती है।

पत्थरका कलेजा करना—दृढ़ता धारण करना।

उ०—अब तुम दिल खोलकर अत्याचार करो, क्योंकि हमने पत्थरका कलेजा कर लिया है।

पत्थरका कलेजा करना—कठोर हृदय होना।

उ०—तुमने तो उसकी ओरसे पत्थरका कलेजा कर लिया, परन्तु मैं अपने दिलको कैसे समझाऊँ?

पत्थरसे पारस होना—निर्धनसे धनी बन जाना, नीचसे उच्च होना।

उ०—महात्माओंकी संगति और सेवाका फल यह हुआ, कि तुम पत्थरसे पारस हो गये हो।

पत्थरका पत्थर रह जाना—निरा मूर्ख रह जाना।

उ०—उसको पढ़ानेमें मैंने बरसों जी-तोड़ प्रयत्न किया, परन्तु वह पत्थरका पत्थर ही रह गया।

पत्थर पड़ना—परमात्माका कोप होना, आपत्ति आना।

उ०—वह बेचारा क्या जानता था कि, मसूरी पहुँचते ही पत्थर पड़ेंगे।

पत्थर पसीजना—पाषाण-हृदयका सदय हो जाना।

उ०—उसने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली; आश्चर्य है कि पत्थर पसीज गया।

पत्थर तलेसे हाथ निकालना—दुःखसे छुटकारा पाना।

उ०—हाथ-पाँव तो अवश्य हिलाऊँगा, किसी प्रकार एक बार पत्थर तलेसे हाथ निकल जाय।

पत्थर तले हाथ आना—परवश होना।

उ०—मैं इस समय कुछ कर नहीं सकता, क्योंकि पत्थर तले हाथ आ गया है।

पत्थरपर जोंक न लगना—दुष्टोंपर उपदेशका प्रभाव न पड़ना।

उ०—लाख उपाय करनेपर भी पत्थरपर जोंक नहीं लगती।

पत्थरका कलेजा करना—कठोर हृदय होना।

उ०—तुमने तो उसकी ओरसे पत्थरका कलेजा कर लिया, परन्तु मैं अपने दिलको कैसे समझाऊँ?

पत्थरकी छाती करना—साहसी होना।

उ०—पहले पत्थरकी छाती कर लो, तब उसके साथ लड़नेका नाम लेना।

❀ ❀ ❀ ❀

पत्थर बन जाना—कठोर हृदय हो जाना।

उ०—तुम तो ऐसे पत्थर बन गये कि कभी किसीके सुख-दुःखमें काम ही नहीं आते।

पत्थर ढोना—कठिन परिश्रम करना; दुःखमय जीवन बिताना।

उ०—हम लोग दिनभर पत्थर ढोते हैं, तब कहीं रातको भोजन मिलता है।

पत्थरका पानी होना—कठोर-हृदयका दयालु होना।

उ०—उसने तुमको सहायताका वचन दे दिया; मुझे आशा न थी कि, पत्थर पानी हो जायगा।

पत्थर फेंक मारना—कठोर उत्तर देना।

उ०—जिसके पास जाकर उसने सवाल किया, उसने ही पत्थर फेंक मारा।

पत्थर लुढ़काना—कठोर भाषण करना; किसीका विनाश चाहना।

उ०—मैं उसके साथ कैसे रह सकता हूं? वह जब कभी बोलता है पत्थर लुढ़काता है।

* * * *

पथ्यापथ्य न देखना—हिताहितका विचार न करना।

उ०—मैं उसको मनुष्य नहीं समझता हूँ, जो पथ्यापथ्य नहीं देखता।

पद-चिन्ह मिटाना—नाश होना।

उ०—क्या तुम्हारे कोसनेसे उसके पद-चिन्ह मिट जायँगे ?

पद-चिन्ह मिटाना—नाश करना।

उ०—स्मरण रखो, जिस व्यक्तिसे तुमने विरोध किया है, वह तुम्हारे पद-चिन्ह मिटा कर ही दम लेगा।

पदानुसरण करना—पीछे चलना।

उ०—परमानन्द प्रत्येक कार्यमें अपने पिताका पदानुसरण करता है।

पदार्पण करना—आना।

उ०—आज यहाँ हम लोगोंके गुरुदेव पदार्पण करेंगे।

❀ ❀ ❀ ❀

पर लगना—चालाक होना।

उ०—रामकिशोर जिस समय यहाँ आया था, बड़ा भोला-भाला था, परन्तु अब तो उसके पर लग गये हैं।

परछांईसे भागना—बहुत घृणा करना।

उ०—कैसे विचित्र व्यक्ति हो! जो तुम्हारी परछांईसे भागता है, तुम उसपर जान देते हो।

परछांई न पड़ना—कुछ प्रभाव न पड़ना।

उ०—रामलाल ! क्या कारण है कि, तुम्हारे पिताके आचरणकी तुमपर परछाँई भी न पड़ी ?

परलोक दिखाना—मार डालना।

उ०—वह बातकी बातमें बड़े-बड़े वीरोंको परलोक दिखा देता है, तुम्हारी तो गिनती ही क्या है ?

परलोकवास होना—मरना।

उ०—कल दिनके दो बजे पण्डित लोकनाथका परलोकवास हो गया।

परलोकको प्रयाण करना—मरना।

उ०—स्वामी रामतीर्थने सन् १९०६ ई० में परलोकको प्रयाण किया था।

परदा फाश होना—भेद खुलना।

उ०—वह नहीं जानता था कि, यहाँ मेरा परदा फाश होगा और लज्जित होना पड़ेगा।

परदा फाश करना—भेद खोलना।

उ०—यदि तुम चाहो, तो उसका परदा फाश कर सकते हो।

परमात्माके घरसे लौटना—घातक रोगसे छुटकारा पाना।

उ०—बाबू परमात्माशरण तीन बार परमात्माके घरसे लौटे हैं।

परमात्मा लगती कहना—न्यायसंगत बात कहना।

उ०—आपका सम्मान लोग इसलिए करते हैं कि आप परमात्मा लगतो कहते हैं।

× × × ×

परमात्माके नामपर देना—धमार्थ देना।

उ०—क्या इस धनको छातीपर धरकर ले जाओगे? कभी परमात्माके नामपर भी कुछ दे दिया करो।

परमपदको प्राप्त होना—देहावसान होना।

उ०—जो महात्मा कल हिमालत पर्वतसे लौटे थे, वह आज परम-पदको प्राप्त हो गये।

परछाँई तक न पड़ना—कुछ भी प्रभाव न होना।

उ०—उत्तम प्रकृतिके मनुष्यों पर कुसङ्गतिकी परछाँई तक नहीं पड़ती।

परछांई तक न आना—लेशमात्र भो न आना।

उ०—मैं सब कुछ भुगत लूँगा; तुमपर आपत्तिकी परछाईं तक न आयगी।

पर न मारना—न जा सकना।

उ०—यह ऐसा सुरक्षित स्थान है कि, यहाँ मनुष्य तो मनुष्य देवता भी पर नहीं मारता।

फ़रिश्ता पर न मारे उस गलीमें तू तो इन्साँ है।
तुझे खत देके हम अय नामावर भेजें तो क्या भेजें॥

पर न मार सकना—पहुँच न होना।

उ०—तुम तो ऐसी जगह रहते हो जहाँ कोई भी पर नहीं मार सकता।

पर जलना—साहस टूटना, घबराहट होना।

उ०—यहाँ अच्छे अच्छोंके पर जलते हैं, तुम्हारी तो गिनती ही क्या है ?

परलोक बिगाड़ना—बुरे कर्म करना।

उ०—तुम उससे क्यों बिगड़ते हो ? यदि वह अपना परलोक बिगाड़ता है, तो तुम्हारा क्या बिगाड़ता है ?

परलोक सुधारना—सत्कर्म करना।

उ०—हमसे यही लोक नहीं सुधरता, परलोक क्या सुधारें।

परलोक यात्रा करना—मरना।

उ०—बाबा मस्तरामने तीन वर्ष पहले बतला दिया था कि, मैं अमुक दिन परलोक यात्रा करूँगा।

पराई चोट लगना—पर दुःख-दुःखित होना।

उ०—जिसको पराई चोट लगती है, वही मनुष्य कहलानेका अधिकारी है।

यह किसके सामने फ़रियाद कर रहा है 'अमीर'।
किसीके दिलको लगी है कहीं पराई चोट॥

(अमीर)

पराई आगमें कूदना—दूसरेकी आपत्तिमें पड़ना।

उ०—संसारमें सबको अपनी-अपनी पड़ी हुई है, पराई आगमें कोई महापुरुष ही कूदता है।

पराङ्-मुख होना—छोड़ देना।

उ०—आजकल अनेक लोग परमात्मासे पराङ्मुख हो रहे हैं।

पराये हाथों पड़ना—परवश होना।

उ०—संसारमें पराये हाथों पड़कर कोई सुखी नहीं रह सकता।

परिश्रम ठिकाने लगना—सफलता मिलना।

उ०—धैर्य्य रखो, कभी न कभी तुम्हारा परिश्रम अवश्य ठिकाने लगेगा।

पर्वतपर कूवां खोदना—निरर्थक कार्य करना।

उ०—जो लोग पर्वतपर कूवाँ खोदते हैं, वे फलसे हाथ धोते हैं।

क्यों कीजे ऐसो जतन, जाते काज न होय।
पर्वतपर खोदे कुवाँ, कैसे निकसे तोय॥

पलस्तर ढीले होना—अत्यन्त क्लान्त होना।

उ०—आज तो ऐसी कठिन यात्रा करनी पड़ी कि, पलस्तर ढीले हो गये।

पलस्तर ढीले करना—शरीरकी बुरी अवस्था करना।

उ०—तुम मेरे स्वभावको जानते हो, जिस दिन चढ़ जायगी मारते-मारते पलस्तर ढीले कर दूँगा।

पलस्तर उड़ा देना—शरीरकी चमड़ी उधेड़ देना।

उ०—वह बड़ा दुष्ट है, कल उसने एक भिखारीको ऐसा मारा कि उसके पलस्तर उड़ा दिये।

पल्ला झाड़कर उठना—खाली हाथ उठना।

उ०—यहाँ किसीको कुछ नहीं मिलता; जो आकर बैठता है सो पल्ला झाड़कर उठता है।

पल्ला-झाड़ कथा सुनना—उपदेशसे प्रभावित न होना।

उ०—महात्माओंके सङ्गसे तुमको लाभ नहीं हो सकता; क्योंकि तुम पल्ला-झाड़ कथा सुनते हो।

पल्ला भारी होना—पक्ष बलवान होना।

उ०—वे लोग सब कुछ कर सकते हैं; उनका पल्ला भारी है।

पल्ला पसारना—माँगना।

उ०—तुम सेठ हो तो अपने घरके हो; जिस दिन तुम्हारे सामने पल्ला पसारूँगा, उस दिन न देना।

पल्ला छुड़ाना—छुटकारा पाना।

उ०—कल फिर सेवामें उपस्थित हूंगा, ऐसा कहकर पण्डितजीसे पल्ला छुड़ाया है।

पल्ले पड़ना—मिलना, प्राप्त होना।

उ०—पचासोंमेंसे अबतक केवल पाँच रुपये मेरे पल्ले पड़े हैं।

पल्ले बांधना—इच्छाके विरुद्ध कोई वस्तु देना।

उ०—जब कोई वस्तु तुम्हारे किसी कामकी नहीं रहती तो उसको मेरे पल्ले बाँधते हो।

पलक लगना—नींद आना।

उ०—मेरी पलक लगी ही थी कि इतनेमें किसीने द्वारपर आवाज दी।

पलकोंपर बैठाना—अधिक सम्मान करना।

उ०—एक दिन वह भी था कि, तुम उसको पलकोंपर बैठाते थे, और अब उसको देखते ही तेवर चढ़ा लेते हो।

पसीना बहाना—कठिन परिश्रम करना।

उ०—तुम्हारी तरह बहाना करके नहीं पड़ा रहता, मैं तो दिनभर पसीना बहाता हूँ, तब रातको रोटी पाता हूँ।

पसीनेकी जगह लोहू बहाना—बड़ी वफादारी करना।

उ०—कितने खेदकी बात है कि, वह तुम्हारे पसीनेकी जगह लोहू बहाये, और तुम उसके नामसे कोसों दूर भागो।

पसीना-पसीना हो जाना—अधिक घबरा उठना।

उ०—जंगली हाथीको देखकर यादव पसीना-पसीना हो गया।

पहाड़ टूटना—आपत्ति आना।

उ०—भिखारीने दुखी होकर कहा—"परमात्मा करे तुमपर शीघ्र पहाड़ टूटे।

पहाड़ काटना—कठिन आपत्ति सहना।

उ०—क्या हमारे भाग्यमें जीवनभर पहाड़ काटना ही लखा है?

मैं काट दूं पहाड़को पत्थरको तोड़ दूं।
पर क्योंकि गैडसे बुते-काफ़रको तोड़ दूं॥
(ज़ौक़)

पर्वतसे राई कर देना—बड़ेको छोटा बनाना।

उ०—ईश्वरकी लीला बड़ी विचित्र है; वह एक पलमें पर्वत से राई कर देता है।

पर्वतसे टकराना—बलवानसे लड़ना।

उ०—बुद्धिवल्लभ! क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है जो शक्तिहीन होते हुए भी तुम पर्वतसे टकराते हो?

× × × ×

पहल करना—आरम्भ करना।

उ०—दोष तो दोनोंका है, परन्तु यह बतलाओ कि, इस मामिलेमें पहल किसने की थी?

पहिया लुढ़कना—आनन्दसे निर्वाह होना।

उ०—वह यहाँ आकर क्या करेगा? उसका तो आजकल काशीमें पहिया लुढ़क रहा है।

पहाड़का पानी हो जाना—कठिन कार्य सरलतासे हो जाना।

उ०—पुरुषार्थके आगे पहाड़का पानी हो जाता है।

प्रथम ग्रासमें मक्खी पड़ना—आरम्भमें ही विघ्न पड़ना।

उ०—अन्त तक निभना कठिन है जब प्रथम ग्रासमें ही मक्खी पड़ गयी है।

पांवतक न धुलवाना—अति तुच्छ समझना।

उ०—नाईकी लड़कीने अभिमानसे कहा—"राजा भोजसे तो मैं पाँव तक न धुलवाऊँ।"

पांव पूजना—सम्मान करना।

उ०—तुम लाख बुरा कहो, इससे कुछ नहीं होता; वे महात्मा हैं, संसार उनके पाँव पूजता है।

पांव उठना—चलना।

उ०—नारायणके घरको तो तुम्हारा पाँव बड़ा उठता है परन्तु मेरे पास आनेकी शक्ति नहीं है।

पांवपर पगड़ी रखना—बहुत चिरौरी करना।

उ०—उसके पाँवपर पगड़ी रखी, हाथ जोड़े, परन्तु वह टससे मस न हुआ।

पांव लग जाना—रोज चलनेका अभ्यास होनेके कारण मार्ग मालूम न होना।

उ०—स्थान दूर तो अवश्य है, परन्तु मार्ग ऐसा पाँव लग गया है कि कुछ कठिन नहीं मालूम होता।

पांव फैलाना—हठ करना।

उ०—गाड़ी द्वारपर न लाओ, क्योंकि उसको देखकर साथ चलनेके लिए बच्चे पाँव फैलायेंगे।

पांव फैलाना—लालच करना।

उ०—उसको जो कुछ मिल जाता है, वह उसीमें सन्तुष्ट रहता है ; अधिक पाँव नहीं फैलाता है।

हाथ जो मैंने बढ़ाया तो कहा।
बस बहुत पाँव न फैलाइयेगा॥

पांवोंमें बेड़ी पड़ना—स्वतन्त्रता नष्ट होना।

उ०—जबसे पाँवोंमें बेड़ी पड़ी है, यह पक्षी बहुत उदास रहता है।

पांवोंमें बेड़ी पड़ना—गृहस्थ हो जाना।

उ०—जब तुम्हारे पाँवोंमें बेड़ी पड़ेगी, तब सब राग-रंग भूल जाओगे।

पांव उठाकर चलना—शीघ्र चलना।

उ०—यदि वहाँ समयपर पहुँचना चाहते हो, तो पाँव उठाकर चलो।

पांव उठ जाना—घरसे भागनेकी बान पड़ जाना।

उ०—उसकी स्त्रीका पाँव उठ गया है ; अब उसका घरमें रहना कठिन है।

पांव उखड़ना—हार कर भागना।

उ०—मित्र-मण्डलके सैनिकोंने आजकी लड़ाईमें वह वीरता दिखायी कि शत्रुओंके पाँव उखड़ गये।

पांव उखाड़ देना—भगा देना।

उ०—वीरेश्वर संग्राम-भूमिमें वह हाथ दिखायगा कि, अच्छे अच्छोंके पाँव उखेड़ देगा।

पांव भारी होना—गर्भसे होना।

उ०—आजकल उस स्त्रीका पाँव भारी है, इसलिए उससे अधिक काम-काज नहीं होता।

पांव भर जाना—सन जाना।

उ०—नानक! एक लोटेमें पानी लाओ; बाबूजीका पाँव गोबरमें भर गया है।

पांव फैलाकर सोना—निश्चिन्त रहना।

उ०—तुम सबसे अच्छे, किसीका देना न लेना, आनन्दसे पाँव फैलाकर सोते हो।

पांव पीटना—व्यग्र होना।

उ०—जवान लड़का है, दस-पांच दिनमें लौट आयगा, क्यों पांव पीट रहे हो?

पांव रगड़ना—जी-तोड़ प्रयत्न करना।

उ०—यह भाग्यकी बात है कि, दिनभर पांव रगड़े और कुछ हाथ न आया।

जोफ़ यह था कि बहुत अपने-से पाँवों रगड़े।
न गया मंजिले-मक़सूद पे पहुँचा न गया॥

पांव न होना—चलनेकी शक्ति न होना।

उ०—लाला माठूमल सांवलियाके पांव ही नहीं है, इसलिए बैठे रहते हैं।

पांव न होना—ठहरनेका साहस न होना।

उ०—चोरके पाँव नहीं होते।

पांव तलेकी जमीन खिसक जाना—घबरा उठना, हक्का-बक्का रह जाना।

उ०—परीक्षा-भवन खाला जीका घर नहीं है; जब प्रश्नपत्र हाथमें आता है, पाँव तलेकी जमीन खसक जाती है।

पांव पड़ना—खुशामद करना।

उ०—हाथ जोड़ो चाहे पाँव पड़ो, वह एक भी सुननेवाला नहीं है।

बैठने देते नहीं आवलए-पा हमको।
पाँव पड़-पड़के लिये जाते हैं सहरा हमको॥

पांव तोड़ना—निराश करना।

उ०—यह माना कि कार्य कठिन है, परन्तु, यदि तुम पाँव तोड़ोगे, तो कुछ हाथ न आयगा।

रहे-मक़सूदमें तोड़े जो कभी यासने पाँव।
सूरते नक़्शे-क़दम बैठके उठ्ठा न गया॥

पांव जमाना—स्थिर होकर रहना; अधिकार जमाना।

उ०—मुसलमानोंके हाथसे शासनकी बाग निकलते ही अंगरेजोंने भारतमें पाँव जमाया।

पांव रह जाना—बहुत थक जाना।

उ०—जगह बहुत दूर थी; चलते-चलते मेरे पाँव तो रह गये।

पांव निकलना—निकम्मा फिरनेकी बान पड़ना।

उ०—जिस विद्यार्थीका पाँव निकल जाता है, वह कहींका भी नहीं रहता।

पांव निकालना—चरित्र भ्रष्ट होना।

उ०—उसकी स्त्रीने ऐसे पाँव निकाले है कि, उसको मुँह दिखानेकी जगह नहीं रही।

सौ घर वो फिरा करते हैं इस घरसे निकलकर।
क्या पाँव निकाले दिले-मुजतरसे निकलकर॥

❀ ❀ ❀ ❀

पांवमें चक्कर होना—अधिक घूमना-फिरना पड़ना।

उ०—क्या तुम्हारे पाँवमें चक्कर है, जो कभी घर बैठते ही नहीं हो?

पांवोंपर टोपी रखना—विनती करना।

उ०—मैंने उसके पाँवोंपर टोपी रखी, हाथ जोड़े, नाक रगड़ी, परन्तु वह सीधे मुँह न बोला।

पांव सो जाना—पाँव शिथिल होना।

उ०—बैठे-बैठे मेरा पाँव सो गया।

पांवपर पांव रखना—अनुसरण करना।

उ०—तुम भी तो उसके पाँवपर पाँव रखते हो।

पांव पकड़ना—विनय करना।

उ०—मैंने तुमसे कभी नहीं कहा कि, तुम उसके पाँव पकड़ो।

पां डगमगाना—साहस टूट जाना।

उ०—वह लड़ा तो बड़ी वीरतासे, परन्तु अन्तमें उसके पांव डगमगा गये।

पांव रखना—ठहरना।

उ०—पांव तो रखिये; महाराज! जानेके लिए बहुत समय पड़ा हुआ है।

> यों भी आता है कहीं कोई कि मेरे घरमें।
> पाँव रक्खा भी नहीं कहते हो घर जाने दो॥

पांव लड़खड़ाना—साहस छूट जाना।

उ०—आरम्भमें ही तुम्हारे पांव लड़खड़ा गये, आगे चल कर क्या करोगे?

पांव चूमना—प्रतिष्ठा करना।

उ०—बड़े-बड़े विद्वान् उस महापुरुषके पांव चूमते हैं, तुम तो किस गिनतीमें हो?

पांव ऊँचे-नीचे पड़ना—विचलित होना; घबरा जाना।

उ०—कितनी ही विकट स्थिति क्यों न हो, महापुरुषोंके पांव कभी ऊँचे-नीचे पड़ते ही नहीं।

पांव फैलाकर बैठना—निश्चिन्त होकर देरतक ठहरना।

उ०—आधा कार्य शेष पड़ा हुआ है और तुम पांव फैलाकर बैठ गये।

पांव धोकर पीना—श्रद्धा रखना।

उ०—जगदीश ! कल तुम जिसके पांव धोकर पीते थे, आज उसके पीछे हाथ धोकर पड़े हो ।

पांवमें शनीचर होना—सदा भटकते रहना ।

उ०—वह कभी चैनसे नहीं बैठ सकता क्योंकि उसके पांवमें शनीचर है ।

पांसा पलटना—भाग्य बदलना ।

उ०—पुरुषार्थ न छोड़ो कभी न कभी तो तुम्हारा पांसा पलटेगा ।

पांचों अँगुलियां बराबर न होना—सब मनुष्य एक समान न होना ।

उ०—यदि यादवने तुम्हें धोखा दिया है, तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि मैं भी ऐसा ही करूँगा ; पांचों अँगु-लियां बराबर नहीं होतीं ।

पांचों अँगुलियां घीमें होना—सर्व प्रकारसे सुख भोगना ।

उ०—तुम्हें किस बातकी चिन्ता है ? तुम्हारी तो पांचों अँगुलियां घीमें हैं ।

पांचों अँगुलियां तर होना—सब प्रकारसे मौज उड़ाना ।

उ०—यदि चोखेलाल चखौतियां न करेगा, तो और कौन करेगा ? उसकी आजकल पांचों अँगुलियां तर हैं ।

पांचों सवारोंमें होना—व्यर्थ ही वीरोंमें गणना होना ।

उ०—मुझे पता न था कि चौधरी पंचम सिंह भी आजकल पाँचों सवारोंमें हैं।

पान चीरना—निरर्थक कार्य करना।

उ०—मैं भी अपने घरका रास्ता लेता हूँ; यहाँ रहकर मैं क्या पान चीरूँगा?

पानी भरना—दास बनना, तुच्छ प्रतीत होना; फीका पड़ना।

उ०—इस कम्बलके सामने कल्याण सिंहका कम्बल पानी भरता है।

पानी करना—लज्जित करना।

उ०—आनन्द स्वरूपको आरामसे आग तापने दो; उसको व्यर्थ क्यों पानी करते हो?

पानी-पानी होना—लज्जित होना।

तुम इतने आग बबूला क्यों हुए जो बादमें पानी-पानी होना पड़ा?

आग दोज़ख़की भी हो जायगी पानी पानी।
जब ये आसी अर्के-शर्मसे तर जायेंगे॥

—ज़ौक़

पानी पी-पी कर कोसना—उठते-बैठते अनिष्ट चिन्तन करना।

उ०—वह पापी हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ा हुआ है; इसीलिए मैं उसको पानी पी-पी कर कोसता हूँ।

पानी पर नींव होना—आधार दृढ़ न होना।

उ०—इतना अभिमान न करो; नौकरीकी पानीपर नींव होती है।

पानी फेरना—मिटा देना।

उ०—यमुनादास! कसम है गङ्गा माईकी, तुमने सब किये-करायेपर पानी फेर दिया है।

पानी फिरना—नष्ट होना।

उ०—आज आशारामकी समस्त आशाओंपर पानी फिर गया है।

पानीके घड़े पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—जब मैंने सबके सामने गङ्गादीनकी करतूतोंका वर्णन किया, उसपर पानीके घड़े पड़ गये।

पानी लगना—पानी अनुकूल न होना।

उ०—तुमको इस जगहका पानी लगता है; इसलिए तुम्हार स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

लागे अति पहार कर पानी। विपिन-विपति नहिं जात बखानी॥

'तुलसी'

पानीमें आग लगाना—झगड़ा करा देना।

उ०—तुम जहाँ कहीं रहते हो, पानीमें आग लगाते हो।

शीरए-अंगूरको करती है आबे-आतशीं।
आग पानीमें लगाती है हवा बरसात की॥

पानीसे पतला करना—अत्यन्त लज्जित करना।

उ०—जब कभी वह मुझे मिलेगा, मैं उसे अवश्य पानीसे पतला करूँगा!

पानीसे पतला करना—अत्यन्त हानि पहुँचाना।

उ०—पण्डित मोटेरामको छोटेलालने पानीसे पतला कर दिया है।

पानी होना—नरम होना।

उ०—वह पहले तो बड़ा आग-बबूला हो रहा था, परन्तु तुमको देखते ही पानी हो गया।

पानी मरना—अपराधी सिद्ध होना।

उ०—यह तो मैं जानता नहीं हूँ कि झगड़ेका कारण क्या है, परन्तु पानी तुम्हारी ओर ही मरता है।

पानीके मोल बिकना—बहुत सस्ता बिकना।

उ०—दस-बीस दिनके उपरान्त आम पानीके मोल बिकेंगे।

पानी बुझाना—कोई गरम वस्तु पानीमें डालना।

उ०—भाई साहब बीमार हैं उनके लिये कुछ पानी बुझा रहा हूँ।

पानी चढ़ना—रंग आना।

उ०—जब इस कटोरीपर पानी चढ़ेगा, इसका मूल्य भी बढ़ जायगा।

पानी उड़ना—आभारहित होना।

उ०—दो दिनमें इसका पानी उड़ जायगा; फिर यह बड़ी भद्दी दिखायी देगी।

पानी न मांगना—शीघ्र मर जाना।

उ०—इस जंगलका साँप बड़ा भयङ्कर होता है; इसका काटा पानी नहीं माँगता।

पानी-पानी हो जाना—सुगम हो जाना।

उ०—अनवरत अभ्यासके आगे कठिनसे कठिन कार्य भी पानी-पानी हो जाता है।

पानी वारकर पीना—बलिहारी जाना।

उ०—दामोदर! इस दुरंगीका क्या अर्थ है? कल तो उसको चुल्लूभर पानीको भी नहीं पूछते थे, आज उसपरसे पानी वारकर पीते हो।

पानीमें तेल डालना—वर्षा रोकनेके लिये टोटका करना।

उ०—क्या वह आज तुम्हारे घर आनेवाला है, जो बार-बार पानीमें तेल डालते हो।

'डालता हूँ इसलिए उठ-उठके रोग़न आबमें'

पानी गँवाना—नाम खोना; अप्रतिष्ठित होना।

उ०—गुण्डोंकी कुसंगतिमें रहकर पानी गँवा दिया; अब चुल्लू भर पानीमें डूब मरो।

पानी उतर जाना—आभारहित हो जाना।

उ०—इसे लेकर क्या कीजियेगा ? दो दिनमें इसका पानी उतर जायगा।

पानी बिलोना—निरर्थक बातें करना।

उ०—तुम्हारे पास बैठकर समय नष्ट होता है क्योंकि तुम लोग दिन-रात पानी बिलोते रहते हो।

पानी-पानी करना—लज्जित करना।

उ०—मानता हूँ कि मैं अपराधी हूँ आप मुझे इतना पानी-पानी क्यों करते हैं ?

पानीकी भांति बहाना—अपव्यय करना।

उ०—सब धन पानीकी भाँति बहा दिया; अब जूतियाँ चट खाते फिरो।

पानीसे पहिले पुल बांधना—अघटित घटनाकी चिन्तामें पड़ना।

उ०—समय आने दो, सब प्रबन्ध हो जायगा; तुम तो पानीसे पहिले पुल बाँधते हो।

पानीका पुल बांधना—कच्चा काम करना।

उ०—यदि कुछ लाभ होगा, तो ठोस काम करनेसे होगा; पानीका पुल बाँधना वृथा है।

पानीपर आधार होना—दृढ़ न होना।

उ०—जिस वस्तुपर तुम निर्भर हो बैठे, उसका पानीपर आधार है।

पाप काटना—झगड़ा मिटाना।

उ०—यदि स्वास्थ्य ठीक रहता, तो मैं कभीका इसका पाप काट देता।

पाप बिसाना—जान बूझकर दुःखमें पड़ना।

उ०—जब आये दिन तुम पाप बिसाओगे, तो मैं कहाँतक पाप काटूँगा ?

पापड़ बेलना—कठिन आपत्ति सहना।

उ०—विमलाका विवाह तुमने ऐसी जगह किया है कि बेचारी को यावज्जीवन पापड़ बेलने पड़ेंगे।

पापका घड़ा भर जाना—पापकी पराकाष्ठा होना।

उ०—कहते हैं कि जब पापका घड़ा भर जाता है, तो परमात्माकी ओरसे कोई महापुरुष अवतीर्ण होता है।

पार उतार देना—कार्य पूरा कर देना; उद्धार करना।

उ०—ईश्वरकी गति विचित्र है; एकको पार उतार देता है, तो दूसरेको मझधारमें छोड़ देता है।

पार पाना—भेद जानना।

उ०—ईश्वरकी लीला अपार है; फिर कोई उसका पार कैसे पाए।

शेष, शारदा, व्यास मुनी, कहत न पावें पार।
सो महिमा सत्सङ्गकी, कैसे कहे गँवार॥

पार पाना—जीतना, विजय पाना।

उ०—तुम उस दुष्टसे पार नहीं पा सकते।

पारस हाथ लगना—बड़ा लाभ होना।

उ०—लाला पारसदासके हाथ पारस लग गया है; इसलिए पारसदाससे पारसनाथ हो गये।

पारङ्गत होना—निपुण होना।

उ०—देवशर्मा गणित विद्यामें पारङ्गत हो गया है।

पारा-पारा होना—खण्ड-खण्ड होना।

उ०—उस पाषाण-हृदयकी बातोंसे मेरा दिल पारा-पारा हो गया है।

पारा-पारा होना—व्यग्र होना।

उ०—मियाँ आजाद उस परीके बिरहमें पारा-पारा हो रहे हैं।

पाला हाथ रहना—विजय प्राप्त करना।

उ०—मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस बार पाला हमारे हाथ रहेगा।

पाला पड़ना—वास्ता पड़ना; सम्पर्क होना।

उ०—ऐसे पापीसे पाला पड़ा है कि मैं सब प्रकारसे तङ्ग हो गया हूँ।

पाले पड़ना—वशमें आना।

उ०—ऐसे पापीके पाले पड़े हैं कि जीवन दूभर हो चला।

पास करना—लिहाज़ करना।

उ०—दूरकी बात ही दूसरी है, जब तुम पास रहते थे, तब तुम कौन सा पास करते थे।

❀ ❀ ❀ ❀

पासङ्ग भी न होना—अत्यन्त तुच्छ होना ।

उ०—तुम उसके पासङ्ग भी नहीं हो; क्यों व्यर्थ डींग मारते हो ?

पासा फेंकना—अनिश्चित प्रयत्न करना ।

उ०—आज पासा फेंकता हूँ ; या तो इधर या उधर ।

पिछली चिड़िया खाना—समयानुकूल न सूझना ।

उ०—उसने पिछली चिड़िया खाई है, इसलिए मैंने उसे अपना गवाह पहिले ही नहीं बनाया ।

पिण्ड छूटना—छुटकारा मिलना ।

उ०—एक रोगसे पिण्ड छूटा न था, दूसरा उपस्थित हो गया ।

पितरोंको भी पता न होना—बिल्कुल न जानना ।

उ०—उसके पितरोंको भी पता नहीं कि तुम गया जा रहे हो ।

पित्ता मारना—मन मारना ।

उ०—गरीब लोगोंका जब कुछ वश नहीं चलता, तो पित्ता मारकर बैठ जाते हैं ।

पित्ता मारना—कठिनता सहना ।

उ०—पुस्तक लिखनेमें लेखकको बड़ा पित्ता मारना पड़ता है ।

पित्ता मारना—क्रोध शान्त करना ।

उ०—वह पित्ता मार चुका था; तुमने उसे फिर पिताको गाली दी।

पित्ता मरना—क्रोध शान्त होना।

उ०—वह बड़ा शान्तप्रकृति मनुष्य है, परन्तु जब उसे कोई छेड़ देता है, तो बड़ी देरमें उसका पित्ता मरता है।

पिल पड़ना—आक्रमण करना।

उ०—सिंह-वेषधारी गर्दभपर गाँववाले लाठियाँ लेकर पिल पड़े।

'लेलेके अपनी लाठियाँ सब पिल पड़े गँवार।'

पिल पड़ना—संलग्न हो जाना।

उ०—यदि स्वास्थ्य ठीक होता, तो मैं आरम्भसे ही पढ़नेपर पिल पड़ता।

पिष्ट-पेषण करना—कही हुई बातको बार-बार कहना।

उ०—वह अपने भाषणमें पिष्ट-पेषण अधिक करता है; इस-लिए लोग सुनना नहीं चाहते।

पीछा छुड़ाना—छुटकारा पाना।

उ०—पिछला किराया देकर लालासे पीछा छुड़ाओ और आगेके लिए सावधान रहो।

पीछा भारी होना—बादमें कठिनता उपस्थित होना।

उ०—इसको आरम्भ मैं कर दूँगा, परन्तु जब पीछा भारी होगा, तो सँभालनेके लिए कौन आगे बढ़ेगा?

पीछा करना—पकड़नेके लिए दौड़ना।

उ०—उसने दूरतक चोरका पीछा किया, परन्तु उसे पकड़ न सका।

पीछे पड़ना—तङ्ग करना।

उ०—तुम जिसके पीछे पड़ते हो, उसकी मिट्टी पलीद करके छोड़ते हो।

पीछे चलना—अनुसरण करना।

उ०—जो लोग धनिक नेताके पीछे चलते हैं, वे बरबाद हो जाते।

पीठपर हाथ फेरना—शाबाशी देना।

उ०—उसने रामकी पीठपर हाथ फेरा और उसको एक पाँच रुपयेका नोट दिया।

पीठपर हाथ होना—सहायक होना।

उ०—मैं जानता हूँ उसकी पीठपर तुम्हारा हाथ था।

पीठ ठोकना—साहस बँधाना।

उ०—लोगोंने उसकी बहुत पीठ ठोकी, तथापि वह पीठ दिखाकर ही भागा।

पीठ दिखाना—कायर बनकर भागना।

उ०—वीर सिंह! तुम वीर हो, वीर पुरुष रण-भूमिमें कहीं पीठ दिखाते हैं?

पीठ फेरना—अरुचि दिखाना।

उ०—जब मैंने उससे पीठ फेर ली, तो वह हाथ बाँधे मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

पीठ फेरकर बैठना—असन्तुष्ट होना।

उ०—तुम ज़रा-ज़रा-सी बातोंपर पीठ फेरकर बैठते हो।

पीठ लगना—जानवरकी पीठपर घाव हो जाना।

उ०—इस घोड़ेको न ले जाओ; एक महीनेसे इसकी पीठ लगी हुई है!

पीठ लगना—कमर थक जाना।

उ०—तुम्हारी प्रतीक्षामें चार घण्टेसे बैठे-बैठे रामकी पीठ भी लग गयी।

पीठपर होना—सहायक होना।

उ०—आजकल उसकी पीठपर दो-चार लफङ्गे हैं।

पीठ-पीछे बुरा कहना—अनुपस्थितिमें बुराई करना।

उ०—किसीको पीठ-पीछे बुरा क्यों कहते हो? यह भले आदमियोंका काम नहीं है।

पीस डालना—नष्ट कर देना।

उ०—कल्याणदत्तको काल-चक्रने इस बार बिल्कुल पीस डाला है।

पुकार पड़ना—ख्याति होना।

उ०—आजकल तो इस नगरमें तुम्हारी ही पुकार पड़ी हुई है।

जमाने भरमें पड़ी है पुकार हातिम की।
दिया है जिसने कि हातिमको उसका नाम नहीं॥

पुकार सुनना—विनती सुनना।

उ०—सुनते हैं कि ईश्वर गरीबोंकी पुकार सुनता है।

पुट देना—चाल चलना।

उ०—मानते हैं, आज तो तुमने उस धूर्त्तराजको अच्छी पुट दी।

पुट्ठे हाथ न धरने देना—समीप न आने देना।

उ०—तुम उससे सहायता पानेकी आशा करते हो, जो पुट्ठे हाथ नहीं धरने देता है।

पुट्ठे हाथ न धरने देना—अनुकूल न होना।

उ०—मैंने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु उसने पुट्ठे हाथ धरने ही न दिया।

पुतलियां फिर जाना—मरणासन्न होना।

उ०—पुत्तनलालकी पुतलियाँ फिर गयी हैं; अब उसका बचना असम्भव है।

पुतलियां बदलना—मरणासन्न होना।

उ०—उसकी पुतलियाँ बदल गयी थीं, पर न जाने किस प्रकार प्राण लौट आये।

पुतलियोंका तमाशा दिखाना—धोखेमें डालना।

उ०—उसका विश्वास न करना, वह पुतलियोंका तमाशा दिखाता है।

पूनर्जन्म होना—मरणोन्मुख होकर बचना।

उ०—इस बार, यदि सच पूछो, तुम्हारा पुनर्जन्म हुआ है।

पुरानी लकीरें पीटना—पुरानी रीतियोंको मानना।

उ०—इस वैज्ञानिक कालमें भी अनेक लोग पुरानी लकीरें पीट रहे हैं।

पुल टूटना—अधिक परिमाणमें उपस्थित हो जाना।

उ०—इस वर्ष सहारनपुरमें आमोंके पुल टूट गये।

पूछ होना—सम्मान होना।

उ०—तुम कहते हो वह कुछ नहीं जानता और यहाँ उसकी बड़ी पूछ होती है।

पूरी पड़ना—काम चल जाना।

उ०—सामग्री तो पर्याप्त परिमाणमें पड़ी हुई है, परन्तु कहा नहीं जा सकता कि पूरी पड़ेगी वा नहीं।

पूर्णाहुति देना—कार्य समाप्त करना।

उ०—इस वर्ष पूर्णानन्द भी परीक्षा-यज्ञमें पूर्णाहुति देगा।

पूर्णिमाके चन्द्रको पृथ्वीपर उतारना—किसी अतीव सुन्दर व्यक्तिसे मिलाना।

उ०—राजाके कहनेसे भैरवानन्दने पूर्णिमाके चन्द्रको पृथ्वी पर उतारा।

पूर्वजोंका रक्त रगोंमें बहना—पूर्वपुरुषोंके समान शक्ति होना।

उ०—यदि पूर्वजोंका रक्त तुम्हारी रगोंमें बहता है, तो उस दुष्टसे अपमानका बदला अवश्य लो।

पूर्वजोंका रक्त रगोंमें ठंडा पड़ जाना—पूर्व पुरुषोंके समान शक्ति न रहना।

उ०—क्या पूर्वजोंका रक्त तुम्हारी रगोंमें ठंडा पड़ गया है, जो स्त्री जातिका अपमान सह लिया है।

पूर्वापर सोचना—किसी बातका पूर्णरूपसे विचार करना।

उ०—किसी कार्यके आरम्भमें जो मनुष्य उसका पूर्वापर सोचता है, उसको अन्तमें पछताना नहीं पड़ता।

पेच पड़ना—कठिनता उपस्थित होना।

उ०—इस बार एक पेच ऐसा पड़ गया है कि उसका सुलझाना कठिन हो रहा है।

पेच खेलना—धोखा देना।

उ०—तुम तो उसके साथ भी पेच खेलते हो, जिसने तुमको दाँव-पेच सिखाये हैं।

पेच घुमाना—मन फेरना।

उ०—यदि तुम पेच घुमाओगे, तो वह अवश्य हमको हानि पहुँचायेगा।

पेचमें पड़ना—आपत्तिमें फँसना।

उ०—तुम जान-बूझकर पेचमें पड़ते हो और हमको दोष देते हो।

पेटमें पानी आना—जुल्लाब लगना।

उ०—पाँच दिनसे तुम्हारे पेटमें पानी आ रहा है और बाजरे-की रोटी खाने जा रहे हो।

पेट पतलाना—कृपणता दिखाना।

उ०—यह अवसर चार पैसे खर्च करनेका है; तुम इस समय भी पेट पतलाते हो।

पेट पकड़कर भागना—शीघ्र भागना; घबराकर भागना।

उ०—जब उसने कोई उपाय न देखा, तो वह पेट पकड़कर भागा।

पेट फाड़ना—डाहके कारण व्यग्र होना।

उ०—यदि वह मुफ्तकी रोटियाँ तोड़ता है, तो तुम पेट क्यों फाड़ते हो?

पेट पीटना—भूखसे कोलाहल मचाना।

उ०—उस विधवाके घरमें तीन दिनसे अन्न नहीं है, इसलिए बच्चे पेट पीट रहे हैं।

पेटकी मार देना—भूखका दण्ड देना।

उ०—उसपर लाठोकी मारका प्रभाव न पड़ेगा; तुम उसको पेटकी मार दो।

पेटमें दाढ़ी होना—बड़ा चालाक होना।

उ०—बाबूजी, मोहनको भोला-भाला न समझिये; उसके पेटमें दाढ़ी है।

पेटमें घुसना—भेद निकालना।

उ०—मैं खूब जानता हूँ तुम जिस प्रकार आदमीके पेटमें घुसते हो।

पेटमें घुसना—मित्रता करना।

उ०—जिस दिनसे वह तुम्हारे पेटमें घुसा है, तुमने हमसे मिलना छोड़ दिया है।

पेटसे होना—गर्भ रहना।

उ०—कल्लुकी स्त्री पेटसे है, इसलिए अधिक परिश्रम नहीं कर सकती है।

पेटकी लगना—खानेकी ही चिन्ता रहना।

उ०—मानव-जीवनका क्या उद्देश्य है, इसका कभी स्वप्नमें भी विचार नहीं करते; तुमको पेटकी लगी रहती है।

पेट रखना—भोजनकी आवश्यकता होना।

उ०—वह भी तो पेट रखता है; तुम समय पर उसकी मजूरी क्यों नहीं देते ?

पेट काटना—भूखों मरना।

उ०—उधर तुम्हारे घरवाले अपना पेट काटते हैं, और तुमको रुपया भेजते हैं, इधर तुम्हारा यह हाल कि पढ़ने-लिखनेका नाम नहीं लेते।

पेटका पानी खौलना—घबरा जाना।

उ०—परीक्षाका नाम सुनते ही उसके पेटका पानी खौलने लगता है।

पेटकी आग बुझाना—भोजन करना।

उ०—तुम तर माल खाते हो; हम सूखी रोटीसे पेटकी आग बुझाते हैं।

पेटमें बात न खपना—बातको गुप्त न रख सकना।

उ०—तुमसे कोई अपना भेद क्या कहे? तुम्हारे पेटमें बात ही नहीं खपती।

पेट चलना—दस्त लगना।

उ०—तीन दिनसे तुम्हारा पेट चल रहा है, तिसपर भी दिन-रात अनाप-शनाप खाते रहते हो।

पेटका पानी न पचना—न रह सकना।

उ०—यादवके साथ भ्रमण किये बिना मोहनके पेटका पानी नहीं पचता।

पेटमें बैठना—भेद लेना।

उ०—वह ऐसा पेटमें बैठता है कि अपना उल्लू सीधा करके ही उठता है।

पेट-पीठ एक हो जाना—अत्यन्त दुर्बल हो जाना।

उ०—आजकलके नव-युवकोंका, तीन दिनके ज्वरमें, पेट-पीठ एक हो जाता है।

पेट पालना—जीवन-निर्वाह करना।

उ०—गरीब लोग दिनभर पत्थर ढो कर अपना पेट पालते हैं।

पेटसे पांव निकालना—समयके पूर्व कोई कार्य करना।

उ०—अभी परीक्षा-शुल्क भेजनेके चार मास पड़े हैं; पेटसे पाँव क्यों निकालते हो?

पेटकी दुहाई देना—भूखों मरना।

उ०—कितने ही लोग पेटकी दुहाई देते हैं; तुम धनी होकर किसीकी खबर भी लेते हो?

पेटमें चूहे कूदना—घबरा उठना।

उ०—रात्रिके समय चोरका नाम सुनते ही उसके पेटमें चूहे कूदने लगते हैं।

पेटमें चूहे दौड़ना—भूख लगना।

उ०—तुमने अभी चूल्हा भी नहीं जलाया, यहाँ पेटमें चूहे दौड़ रहे हैं।

पेट भरना—तृप्त होना।

उ०—दूसरोंकी निन्दा करते-करते, और झूठी कसम खाते-खाते तुम्हारा कभी पेट भी भरता है?

पैंतरे बदलना—चाल चलना।

उ०—कल तो तुमने ऐसे पैंतरे बदले कि तुम्हारे शत्रुओंके छक्के छूट गये।

पैंठ उठ जाना—अवसर निकल जाना।

उ०—जो कुछ सौदा लेना हो ले लो, फिर पैंठ उठ जायगी और देखते रह जाओगे।

या दुनियामें आइकै, छाड़ि देय तू पैंठ।
लेना है सो लेइले, उठी जात है पैंठ॥

पैर उखड़ जाना—घबरा जाना।

उ०—आरम्भमें ही तुम्हारे पैर उखड़ जाते हैं, तुम अन्ततक कैसे डट सकते हो?

पैर आगे न पड़ना—कातर हो जाना; साहस न होना।

उ०—उसकी वीरताकी धाक ऐसी जमी हुई थी कि रणभूमिमें शत्रुके पैर आगे न पड़ते थे।

पैर न फैल सकना—स्थान संकुचित होना।

उ०—जब सिकन्दरके अपने राज्यमें पैर न फैल सके, तो उसने दूसरे राज्योंपर धावा बोल दिया।

पैर जमाना—अधिकार करना।

उ०—मुसलमानोंके पाँव उखड़नेपर अँगरेजोंने भारतमें पैर जमाया।

पैर उखड़ना—हारकर भाग जाना।

उ०—हमारी सेनाने वह हाथ दिखाये कि शत्रुओंके पैर उखड़ गये।

पैरोंके नीचेकी निकल जाना—बड़ी घबराहट होना।

उ०—संग्राम-भूमिमें डटना बच्चोंका खेल नहीं है ; जिस समय गोलियाँ बरसती हैं, पैरोंके नीचेकी निकल जाती है।

पैसेके तीन धेले भुनाना—कृपणता करना।

उ०—बाप पैसेके तीन धेले भुनाता है, बेटा मौज उड़ाता है।

पोत पूरा होना—निर्वाह होना; काम चलना।

उ०—यहाँ अपना ही पोत पूरा नहीं होता, दूसरेकी सहायता कहाँसे करें।

पोत पुगाना—अपना कर्त्तव्य कर देना।

उ०—मैंने अपना पोत पुगा दिया है; अब तुम चाहे जो कुछ करो।

पोथेके पोथे रँग डालना—अनेक पुस्तकें लिख डालना।

उ०—लेखकोंने उसकी प्रशंसामें पोथेके पोथे रँग डाले हैं।

पोल खोलना—छिपी बुराइयाँ प्रकट करना।

उ०—जिस दिनसे तुमने उसकी पोल खोली है, कोई भी उसका आदर नहीं करता।

पौ फटना—प्रातःकालका प्रकाश होना।

उ०—जिस समय पौ फटती है, वह भ्रमणके लिए निकल जाता है।

पौ बारह होना—खूब लाभ होना।

उ०—विघ्न डालनेवाले तीन-तेरह हो गये, अब तो उनके हर प्रकारसे पौ-बारह हैं।

पौरा जाना—अधिकार समाप्त होना।

उ०—कौन जानता था कि भारतसे मुगलोंका पौरा ऐसा जायगा कि ढूँढ़ा खोज न मिलेगा।

प्याजके छिलके उतारना—रहस्य प्रकट करना।

उ०—क्या तुम अपनी धूर्त्ततासे तब बाज आओगे, जब मैं प्याजके छिलके उतारूँगा।

प्याली चलना—मदिरा पान करना।

उ०—बापका काम चले-न-चले, बेटेकी प्याली अवश्य चलती है।

प्रकाश डालना—स्पष्ट करना।

उ०—इस मामिलेपर किसी काशी निवासीने प्रकाश डाला है।

प्रशंसाके पुल बाँधना—बहुत बड़ाई करना।

उ०—आप मेरी प्रशंसाके पुल क्यों बांधते हैं? मैं तो आपका सेवक हूँ।

प्रशंसा करते मुंह सूखना—नम्रता पूर्वक अधिक प्रशंसा करना।

उ०—किसीका प्रशंसा करते मुँह सूखता है, तुम कुछ ध्यान ही नहीं देते।

प्राण सूख जाना—अत्यन्त भयभीत हो जाना।

उ०—युद्धका नाम सुनते ही तुम्हारे प्राण सूख जाते हैं, तिसपर भी तुम अपनेको वीर ही समझते हो।

प्राण-दण्ड देना—फांसीका दण्ड देना।

उ०—कुछ समझमें नहीं आता कि साधारण अपराध पर उसको प्राण-दण्ड क्यों दिया गया है।

प्राण-दान देना—जान बचाना।

उ०—वह यावज्जीवन आपकी प्राण-पणसे सेवा करेगा क्योंकि आपने उसको प्राण-दान दिया है।

प्राण छोड़ना—साहस तोड़ना।

उ०—आजकलके नवयुवकोंके सामने जहां कोई कठिनता उपस्थित हुई कि उन्होंने प्राण छोड़े।

प्राणोंको मुट्ठीमें लेना—जानको जोखिममें डालना।

उ०—रात्रिके बारह बजे थे, साथ चलनेको कोई प्रस्तुत न था, इसलिए प्राणोंको मुट्ठीमें लेकर मैं अकेला ही चल पड़ा।

प्राणोंपर बीतना—संकटापन्न होना।

उ०—जिसके प्राणोंपर बीतती है वही जानता है।

प्राण-पखेरू उड़ना—मरना।

उ०—आह! उस बेचारे गरीबके प्राण-पखेरू उड़ गये, ईश्वर उसको सद्गति दे।

कादर तो जीवत मरत दिनमें बार हजार।
प्राण-पखेरू वीरके उड़त एक ही बार॥
—वियोगी हरि

फ

फट पड़ना—किसी वस्तुका अधिक परिमाणमें होना।

उ०—इस वर्ष न जाने कहाँसे इतने अमरूद फट पड़े हैं।

फटा पड़ना—जोरों पर होना।

उ०—उस व्यक्तिपर सौन्दर्य तो, ईश्वर जानता है, फटा पड़ता था।

फटेमें पांव डालना—अकारण किसीके झगड़ेमें पड़ना।

उ०—मुझे क्या पड़ी है कि मैं आरामसे बैठे-बिठाये किसीके फटेमें पाँव डालूँ।

फड़क उठना—प्रसन्न हो जाना।

उ०—परीक्षामें सफल होनेका समाचार सुनते ही प्रत्येक विद्यार्थी फड़क उठता है।

* * * *

फफोले फोड़ना (दिलके)—दिलके गुबार निकालना।

उ०—आज तो खूब दिल खोलकर तुमने दिलके फफोले फोड़े हैं।

फोड़े हैं फफोले दिले-शैदा के किसीने।
तोड़े हैं समर नख्ले तमन्ना के किसीने॥

फबतियाँ उड़ाना—हँसी करना।

उ०—तुम लोग सदा महाशय फतेहचन्दकी फबतियाँ क्यों उड़ाया करते हो ?

फाग खेलना—प्रसन्नता मनाना; आनन्द मनाना।

उ०—तुमको किसीके मरने-जीनेसे प्रयोजन; तुम होली मनाओ; फाग खेलो।

फाड़ खानेको दौड़ना—क्रोधित होना; भयानक प्रतीत होना

उ०—(अ) तुमसे कोई कितना ही प्रेमपूर्वक क्यों न बोले, तुम सदा फाड़ खानेको दौड़ते हो।

(ब) तुम्हारे बिना यह स्थान फाड़ खानेको दौड़ेगा।

फांस मारना—भाँजी मारना; कार्य्यमें विघ्न करना।

उ०—मैं जानता था कि तुम इस शुभ कार्यमें भी फाँस मरोगे, इसलिए मैंने तुमको भेद नहीं बतलाया था।

फांस निकालना—कष्ट दूर करना।

उ०—मोहन ! क्या उसने तुम्हारी फाँस इसलिए निकाली थी कि तुम उसके कार्यमें फाँस मारोगे ?

फांसी लगना—अधिक कष्ट प्रतीत होना।

उ०—नानक ! क्या तुमको नलसे एक लोटा पानी लानेमें भी फाँसी लगती है ?

फूँक-फूँककर पांव (कदम) रखना—बहुत विचार पूर्वक

रहना। वह इतना फूँक-फूँककर पाँव रखता है, फिर भी कोई न कोई आपत्ति आ ही पड़ती है।

हम 'फ़लक' फूँकके रखते हैं ज़मी पर भी क़दम।
आसमाँ सर पै उठाएँ तो उठाएँ क्यों कर॥
(फ़लक)

फूँकसे पहाड़ उड़ाना—अल्प शक्ति द्वारा अत्यन्त कठिन कार्यकी चेष्टा करना।

उ०—उसको पीटनेका विचार छोड़ दो, कहीं फूँकसे पहाड़ उड़ाया जाता है?

पुनि पुनि मोहिं दिखाव कुठारा।
चहत उड़ावन फूँकि पहारा॥
(तुलसी)

फूँक डालना—नष्ट कर देना।

उ०—तुमने उसके पीछे अपना सब धन फूँक डाला, तिसपर भी वह तुम्हारा न हुआ।

फूटी आँखों न भाना—बिल्कुल अच्छा न लगना।

उ०—उसका यहाँ रहना तुमको फूटी आँखों न भाया।

फिट-फिट होना—निन्दा होना।

उ०—मैंने तुमसे पहिले ही कह दिया था कि इस मामिलेमें उसकी फिट-फिट होगी।

फिर जाना—साथ छोड़ देना; बेवफाई दिखाना।

उ०—आपत्तिके समय दूसरे तो दूसरे अपने भी फिर जाते हैं।

कौन होता है बुरे वक्तकी हालतका शरीक।
मरते दम आँखको देखा है कि फिर जाती हैं॥

फिसल पड़ना—ललचा जाना।

उ०—शकुन्तलाका रूप और लावण्य देखकर वनमें दुष्यन्त फिसल पड़ा।

फूट बहना—द्वेष प्रकट होना।

देख आखिरको न फोड़ेकी तरह फूट बहे।
हम भरे बैठे थे क्यों आपने छेड़ा हमको॥

फूट डालना—लड़ाई कराना, बैर कराना।

उ०—मैंने उसको इसलिए फटकारा है कि वह जहाँ कहीं बैठता है, वहीं फूट डालकर उठता है।

फूट-फूट कर रोना—अधिक रोना।

उ०—उस विधवाके फटे-पुराने कपड़े और फूटे टूटे बरतन भी कोई दुष्ट उठा ले गया, इसलिए वह फूट-फूटकर रो रही है।

फूट पड़ना—अनबन होना।

उ०—दोनों भाइयोंमें जबसे फूट पड़ी है, बराबर मुकदमेबाजी चल रही है।

फूट पड़ना—उच्चरोदन करना।

उ०—पतिकी मृत्युका समाचार सुनते ही श्यामा फूट पड़ी।

फूट कर रोना—अधिक रोना।

उ०—आज न जाने मोहनलाल क्यों फूटकर रो रहा है।

जब बयाबाने-मुहब्बतमें क़दम टूट गये।
आबले फूटके रोये मेरी तकदीरके साथ॥

क्यों न रोयें फूटकर हम कसरे-जानाके तले।
दीदए-तर अपने दरियाका करारा चाहिये॥

फूल बोना—भलाई करना; उपकार करना।

उ०—मैं तुम्हारे लिए फूल बोता हूं और तुम मेरे लिए कांटे।

जो तोको काँटा बुवे, ताहि बोइ तू फूल।
तोकों फूलके फूल हैं, वाको है तिरसूल॥

फूल सूँघकर रहना—कुछ न खाना।

उ०—खबीचड़ तो हम हैं; तुम तो, फूलकुमार! केवल फूल सूँघकर रहते हो।

फूल जाना—प्रसन्न होना।

उ०—वह तीस रुपयेकी जगहपर नियुक्तिका समाचार सुनते ही फूल गया।

'कर किलरकी खा डबल रोटी खुशीसे फूल जा।'
(अकबर)

फूलकर कुप्पा हो जाना—बहुत प्रसन्न होना।

उ०—मैं आज तुमको ऐसा शुभ समाचार सुनाऊँगा कि तुम फूलकर कुप्पा हो जाओगे।

फूलकर बैठना—अभिमान सहित प्रसन्न होकर बैठना।

उ०—आज तो बाबू फूलचन्द बहुत फूलकर बैठे हुए हैं।

फूला न समाना—अत्यन्त प्रसन्न होना।

उ०—वह चुङ्गीघरका मेम्बर बनकर फूला नहीं समाता है।

फूला नहीं समाता है क्यों इन दिनों रकीब।
थोड़े ही दम दिलासेने इतना उभर चला॥

फूले अँग न समाना—अतीव प्रसन्न होना।

उ०—साधारण व्यक्ति साधारण बातपर फूले अङ्ग नहीं समाते हैं।

फूलोंमें तुलना—अत्यन्त कोमलांग होना।

उ०—भला इसका भी कोई विश्वास करेगा कि वह दो मनका शरीर फूलोंमें तुलता है?

फेरमें आना—धोखेमें पड़ना।

उ०—मैंने तुमसे कह दिया था कि वह बड़ा चालाक है, फिर भी तुम उसके फेरमें आ गये।

फ़ेरम पड़ना—झंझटमें पड़ना।

उ०—मुझे इतना समय कहाँ मिलता है कि किसी फेरमें पड़ूँ।

फेरे पड़ना—विवाह होना।

उ०—जिस स्त्रीके साथ जगदीशके फेरे पड़े थे, उसको उसने छोड़ दिया है।

(ब)

बगटुट दौड़ना—अन्धाधुन्ध भागना।

उ०—जहाँ उसने मुझे देखा कि वह बगटुट दौड़ा।

बगलें बजाना—हर्ष प्रकट करना।

उ०—बड़ी लज्जाकी बात है कि वामदेवका हाथ टूटनेपर तुम बगलें बजाते हो।

बगलें झांकना—निरुत्तर होना।

उ०—अब मैंने उसका कच्चा चिट्ठा खोला, तो वह बगलें झाँकने लगा।

बगुचा सँभालना—चल देना।

उ०—यहाँ तुम्हारे जैसे आदमीका निर्वाह होना कठिन है, इसलिए आज ही अपना बगुचा सँभालो।

बगुला भगत होना—कपट-वेश धारण करना।

उ०—आजकल पण्डित वक्केश्वर भी बगुला भगत हो रहे है।

बचकर खेलना—सावधान होकर कार्य करना।

उ०—वह धाखा खानेवाला नहीं है क्योंकि वह सदा बचकर खेलता है।

बटन खोल देना—उदार बन जाना।

उ०—बादामसिंह लम्बरदारने अपने लड़केके विवाहके अवसरपर बटन खोल दिये।

बट्टा लगना—कलङ्कित होना।

उ०—तुम्हारे दुष्कृत्योंसे केवल तुमको ही नहीं वरन् तुम्हारे पूर्वजोंके नामको बट्टा लगेगा।

बड़-भस लगना—बुढ़ापेमें मस्ती छूटना।

उ०—जिसको बड़-भस लगती है, उसको उचित-अनुचितका बोध नहीं रहता है।

बड़ मारना—निरर्थक बोलना।

उ०—यहाँ घण्टे भरसे बैठे हुए क्यों बड़ मार रहे हो? जाओ अपना काम देखो।

बड़ा बोल बोलना—अभिमान करना।

उ०—जो बड़ा बोल बोलता है, वह छोटा समझा जाता है।

चाँदीकी अँगूठी पै जो सोनेका फिरा झोल।
ओछी थी लगी बोलने इतराके बड़ा बोल॥

बड़ा तीर लगना—बड़ा काम करना अर्थात् कुछ भी न होना।

उ०—दूसरोंको नाम धरते हो, तुम कौन-सा बड़ा तीर मारते हो?

बड़े घरकी हवा खाना—जेल जाना।

उ०—यदि चोरी करना न छोड़ोगे, तो किसी-न-किसी दिन अवश्य बड़े घरकी हवा खाओगे।

बढ़-बढ़कर बातें करना—अभिमान दिखाना।

उ०—बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न करो; मैं तुम्हारे समस्त कुटुम्बको जानता हूँ।

बढ़-बढ़के बोलना—इतराना; अभिमान करना।

उ०—वह जहाँ-कहीं चार आदमियोंमें बैठता है, अवश्य बढ़-बढ़के बोलता है।

बढ़ावा देना—प्रोत्साहित करना।

उ०—बुरे कामोंके लिए केवल तुम लोग ही उसको बढ़ावा देते हो।

बण्टा धार करना—नाश करना।

उ०—जर्मन सेनाने बेलजियमका बण्टाधार कर दिया था।

बतीसी गिरना—सबके सब दांत टूट जाना।

उ०—पचास वर्षकी आयुमें हो बलरामकी बतीसी गिर गयी।

बदरौंका नाला बनाना—थोड़ी-सी बातको अधिक बढ़ा देना।

उ०—तुमसे कोई कैसे पार पाये? तुम बदरौंका नाला बनाते हो।

बदीपर आना—बुराई करनेपर उतारू हो जाना।

उ०—बदरीदत्त ! याद रखो, यदि मैं बदीपर आऊँगा, तो तुम इस नगरसे भाग जाओगे।

बद्धियां पड़ना—मार-पीटके कारण खाल उड़ना।

उ०—उसके समस्त शरीरपर बद्धियाँ पड़ी हुई हैं।

बद्धियां डालना—मार मारकर खाल उड़ाना।

उ०—तुम्हें तनिक भी दया न आयी; उसके सारे शरीर उपर बद्धियाँ डाल दी हैं।

बधिया बैठना—काम बिगड़ जाना; अधिक हानि पहुँचना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस बार उसकी बधिया अवश्य बैठ जायगी।

बन-बनकी लकड़ी चुनना—दुःखमय जीवन व्यतीत करना।

उ०—भामाशाहने प्रतापसे कहा—"महाराज ! यह कैसे हो सकता है कि आप देशहित वन-वनकी लकड़ी चुनें और हम मौज उड़ायें।"

बन जाना—अच्छी स्थितिमें हो जाना।

उ०—इस आन्दोलनमें जहाँ अनेक आदमी बिगड़ गये हैं, वहाँ कितने ही बन भी गये हैं।

बन आना—अनुकूलता होना।

उ०—उसकी हमसे बिगड़ी, तो शत्रुओंकी बन आयी।

बन पड़ना—हो सकना।

उ०—जो हमसे बन पड़ा सो कर दिया।

बन पड़ना—प्रयोजन सिद्ध होना।

उ०—अब तो तुम्हारी भी बन पड़ेगी क्योंकि बखेड़ा ही ऐसा खड़ा हो गया है।

उसकी तो बन पड़ी कि लगी जान मुफ्त हाथ।
तेरी गिरहमें क्या दिले-नाशाद रह गया॥

बना-बनाया खेल बिगड़ना—पूरा हुआ काम बिगड़ना।

उ०—अवसरपर असावधान होनेसे हमारा बना-बनाया खेल बिगड़ गया।

बना रहना—जीवित रहना।

उ०—भिखारीने कहा—"भगवन्! ईश्वर करे तुम्हारा समस्त परिवार बना रहे; विपत्तीमें मेरी सहायता कीजिये।"

बन्द-बन्द अलग करना—टुकड़े-टुकड़े कर देना।

उ०—डाकुओंने बाबा मुस्तफाके बन्द-बन्द अलग कर दिये थे।

बन्द-बन्द जकड़ जाना—समस्त शरीरमें पीड़ा होना।

उ०—आज शीतके कारण मेरा बन्द-बन्द जकड़ गया है।

बन्दर-भभकियां देना—बनावटी भय दिखाना।

उ०—तुम उससे कदापि न घबराना; वह बहुधा बन्दर-भभकियां देता है।

बन्धन-मुक्त होना—निश्चिन्त होना; स्वाधीन होना।

उ०—तुम तो गत वर्ष ही बन्धन-मुक्त हो गये थे; इस बार हमारी बारी है।

बपौती होना—अधिकार होना।

उ०—क्या यह भूमि तुम्हारी बपौती हो गयी है जो दूसरोंको चलनेसे रोकते हो ?

बम फूटना—स्रोत निकलना।

उ०—राजपुरके समीप मीठे जलकी एक बम फूटी है।

बम फूटना—आधिक्य होना।

उ०—इस वर्ष तो अम्बालेमें खरबूजोंकी बम फूट गयी है।

बरस पड़ना—क्रोधके आवेशमें बुरा-भला कहना।

उ०—कल वह तुम्हारे आनेके पूर्व मुझपर गरज रहा था; जब तुमने आकर कुछ कहा तो तुमपर बरस पड़ा।

आजुर्दा ग़ैरसे हुए, दीं मुझको गालियाँ।
किसपर भरे हुए थे वो किसपर बरस पड़े॥

बराबर करना—समाप्त करना।

उ०—मोहनने बापकी कमाई थोड़े दिनोंमें बराबर कर दी।

बरोंके छत्ते को छेड़ना—किसी उपद्रव-प्रिय मनुष्यसे छेड़-छाड़ करना।

उ०—यदि तुम बरोंके छत्तेको छेड़ोगे, तो अवश्य हानि उठाओगे।

बल खा जाना—मुड़ जाना; प्रकुपित होना।

उ०—सुनते हैं थोड़ा-सा भार उठानेसे उसकी पतली कमर बल खा आती है।

बल न रखना (दिलमें)—द्वेष भाव न रखना।

उ०—तुम हमको जानते हो, हम शरीरमें बल रखते है, परन्तु दिलमें बल नहीं रखते हैं।

शेवए-रास्ती ऐसा है दकनमें अय 'दाग़'।
बल नहीं रखते मुसल्मानसे हिन्दू दिलमें॥

(दाग़)

बल खाकर बहना—सवेग बहना।

उ०—रात्रिका समय था; नदी बल खाकर बह रही थी; ऐसी स्थितिमें मैं कुछ न कर सका।

बल खाना—जोर दिखाना; अभिमान दिखाना।

उ०—मुझको निर्बल समझकर बल खाते हो, यह तुम्हारी मूर्खता है।

बल निकलना—अभिमान दूर होना।

उ०—यह वह स्थान है जहाँ अच्छे-अच्छोंका बल निकल जाता है।

बल निकालना—घमण्ड दूर करना।

उ०—उसने निश्चय कर लिया है कि किसी न किसी दिन तुम्हारा बल निकालेगा।

हम निकालेंगे सुन अय मौजे-हवा बल तेरा।
उसकी ज़ुल्फ़ोंके अगर बाल परेशाँ होंगे॥

बल डालना—पेचदार बनाना; असन्तुष्ट होना।

उ०—(अ) साधारण बातमें क्यों बल डालते हो?

(ब) आज आप किस लिए बल डाले हुए हैं?

लाख बल डाले हैं काफ़िर, एक सीधी बात पर।
ज़ुल्फ़ तेरी है बला, डरते हैं उसके बलसे हम॥

बलाएँ लेना—बलिहारी जाना।

उ०—उसको बलासे, यदि कोई उसको बलाएँ लेता है, ले।

चमक है तेरे रुखसारोंमें ऐसी।
कि लेते हैं बलाएँ चाँद-सूरज॥

बलि चढ़ना—मारा जाना।

उ०—इस आन्दोलनमें अनेक आदमी बलि चढ़ गये।

बलोंपर होना—अभिमान करना।

उ०—बलराम उसके पक्षमें है, इसलिए वह आजकल बलों-पर है।

बस करना—रुकना।

उ०—समय समाप्त हो गया, अब बस करो; कबतक लिखते रहोगे?

बस चलना—शक्तिमें होना।

उ०—उसका बस चले तो वह हमको एक क्षणमें यहाँसे निकलवा दे।

बस न करना—तृप्त न होना।

उ०—उसे चाहे जितना खिलाइये, वह कभी बस न करेगा।

बहती गङ्गामें हाथ धोना—अच्छी स्थितिमें शुभ कार्य करना।

उ०—यमुनादास ! अच्छा अवसर है, बहती गङ्गामें हाथ धो लो।

बहरा बनना—सुनना न चाहना।

उ०—मैं कभी तुम्हारे विषयमें कुछ कहता भी हूँ, तो वह बहरा बन जाता है।

बहार लूटना—मौज उड़ाना; आनन्द करना।

उ०—संसारकी गति विचित्र है, किसीकी बहार लुटती है तो कोई बहार लूटता है।

बहुत नन्हा कातना—कृपणता करना।

उ०—सेठजी ! आपकी बदनामी होगी; यदि इस अवसरपर आप बहुत नन्हा कातेंगे।

बहक जाना—विचलित हो जाना।

उ०—तुम और समय तो सावधान रहते हो और अवसरपर बहक जाते हो।

बहकी हुई बातें करना—युक्तियुक्त बातें न कहना।

उ०—माधव ! क्या कारण है कि तुम्हारा भाई आज बहकी हुई बातें कर रहा है ?

बांध टूट जाना—सीमा न रहना।

उ०—पण्डित कालूरामके अभिमानकी बाँध टूट गयी है, इसलिए अब वे काले आदमीसे सम्बन्ध नहीं जोड़ते।

बांबीमें हाथ डालना—भयङ्कर एवं हानिप्रद कार्य करना।

उ०—वह बौड़म यदि बांबीमें हाथ डालता है डालने दो, तुम उससे अलग रहो।

बांसपर चढ़ना—बदनाम होना।

उ०—वसुदेव! बांसपर चढ़ रहे हो, अब भी बुरा-भला नहीं दिखाई देता है।

बांसपर चढ़ाना—बदनाम करना।

उ०—ये लोग एक दिन तुमको बाँसपर चढ़ायेंगे और संसारको तमाशा दिखायेंगे।

बांसों उछलना—अति प्रसन्न होना।

उ०—किसीको बाँसपर चढ़ाकर वे लोग बाँसों उछलते हैं।

बांह पकड़ना—आश्रय देना।

उ०—पण्डित बालक रामने उस अनाथ बालककी बाँह पकड़ ली है।

बांह पकड़ाना—सौंपना।

उ०—उसका पिता मरते समय मुझको अपने एक पुत्रकी बाँह पकड़ा गया था।

बाई पच जाना—शान्त होना।

उ०—खोपड़ीपर दो-चार जमानेसे उसकी सब बाई पच जायगी।

*　　*　　*　　*

बाग मोड़ना—किसी ओर घूमना।

उ०—भामाशाहने कहा—"राजन्! मेरी प्रार्थना है कि एक बार चित्तौड़की फिर बाग मोड़िये।"

बाग उठाना—किसी ओर प्रस्थान करना।

उ०—प्रतापने भामाशाहकी प्रार्थना स्वीकार कर चित्तौड़की बाग उठाई।

बाग-बाग होना—अधिक प्रसन्न होना।

उ०—इस बागमें आते ही दिल बाग बाग हो जाता है।

बाग उठाना—घोड़ा दौड़ाना।

उ०—ये लोग जिधर बाग उठाते हैं, पृथ्वी दहलती चली जाती है।

बाग हाथसे छूटना—वशमें न रहना।

उ०—अब कुछ नहीं हो सकता; हमारे हाथसे बाग छूट गयी है।

बाग ढीली करना—किसी बातमें ढील डाल देना।

उ०—जब आपने बाग ढीली कर दी, मैं अपने काममें लग गया।

बाछें खिल जाना—प्रसन्न होना।

उ०—बहुत दिनोंसे उसका काम बन्द पड़ा था, आज सौ रुपयेकी जगह मिलनेसे उसकी बाछें खिल गयी हैं।

* * * *

बाज आना—छोड़ देना।

उ०—यदि वह अपनी धूर्त्ततासे बाज आता, तो मैं उसके विरुद्ध कुछ न करता।

बाज आना—न चाहना।

उ०—मेरा रुपया शीघ्र वापस कीजिये; मैं ऐसी मित्रतासे बाज आया।

बाजारके भाव पीटना—सबके सामने मारना।

उ०—किसी दिन उसको बाजारके भाव ऐसा पीटूँगा कि शत्रुताका भाव सब भूल जायगा।

बाजार गरम होना—किसी वस्तुकी वृद्धि होना।

उ०—आज-कल संसारमें असत्यका बाजार गरम है।

बाजार मन्दा पड़ना—क्रय-विक्रय घट जाना, माँग घटना।

उ०—तीन महीनेसे बाजार मन्दा पड़ा है; आपको चन्दा कहांसे दिया जाय।

बाजार ठण्डा होना—माँग न रहना।

उ०—क्या बात है कि इस वर्ष तुम्हारा बाजार ठण्डा हो गया है?

बाजी मारना—सफल होना; कार्य्य सिद्ध होना।

उ०—इस बार उसने डटकर ऐसा परिश्रम किया कि बाजी मार ली।

बाजी ले जाना—विजय प्राप्त करना ? आगे बढ़ना।

उ०—मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्णानन्द सब लड़कोंसे बाजी ले जायगा।

सबसे आख़िरको ले गयी बाजी।
एक शायस्ता क़ौम मग़रिबकी॥
(हाली)

बाजे बज चुकना—गौरव समाप्त हो जाना।

उ०—इतना अभिमान क्यों करते हो ? चार दिनमें तुम्हारे भी बाजे बज चुकेंगे।

बाट देखना—प्रतीक्षा करना।

उ०—रामनाथ! शीघ्र घर जाओ; तुम्हारी माता तुम्हारी बाट देख रही है।

बाट जोहना—प्रतीक्षा करना।

उ०—मैं दो घण्टेसे यहाँ बैठा हुआ तुम्हारी बाट जोह रहा हूँ।

बाढ़ रखना—धार तेज करना।

उ०—आज वह दुष्ट छुरीपर बाढ़ रख रहा है, न जाने क्या अनर्थ करेगा ?

बाढ़पर चढ़ना—बहक जाना; बातोंमें आ जाना।

उ०—तुम जान-बूझकर उस दुष्टकी बाढ़पर चढ़ गये।

बात आना—बट्टा लगना; बुराई मिलना।

उ०—यदि मुझपर कोई बात आयी, तो तुम अपनी कुशल न समझना।

बात बन जाना—सम्मान होना।

उ०—आज चार आदमियोंमें तुम्हारी बात बन गयी।

बात बड़ी होना—सम्मान बढ़ना।

उ०—जिसकी बात बड़ी है, उसको छोटा न समझना चाहिये।

बात बिगाड़ना—साख बिगाड़ना; अवसर खोना।

उ०—उसने कितने ही लोगोंकी उपस्थितिमें अपने पिताकी बात बिगाड़ दी।

बात पाना—भेद समझ लेना।

उ०—मैं तुम्हारी बात पा गया; अब मैं तुमसे बात न करूँगा।

बात पर आना—वचनका पक्ष करना।

उ०—यदि तुम अपनी बातपर आते हो, तो मैं भी पीछे हटनेवाला नहीं हूँ।

बात पर जाना—बातका ध्यान रखना।

उ०—तुम्हारी बातोंपर जाऊँ, तो तुम्हारे साथ बात भी न करूँ।

बात पकड़ना—किसीकी बातमें त्रुटि निकालना।

उ०—किसीको बात भी करने दोगे ? तुम तो बात-बातमें बात पकड़ते हो।

बात फूटना—भेद खुल जाना।

उ०—यादव ! बात क्या फूट गयी, तुम्हारा भाग्य फूट गया।

बात फेंकना } बोली मारना
बात मारना

उ०—उस दिन सबके सामने जो तुमने बात मारी थी, मैं उसको भूला नहीं हूँ।

बात पी जाना—सुनकर चुप रहना।

उ०—वह स्वभावका बड़ा क्रोधी है, पर न जाने आज कैसे बात पी गया।

बात टालना—बातका उत्तर ठीक न देना।

उ०—मैं तुम्हारी बात पा गया ; तुम हमारा काम नहीं करना चाहते हो, इसलिए बात टालते हो।

बात जाना—सम्मान जाना; बात बिगड़ना।

उ०—संसारमें जिस आदमीकी बात जाती रहती है, उसकी कोई बात नहीं पूछता।

बात चबाना—लगी-लिपटी बात करना ; बातको दूसरी ओर घुमा देना।

उ०—जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो, बात क्यों चबाते हो ?

बात चलाना—बात आरम्भ करना।

उ०—मेरा दोष नहीं, तुमने ही पहिले बात चलायी थी।

बात टालना—कहना न मानना।

उ०—वह बड़ा आज्ञाकारी लड़का है; कभी अपने पिताकी बात नहीं टालता।

बात डबोना—काम बिगाड़ना; अपयश लेना?

उ०—तुमने ऐसी बात डबोयी है कि हमको भी लज्जा आती है।

बात रख लेना—कहना मान लेना; प्रतिष्ठा बचाना।

उ०—उसने तो बात बिगाड़नेमें कसर नहीं छोड़ी थी, परन्तु आपने हमारी बात रख ली।

बातका बतङ्गड़ होना—थोड़ी बातका अधिक बढ़ जाना।

उ०—कोई बात हो तो बताऊँ; बातका बतंगड़ हो रहा है।

बातका पूरा होना—जो कहना उसे पूरा करना।

उ०—वह केवल बातें ही नहीं बनाता है किन्तु अपनी बातका पूरा है।

*   *   *   *   *

*   *   *   *   *

बात न पूछना—उपेक्षा करना।

उ०—तुम उसकी दुमके पीछे लगे रहते हो और वह तुम्हारी बात भी नहीं पूछता है।

बात लगाना—पिशुनता करना।

उ०—मोहन ! क्या यह अच्छी बात है कि तुम वहाँ हमारी बात लगाते हो ?

बात काटना—बीचमें बोल उठना।

उ०—पण्डितजी ! क्षमा कीजिये, एक मिनटके लिये आपकी बात काटता हूँ।

बात हलकी होना—सम्मान कम होना।

उ०—जब तुम्हारी बात हल्की हो गयी है, फिर भारी बनकर बैठनेका क्या अर्थ है ?

बातमें बात पैदा करना—अधिक छान-बीन करना।

उ०—वह तुमसे बात करता हुआ इसलिए घबराता है कि तुम बातमें बात पैदा करते हो।

बातपर बात आना—प्रसंगवश बात याद आना।

उ०—आप जानते हैं कि बातपर बात आ जाती है, इसलिए मैंने उसके विषयमें कुछ कह दिया था।

बात चलाना—मत स्वीकृत होना।

उ०—मुझे विश्वास है कि तुम्हारी बात अवश्य चलेगी।

बातपर आना—बातपर अड़ जाना।

उ०—यदि मैं बातपर आऊँगा, तो तुम बातें बनाना भूल जाओगे।

कौदक-मिज़ाज चाहनेवाले नहीं तेरे।
खेलेंगे जानपर अगर आयेंगे बातपर ॥

बात तक न पूछना—कुछ भी सम्मान न करना।

उ०—यदि तुममें कोई गुण न होगा, तो कोई तुम्हारी बात तक न पूछेगा।

बात बढ़ाना—झगड़ा फैलाना।

उ०—भद्र पुरुषोंकी भांति समझौता कर लो; व्यर्थ क्यों बात बढ़ाते हो?

बात खुल जाना—भेद प्रकट होना।

उ०—आज उसकी बात खुल गयी है, इसीलिये द्वार बन्द किये पड़ा हुआ है।

बात पक्की होना—निश्चय होना।

उ०—आप सोमवारको चले आइये; सब बात पक्की हो गयी है।

बात रहना—प्रतिष्ठा बचना।

उ०—सेठजी, यह क्या थोड़ा लाभ है कि आज आपकी बात रह गयी है।

बात पैरों न चलना—काम न बनना।

उ०—तुम प्रयत्न तो कर रहे हो, परन्तु मुझे बात पैरों चलती मालूम नहीं होती।

बातें बनाना—झूठ बोलना।

उ०—मैंने अभीतक एक पुस्तक भी नहीं खरीदी है; वह बातें बनाता है।

बातें छाँटना—गप्प मारना; निरर्थक बोलना।

उ०—उसने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया है और दिन भर बातें छाँटता रहता है।

बातें मिलाना—झूठ बोलना।

उ०—रातके तीन बजेतक तो पढ़ते रहते हो, और हमसे बातें मिलाते हो।

बातोंमें मिश्रीकी डली घोलना—मधुर भाषण करना।

उ०—उसके पाससे उठनेको किसीका जी नहीं चाहता क्योंकि वह बातोंमें मिश्रीकी डली घोलता है।

बातोंमें आना—धोखेमें पड़ना।

उ०—तुम समझदार होकर उसकी बातोंमें आ गये।

बातोंका तांता बांध देना—अनवरत बातें करते रहना।

उ०—न जाने उसका मस्तिष्क किस धातुसे निर्मित हुआ है; जब बोलने लगता है, बातोंका ताँता बाँध देता है।

बातोंमें उड़ाना—बात-चीतमें टालना।

उ०—यदि हम कभी तुमसे दिलकी बात कहते हैं, तो तुम उसको बातोंमें उड़ा देते हो।

कोई घड़ी न वस्लकी आयी तमाम रात।
बातोंमें उस परीने उड़ायी तमाम रात॥

बातोंमें उड़ाना—धोखा देना।

उ०—वह बड़ा चालाक है; तुम्हारे जैसोंको तो बातोंमें उड़ा देता है।

बातोंपर जाना—कहने सुननेपर ध्यान देना।

उ०—यदि तुम्हारी बातोंपर जाऊँ, तो कभी तुम्हारे पास भी न आऊँ।

बातोंमें आ जाना—विश्वास कर लेना।

उ०—तुम जानते थे कि वह अपनी बातका पक्का नहीं है, फिर भी तुम उसकी बातोंमें आ गये।

बातोंपर न जाना—विश्वास न करना।

उ०—यह बात और है कि वह प्रति दिन मेरे पास आता है, परन्तु मैं कभी उसकी बातोंपर नहीं जाता।

बानगी दिखाना—गुण प्रकट करना।

उ०—बहुत दिनोंसे तुम्हारे गानेकी प्रशंसा सुनते हैं, आज तो अपनी बानगी दिखाओ।

बानगी देखना—किसी वस्तुकी जाँच करना।

उ०—अभिमान न करो, कल तुम्हारी बानगी भी देखी जायगी।

बाप-दादाका नाम डबोना—कुलको कलंकित करना।

उ०—तुमसे कुछ आशा थी, आज तुमने भी बाप-दादाका नाम डबो दिया।

बाप-दादाका नाम रोशन करना—यश पानेवाले कार्य करना।

उ०—रोशनलालने बाप-दादाका नाम रोशन कर दिया है।

बाप तक पहुँचना अथवा जाना—बापको गाली देना।

उ०—यह ठीक नहीं है कि तुम बात-बातमें बापतक पहुंचते हो।

बाधवाई फिरना—निकम्मा फिरना।

उ०—तुम्हारा लड़का दिन भर बाधवाई फिरता है।

बाप-दादाकी हो जाना—अधिकारमें चला जाना।

उ०—जो कुछ पूँजी उसको मिली थी, वह तुम्हारे बाप-दादाकी हो गयी।

बायां पांव पूजना—किसीकी चालाकी स्वीकार करना।

उ०—तुम उसको क्या समझते हो? बड़े-बड़े चालाक उसका बायाँ पाँव पूजते हैं।

बारह पत्थर बाहर करना—नगरकी सीमासे बाहर निकाल देना।

उ०—उस दुष्टको शीघ्रसे शीघ्र बारह पत्थर बाहर कर दो।

बारह-बाट करना—तितर बितर करना।

उ०—रामप्रसादकी स्त्रीने सब भाई बारह-बाट कर दिये।

बारूदमें चिनगारी फेंकना—झगड़ा खड़ा करना।

उ०—तुम जहाँ जाते हो, बारूदमें चिनगारी फेंकते हो, यह बड़ी लज्जाकी बात है।

बालकी खाल निकालना—गहरी विवेचना करना; बड़ी छान-बीन करना।

उ०—मैं तो समझ गया, परन्तु उसको कैसे समझाऊँगा; वह बालकी खाल निकालता है।

बाल आना—चटक जाना।

उ०—दर्पण तो बड़ा अच्छा है, परन्तु इसमें बाल आ गया है।

बाल बांका करना—हानि पहुँचाना।

उ०—तुम बांकेलालका बाल बाँका नहीं कर सकते हो।

जाको राखै साइयाँ मारि न सकि है कोइ।
बार न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होइ॥

बाल-बाल बचना—साफ बचना, हानि पहुंचनेमें थोड़ी ही.कसर रहना।

उ०—(अ) उसकी चिन्ता न करो, वह बाल-बाल बच गया है। (ब) मार्गमें बड़ा भयंकर साँप पड़ा था; मैं बाल-बाल बच गया।

बाल-बाल शत्रु होना—सब शत्रु बन जाना।

उ०—वह अपने घर चला गया क्योंकि यहाँ उसका बाल-बाल शत्रु हो रहा था।

बाल पकना, बाल फूलना—बाल श्वेत होना।

उ०—आज-कल ब्रह्मचर्यके अभावसे युवावस्थामें ही अनेक युवकोंके बाल पक जाते हैं।

बाल सफेद होना—वृद्ध होना।

उ०—चेहरेपर झुरियाँ पड़ गयीं, बाल सफेद हो गये, अब उनसे अधिक परिश्रम नहीं हो सकता।

बाल-बाल अपराधी होना—पूर्णतः दोषी होना।

उ०—मैं मानता हूँ कि उसका बाल-बाल अपराधी है, तथापि वह आपकी दयाका पात्र है।

बाल-बाल ऋणी होना—ऋणकी अधिकता होना।

उ०—तुम्हारे पढ़ाने-लिखानेमें उसका बाल-बाल ऋणी हो गया है।

बाल-बाल मोती पिरोना—बड़ी सजावट करना।

उ०—वह सुन्दरी पहले बाल-बाल मोती पिरोती है, फिर गानेमें संलग्न हो जाती है।

बालकी भेड़ बनाना—थोड़ीसी बातको अधिक बढ़ा दी है

उ०—कुछ भी झगड़ा नहीं था, तुमने बालकी भेड़ बना दी है।

बाल बराबर भी अन्तर न होना—कुछ भी भेद न होना।

उ०—इन दोनों चित्रोंमें बाल बराबर भी अन्तर नहीं है।

बावले कुत्तेका काटना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—मुझे क्या बावले कुत्तेने काटा है जो अपना काम छोड़कर तुम्हारे साथ धक्के खाता फिरूँ ?

बासी कढ़ीमें उबाल आना—मुरझाये दिलमें उमङ्ग आना।

उ०—आज बासी कढ़ीमें उबाल आ गया है, इसीलिए तो बलदेवजी चहक रहे हैं।

बाहरकी हवा लगना—घरसे बाहर रहना अच्छा लगना।

उ०—जिस आदमीको बाहरकी हवा लग जाती है, वह घर पर नहीं ठहरता।

बिखर जाना—वशमें न रहना।

उ०—भङ्ग पीनेसे मनुष्यका शरीर बिखर जाता है।

बिगड़ बैठना—अप्रसन्न हो जाना।

उ०—तुम जरा-सी बातपर बिगड़ बैठते हो।

देख कहना मान मेरा तू न छू ज़ुल्फ़ को।
वो बिगड़ बैठेंगे अय दिल, तेरी शामत आयगी॥

बिगड़ जाना—निर्धन हो जाना।

उ०—जुवेके खेलमें बड़े-बड़े घर बिगड़ जाते हैं।

बिजली गिराना—दारुण दुःख देना।

उ०—जिनका दिमाग आसमान पर होता है, वे ही गरीबों-पर बिजली गिराते हैं।

बिजली गिरना—विनाश होना; आपत्ति टूटना।

उ०—कल उसको आसमानपर चढ़ा रहे थे, आज चाहते हो कि उसपर बिजली गिरे। क्या आदर्श प्रेम है ?

न पाया चैन गुलशनमें, कहीं अब बाग़बां हमने।
गिरी बिजली, बनाया जिस जगह भी आशियाँ हमने॥

(दिनकर)

बिजलियां टूटना—घोर आपत्ति पड़ना।

उ०—जिसपर आये दिन बिजलियाँ टूटती हैं, उसका जीवन दूभर हो जाता है।

जानपर तोबाकी टूटे बिजलियाँ।
ख़ूब बरसे बिजलियों वाली घटा॥

बिदक जाना—डर जाना; झिझकना।

उ०—मैंने बड़ी कठिनतासे उसको साँटा है। यदि वह बिदक गया, तो फिर वशमें आनेवाला नहीं।

विधि खाना—अनुकूलता होना।

उ०—अपना माल दिखाओ। यदि हमारी विधि खायगी तो कुछ खरीद भी लेंगे।

बिफर जाना—बिगड़ जाना।

उ०—यह कोई अच्छी बात है कि तुम साधारण बातपर बिफर जाते हो।

राँड़ साँड़ अरु भैंसा अरना।
बिफर जायँ इनका क्या करना॥

बिलक-बिलक कर रोना—तड़प-तड़प कर रोना।

उ०—न जाने किसका बालक सड़कके किनारे बिलक-बिलक कर रो रहा है।

बिल ढूंढ़ने लगना—भयसे बचनेका स्थान खोजना।

उ०—रात्रिके समय चूहेकी आहट सुनकर तुम बिल ढूँढ़ने लगते हो। इसीका नाम वीरता है न?

बिल्लीसे दूधकी रक्षा करना—जानकी बूझकर किसी चीजको जोखिममें डालना।

उ०—मोहनको मिठाईका प्रबन्ध सौंपा है; तुम तो बिल्लीसे दूधकी रक्षा कराते हो।

बिल्ली लाँघकर चलना—बुरे मुहूर्तमें चलना।

उ०—क्या बिल्ली लाँघकर चले हो जो हमसे झगड़ा मोल लेना चाहते हो?

बीच-बचाव करना—बीचमें पड़कर लड़ाईको शान्त करना।

उ०—जो व्यक्ति बीच-बचाव करता है, वह कभी-कभी चोट भी खा बैठता है।

बीच-बचाव हो जाना—लड़ाईके उपरान्त समझौता हो जाना।

उ०—लड़ाईमें किसीको हानि नहीं पहुँची क्योंकि शीघ्र ही बीच-बचाव हो गया था।

बीड़ा उठाना—दृढ़ संकल्प करना।

उ०—सुनते हैं उसने हमारे विनाशका बीड़ा उठाया है।

बीच खेत पछाड़ना—सबके सामने पराजित करना।

उ०—जीवनरामने आज उस दुष्टको बीच खेत पछाड़ा है।

बीचमें पड़ना—हस्तक्षेप करना।

उ०—मैंने तुमसे कह दिया है कि मैं कभी तुम लोगोंके बीच में पड़ूँगा ही नहीं।

बुखार निकालना—शत्रुतावश किसीको बुरा-भला कहना।

उ०—सुनते हैं आज तो तुमने भी खूब बुखार निकाला है।

बुत बनके बैठना—कुछ न करना।

उ०—तुम तो बुत बनके बैठ जाते हो, सब कुछ मुझे ही करना पड़ता है।

बुत्ते देना—धोखा देना।

उ०—जबसे मैंने उसको लम्बे हाथों लिया है, वह मुझे बुत्ते नहीं देता।

बुद्धिपर परदा पड़ना—मूर्ख बनना।

उ०—बुद्धि सागर! तुम्हारी बुद्धिपर परदा पड़ गया जो तुम जुवा खेलनेवालोंके पास जाकर खड़े हो गये।

बुद्धि बेच खाना—मूर्ख बन जाना।

उ०—जो व्यक्ति बुद्धि बेच खाता है, वही मदिरा पीता है।

बुड़-भस लगना—बुढ़ापेमें मस्ती लगना।

उ०—उसकी कुछ न पूछो, उसको तो आज-कल बुड़-भस लग रही है।

बुरा चीतना—बुरा चाहना; अनिष्ट चिन्तन करना।

उ०—कहीं भले आदमी किसीका बुरा चीतते हैं ?

बुरी लीकपर लगना—बुरे कर्ममें पड़ना।

उ०—उसका पुत्र धीरे-धीरे बुरी लीकपर लग रहा है।

बुरोंकी जानको रोना—विवश होकर धीरज धरना।

उ०—सुशीलने हँसकर कहा—"नारायण! आजकल क्या करते हो ?" नारायणने उत्तर दिया—"बुरोंकी जानको रोता हूँ।"

अब रह ही क्या गया जो रकीबोंका डर करें।
हम तो बुरोंकी जानको पहले ही रो चुके॥

बूढ़े तोतेको पढ़ाना—वृद्ध व्यक्तिको सिखाना।

उ०—इनमेंसे एक युवक कल उस बूढ़े तोतेको पढ़ा रहा था।

बेगार टालना—मन लगाकर कार्य करना।

उ०—अनेक साधारण अशुद्धियोंका होना बतलाता है कि तुम बेगार टाल रहे हो।

बेजर-बेपर होना—नितान्त निस्सहाय होना।

उ०—पिताके मरनेसे श्याम बेजर-बेपर हो गया है।

बेड़ा पार लगाना—उद्धार करना।

उ०—गोविन्द! किसी प्रकार उस गरीब ब्राह्मणका बेड़ा पार लगाओ।

बेड़ा पार होना—मनोरथ सिद्ध होना; कार्य सिद्ध होना।

उ०—आनन्दस्वरूप! तुम्हारा बेड़ा पार हो गया है; अब आनन्दके तार बजाओ।

बेड़ा डूबना—नाश होना।

उ०—उस विधवाने दुःखित होकर कहा—"जिसने मेरे बरतन चुराये हैं, ईश्वर करे, उसका बेड़ा डूबे।"

बेतुकी हांकना—निरर्थक बात कहना।

उ०—तुकाराम सदा बेतुकी हाँकता है।

बेदाग बच जाना—किसी प्रकारकी हानि न होना।

उ०—उस मामिलेमें दारोगा तो बेदाग बच गया, परन्तु एक सिपाही मारा गया।

बे-परकी उड़ाना—निराधार बात कहना।

उ०—उसका विश्वास न कीजिये; वह सदा बे-परकी उड़ता है।

बे-भावकी पड़ना—बहुत पिटना।

उ०—याद रखो किसी दिन बे-भावकी पड़ेगी।

बेल मंढे चढ़ना—कार्य पूरा होना।

उ०—मुझे आशा नहीं है कि यह बेल मंढ़े चढ़ेगी।

बे वक्तकी शहनाई बजाना—अवसरके अनुकूल बात न करना।

उ०—जगदीश पूरा उजबक है; वह सदा बे-वक्तकी शहनाई बजाता है।

बे-वसी बरसना—दरिद्रता प्रकट होना।

उ०—खेद है कि तुम ऐसे व्यक्तिपर गरजते हो, जिसकी आकृतिसे बे-वसी बरसती है।

बे-सिर-पैरकी हांकना—युक्ति-युक्त बात न कहना।

उ०—उसके मस्तिष्कमें कुछ विकार उत्पन्न हो गया है क्योंकि वह जब हाँकेगा, बे-सिर-पैरकी हाँकेगा।

बैठ जाना—गिर जाना।

उ०—कल जो मैं गाँवकी अवस्था जाननेको उठा, तो देखा कि कि अति वृष्टिके कारण अनेक घर बैठ गये।

रोते रोते तेरी फ़ुरक़तमें जिगर बैठ गया।
जिसमें रहता था तेरा तीर वह घर बैठ गया॥

बैठे-बैठे सूख जाना—अधिक देरतक प्रतीक्षा करना।

उ०—कल मैं बैठा-बैठा सूख गया और हरिहर सायँकाल तक लौटे।

बैरङ्ग हो जाना—भाग जाना।

उ०—वह आज तुमको मारनेको फिर रहा है, इसलिए यदि कुशल चाहते हो, तो शीघ्र बैरङ्ग हो जाओ।

बोझ हलका होना—चिन्ता मिट जाना।

उ०—परीक्षा निर्विघ्न समाप्त होनेपर हमारा बोझ हलका होगा।

बोरियाँ-बँधना संभालना—चला जाना।

उ०—यहाँ तुम्हारा निर्वाह नहीं हो सकता; अभी अपना बोरिया-बँधना संभाल लो।

बोलती बन्द होना—निरुत्तर होना।

उ०—मैंने भी वह करारी सुनायी कि उसकी बोलती बन्द हो गयी।

बोलती बन्द करना—निरुत्तर कर देना; चुप कर देना।

उ०—मेरी जबान न खुलवाओ; मैं अभी तुम्हारी बोलती बन्द कर दूँगा।

बोल बाला होना—विजयी होना; मानमर्यादा बढ़ना।

उ०—आजकल संसारमें नीचोंका बोलबाला हो रहा है।

❀ ❀ ❀ ❀

दार पर चढ़कर कहा मनसूर ने।
आज अपना बोलबाला हो गया॥

बोल जाना—टूट जाना।

उ०—इस चारपाईपर यदि अधिक बोझ पड़ा, तो तुरन्त बोल जायगी।

बोल जाना—मर जाना।

उ०—बधिकने ऐसी गोली मारी कि मृग तुरन्त बोल गया।

बोहनी होना—आरम्भ करना।

उ०—तुमने तो अपना कार्य समाप्त भी कर लिया, और यहाँ अभी बोहनी भी नहीं हुई।

ब्योंत बैठना—ढंग निकलना।

उ०—बहुत प्रयत्न करता हूँ, परन्तु कोई ब्योंत बैठता ही नहीं।

(भ)

भंवरमें नाव फंसना—घोर आपत्तिमें पड़ना।

उ०—भगवन्! जब कभी भँवरमें नाव फँसती है, आप ही उसको उबारते हैं।

भङ्ग खाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—तुमने तो भङ्ग खायी है जो रात्रिके दो बजेतक गलियोंमें धक्के खाते फिरते हो।

भगवानका भी न पूछना—मृत्युका न आना।

उ०—उन दुष्टोंको भगवान् भी तो नहीं पूछता है।

भचका लगाना—विघ्न डालना।

उ०—तुम लाख भचका लगाओ, हमारा कार्य कदापि न रुकेगा।

भटई करना—चिरौरी करना; झूठी प्रशंसा करना।

उ०—जो लोग धनिकोंकी भटई करते हैं, मैं उनको पतित समझता हूँ।

भड़क उठना—क्रोधित हो जाना।

उ०—तुम्हारे पास क्या बैठें, तुम जरासी बातपर भड़क उठते हो।

भड़ास निकालना—बुरा-भला कहकर मन शांत करना।

उ०—तुमने कौनसी कमी की है? तुमने भी खूब भड़ास निकाली है।

भण्डारा खुलना—खोपड़ी फूटना।

उ०—भण्डारीलाल! जबान बन्द करो वरना अभी तुम्हारा भण्डारा खुलता है।

भण्डारा खोलना—सिर फोड़ना।

उ०—भण्डारीलाल! जबान बन्द करो वरना अभी तुम्हारा भण्डारा खोल दूँगा।

भद् पिटना—बदनामी होना।

उ०—तुमने ऐसे भद्दे काम किये हैं कि चारों ओर तुम्हारी भद् पिट रही है।

भद् पिटवाना—बदनामी कराना।

उ०—वह ऐसा भद्दा आदमी है कि अवसरपर तुम्हारी भी भद् पिटवा दी।

भनक पड़ना—सुनाई देना।

उ०—रात कुछ भनक तो अवश्य पड़ी थी, परन्तु मैं समझ नहीं सका कि कौन था।

राम राम कहते रहो, जबतक घटमें प्रान।
कभी तो दीनदयालके, भनक पड़ेगी कान॥

भन्ना उठना—चक्कर खा जाना।

उ०—भन्नूमलने अपने लड़केके सिरपर एक ऐसा थप्पड़ मारा कि वह भन्ना उठा।

भन्ना उठना—उत्तेजित हो जाना।

उ०—उससे छेड़-छाड़ न किया करो, वह जरासी बातपर भन्ना उठता है।

भबकियाँ देना—धमकाना।

उ०—यह कहाँका न्याय है कि हमारा रुपया लेकर भबकियाँ देते हो?

वक़्त आने दो जरा तुम सब धरे रह जायंगे।
भबकियाँ देते हो क्या हमको तुफ़ंगो-तीरकी॥

भबूका बनना—अत्यन्त क्रोधित होना।

उ०—उनको इस समय न छेड़ो, भबूका बने बैठे हैं।

यह उठना बैठना महफ़िलमें उनका रंग लायेगा।
क़यामत बनके उट्ठेंगे, भबूका बनके बैठे हैं॥
(दाग़)

भभूत झड़ना—मार-पीट द्वारा अपमानित होना।

उ०—बहुत इतराया न करो; किसी दिन सब भभूत झड़ जायगी।

भभूत झाड़ना—मार-पीट द्वारा अपमानित करना।

उ०—किसी दिन मुझे उस पिशाचकी भभूत झाड़नी पड़ेगी।

भभूत रमाना—फकीर बन जाना।

उ०—स्त्री मर चुकी, सम्पत्ति नष्ट हो गयी, अब भभूत रमाओ और दर-दर अलख जगाओ।

भभूत उड़ाना—बरबाद करना।

उ०—जितना कमाया सबकी भभूत उड़ा दी।

भर आना—घावका अंगूर बंधना।

उ०—घाव तो भर आया है, परन्तु अभी वह चलने-फिरनेके योग्य नहीं हुआ है।

भर जाना—क्रोधित होना।

उ०—मैं तुमसे कहता न था कि भेद खुलते हो वह भर जायगा।

भर पाना—मिलना।

उ०—यहांसे खाली हाथ उठे और फिर भी कहते हो कि सब कुछ भर पाया।

भरम बांधना—विश्वास जमाना; भेद गुप्त रखना।

उ०—उसके पास अब कुछ नहीं है; वह केवल अपना भरम बाँधता है।

❀ ❀ ❀ ❀

भर पाना—प्राप्त करना।

उ०—मैंने सब रुपया, जो तुम्हारे जिम्मे था, आजकी तारीखमें भर पाया।

बशरने खाक पाया लाल पाया या गुहर पाया।
मिज़ाज अच्छा अगर पाया तो सब कुछ उसने भरपाया॥

भर पाना—बदला मिलना।

उ०—हमने जो कुछ किया था भर पाया।

भरपाना—बाज आना।

उ०—अब हमपर दया करो; हमने तुम्हारा प्रेम भर पाया।

वो मेरा छेड़ना आगाज़े—उलफ़तमें शिकायतसे ।
वो रखकर हाथ कानोंपर तेरा कहना कि भरपाया ॥

भरम गवाना—प्रतिष्ठा खोना ।

उ०—यहीं आरामसे बैठे रहो; मैं तुमसे सच कहता हूं कि वहाँ जाकर तुम अपना भरम गँवाओगे ।

भरम खुलना—भेद प्रकट होना ।

उ०—आज भरी सभामें भरतसिंहका भरम खुल गया ।

भरी नींद सोना—निश्चिन्त रहना ।

उ०—एक लड़की थी, उसका विवाह कर दिया; लड़का सौ रुपयेका नौकर हो गया; अब वह भरी नींद सोता है ।

मरे बैल गरियार, मरै वह अड़ियल टट्टू ।
मरै करकसा नारि, मर वह खसम निखट्टू ॥
बाँभन सो मरि जाय, हाथ ले मदिरा प्यावै ।
पूत वही मर जाय, जु कुलको दाग लगावै ॥
अरु बे-नियाव राजा मरै, तबै नींद भरि सोइये ।
'बैताल' कहै विक्रम, सुनो एते मरै न रोइये ॥

भरी थालीमें लात मारना—आयी हुई सम्पत्तिको छोड़ना ।

उ०—उसने भरी थालीमें लात मारी थी, इसलिए आज खाली हाथ धक्के खाता फिरता है ।

भरेको भरना—धनीको धन देना ।

उ०—ईश्वरकी गति उलटी है जो भरेको भरता है ।

भरे जाना—भड़काते रहना ।

उ०—तुम खाली बैठनेवाले नहीं हो, और कुछ नहीं तो उसको हमारे विरुद्ध ही भरे जाते हो।

घरके घर कर दिये ख़ाली तेरे गुस्सेने मगर।
आजतक तुमको भरे जाते हैं भरने वाले॥

भरे बैठना—क्रोधित होना।

उ०—वह देरसे भरे बैठे हैं, देखिये किसपर बरसते हैं।

भरे बैठे रहना—क्रोधके आवेशमें रहना।

उ०—चौधरी भरतसिंहके स्वभावको न जाने क्या हो गया है? वह सदा भरे बैठे रहते हैं।

भर्रेमें आना—बहकानेमें आना।

उ०—कोई न कोई उसके भर्रेमें अवश्य आ जायगा।

भर्रेपर रख देना—भड़का देना।

उ०—तुमको क्या मिला जो कल तुमने माधवको भर्रेपर रख दिया।

भवें तनना—प्रकुपित होना।

उ०—जिस समय लालाजीकी भवें तनती हैं, किसको बोलनेका साहस नहीं होता।

भवें तनती हैं वो हाथोंमें ख़ंजर थाम लेते हैं।
रिहाईका असीराने-क़फ़स जब नाम लेते हैं॥

(दिनकर)

भवें टेढ़ी करना—क्रोध करना।

उ०—तुम तो सीधी बातपर भी भवें टेढ़ी करते हो।

भस्मसात् होना—नष्ट होना।

उ०—यह सब तुम्हारी कृपा है, जो उस गरीबका सर्वत्र भस्मसात् हो गया है।

भस्मीभूत करना—नष्ट करना।

उ०—उस पिशाचने पिताकी सब सम्पत्ति थोड़े दिनोंमें ही भस्मीभूत कर दी।

भांडा फोड़ना—रहस्य प्रकट करना।

उ०—किसीने उस डाक्टरका ऐसा भाँडा फोड़ा कि वह यहां-से भागता ही नजर आया।

भाँप लेना—समझ लेना।

उ०—उसको सीधा-सादा न समझो, वह हमारी सब बात भाँप लेता है।

भाग लगना—घमण्ड होना।

उ०—जब आदमीके हाथमें चार पैसे हो जाते हैं, तो उसको भाग लग जाते हैं।

भागीरथ परिश्रम करना—कठिन परिश्रम करना।

उ०—इस पुस्तकके लिखनेमें पण्डित तपोधन शर्माने भागीरथ परिश्रम किया है।

भागे राह न मिलना—फँस जाना।

उ०—यह अच्छी तरह समझ लो कि यदि वह तुम्हारे पीछे पड़ गया, तो तुमको भागे राह न मिलेगी।

भाग्य जागना } समय अनुकूल होना ; अच्छे दिन
भाग्य सीधा होना } आना ।

उ०—उसका भाग्य तो जागा ही है, साथमें तुम्हारा भाग्य भी सीधा हो गया है ।

भाग्य सो जाना—बुरे दिन आना ।

उ०—सजग रहते हुए भी यदि किसीका भाग्य सो जाय, तो क्या किया जाय ?

भाग्य लड़ना—भाग्य अनुकूल होना ।

उ०—यदि तुम्हारा भाग्य लड़ेगा, तो उससे फिर तुम्हारा मेल हो जायगा ।

भाग्यका सम्मुख होना—भाग्यका अनुकूल होना ।

उ०— जब उसका भाग्य सम्मुख हो रहा है, तो वह उन्नतिमें पीछे कैसे रह सकता है ?।

भाग्य खुलना—अच्छे दिन आना ।

उ०—जब तुम्हारा भाग्य खुलेगा, तो सब काय, जो बन्द पड़े हैं, चल जायंगे ।

भाग्योदय होना—अच्छे दिन आना ।

उ०—जब मनुष्यका भाग्योदय होता है, तो अनायास ही सब काम बन जाते हैं ।

भाग्यका पलटा खाना—स्थितिमें परिवर्त्तन होना ।

उ०—धैर्यके साथ पुरुषार्थ करते रहो; देर-सबेर तुम्हारा भाग्य अवश्य पलटा खायगा ।

भाग्य फूटना—बुरे दिन आना।

उ०—जब मनुष्यका भाग्य फूटता है, अपने भी पराये हो जाते हैं।

भाग्य चमकना—उन्नति होना।

उ०—आज-कल लाला भज्जूमलका भाग्य चमक रहा है।

भाग्यपर छोड़ देना—कोई उपाय न करना।

उ०—जो व्यक्ति प्रत्येक कार्य भाग्यपर छोड़ देता है, वह बड़ी भूल करता है।

भाड़में जाना—दुर्गति होना, नष्ट होना।

उ०—मित्र होकर कपटाचरण करते हो; भाड़में जाय ऐसी मित्रता।

भाड़ झोंकना—अनुभवहीन जीवन बिताना; कोई अच्छी बात न सीखना।

उ०—भगवत्प्रसाद! क्या चार साल लखनऊमें रहकर भाड़ ही झोंका है?

बारह बरस दिल्ली रहे भाड़ ही झोंका किये।

भात खाते हाथ पिराना—अत्यन्त कोमल होना।

उ०—सुनते हैं भात खाते तुम्हारा हाथ पिराता है।

भादोंकी चौथका चांद हो जाना—अशुभ दर्शन होना।

उ०—मेरे लिए तो, यदि सच, पूछो वह भादोंकी चौथका चाँद हो गया है।

भार बन जाना—दुःखप्रद हो जाना।

उ०—निर्धनका जीवन उसके लिए भार बन जाता है।

भारी बनना—घमण्ड करना।

उ०—वह दूसरोंको हलका समझता है और अपने आप भारी बनता है।

भारी होना—दुःखप्रद होना।

उ०—धनाभावके कारण संसारमें मनुष्यको अपना जीवन भारी हो जाता है।

अमीर उस बुतको दिल देते हो क्या शामत तुम्हारी है।
किसी पत्थर पे दे पटको, जो ऐसा तुमको भारी है॥

भारी बनके बैठना—अपने आपको बड़ा समझना।

उ०—जो व्यक्ति दूसरोंको हलका समझता है, और आप भारी बनके बैठता है, मैं उसके पास खड़ा नहीं होता हूँ।

भाव गिरना—मूल्य घट जाना; सस्ता होना।

उ०—लालाजी! गेहूँका भाव गिर गया है और आप अब भी करारे टके उठा रहे हैं।

भाव चढ़ना—मूल्य बढ़ जाना; महँगा होना।

उ०—समयपर वृष्टि न होनेसे अन्नका भाव फिर चढ़ गया है।

भाव बनना—सौदा पट जाना मूल्य निश्चय हो जाना।

उ०—यदि उससे भाव बन गया, तो दो जोड़े धोती मेरे लिए भी लेते आना।

भावें न होना—ध्यानमें न लाना।

उ०—मैं समझाता-समझाता थक गया और उसके भावें ही नहीं।

हाय दई कैसी भई अनचाहतके संग।
दीपकके भावें नहीं जल जल मरे पतङ्ग॥

भिखारीसे भगवान बन जाना—निर्धनसे धनी हो जाना।

उ०—मनुष्यके अन्दर ऐसी शक्ति है कि वह भिखारीसे भगवान् बन सकता है।

भिगो भिगोके लगाना—सभ्यतापूर्वक बहुत बुरा-भला कहना।

उ०—आज सभामें उसने तुम्हारे भी खूब भिगो-भिगोके लगाये।

भिड़ जाना—लड़ बैठना!

उ०—प्रत्येक दिन स्कूल जाते हुए तुम उस सिड़ीसे क्यों भिड़ जाते हो?

भीगी बिल्ली बन जाना—भयसे दब जाना।

उ०—वह आपके सामने भीगी बिल्ली बन जाता है और बादमें गुर्राने लगता है।

भीगी बिल्ली बन जाना—सरल बन जाना।

उ०—अपना उल्लू सीधा करनेके लिए, तुम भीगी बिल्ली बन जाते हो।

भीगी बिल्ली बताना—बहाना करना।

उ०—वह तुम्हारे साथ मिरजापुर जाना नहीं चाहता, इसी लेए भीगी बिल्ली बताता है।

भीषण काण्ड हो जाना—दुर्घटना घटित होना।

उ०—तुम्हारी अनुपस्थितिमें यहाँ तो कल भीषण काण्ड हो गया।

भीष्म प्रतिज्ञा करना—कठिन प्रण करना।

उ०—चाणक्यने अपमानित होकर नन्द वंशका नाश करनेकी भीष्म-प्रतिज्ञा की थी।

भुज-दण्ड तोलना—लड़नेको प्रस्तुत होना।

उ०—अखाड़ेमें उतरो; दूर खड़े हुए क्या भुज-दण्ड तोल रहे हो।

भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना।

उ०—आज सबके सामने भुजा उठाता हूँ कि जबतक उस दुष्टका विध्वंस न करूँगा, मैं चैनसे न बैठूँगा।

भुजाका टूट जाना—भाईका मर जाना।

उ०—जिस व्यक्तिकी भुजा टूट जाती है, उसके दुःखका ठिकाना नहीं रहता।

भुसके मोल लेना—बहुत सस्ता क्रय करना।

उ०—मैं तो इस छतरीके करारे टके देता हूँ यद्यपि तुमने यह भुसके मोल ली है।

भुसके भाव बिकना—बहुत सस्ता बिकना।

उ०—इस वर्ष लीची इतनी आयी है कि भुसके भाव बिकेगी।

भूसमें आग फेकना—उपद्रव खड़ा करना।

उ०—जो भुसमें आग फेंकता है, वह कभी कभी उस आगकी लपटसे स्वयं भी झुलस जाता है।

भुस्सी भर देना—खूब पीटना।

उ०—वह खाली हाथ था वरना आज तुम्हारी भुस्सी भर देता।

भूख-प्यास बन्द हो जाना—चकित हो जाना।

उ०—उसका सौन्दर्य देखकर अच्छे-अच्छोंकी भूख-प्यास बन्द हो जाती है।

भूख-प्यास बन्द हो जाना—बहुत शोकातुर हो जाना।

उ०—जब उसने अपने भाईकी मृत्युका समाचार सुना, तो उसकी भूख प्यास बन्द हो गयी।

भूड़के लड्डू खाना—निस्सार कार्य करना।

उ०—जो व्यक्ति सांसारिक सुखोंके पीछे पागल होता है, वह भूड़के लड्डू खाता है।

भूत चढ़ना—क्रोध आना।

उ०—जब उसको भूत चढ़ता है, वह निरा पिशाच बन जाता है।

भूत झाड़ना—घमण्ड दूर करना।

उ०—मैंने निश्चय कर लिया है कि आज तुम्हारा भूत झाड़ूँगा।

भूत होकर चिपटना—सिर हो जाना।

भूतसे पूत मांगना—स्वार्थीसे इच्छा पूर्ण कराना।

उ०—सरला देवी भी कितनी सरल है जो भूतसे पूत माँगती है।

भूमिका बांधना—बातको बहुत बढ़ाकर कहना।

उ०—कृपया लम्बी-चौड़ी भूमिका न बाँधिये, जो वास्तविक घटना है वही सुनाइये।

भूल-भूलैयांमें पड़ जाना—कि कर्त्तव्य विमूढ़ होना।

उ०—उनसे अब कुछ न होगा, क्योंकि वे भूल-भुलैयाँमें पड़ गये हैं।

* * * *

भेजा निकल पड़ना—सिर फूट जाना।

उ०—जो कुछ तुम्हारे पास है चुपकेसे रख दो वरना ऐसा लठ मारूँगा कि भेजा निकल पड़ेगा।

भेड़िया-धसान होना (मचना)—बिना विचारे अनुसरण करना।

उ०—बुद्धि-सागर! भारतमें आज भेड़िया-धसान मचा हुआ है।

भैंसके आगे बीन बजाना—मूर्खके आगे बुद्धिमत्ताकी बातें करना।

उ०—*मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं भैंसके आगे बीन बजाऊँ।*

भैरवी उड़ाना—आनन्द करना।

उ०—भैरवानन्द एक मस्त जीव हैं; आठ पहर भैरवी उड़ाते हैं।

भोंपा या भोंपू बज चुकना—ऐश्वर्य समाप्त हो जाना।

उ०—चौधरी भूपाल सिंहका भोंपा भी बज चुका है।

भौं चढ़ाना—क्रोध करना।

उ०—लो तुम्हारे चबूतरेसे उतर जाते हैं; भौं क्यों चढ़ाते हो?

भौंचक्कासा रह जाना—आश्चर्यमें पड़ जाना।

उ०—अघोड़ी बाबाकी आकृति देखकर साहब भौंचक्का-सा रह गया।

(म)

मंत्र-मुग्ध होना—चकित होना।

उ०—शकुन्तलाको देखकर दुष्यन्त मन्त्र-मुग्ध हो गया।

मक्खियाँ भिनकना—शोभा रहित होना।

उ०—समयकी गति विचित्र है। जिस स्थानपर कभी राग-रङ्ग रहता था, वहाँ अब मक्खियाँ भिनक रही हैं।

मक्खी मारना—निठल्ला बैठना।

उ०—मक्खनलाल आजकल घरपर मक्खी मारता और पिताकी गालियां खाता है।

मक्खीपर मक्खी मारना—बिना विचारे अनुकरण करना।

उ०—आजकल विद्यार्थी बुद्धिसे काम नहीं लेते किन्तु मक्खी-पर मक्खी मारते हैं।

मजनूँ बन जाना—आसक्त होना।

उ०—मनसब राय! आजकल किस लैलाके प्रेममें मजनूँ बन रहे हो।

मजनूँ बन जाना—पागल हो जाना।

उ०—यादवका बड़ा भाई थियेटरमें गानेवाली किसी मिसके पीछे मजनूँ बन गया है।

मजा चखाना—दण्ड देना; बदला लेना।

उ०—अवकाश मिलनेपर किसी दिन उसको शत्रुताका ऐसा मजा चखाऊँगा कि वह याद रखेगा।

मटरगश्त करना—निरर्थक फिरना।

उ०—जगदीशने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया; रातके एक बजे-तक मटरगश्त किया करता है।

मतलब गांठना—स्वार्थ सिद्ध करना।

उ०—वह किसीको साँटता ही इसलिए है कि अपना मत-लब गाँठे।

मतलबके लिए गधेको बाप बनाना—स्वार्थवश अयोग्य-की प्रतिष्ठा करना।

उ०—तुम यादवको गधा न समझो; वह अपने मतलबके लिये गधेको बाप बनाता है।

मत्था टेकना—नमस्कार करना।

उ०—माधव प्रातःकाल उठकर गुरुके चरणोंपर मत्था टेकता है।

मत्था-पच्ची करना—मस्तिष्कको खपाना।

उ०—वह कदापि अपना आग्रह न छोड़ेगा; उससे व्यर्थ मत्था-पच्ची क्यों करते हो?

मत्थे मढ़ना—ऊपर डालना।

उ०—यह कहाँका न्याय है कि यादवने चोरीकी और माधवके मत्थे मढ़ी गयी।

मनकी लाठी घुमाना—अनिष्ट चिन्तन करना।

उ०—जिससे कुछ और नहीं हो सकता, वह मनकी ही लाठी घुमाता है।

मन मैला करना—रञ्ज करना; उदास होना।

उ०—मनोहर! इतना मन मैला क्यों करते हो? जो बात हो साफ-साफ कह डालो।

मन रीझना—प्रसन्न होना।

उ०—तुम ही एक ऐसे व्यक्ति हो जिसको देखकर हमारे वैरागीका मन रीझता है।

मन उमङ्गपर आना—बड़ी प्रसन्नता होना।

उ०—काम बनाना हो, तो शीघ्र जाओ, इस समय उसका मन उमङ्गपर आया हुआ है।

मन रखना—सान्त्वना देना।

उ०—कौन किसीके लिये कष्ट उठाता है? उसने केवल तुम्हारा मन रख दिया है।

मन-मारे बैठना—उदास होना।

उ०—मोहन! क्या कारण है जो आज मन मारे बैठे हो?

मन पतियाना—भावकी परीक्षा करना।

उ०—मैं उसका मन पतिया चुका हूँ; वह एक कौड़ी भी देनेवाला नहीं है।

मन लेना—भाव देखना।

उ०—परमात्मा जानता है मुझे रुपयेकी आवश्यकता नहीं है, मैं तो केवल तुम्हारा मन लेता था।

मन परखना—भाव जाँचना।

उ०—वह बड़ा विश्वास-पात्र है; मैं अनेक बार उसका मन परख चुका हूँ।

मन-मनमें फिरना—स्पष्ट स्मरण न होना।

उ०—मैं उसको अच्छी तरह जानता हूँ; देखो, उसका नाम मन-मनमें फिर रहा है।

मन-मानी घर-जानी करना—जो कुछ जीमें आये, वही करना।

उ०—वे लोग सदा मन-मानी घर-जानी किया करते हैं, इसलिए उनसे हमारा मेल नहीं खाता।

मन-चीती होना—इच्छानुसार होना।

उ०—ऐसा जान पड़ता है कि आज यहाँ तुम्हारी ही मन-चीती होगी।

मन न करना—परवाह न करना।

उ०—आप उसको लाख बुरा-भला कहिये; वह कभी मन न करेगा।

मन्दा बोलना—बुरा कहना।

उ०—यह कहाँकी सभ्यता है कि हमसे ही चन्दा लेते हो, और हमको ही मन्दा बोलते हो?

मर मिटना—किसी कार्यमें अत्यधिक कष्ट उठाना, बरबाद ना।

उ०—वह जिस काममें लग जाता है, मर मिटता है।

'मर मिटे हम मज़ा करे कोई।'

मरनेतकका अवकाश न मिलना—अत्यन्त संलग्न होना।

उ०—जीवनरामको आजतक मरनेतकका अवकाश नहीं नलता है।

मरनेपर वैद्य बुलाना—कार्य नष्ट होने पर उपाय करना।

उ०—तुम तो उन लोगोंमेंसे हो, जो मरनेपर वैद्य बुलाते हैं।

मरम्मत करना—पीटना।

उ०—भागते क्यों हो? ठहरो, मैं अभी तुम्हारी मरम्मत करता हूँ।

मरम्मत होना—पिटना; मार खाना।

उ०—छज्जूकी काफी मरम्मत हो गयी है; अब जग्गूकी ख़बर लेनी चाहिये।

मरेको मारना—दुःखितको दुःख देना; निर्बलको सताना।

उ०—जो मरेको मारता है, वह संसारमें नीच कहलाता है।

मरोड़में रहना—अभिमान करना।

उ०—जबसे चालीस रुपयेकी जगह मिली है, वह बड़ी ।रोड़में रहता है।

मरोड़ झड़ना—अभिमान मिटना।

उ०—आज तो चौमुहानीपर तुम्हारे मित्रकी सब मरोड़ झड़ गयी।

मरोड़ झड़ना—घमण्ड मिटाना।

उ०—कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी दिन, कोई-न-कोई तुम्हारी भी मरोड़ झाड़ेगा।

मरोड़ दिखाना—घमण्ड करना।

उ०—और तो-और, मुरारीलाल भी तो मुझे मरोड़ दिखाता है।

मल-मल कर पैसा निकालना—कृपणतासे काम लेना।

उ०—जो मल मल कर पैसा निकालता है, उससे सहायताकी आशा नहीं की जा सकती है।

मलियामेट करना—नष्ट करना।

उ०—मातादीनकी भेड़ोंने हमारा सारा खेत मलिया-मेट कर दिया है।

मलिया-मेट होना—नष्ट होना।

उ०—आपकी कृपासे उसका सब परिश्रम मलिया-मेट हो गया है।

मल्हार गाना—आनन्द करना।

उ०—घबराओ नहीं, परमात्माकी दयासे वे दिन भी आयेंगे जब तुम भी मल्हार गाओगे।

मसक जाना—फट जाना।

उ०—देखते नहीं हो, अधिक बोझसे उसकी चोली मसक गयी है।

मस्तक ऊँचा होना—यश पाना; प्रतिष्ठित होना।

उ०—जिनको तुम नीच समझते हो, एक दिन उनका मस्तक ऊँचा होगा।

मस्तिष्कमें कीड़ा पैदा होना—बुद्धि विचलित होना।

उ०—उसके मस्तिष्कमें कीड़ा पैदा हो गया है, इसीलिए अण्ड-बण्ड बक रहा है।

मस्तिष्कके कीड़े चाट जाना—बकवाद करके तंग करना।

उ०—जब कभी वह मुझसे मिलता है, मस्तिष्कके कीड़े चाट जाता है।

मस्तिष्क चल जाना—पागल हो जाना।

उ०—क्या तुम्हारा मस्तिष्क चला गया है, जो रात्रिके दो बजे यहाँ आये हो?

महत भारी होना—अभिमान होना।

उ०—यदि मैं वहाँ गया, तो उसका महत भारी होगा।

महाभारत जीतना—कठिन कार्यमें सफल होना।

उ०—लड़केका विवाह करके वह समझता है कि, मैंने महाभारत जीत लिया है।

महापथगामी होना—मरना।

उ०—आज तार द्वारा समाचार मिला है कि, बंगाली महात्मा महादेवपुरीमें महापथ गामी हो गये।

महायात्रा करना—देहान्त होना।

उ०—छोटा हो चाहे बड़ा, प्रत्येक व्यक्तिको महायात्रा करनी ही पड़ती है।

मां मर जाना—चुप रह जाना।

उ०—वह बहुत देरसे बक रहा था, जब मैंने कुछ सुनायी, तो उसकी माँ मर गयी।

मांका धौंसा खाना—साहस होना।

उ०—किसकी मांने धौंसा खाया है, जो उस वीरके साथ दो हाथ करे।

मांका दूध पीना—साहस होना।

उ०—यदि तुमने अपनी माँका दूध पीया है, तो मैदानमें आओ।

मांग भरना—विवाहके समय सीमन्तमें सिन्दूर लगाना।

उ०—विवाह-पद्धतिके अनुसार वर कन्याकी माँग भरता है, तुमको इतना भी पता नहीं है।

मांग उजड़ना—विधवा होना।

उ०—उस बेचारीकी माँग उजड़ गयी, इसलिए निस्सहाय होकर माँगती फिरती है।

मांगी मौत भी न मिलना—इच्छाके अनुसार न मिलना।

उ०—भाई ठीक दाम बतलाओ, माँगी तो मौत भी नहीं मिलती है।

माटका-माट-बिगड़ना—सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—एक दोकी कौन कहे? यहाँ तो माट-का-माट बिगड़ा हुआ है।

मात देना—पराजित करना।

उ०—तुम और उसको मात दो, यह कदापि संभव नहीं है।

माताका दूध लजाना—कायर बनना।

उ०—मातादीनने कल्लूसे मात खाकर आज माताका दूध लजा दिया है।

माया जालमें फँसना—धोखेमें पड़ना।

उ०—पंडित मायाराम तो माया-जालमें फँस गये हैं।

माथा ठनकना—सन्देह होना; अनिष्टका भय प्रतीत होना।

उ०—उसको देखते ही मेरा माथा ठनका था कि, आज कुछ गड़बड़ है और वैसा ही हुआ।

माथा रगड़ना—विनय करना।

उ०—उसके सामने घण्टों माथा रगड़ा; परन्तु कुछ फल न निकला।

माथा खा जाना—अरुचिकर अधिक बातें करना।

उ०—तुम जब कभी आते हो, हमारा माथा खा जाते हो।

माथा खाली करना—अधिक बोलना।

उ०—मैं जानता हूँ भरतको लज्जा न आयगी; मेरा माथा खाली करना व्यर्थ होगा।

माथा पटकना—प्रयत्नपूर्वक समझना।

उ०—तुम जानते हो कि उसके साथ मैं रोज कितना माथा पटकता हूँ, परन्तु उसकी समझमें एक नहीं आती है।

माथे मारना—क्रोधसे वापिस करना।

उ०—हमको ऐसी मिठाईकी आवश्यकता नहीं है; लो, यह उसके ही माथे मारो।

माथेपर बल डालना—खिन्न होना।

उ०—साधारणसी बातके लिए आप माथेपर बल क्यों डालते हैं।

माथेपर चढ़ाना—सम्मान करना।

उ०—भंग पीनेवाले कहा करते हैं कि भंग तो वह चीज है, जिसको शिवने माथेपर चढ़ायी है।

मान-मर्दन करना—अभिमान मिटाना।

उ०—मैंने निश्चय कर लिया है कि, किसी दिन मदनका मान-मर्दन अवश्य करूँगा।

मार-मार होना—अधिकता होना; जोर होना।

उ०—आजकल अवकाश कहाँ मिलता है; कामकी मार मार हो रही है।

मार-मार कर सती करना—इच्छाके विरुद्ध कार्य करना।

उ०—यदि तुम उसको मार-मार कर सतो करोगे, तो इससे कुछ लाभ न होना।

मार-मार कर वैद्य बनाना—जबरदस्ती योग्य बनाना।

उ०—मैं कब कहता हूँ कि मैं योग्य हूँ ? मुझे तो मार-मार कर वैद्य बनाया जा रहा है।

मारते-मारते मुर्दा बना देना—बहुत मारना।

उ०—लाला माधवदासने कल अपने पुत्रको मारते-मारते मुर्दा बना दिया।

मारा जाना—अत्यधिक हानि पहुँचना।

उ०—अन्नके व्यापारमें इस वर्ष कितने ही व्यापारी मारे गये।

मारू राग गाना—वीर-रसका गाना गाना।

उ०—जिस समय मारू राग गाया जाता है, उसकी नसें फड़कने लगती हैं।

मार्गपर लाना—ठीक करना।

उ०—मैं मर-खप कर उसको मार्गपर लाया था; तुमने उसको फिर बिगाड़ दिया।

माल मारना—खूब प्राप्ति करना।

उ०—दिन-रात माल मारते हो और फिर भी झींकते रहते हो।

माल ऐंठना—धन ठगना।

उ०—तुम्हारे पिता खूब माल ऐंठते हैं, परन्तु अध्यापकका वेतन देते हुए रोते हैं।

मिजाज ही न मिलना—अधिक घमण्ड होना।

उ०—प्रथम तो वह मिलता ही बहुत कम है; यदि कभी मिल भी जाता है, तो उसका मिजाज ही नहीं मिलता है।

आँखें मिलायें आप तो कुछ दर्दे-दिल कहूँ।
पहरों मिजाज ही नहीं मिलता हुजूरका॥

मिट्टीमें मिल जाना
मिट्टी हो जाना } —नष्ट हो जाना।

उ०—जुएकी बदौलत उसकी सम्पत्ति मिट्टीमें मिल गयी है।

मिट्टी पलीद होना—दुर्दशा होना।

उ०—भारतमें आजकल लीडरीकी मिट्टी पलीद हो रही है।

मिट्टी पलीद करना—दुर्गति करना।

उ०—तुम जिसके पीछे पड़ जाते हो, उसकी मिट्टी पलीद कर डालते हो।

मिट्टी डालना—कोई सम्बन्ध न रखना।

उ०—तीन साल पूर्व मैं उसकी मित्रतापर मिट्टी डाल चुका था।

मिट्टी डालना—ध्यानसे निकाल देना।

उ०—तुम भी एक ही बातको लेकर बैठ जाते हो, जो हुआ सो, हुआ, अब उसपर मिट्टी डालो।

मिट्टी डालना—छिपाना, दबाना।

उ०—इस बातसे सब जगह तुम्हारी बदनामी होगी, इस-लिए इसपर मिट्टी डालो ।

मिट्टी देना—शवको गाड़ना ।

उ०—अब विलम्ब करनेका समय नहीं है, उसको शीघ्र मिट्टी दो ।

पसे-मर्ग मिट्टी भी उसने न दी ।
'अमीर' आबरू मुफ्त खोया किया ॥

(अमीर)

मिट्टी ख़राब होना—बिगड़ना; नाश होना ।

उ०—तुम्हारी बदौलत उसकी मिट्टी खराब हो रही है, और तुमको इस बातका ध्यान भी नहीं है ।

मिट्टीके मोल लेना—बहुत सस्ता लेना ।

उ०—तुमने ऐसी अच्छी चीज़ मिट्टीके मोल ले ली । और क्या चाहते हो ?

मिट्टी खराब होना—अपमानित होना ।

उ०—चले जाओ, मैं तुमको रोकना नहीं चाहता; परन्तु यह बतलाये देता हूँ कि वहाँ तुम्हारी मिट्टी खराब होगी ।

मिट्टी ठिकाने लगना—मृत-संस्कार होना ।

उ०—चलो, अच्छा हुआ, आज उस बुढ़ियाकी भी मिट्टी ठिकाने लगी ।

मिट्टी छूनेसे सोना हो जाना—अनायास बड़ा लाभ होना ।

उ०—जब मनुष्यके दिन अच्छे आते हैं, मिट्टी छूनेसे सोना हो जाती है।

मिट्टीमें मिल जाना—बरबाद हो जाना।

उ०—तुम्हारी बदौलत अनेक व्यक्ति मिट्टीमें मिल गये हैं।

मिरचें लगना—अखरना; बुरा लगना।

उ०—यदि वह हमारे साथ भोजन करता है, तो तुम्हारे मिरचें क्यों लगती हैं?

मिली-भगत होना—गुप्त रीतिसे सम्मति कर लेना।

उ०—इनमेंसे एकका भी विश्वास न करो क्योंकि इन सबकी मिली-भगत है।

मीठा दर्द होना—धीरे-धीरे मन्द दर्द होना।

उ०—कल तुम रसगुल्ले बहुत खा गये, इसीलिए आज मीठा दर्द हो रहा है।

इश्क़ उसके लबे-शीरींसे मैं रखता हूँ 'अमीर'।
दर्द भी होगा मेरे दिलमें तो मीठा होगा॥

(अमीर)

मीठी मार देना—भला बनकर हानि पहुँचाना।

उ०—मिट्ठनलालको मैं खूब जानता हूँ; वह बड़ी मीठी मार देता है।

मीठी मार मारना—अप्रकट रूपसे कष्ट देना।

उ०—उससे बचे रहना; दुष्ट सदा मीठी मार मारता है।

मीठी छुरी बनना—मित्रताकी आड़में शत्रुता करना।

उ०—वह मीठी छुरी बना हुआ है, तुम लोग उसको नहीं समझते हो।

मुँह आना—मुखमें छाले पड़ना।

उ०—वह वैद्यजीके पास गया है क्योंकि तीन दिनसे उसका मुँह आया हुआ है।

मुंह आना—दोष देना।

उ०—वे बुरे-से-बुरे काम करते हैं; पर कोई उनके मुँह नहीं आता।

मुंहसे बात छीन लेना—किसीके कहनेसे पहिले उसके मनकी बात जान लेना और कह देना।

उ०—मैं कहना ही चाहता था कि, वह बड़ा तस्कर है, ईश्वर जाने, तुमने मुँहसे बात छीन ली।

मुंह बिगड़ जाना—असभ्य बन जाना।

उ०—वह दिनभर अण्ड-बण्ड बकता रहता है; पण्डितजी! उसका मुँह बिगड़ गया है।

मुंह-माँगी मौत भी न मिलना—मनचाही कुछ भी न होना।

उ०—यदि देना चाहो तो ठीक दाम बोलो, मुँह-माँगी तो मौत भी नहीं मिलती है।

मांगिए क्यों कर दुआए-तूले-उम्र।
मुँहकी माँगी मौत भी मिलती नहीं॥

मुंह फक हो जाना—घबराहटसे चेहरा फीका पड़ जाना।

उ०—चोरी खुलते ही माधवका मुँह फक हो गया।

दिल चुराया है मेरा पर वो खिज़िल कितना है।
फक हुआ जाता है मुँह, चोरका दिल कितना है॥

मुंह मोड़ना—छोड़ देना।

उ०—तुमसे कुछ आशा थी कि इस आड़े समयपर सहायता करोगे, तुमने भी हमसे मुँह मोड़ लिया।

मुंह फूंक देना—कुछ दे देना।

उ०—कुछ मिलने तो दो, उसका भी मुँह फूँक देंगे।

मुंह देखेकी मुहब्बत होना—झूठा प्रेम दिखाना।

उ०—जिसका तुमको इतना अभिमान है, वह केवल मुँह देखेकी मुहब्बत है।

यों तो मुँह देखेकी होती है मुहब्बत सबको।
मैं तो जब जानूं मेरे बाद मेरा ध्यान रहे॥

मुंह देखकर जीना—अत्यन्त प्रेम करना।

उ०—वह तुम्हारा मुँह देखकर जीता है, तुम कहते हो वह मुझपर मरता है, यह क्या बात है?

मुंहपर बसन्त फूलना—प्रसन्न-वदन होना।

उ०—तुम्हें कुछ बसन्तकी खबर भी है? वह देखो, उसके मुँहपर बसन्त फूल रहा है।

मुंह लाल करना—बहुत पीटना।

उ०—यदि आंखें नीली-पीली करोगे; तो तुम्हारा मुंह लाल कर दूंगा।

मुंह फुलाना—असन्तुष्ट होना।

उ०—यह चिड़चिड़े स्वभावका आदमी है; जरासी बातपर मुँह फुला लेता है।

मुंह चढ़ना—क्रोधित होना।

उ०—मेरी और तुम्हारी कैसे निभ सकती है? जरा सी बातपर तुम्हारा मुँह चढ़ जाता है।

मुंह चढ़ना—अधिक परिचित होना।

उ०—वह कोतवालके मुँह चढ़ा हुआ है; इसलिए किसीको कुछ नहीं समझता है।

मुंह चढ़ाना—किसीको प्रिय बनाना।

उ०—जबसे तुमने उसको मुँह चढ़ाया है, वह किसीसे सीधे मुँह बात नहीं करता।

मुंह चढ़ाना—किसीको उद्दण्ड बनाना, ढीठ बनाना।

उ०—तुमने नौकरको बहुत मुँह चढ़ा रखा है, तभी तो वह बात-बातपर तुम्हारे सिर होता है।

मुंह चढ़ाना—आकृतिसे असन्तोष वा अप्रसन्नता प्रकट करना।

उ०—सरला! क्या तुम बता सकती हो कि, बड़ी बहूने आज क्यों मुँह चढ़ा रखा है?

मुंह चलाना—खाना।

उ०—असभ्य लोग चलते फिरते भी मुँह चलाते हैं।

मुंह चलाना—बोलना।

उ०—उसके लिए चुपचाप बैठना कठिन है, वह सदा मुँह चलाता ही रहता है।

मुंह चलाना—गालियाँ देना, दुर्वचन कहना।

उ०—चुपचाप क्यों सुनते रहते हो, तुम भी मुँह चलाओ।

मुंह बिगड़ना—गाली देनेकी बान पड़ना।

उ०—बाबू बसन्तलाल! इन लड़कोंकी संगतिमें रहनेसे आपके लड़केका मुँह बिगड़ गया है।

मुंह बिगाड़ना—असभ्य बनाना।

उ०—लाड़-प्यारमें माता-पिता बच्चोंका मुँह बिगाड़ देते हैं।

मुंहमें टांका लगाना—बोलनेसे रुकना।

उ०—बकने दो जो कुछ बकता है, क्या तुम किसीके मुँहमें टाँका लगा सकते हो?

मुंह धो आना—योग्य होना—व्यङ्गसे।

उ०—रसगुल्ले तो तैयार हैं, तुम मुँह भी धो आये हो?

मुंह बनवाना—योग्य होना—व्यङ्गसे।

उ०—तुम्हारे लिए सब कुछ तैयार है, जरा पहिले मुँह तो बनवाओ।

मुंह खून लगना—अनीतिपूर्वक लेनेकी बान पड़ना।

उ०—वह इन बातोंसे बाज नहीं आ सकता, उसके मुँह खून लगा हुआ है।

मुंह सामने न कर सकना—लज्जावश सामने न आ सकना।

उ०—कल मैंने उसको वह सुनायी कि, अब वह कभी मुँह सामने न कर सकेगा।

मुंह खुलवाना—बोलनेको विवश करना।

उ०—तुम्हारी बोलती बन्द कर देगा यदि उसका मुँह खुलवाओगे।

मुंह लगाना—अधिक हिल-मिल जाना।

उ०—मैं तुम्हारे जैसे गँवारोंको कभी मुँह लगाता हूँ?

मुंह लगना—ढीठ बना देना।

उ०—मूलचन्द किसीको भी मुँह नहीं लगाता है।

मुंह देखना
मुंह ताकना } —किसीसे कुछ पानेकी इच्छा करना।

उ०—श्रीदत्तने अपना सर्वस्व व्यसनोंमें खो दिया, अब वह भोजनके लिये गङ्गा प्रसाद रतूड़ीका मुँह देखता है।

मुंहसे फूल झड़ना—प्रसन्न करनेवाली मधुर बातें करना।

उ०—फूलकुमारके मुँहसे फूल झड़ते हैं, इसीलिए लोग उसे प्यार करते हैं।

मुंह आया बक देना—बिना सोचे-विचारे बोल उठना।

उ०—वह इसीको सभ्यता समझता है कि जो मुँह आया सो बक दिया।

मुँह फैलाकर रह जाना—आश्चर्यान्वित हो जाना।

उ०—जब उसने चौपाटी (बम्बई) पर समुद्रका दृश्य देखा, तो वह मुँह फैलाकर रह गया।

मुँह जरासा रह जाना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—अधिक न उभरो, अभी तुम्हारी कलई खुल जायगी, तो मुँह जरा सा रह जायगा।

मुँहपर कहना—सामने कहना।

उ०—मुझे जो कहना होता है तुम्हारे मुँहपर कहता हूँ।

गैरका हाल छिपानेसे कोई छिपता है।
गो किसी वजहसे मैं आपके मुहपर न कहूँ॥

मुँह देखकर उठना—किसीका-अशुभ समय प्रातःकाल जागना।

उ०—आज न जाने किसका मुँह देखकर उठे थे कि दिनभर भूखों मरते फिरे।

मुँह सूखना—घबरा उठना।

उ०—जङ्गलमें गीदड़को देखकर तो तुम्हारा मुँह सूख जाता है, परन्तु हो वीर।

मुँह सूखना—क्लान्त होना।

उ०—आज दिनभर धूपमें फिरते-फिरते उसका मुँह भी सूख गया।

मुँहकी लाली रखना—मान-मर्यादा बचाना।

उ०—दूसरोंकी चिन्ता पीछे करना, पहिले अपने मुँहकी लाली तो रखो।

मुँह सी जाना—बोल न सकना।

उ०—क्या तुम्हारा मुँह सी गया था जो चुपचाप उसकी गालियाँ सुनते रहे।

मुँह लाल होना—क्रोध आना।

उ०—अपमान सूचक शब्द सुनते ही उसका मुँह लाल हो गया।

मुँह लपेटकर पड़ना—उदास होकर पड़ रहना।

उ०—न जाने आज वह मुँह लपेटकर क्यों पड़ा हुआ है?

मुँह संभालकर बोलना—सभ्यता पूर्वक बातचीत करना।

उ०—मनुष्यसे न गिरो, जरा मुँह संभालकर बोलो।

मुँह बनाना—बिगड़ना।

उ०—अबतक तो बातें बनाते रहे; फिर न जाने क्या सूझी, कि मुँह बनाने लगे।

मुँह चुराना—सामने न आना।

उ०—उसकी चोरी खुल गयी है, इसलिए अब वह मुँह चुराता है।

मुँह न चढ़ना—मुँहपर न आना।

उ०—प्रेम-पीड़ित व्यक्तिकी कान्ति उतरकर मुँह नहीं चढ़ती है।

छू गयी बू जहाँ मुहब्बतको।
रङ्ग फिर डरसे मुंह नहीं चढ़ता॥

मुँह न देखना—न मिलना—

उ०—उसका समस्त जीवन आपत्तियोंमें बीता है; उसने कभी सुखका मुँह न देखा।

मुँहको सी देना—बोलना बन्द कर देना।

उ०—तुम भी कहो जो कुछ कहना है; मैंने क्या तुम्हारा मुँह सी दिया है?

शिकवा ज़बांपे आ न सका रंजे-हिज्र का।
इक बोसा देके उसने मेरे मुंहको सी दिया॥

मुँह फिर जाना—अरुचि हो जाना।

उ०—तीन दिनसे मीठा भात खाते-खाते मिट्ठनलालका मुँह फिर गया है।

मुँह न फिरना—जी न ऊबना।

उ०—बङ्गला मिष्टान्नमें सबसे बड़ा गुण यह है कि खाते-खाते मुँह नहीं फिरता है।

मुँह न पड़ना—साहस न होना।

उ०—यहाँ आये कैसे? उसका मुँह ही नहीं पड़ता।

तेरे लब जो नाज़ुक हैं, डरती है आते।
झिझकती है, पड़ता नहीं मुँह हसीक॥

मुँह दिखाना—सामने आना।

उ०—उसका अब मुँह ही नहीं पड़ता जो मुझे मुँह दिखाये।

मुँह भर देना—घूस देना।

उ०—जब तुमने उसका मुँह भर दिया है, तो वह तुम्हारे विरुद्ध नहीं बोल सकता।

मुँहपर नाक न होना—नितान्त निर्लज्ज होना।

उ०—जब उसके मुँहपर नाक ही नहीं है, तो उसपर बुरा-भला कहनेका प्रभाव कैसे पड़ सकता है?

मुँह उठाना—चल देना।

उ०—आज किधर मुँह उठाया है? कुछ देर तो ठहरो।

मुँहकी खाना—लज्जित होना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यदि तुम आज वहाँ गये, तो अवश्य मुँहकी खाओगे।

जो तुझसे रुख मिलायें चाँद-सूरज।
अभी तो मुँहको खायें चाँद-सूरज॥

मुँहकी खाना—कड़ा जवाब पाना।

उ०—आज उसने ऐसी मुँहकी खायी है कि यावज्जीवन न भूलेगा।

मुँह काला होना—कलङ्क लगना।

उ०—उसका दिल तो काला था ही, अब मुँह भी काला हो गया है।

मुँह काला करना—अनुचित विषय-भोग करना।

उ०—अनेक श्वेत वस्त्रधारी प्रत्येक दिन वेश्यालयोंमें मुँह काला करते हैं।

बाक़ी है अभी शेख़को हसरत गुनाहकी।
काला करेगा मुंह भी जो दाढ़ी सियाहकी॥
(ज़ौक़)

मुँह लगाना—बेतकल्लुफ़ बना देना।

उ०—तुम जो उस मुँह-फटको मुँह लगाते हो, तुम्हारे हाथ क्या आता है?

मुँह लगाते ही "दाग़" इतराया।
लुत्फ़ है गर जफ़ा करे कोई॥

मुँह बाना—विस्मित होना; आश्चर्य करना।

उ०—तुम तो उसका एक साधारण चमत्कार देखकर मुँह बाने लगे।

'केशवदासके' भाल लिख्यो विधि रङ्कको अङ्क बनाय संवार्‌यो।
धोये धुवे नहीं छूटे छुट बहु तीरथ जायकै नीर पखार्‌यो॥
ह्वै गयो रङ्क ते राव तभी जब वीरबली नृपनाथ निहार्‌यो।
भूलि गयो जगकी रचना चतुरानन बाय रह्यो मुख चार्‌यो॥

मुँह फाड़ना—असभ्यतासे बोलना।

उ०—चुपचाप बैठे रहो; व्यर्थ क्यों मुँह फाड़ते हो?

मुँह-तोड़ जवाब होना—युक्ति-युक्त कड़ा जवाब देना।

उ०—मैंने भी वह मुँह-तोड़ जवाब दिया कि वह सब आयँ-बायँ भूल गया।

मुंह देखी कहना—चिरौरी करना।

उ०—जो व्यक्ति मुँह देखी कहता है, वह सत्यासत्यका विचार नहीं कर सकता।

मुंहमें पानी भरना—खानेको जी ललचाना; लालायित होना।

उ०—स्वादिष्ट भोजन देखकर उसके मुँहमें पानी भर गया।

मुंह-फट होना—बिना विचारे असभ्यतापूर्वक जो चाहे बक देना।

उ०—आपका पुत्र बुरे लड़कोंके साथ रहकर बड़ा मुँह-फट हो गया है।

* * * *

मुंह खोलना—बोलना।

उ०—यदि मैं मुँह खोलता हूँ तो मुश्किल, मुँह बन्द रखता हूँ तो मुश्किल।

मुंह काला होना—बुरे भावमें प्रयुक्त होता है और अर्थ है चले जाना।

उ०—यहाँसे उस दुष्टका मुँह काला हो गया।

मुंह छिपाना—लज्जाके मारे सामने न होना।

उ०—जबसे उसकी चोरी खुली है, वह हमसे भी मुँह छिपाता है।

मुंह खोलना—उत्तर देना।

उ०—तुम बहुत देरसे मुझपर आक्रमण कर रहे हो; यदि मैं मुँह खोलूँगा तो तुम्हारी बोलती बन्द हो जायगी।

मुँह थुथाना—क्रोध या अप्रसन्नता प्रकट करना।

उ०—उसका संकेत तुम्हारी ओर नहीं था; तुम व्यर्थ ही मुँह थुथाते हो।

मुँह डालना—किसी पशुका खाद्य पदार्थ पर मुँह चलाना।

उ०—कल्लूसे कहो कि यह घासकी गठरी अन्दर रख दे; यहाँ आते-जाते पशु मुँह डालते हैं।

मुँह ताकना—किसीका मुखापेक्षी होना; किसीके मुँहकी ओर कुछ खाने-पीनेकी आशासे देखना।

उ०—यदि इन बच्चोंका बाप जीवित होता, तो चचाका मुँह क्यों ताकते?

मुँह ताकना—चकित होकर देखना।

उ०—योगिराजने ऐसा चमत्कार दिखाया कि सब लोग मुँह ताकने लगे।

मुँह ताकना—विवश होकर देखना।

उ०—तुम उनके साथ न जाओ; वे खाना खायेंगे और तुम उनका मुँह ताकोगे।

मुँह ताकना—अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना।

उ०—वे लोग अपना काम करते रहते हैं और तुम उनका मुँह ताकते हो।

मुंह बन्द करना—बोलने न देना; निरुत्तर करना।

उ०—तुम देखते रहो, मैं एक ही युक्तिसे उसका मुँह बन्द कर देता हूं।

मुंह पसारना—अधिक माँगना।

उ०—जो मिलता था, सो मिल गया; अब क्यों मुँह पसारते हो?

मुंहपर लाना—कहना।

उ०—तुममें यह बड़ा दोष है कि भलाई करके उसको मुँहपर लाते हो।

मुंहपर रख देना—सामने कह डालना।

उ०—वह बड़ा सत्यवादी है; जो कुछ उसके दिलमें होगा, सब तुम्हारे मुँहपर रख देगा।

मुंह करना—मुलाहजा करना।

उ०—धनिकोंका सभी मुंह करते हैं किन्तु दीनोंकी कोई बात नहीं पूछता।

मुंह सुजाना—मुखाकृतिसे असन्तोष व अप्रसन्नता प्रकट करना।

उ०—तुम उसको दो घण्टेसे तङ्ग कर रहे थे; यदि उसने कुछ कह दिया, तो तुम मुंह सुजा बैठे।

मुंह देखकर बात करना—खुशामद करना।

उ०—जिसको कुछ हाथ-लगन होता है, वह मुँह देखकर बात करता है।

मुंहपर गरम होना—सामने क्रोध करना।

उ०—वह तुम्हारे मुंहपर गरम तो अवश्य होता है परन्तु है तुम्हारा हितैषी।

मुंह फैलाना—अधिक लोभ करना।

उ०—जितना मुंह फैलाओगे, उतना ही दुख पाओगे।

मुंह झूठा करना—दो-चार कौर खाना।

उ०—यह तो सच है कि आप भोजन कर चुके हैं परन्तु हमारे कहनेसे यहाँ भी मुँह झूठा कर लीजिये।

मुंह तमतमा उठना—प्रकुपित होना।

उ०—यह बात सुनते ही उसका मुंह तमतमा उठा।

मुंह भी न लगाना—बात तक न करना।

उ०—तुम उसके पाँव धोकर पीते हो और वह तुम्हें मुँह भी नहीं लगाता।

मुंह देखते रह जाना—कुछ उत्तर न बन पड़ना।

उ०—जब मैंने उनको खरी-खरी सुनायी, तो वे मुंह देखते रह गये।

मुंह फेरना—पराजित करना।

उ०—पण्डित गुरुप्रसादने लाठी चलानेमें बड़े-बड़ोंका मुँह फेर दिया।

मुंह फेर लेना—अलग होना।

उ०—आपत्तिके समय प्रायः सभी मुंह फेर लेते हैं।

दमे-उफ़्ताद क़ल्बी-दोस्त भी मुँह फेर लेते हैं।
शरारे भागते हैं सख्तियोंमें दूर पत्थरसे॥
(सिफ़त)

मुँह उतरना—मुँहका तेज जाता रहना; विवर्णता होना।

उ०—केवल तीन दिन ज्वर चढ़नेसे तुम्हारे मित्रका मुँह उतर गया है।

चितपर चढ़ा है कौन तेरे सच बता मुझे।
'जुरअत, कुछ इन दिनोंमें तेरा मुँह उतर गया॥

मुँह फीका पड़ना—कान्तिहीन हो जाना।

उ०—तीन माससे ज्वर आनेके कारण मधुका मुँह फीका पड़ गया है।

मुँह निकल आना—अति निर्बल हो जाना। रोग या दुर्बलता के कारण मुखका तेज जाता रहना।

उ०—उसके शरीरमें कुछ ऐसा रोग घुसा है कि थोड़े दिनोंमें हो उसका मुँह निकल आया है।

मुँह खुलवाना—किसीको बोलनेके लिए बाध्य करना।

उ०—उस दुष्टके साथ छेड़छाड़ करके तुम्हीं उसका मुँह खुलवाते हो।

मुँह कीलना—बोलनेसे रोकना।

उ०—तुमको भी उसकी बातोंका यथोचित उत्तर देना चाहिये था; क्या किसीने तुम्हारा मुँह कील दिया था?

मुंहको लड्डू लगना—मज़ा पड़ जाना।

उ०—तुम्हारे मुँहको लड्डू लग गये हैं इसीलिए दिन भर उसके घर पड़े रहते हैं।

मुंहकी मक्खी न उड़ा सकना—अति दुर्बल होना।

उ०—तुम मुँहकी मक्खी तो उड़ा नहीं सकते, हमारे साथ दस मील कैसे चलोगे ?

मुंहपर पानी आना—चेहरेपर चमक आना।

उ०—बहुत दिनोंके उपरान्त महाराज स्वरूपके मुँहपर पानी आया है।

मुंहपर मक्खियां भिनकना—दरिद्र होना।

उ०—आजकल उसके मुँहपर मक्खियाँ भिनक रही हैं।

मुंह-पेट चलना—क़ै-दस्त होना।

उ०—जिसका रात-दिन मुँह चलता रहता है, उसका कभी-कभी मुँह पेट भी चल जाता है।

मुंह मारना—खानेकी चीजमें मुंह लगाना।

उ०—मार्गमें होनेके कारण इस खेतमें आते-जाते पशु मुँह मारते हैं।

मुंह मारना—शीघ्र भोजन करना।

उ०—मुझे भोजन करनेमें आध घण्टेसे कम नहीं लगता और तुम पाँच मिनटमें ही मुँह मारकर लम्बे होते हो।

मुंह मारना—बोलनेसे रोकना, चुप कराना।

उ०—तुमने भी कुछ कहा होता, क्या किसीने तुम्हारा मुँह मार दिया था।

मुंह मारना—रिश्वत देना।

उ०—तुमने उसका मुँह मारा होगा, इसीलिए उसने तुम्हारे काममें भाँजी नहीं मारी।

मुंह मारना—बढ़कर होना।

उ०—उसका काता हुआ सूत मिलके सूतका मुँह मारता है।

मुंह भी न लगाना—बिलकुल न खाना।

उ०—सबकी सब मिठाई ऐसी ही पड़ी है; किसीने मुँह भी नहीं लगाया।

मुंह पड़ना—खानेको मिलना।

उ०—श्यामा बोली—"विमलाके पिता दो सेर चमचम लाये थे, कसम ले लो जो एक भी मुँह पड़ी हो।"

मुंह पड़ना—साहस होना।

उ०—आनेको तो हजार बार आये परन्तु उसका मुँह भी पड़े ?

मुंह चाटना—लल्लो-पत्तो करना, खुशामद करना।

उ०—तुम धनिकोंका मुँह चाटते हो, इसीलिए उनके प्रिय बने रहते हो।

* * * *

मुक्तिका द्वार बन्द—बुरे कर्म करना।

उ०—मुक्तानन्द आजकल अपने हाथोंसे अपनी मुक्तिका द्वार दिल खोलकर बन्द कर रहे हैं।

मुखका ग्रास होना—बहुत सुगम होना।

उ०—अटूट परिश्रम करनेसे कठिन-से-कठिन कार्य मुखका ग्रास हो जाता है।

मुख उज्ज्वल करना—कलङ्क मिटाना।

उ०—उज्ज्वलसिंहने अपने उज्ज्वल कर्मोंसे अपने पिताका मुख उज्ज्वल कर दिया है।

मुख मलिन होना—उदास होना।

उ०—क्या कोई बता सकता है कि आज सुखरामका मुख क्यों मलिन कर रहा है?

❀ ❀ ❀ ❀

मुखड़ा खिलना—प्रसन्न होना।

उ०—पुत्रको हँसता देख माताका मुखड़ा खिल जाता है।

मुट्ठी बन्द करना—कृपणता करना।

उ०—आज तो दिल खोलकर खर्च करना चाहिए; तुम मुट्ठी बन्द करते हो।

मुट्ठी गरम होना—प्राप्ति होना।

उ०—कुछ ऐसे लक्षण दिखायी दे रहे हैं कि आज तुम्हारी मुट्ठी गरम होगी।

मुट्ठी गरम करना—कुछ धन दे देना; घूस देना।

उ०—तुमने उसकी मुट्ठी गरम कर दी होगी; इसीलिए वह ठण्डा पड़ गया है।

मुट्ठीमें आना—वशीभूत होना।

उ०—वह तुम्हारी मुट्ठीमें आ जायगा, यह मुझे स्वप्नमें भी आशा न थी।

मुट्ठीमें लेना—वशमें करना।

उ०—जगदीशको मुट्ठीमें ले लिया, तो तुम्हारा काम छत्तीस हो गया।

मुठभेड़ हो जाना—झगड़ा हो जाना।

उ०—कल सायङ्काल पाँच बजे उस दुष्टसे मेरी मुठभेड़ हो गयी।

मुर्गीकी एकही टाँग बतलाना—अपनी बातपर हठ करना।

उ०—आप लाख युक्तियाँ दीजिये, वह मुर्गीकी एक ही टाँग बतलायेगा।

मुर्दोंसे बाजी लगाकर सोना—बिलकुल बेसुध सोना।

उ०—तुम्हारा कुछ ठिकाना है? तुम लोग तो मुर्दोंसे बाजी लगाकर सोते हो।

मूछें मरोड़ना—घमण्ड करना।

उ०—अधिक मूछें क्यों मरोड़ते हो? हम जानते हैं कि तुमको पचास रुपयेकी जगह मिल गयी है।

मूछोंपर ताव देना—अभिमान करना।

उ०—आज तो वह मूछोंपर ताव दे रहा है।

मूछोंपर हाथ डालना—अपमान करना।

उ०—वह दुष्ट अपने पिताकी मूछोंपर हाथ डालता है।

मूलोच्छेदन करना—सर्व-नाश करना।

उ०—चाणक्यने प्रतिज्ञा की कि, मैं नन्दवंशका मूलोच्छेदन करूँगा।

मूसलधार पानी बरसना—जोरसे मेंहे बरसना।

उ०—यहाँ तीन दिनतक मूसलधार पानी बरसता रहा।

मृत्युके मुखमें जाना—जान जोखिममें डालना।

उ०—तुम मौज उड़ाओ और मैं मृत्युके मुखमें जाऊँ, यह कदापि नहीं होगा।

मृत्युके मुखमेंसे निकलना—मरणासन्न होकर बच जाना।

उ०—मृत्युंजय कई बार मृत्युके मुखमेंसे निकला है।

मृदङ्ग बजाना—आनन्द करना।

उ०—तुम्हें किस बातकी चिन्ता है? दिन-रात मृदङ्ग बजाओ और मलहार गाओ।

मेंढ़े लड़वाना—दो व्यक्तियोंमें झगड़ा करा देना।

उ०—मैं तो जानता था कि तुम आज मेढ़े लड़वाओगे।

मेरी-मेरी करना—अधिकारका घमण्ड होना।

उ०—क्या मेरी-मेरी करते हो? सब यहीं रह जायगी।

'वसुधा काहुकी नाय भई, सब करि गये मेरी-मेरी।'

मैदान मारना—विजय प्राप्त करना।

उ०—मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम आज मैदान मारोगे।

मैदान साफ करना—निष्कपट बनाना।

उ०—अब किसी प्रकारकी चिन्ता न करो; मैंने मैदान साफ कर दिया है।

मोचीका मोची रह जाना—मूर्ख रह जाना; उन्नति न कर सकना।

उ०—चार वर्ष काशीमें पढ़कर भी वह मोचीका मोची ही रह गया।

मोटी मुर्गी फँसाना—किसी धनिक व्यक्तिको धोखेमें डालना।

उ०—आज तो लाला मोटेरामने कोई मोटी मुर्गी फँसाई है।

मोतियोंसे मुंह भरना—धनवान बना देना।

उ०—परमात्मा किसीका मोतियोंसे मुँह भर देता है, किसीको पेट-भर अन्न भी नहीं देता।

मोती रोलना—खूब धनोपार्जन करना।

उ०—व्यापारी लोग दूसरे देशोंमें जाकर मोती रोलते हैं।

मोती पिरोना—अलङ्कारका प्रयोग करना।

उ०—इस कवितामें कविने खूब मोती पिरोये हैं।

मोतीके दाने बखेरना—आँसू गिराना।

उ०—वह सुन्दरी आज किसीके शोकमें मोतीके दाने बखेर रही है।

मोम हो जाना—नरम हो जाना।

उ०—उसका दुःख देखकर पत्थर भी मोम हो जाता है; परन्तु तुम्हें दया नहीं आती।

न समझा उम्र गुज़री उस बुते-खुदसरको समझाते।
पिघल कर मोम हो जाता अगर पत्थरको समझाते॥

मोम होना—दया आना।

उ०—जो किसीको दुःखमें देखकर मोम होता है, वही मनुष्य कहलानेका अधिकारी है।

मोम हो उस संग-दिलका क्योंकि दिल।
आहमें रखते नहीं तासीर हम॥

मोरीकी ईंट चौबारे चढ़ाना—अयोग्य व्यक्तिको योग्य पद देना।

उ०—तुम लोग छज्जूरामको पुस्तकाध्यक्ष बनाना चाहते हो; परन्तु मैं नहीं चाहता कि मोरीकी ईंट चौबारे चढ़ायी जाय।

मोरचा मारना—विजय प्राप्त करना।

उ०—देखिये इस महासमरमें कौन मोरचा मारता है?

मोरचा लेना—मुकाबिला करना।

उ०—तुम मोरचा क्या लोगे, कुशलपूर्वक अपने घरका रास्ता लो।

मोरचा लगाना—युद्धके लिए तैयारी करना।

उ०—दोनों दल अपना-अपना मोरचा लगा चुके हैं; अब देखिये ऊँट किस करवट बैठता है।

❀ ❀ ❀ ❀

❀ ❀ ❀ ❀

मौज उड़ाना—आनन्द लूटना।

उ०—आजकल जिसके हाथमें चार पैसे हैं वही मौज उड़ाता है।

मौजकी छानना—आनन्दसे रहना।

उ०—तुमको किस बातकी चिन्ता है? मौजकी छानते हो और पाँव फैलाकर सोते हो।

मौतके दिन पूरे करना—दुःखमय जीवन बिताना।

उ०—जीवन तो तुम्हारा है; वह गरीब तो मौतके दिन पूरे कर रहा है।

मौत आना—बड़ा दुःखप्रद होना।

उ०—माधवको पढ़ते-लिखते मौत आती है, इसीलिए वह अध्यापकसे असन्तुष्ट रहता है।

मौन साधना—चुप हो जाना।

उ०—जब वह आवाज दिया करे, तुम मौन साध लिया करो।

मृग-तृष्णाका जल पीना—धोकेमें पड़ना।

उ०—जानते-बूझते मृग-तृष्णाका जल पीते हो; यह कहाँकी बुद्धिमत्ता है?

मृत हड्डियोंमें जान डालना—उत्साहहीनको प्रोत्साहित करना।

उ०—पण्डित वृषभध्वज शर्माके भाषणने मुरादाबादकी मृत-हड्डियोंमें जान डाल दी है।

म्याऊंकी ठौर पकड़ना—जोखिमका कार्य करना।

उ०—और सब बातें हो जायँगी; पहिले यह बताओ कि तुममेंसे म्याऊँकी ठौर कौन पकड़ेगा।

म्यानसे बाहर हो जाना—क्रोधके आवेशमें होना।

उ०—वह मानसिंहका नाम सुनते ही म्यानसे बाहर हो गया।

म्यानसे निकल पड़ना—प्रकुपित होना।

उ०—मैं उसका स्वभाव जानता हूँ; वह जरा सी बात पर म्यानसे निकल पड़ता है।

(य)

यज्ञमें आहुति देना—किसी उत्तम कार्यमें भाग लेना।

उ०—हिन्दू नेशनल स्कूलकी आधार-शिला रखी गयी; सबसे पहिले लाला आशारामने इस यज्ञमें आहुति दी।

यज्ञ सफल होना—किसी बड़े कार्यका पूर्ण होना।

उ०—परमात्माकी असीम कृपासे यज्ञेश्वरका यज्ञ सफल हो गया है।

यमदूतोंसे पाला पड़ना—पुलिसवालोंके फन्देमें फँसना।

उ०—जब यमदूतोंसे पाला पड़ेगा, सब चालें भूल जाओगे।

यमराजके सोंटे खाना—नरक-यातना भोगना।

उ०—जो किसीका खून पीता है, वह यमराजके सोंटे खाता है।

गंगाके न गौरिके गिरीसके न गोविन्दके,
गोतके न जोतके न जाये राहगीरके।
काहूके न संगी रतिरंगी भैन भानजीके,
जीके अति खोटे सोंटे खैहैं जमवीरके॥

(ग्वाल कवि)

यमपुरको जाना—मरना।

उ०—इस लोकमें उसका जी नहीं लगा, इसलिए वह यमपुरको चला गया।

यमपुरीको घर बनाना—नरकमें निवास करना।

उ०—जो लोग दूसरोंका घर खोते हैं, वे यमपुरीको घर बनाते हैं।

यमपुरसे निमन्त्रण आना—मृत्यु आना।

उ०—अब वह यहाँ कुछ न खा-पी सकेगा क्योंकि उसको यमपुरसे निमन्त्रण आया है।

यमलोकको भेजना—मार डालना।

उ०—ठहरो, मैं अभी उसे यमलोकको भेजता हूँ।

यमलोक दिखाना—मार डालना।

उ०—मैंने उसको केवल बालक समझकर छोड़ दिया; यदि मैं चाहता, तो उसे यमलोक दिखा देता।

यश लूटना—कीर्ति पाना।

उ०—आजकल लाला यशवन्त राय खूब यश लूट रहे हैं।

यादसे उतरना—भूल जाना।

उ०—मैं उससे भलीभाँति परिचित हूं; उसका नाम मेरी यादसे उतर गया है।

युग बीत जाना—बहुत समय चला जाना।

उ०—महाभारतके युद्धको युग बीत गये हैं।

युग पलट जाना—बड़ा भारी परिवर्तन हो जाना।

उ०—दो वर्षके उपरान्त वहाँ जाकर देखा, तो युग पलट गया।

युग-युग जीना—दीर्घ जीवन पाना।

उ०—साधुने प्रसन्न हो कर कहा—"युगलकिशोर! तुम युग-युग जीओ।"

युधिष्ठिरका बड़ा भाई उखाड़ना—कान खींचना।

उ०—यदि धूर्त्तता करोगे, तो तुम्हारा युधिष्ठिरका बड़ा भाई उखाड़ लिया जायगा।

योग देना—सहायता करना।

उ०—लाला ज्योतिप्रसाद बड़े उदार व्यक्ति हैं, वह सार्व-जनिक कार्योंमें सदा योग देते रहते हैं।

योग जुटा देना—अवसर उपस्थित कर देना।

उ०—परमात्माने अच्छा योग जुटा दिया है; अब तुम भी इस कार्यमें जी-जानसे जुट जाओ।

(र)

रंग उड़ना—आभारहित होना।

उ०—अनेक प्रयत्न करनेपर भी उस सुन्दरीका रंग शीघ्र उड़ गया।

रंग फीका पड़ना—आभाहीन होना।

उ०—दो दिनके ज्वरमें ही आजकलके नवयुवकोंका रंग फीका पड़ जाता है।

रंग जमना—प्रभाव पड़ना।

उ०—वह ऐसी युक्ति-युक्त बातें कहता है कि उसका रंग जम जाता है।

रंग-रेलियां करना—आनन्द करना।

उ०—पचास रुपयेकी जगह मिल गयी है, इसलिए रंगीलाल रंगरेलियां करते हैं।

रंगमें भंग होना—मजा बिगड़ना।

उ०—लोग तो बड़ी संख्यामें उपस्थित हुए थे परन्तु वर्षाके आनेसे रंगमें भङ्ग हो गया।

रंग लाना—प्रभाव दिखलाना।

उ०— मैं सच कहता हूँ कि तुम्हारा गुण्डोंके संग रहना किसी दिन रंग लायेगा।

मुफ्तकी पीते थे मय और दिलमें कहते थे कि हाँ।
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ा-मस्ती एक दिन॥

रंग चढ़ना—प्रभावित होना।

उ०—तुम्हारी संगतिका मनुष्यपर ऐसा रंग चढ़ता है कि लाख प्रयत्न करनेपर भी नहीं उतरता।

रंग चढ़ना—नशेमें चूर होना।

उ०—वह जीनेसे कुशलपूर्वक न उतरेगा क्योंकि आज उस पर रंग चढ़ा हुआ है।

रंग चढ़ाना—बहकाना।

उ०—तुमने उसपर ऐसा रंग चढ़ाया है कि अब वह हमसे ढंगसे बात ही नहीं करता।

रंग बाँधना—प्रभाव जमाना।

उ०—जिस समय वह सितारपर तान छेड़ता है, तो रंग बांध देता है।

रंग उतरना—कांतिहीन होना।

उ०—कठिन परिश्रमसे नवयुवकोंका रंग उतर ही जाता है। इसमें आश्चर्य ही क्या है?

रंगमें रंगा जाना—मेल मिलाना; प्रभाव पड़ना।

उ०—केवल वहाँ जानेकी देर थी, मोहन भी उसके रंगमें रंगा गया।

रंग पकड़ना—सुन्दर होना।

उ०—जब वह पटनासे आया, उसकी आकृति बड़ी भूंडी थी, परन्तु अब रङ्ग पकड़ रहा है।

रंग बदलना—नई बातें प्रकट करना।

उ०—कोई चीज एक स्थितिमें नहीं रहती; जमाना रङ्ग बदलता रहता है।

जंमीने-चमन गुल खिलाती क्या क्या।
बदलता है रंग आसमाँ कैसे कैसे॥

रंग करना—समयको आनन्दमें बिताना।

उ०—तुमको चिन्ता किस बातकी है? ईश्वरका दिया सब कुछ है, खूब रङ्ग करो।

रंग बिगड़ना—दशा बिगड़ना।

उ०—आपसके झगड़ेके कारण आजके समारोहका रङ्ग बिगड़ गया।

❀ ❀ ❀ ❀

रंग लगना—अपना अधिकार जमना।

उ०—जरा हमारा रङ्ग लगने दो, सब काम बन जायगा।

रंग देखना—परिणाम देखना।

उ०—मामिलेका रंग देखकर कुछ निश्चय किया जायगा।

रकाबमें पाँव रहना—प्रस्तुत रहना।

उ०—सिनेमा देखनेके लिए उसका सदा रकाबमें पांव रहता है।

रक्तकी नदी बहाना—घोर संग्राम करना।

उ०—कौन नहीं जानता कि महाभारतके युद्धमें कौरव-पांडव-दलने रक्तकी नदी बहायी थी।

रग-रग जानना—सब प्रकारसे परिचित होना।

उ०—मुझे धोखा देनेकी चेष्टा न करो; मैं तुम्हारी रग रग जानता हूँ।

रगड़ा देना—चाल चलना।

उ०—मैं तुमको रगड़े बिना न छोड़ूँगा क्योंकि तुम उस दिन मुझे भी रगड़ा दे गये।

रञ्जमें घुल जाना—शोकसे अत्यन्त दुर्बल हो जाना।

उ०—यादव मित्रके रञ्जमें ऐसा घुल गया है कि पहचाना भी नहीं जाता।

रतजगे होना—रात्रिके समय आनन्द करना।

उ०—तुम्हारे घर सदा रत-जगे होते हैं, और यहाँ दिन काटने कठिन हो रहे हैं।

जागकर काटते हैं हिज्रमें हम भी रातें।
रत-जगे होते हैं गर ग़ैरके घर होने दो॥

रट लग जाना—आग्रह करना।

उ०—सौबार कह चुका हूँ कि तुम्हें हारमोनियम ले दूँगा, परन्तु तुमको तो एक बातकी रट लग जाती है।

रफ़ू चक्कर होना—भाग जाना।

उ०—उनके साथ न जाओ; कोई झगड़ा हो गया, तो तुमको छोड़कर वे सब रफ़ू-चक्कर हो जायेंगे।

रह-रहकर याद आना—बार-बार याद आना।

उ०—तुम मुझे भूल जाओगे, परन्तु मुझे तुम रह-रहकर याद आओगे।

रसमें विष घोलना—आनन्दमें कलह करना।

उ०—मैं उसके स्वभावसे परिचित हूं, वह जहाँ जाता है, रसमें विष घोलता है।

रसातलको पहुँचा देना—नाश कर देना।

उ०—हमको पूरी आशा है कि तुम शीघ्र ही जातिको रसातल पहुँचा दोगे।

रस्सीका साँप बनाना—निराधार बखेड़ा करना।

उ०—क्या यह चमत्कार कम है कि तुम रस्सीका साँप बना देते हो?

राईका पहाड़ बनाना—छोटी बातको अधिक बढ़ाकर कहना।

उ०—जो व्यक्ति राईका पहाड़ बनाता है, वह आजकल चतुर समझा जाता है।

राईसे पर्वत बनाना—निर्धनको धनवान करना।

उ०—परमात्माकी लीला विचित्र है; वह पलभरमें राईसे पर्वत बना देता है।

राई-रत्तीसे परिचय रखना—पूर्णरूपसे जानकार होना।

उ०—किसी ऐसे व्यक्तिसे मिलना चाहिये, जो यहाँ राई-रत्तीसे परिचय रखता हो।

राग-रङ्ग उड़ाना—आनन्द करना।

उ०—तुमको किसीके सुख-दुःखसे क्या प्रयोजन? तुम अपना राग-रङ्ग उड़ाओ।

रात आंखोंमें काटना—नींद न आना।

उ०—जबसे कहीं उसकी आँख लगी है, वह रात आँखोंमें काटता है।

रात भारी होना—रात्रि दुःख-प्रद होना।

उ०—हलके-से रोगमें भी बीमारको रात भारी होती है।

फँसके जुल्फोंमें निहायत बढ़ गया है दर्दे-दिल।
सच कहा है रात भारी होती है बीमार पर॥

रात-दिन एक कर देना—अटूट परिश्रम करना।

उ०—परीक्षाकी तैयारीमें उसने रात-दिन एक कर दिया था।

रति फूटना—भाग्यहीन होना।

उ०—जब मनुष्यकी रति फूट जाती है उसकी कोई बात तक नहीं पूछता।

राम दाहिने होना—समय अनुकूल होना।

उ०—जिसके राम दाहिने होते हैं, उसके सब काम अनायास बन जाते हैं।

लगन मुहूरत जोगबल 'तुलसी' गनत न काहि।
राम भये दाहिने सबै दाहिने ताहि॥

(तुलसी)

राम-राज्यमें रहना—सुख-शान्ति-पूर्वक रहना।

उ०—आजकल रावणके अनुयायी राम-राज्यमें रहते हैं। समयकी गति विचित्र है।

राम-कहानी कहना—दुखड़ा रोना।

उ०—जिससे तुम अपनी राम-कहानी कह रहे हो, वह रावण-का नाती है।

राम-राम करके प्राण बचना—बड़ी कठिनतासे जान बचना।

उ०—इस बार बीमारीसे रामनाथके राम-राम करके प्राण बचे हैं।

रार मोल लेना—जान बूझकर झगड़ा करना।

उ०—मैं तुम्हारा साथ कैसे दे सकता हूँ ? तुम तो रार मोल लेते फिरते हो।

राल टपकना—ललचना।

उ०—उस वेश्याको देखकर तुम्हारी राल टपकती है। धिक्कार है तुम्हारे ब्राह्मणत्वको, शिवनाथ !

राहपर आना—ठीक बनना।

उ०—बहुत कुछ समझाने-बुझानेके उपरान्त वह राहपर आया है।

राह तकना—प्रतीक्षा करना।

उ०—मैं तीन माससे बराबर तुम्हारी राह तक रहा हूँ।

तुम्हारी राह हम बैठे हुए बरसोसे तकते हैं।
पधारो जानकी-जीवन, पधारो जानकी-जीवन ॥

(दिनकर)

राहपर लाना—सुधारना।

उ०—उसने हमारी तो एक भी न सुनी; यह आप ही थे जो उसको राहपर ले आये।

रास न आना—अनुकूल न होना।

उ०—सरला कहती है हमारे लड़कोंको पढ़ना रास नहीं आता।

रास्ता नापना—चला जाना।

उ०—यहाँ बैठना हो चुपचाप बैठो, वरना अपना रास्ता नापो।

रास्ता भूल जाना—बहुत समयके पीछे मिलना।

उ०—जय रामजीकी, बाबू रामजी दास! आज आप कैसे रास्ता भूल गये।

रास्तेका पत्थर बन जाना—रुकावट डालना।

उ०—वह पाषाण-हृदय हमारे रास्तेका पत्थर बन गया है।

रिंझ-रिंझकर मरना—बहुत कष्ट झेलकर देहान्त होना।

उ०—तुम्हारे जैसे दुष्ट रिंझ-रिंझकर मरते हैं।

रीझ-खीजसे परे होना—विरक्त होना।

उ०—वह महात्मा है, अतएव रीझ-खीझसे परे है।

रूईकी भांति धुनना—बहुत मारना।

उ०—मुझसे बहुत न उड़ो, मैं अभी तुमको रूईकी भाँति धुन दूँगा।

रुपया ठीकरी करना—धन नष्ट करना।

उ०—जगदीशके पिताने मदिरा-पानमें सब रुपया ठीकरी कर दिया है।

रेतकी दीवार खड़ी करना—कच्चा काम करना।

उ०—तुम लोग रेतकी दीवार खड़ी कर रहे हो, यह पानीके एक रेलेमें बह जायगी।

रेल-पेल होना—भीड़ होना।

उ०—आज पञ्जाब मेलमें यात्रियोंकी इतनी रेल-पेल है कि जगह मिलनी कठिन है।

हुई रेलगाड़ीमें जैसी रेल-पेल या ठेला-ठेल।
नहीं कहेंगे उन बातोंको था वह भी मेलेका मेल॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

रेल-पेल होना—आधिक्य होना।

उ०—इस वर्ष काशीमें आमोंकी रेल-पेल हो रही है।

रोंगटे खड़े होना—भयभीत होना।

उ०—परीक्षा-भवनमें प्रवेश करते समय विद्यार्थियोंके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

रोक-थाम करना—मुकाबिला करना।

उ०—यदि रात्रिके समय वे लोग आक्रमण कर बैठे, तो कौन रोक-थाम करेगा?

रोग उठ खड़ा होना—बखेड़ा पैदा होना।

उ०—एक झगड़ा शान्त नहीं हुआ है, दूसरा रोग और उठ खड़ा हुआ।

रोटियां तोड़ना—बिना परिश्रम जीवन निर्वाह करना ।

उ०—तुमको क्या चिन्ता है ? तुम तो बहनोईके घर रोटियाँ तोड़ रहे हो ।

रोटियां लगना—अभिमान होना ।

उ०—हम जानते हैं, उसको आजकल रोटियाँ लग गयी हैं ।

रोटियां चलाना—आजीविका होना ।

उ०—धन किसके पास है ? हाँ, इतना अवश्य है कि परमात्मा रोटियाँ चला रहा है ।

रोटियां सीधी करना—आजीविकाका साधन मिलना ।

उ०—किसी न-किसी प्रकार तुम तो अपनी रोटियाँ सीधी कर ही लेते हो ।

रोटीपर रोटी रखकर खाना—सुखसे जीवन बिताना ।

उ०—तुम लोग रोटीपर रोटी रखकर तो खा रहे हो, और क्या लेते हो ?

रोटी कमाना—आजीविका चलाना ।

उ०—मान लिया कि मोहन मन्दबुद्धि है, परन्तु अपनी रोटी तो कमा लेता है ।

रो बैठना, रो चुकना—खो देना ।

उ०—ले देकर एक मित्र था, तुम उसको भी रो बैठे ।

पहले दिलको रो चुके थे, जानपर अब आ बनी ।
मौत ही आयी मिजाजे—यार क्या बरहम हुआ ॥

(दिनकर)

(ल)

लंगर डालना—हिम्मत हारना।

उ०—तुमने तो मझधारमें ही लंगर डाल दिया; आगे कैसे काम चलेगा?

लंगोटीमें फाग खेलना—कंगालीमें आनन्द करना।

उ०—उनको कुछ न पूछो, वे तो लंगोटीमें फाग खेलते हैं।

लंगोटी बंधवा देना—निधन कर देना।

उ०—वकीलोंने कितने ही जमींदारोंका लंगोटी बँधवा दी है।

लंगोटी बांधना—त्याग-मूर्ति बन जाना।

उ०—जो व्यक्ति देश-हित लंगोटी बांधता है, उसकी प्रतिष्ठा होती है।

लकड़ियाँ खाना—मार पड़ना।

उ०—जब दो-चार लकड़ियाँ खा लेता है, तब जगदीशकी गर्मी शान्त होती है।

जहां उस लू की गरमी थी, न थी वाँ आगकी इज्जत।
मुक़ाबिल उसके हो जाती, तो आतिश लकड़ियां खाती॥

(आबरू)

लकीर पीटना—अवसर निकल जानेपर व्यर्थ प्रयत्न करना।

उ०—पहिले कार्यका परिणाम सोचा नहीं; अब लकीर क्या पीटते हो ?

लक्ष्मी प्रसन्न हो जाना—धन मिलना।

उ०—सुनते हैं जो व्यक्ति विष्णुकी पूजा करता है, उसपर लक्ष्मी प्रसन्न हो जाती हैं।

लग चलना—बेतकल्लुफ होना।

उ०—सुना है आजकल तुम शान्तिसे बहुत लग चले हो।

झिड़कके कहने लगे, लग चले बहुत अब तुम।
कभी जो भूलके उनसे कलाम मैंने किया॥

लगा रखना—सुरक्षित रखना; बचा रखना।

उ०—विमलाने सेर भर घी होलीके लिए लगा रखा था; उसको बिल्ली खा गयी।

जान भी हिज्रमें दे देते मगर हमने 'अमीर'।
किसी मौकेके लिए इसको लगा रखा है॥

लगाव होना
लगाव समझना } —प्रेम होना; प्रेम समझना।

उ०—यदि लगाव होगा, तुमसे होगा, मुझे उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

लगीमें लगना—दुःखमें दुःख होना।

उ०—लगीको बुझाना तो एक ओर, तुम तो वह कार्य करते हो जिससे लगीमें लगे।

लगीमें लगाना—दुःखितको दुःखित करना।

उ०—तुमको लज्जा नहीं आती कि जिसे तुम्हारी लगन लगी है, तुम उसीकी लगीमें लगाते हो।

लगी न रखना—कसर न छोड़ना।

उ०—किसी दिन अवसर मिलने दो, मैं भी लगी न रखूँगा।

लगी-लिपटी कहना—स्पष्ट बात न करना।

उ०—लग-लिपटकर अपना काम कर लो; उसका विश्वास न करो, वह सदा लगी-लिपटी कहता है।

लगी बुझना—दुःख दूर करना; शान्ति देना।

उ०—जिसे तुम्हारी लगी है, उसीकी लगी बुझाओ; मुझपर दया करो।

लग्गा लगना—उपाय निकालना।

उ०—प्रयत्न किये जाओ, कुछ न कुछ लग्गा अवश्य लगेगा।

लग्गा लगाना—आरम्भ करना।

उ०—आज कुछ आवश्यक कार्य आ पड़ा है; कलसे आपकी पुस्तकका लग्गा लगाऊंगा।

लगे हाथ करना—साथ-साथ करना।

उ०—यदि आप लगे हाथ एल-एल० बी० भी कर लेते, तो अच्छा होता।

लङ्का-काण्ड हो जाना—भारी मारपीट हो जाना।

उ०—आप कहाँ चले गये थे? यहाँ तो आज लङ्का-काण्ड हो गया।

लच्छा बंधना—सिलसिला बँधना।

उ०—कहाँ तक उत्तर दूँगा ? यहाँ तो प्रश्नोंका लच्छा बँधा हुआ है।

मैं इक सवाल करके पशेमान हो गया।
लच्छा बँधा हुआ है हजारों जवाबका॥

लज्जा भून खाना—निर्लज्ज होना।

उ०—लेकर देना नहीं जानते; तुमने तो लज्जा भी भून खायी।

लज्जाकी चादर उतार फेंकना—अत्यन्त निर्लज्ज हो जाना।

उ०—गुण्डा-पार्टीका ऐसा रङ्ग चढ़ा है कि उसने लज्जाकी चादर उतारकर फेंक दी है।

लटक जाना—ध्यान न रहना।

उ०—जिसका मन किसीकी अलकमें लटक जाता है, उसके दिलसे कहीं लटक जा सकती है ?

जाती रहे जुल्फोंकी लटक दिलसे हमारे।
अफ़सोस कुछ ऐसा हमें लटका नहीं आता॥

लटका आना—उपाय जानना।

उ०—तुम्हें कोई लटका आता हो, तो बताओ; हम तो इस पचड़ेमें लटके ही रह गये।

लटकाया जाना—फाँसीपर चढ़ाना।

उ०—उसने सम्पत्ति प्राप्त करनेकी लटकमें अपने पिताका वध किया था, इसलिए वह लटकाया गया है।

लटकाये क्यों गये इन्हें कैसी सज़ा हुई।
गेसू तो खुद बला थे, इन्हें क्या बला हुई॥

लटा-पटा उठा ले जाना—सब सामान उड़ा देना।

उ०—हमारा तो आज कोई दुष्ट सब लटा-पटा उठा ले गया।

लट्टू होना—मोहित होना।

उ०—वह तुमपर ऐसा लट्टू हुआ है कि दिनभर तुम्हारी गलीमें घूमता रहता है।

लड़कोंका खेल समझना—सुगम समझना।

उ०—यह लड़का भी तो दिल लगानेको लड़कोंका खेल समझता है।

लड़ाई मोल लेना—जान-बूझकर झगड़ा करना।

उ०—जो व्यक्ति लड़ाई मोल लेता है, उसको ही मूल्य चुकाना पड़ता है।

लण्ठका लण्ठ रह जाना—निरा मूर्ख रह जाना।

उ०—वह चार सालतक काशीमें पढ़ा, फिर भी लण्ठका लण्ठ ही रह गया।

लताड़ देना—बुरा-भला कहना।

उ०—मैंने तुम्हारा क्या लिया है जो मुझको लताड़ देते हो?

लताड़ खाना—बुरा-भला सुनना।

उ०—यदि वह तुम्हारे यहाँ पानी भी पीयेगा, तो घरपर लताड़ खायगा।

लताड़ पड़ना—धमकाया जाना।

उ०—यदि यहाँ बहुत देरतक खड़े रहोगे, तो घर चलकर तुमपर लताड़ पड़ेगी।

लत्ते लेना—बुरा-भला कहना।

उ०—यह कहांका न्याय है कि मोहनने कपड़ा फाड़ा और सोहनके लत्ते लेते हो?

लदवा देना—जेल भिजवा देना।

उ०—मैं सच कहता हूँ कि यदि उसने किसी दिन तुमको लदवा दिया, तो तुम्हारी बधिया बैठ जायगी।

लद जाना—पकड़ा जाना।

उ०—वह किसीका लटा-पटा उठा लाया था, इसलिए आज लद गया।

लपका पड़ना—बान पड़ जाना।

उ०—जबसे उसको मदिरा-पानका लपका पड़ा है, वह भट्टीकी ओर बगटुट दौड़ता है।

लपका-डुबकी करना—प्रश्नोत्तर करना।

उ०—मुझको आवश्यक कार्य है; मैं तुम्हारे साथ कबतक लपका-डुबकी करता रहूँगा?

लपेटमें आना—आपत्तिमें फंस जाना।

उ०—गया था बेचारा सुगढ़-भलाई लेने, आ गया लपेटमें।

लम्बी तानना—सो जाना।

उ०—एक खा-पीकर लम्बा हुआ और दूसरेने लम्बी तानी।

लम्बी सांस लेना—शोकातुर होना।

उ०—छोटेलालजी! छोटी-सी बातपर क्यों लम्बी साँस ले रहे हो?

लम्बी-चौड़ी हाँकना—व्यर्थ बातें करना।

उ०—वह छोटा-सा लड़का बड़ी लम्बी-चौड़ी हाँकता है।

लम्बे होना—भग जाना; चले जाना।

उ०— तुम बड़े विश्वास-घातक हो जी; उसको चौड़ेमें लुटवाकर आप लम्बे हो गये।

ललक-ललक कर देखना—उत्सुकतापूर्ण नेत्रोंसे देखना।

उ०—लल्लूराम! आज किसे ललक-ललककर देख रहे हो?

लल्ला-लोरी करना—टाल-मटोल करना।

उ०—उसके लत्ते न लूँ, तो क्या करूँ? वह दो महीनेसे लल्ला-लोरी कर रहा है।

लल्ला-लोरीमें आना—धोखेमें आना।

उ०—तुमको इतना समझाया था; फिर भी तुम उसकी लल्ला-लोरीमें आ गये, लल्ला!

लल्ला पढ़ना दद्दा न पढ़ना—लेना ही जानना देना न जानना।

उ०—तुमको रुपया देकर कौन आपत्ति मोल ले ? तुम तो लल्ला पढ़े हो, दद्दा तो पढ़े ही नहीं।

लल्लो-चप्पो करना
लल्लो-पत्तो करना } चिरौरी करना।

उ०—तुमको कुछ मिलता होगा, इसलिए कभी किसीकी लल्लो-चप्पो करते हो कभी किसी की।

लसटम-पसटम दिन काटना—दु:खसे निर्वाह करना।

उ०—उसके पास रुपया कहाँ ? वह बेचारा लसटम-पसटम दिन काट रहा है।

लहू-लुहान होना—रक्तमें लतपत होना।

उ०—तुम यहाँ फाग खेल रहे हो और तुम्हारा भाई वहाँ लहू-लूहान हो रहा है।

लहूमें हाथ रंगना—हनन करना।

उ०—जो किसीके लहूमें हाथ रँगता है, उसका मुँह काला हो जाता है।

लहू रोना—अत्यन्त दु:खित होना।

उ०—तुमने हँस-हँसकर हमारी गरदनपर छुरी चलायी थी, इसलिए सदा लहू रोओगे।

किसी बेकसने वक़्ते-ज़िबह हँसकर कर दिया नादिम।
लहू रोता रहेगा ख़ञ्जरे-जल्लाद मुद्दत तक॥
(दिनकर)

लहू-पसीना एक करना—जी-तोड़ परिश्रम करना।

उ०—जो व्यक्ति लहू-पसीना एक कर देता है, वह अवश्य सफल होता है।

लहू सूख जाना—अत्यन्त भयभीत हो जाना।

उ०—नकुलका मुँह लहूसे तर देखकर ब्राह्मणीका लहू सूख गया।

लहूके घूँट पीना—कड़ी चोट सहना।

उ०—मुझसे पूछो वह किस प्रकार जीता है,—गम खाता और लहूके घूँट पीता है।

सरे महफ़िल लहूके घूंट पीता हूँ मैं अय दिनकर।
उदूके हाथमे जब जामपर वो जाम लेते हैं॥
(दिनकर)

लहू लगाकर शहीदोंमें दाखिल होना—थोड़ा-सा कार्य करके नाम चाहना।

उ०—और तो और, उमराव भी लहू लगाकर शहीदोंमें दाखिल होता है।

लहू-चूसना—बहुत सताना।

उ०—जो व्यक्ति गरीबोंका लहू चूसता है, वह राक्षस कहलाता है।

लाखका घर ख़ाक करना—बड़ी सम्पत्तिका नाश कर देना।

उ०—तुम लोगोंकी कृपासे उसका लाखका घर ख़ाक हो गया है।

लाख मनका होना—बड़ा होना।

उ०—तुम मन लेकर छँटाक देना नहीं चाहते, तिसपर भी अपने विचारमें लाख मनके हो।

है फ़ैजसे विकार कि मेरी निगाहमें।
जिस शाख़में समर हैं वह है लाख मनकी शाख़॥
(ज़ौक़)

लाखों सुनाना—अधिक बुरा-भला कहना।

उ०—उससे तुम इसलिए डरते हो कि वह एक सुनकर लाखों सुनाता है।

लाखोंमें एक होना—अत्युत्तम होना।

उ०—वेदान्त शास्त्रके जाननेवाला यह साधु लाखोंमें एक है।

लाखोंमें चोट करना—बड़ी वीरता दिखाना।

उ०—तुम उसका मुकाबिला नहीं कर सकते; वह लाखोंमें चोट करता है।

लाग-लपेटकी बातें करना—अनिश्चित बातें कहना।

उ०—बड़े खेदकी बात है कि तुम अपने मित्रोंके साथ भी लाग-लपेटकी बातें करते हो।

लाग-लपेट रखना—शत्रुताका भाव रखना।

उ०—वह पुलिससे लाग-लपेट रखता था, इसलिए लपेटमें आ गया।

लाग रखना }
लाग होना } शत्रु होना।

उ०—जो तुमसे लगाव रखता है, तुम उससे लाग रखते हो। क्या इसीका नाम न्याय है?

लाग हो तो उसको हम समझें लगाव।
जब न हो कुछ भी तो धोखा खायें क्या॥

(ग़ालिब)

लागू होना—इच्छुक होना।

उ०—जिसको आज दिल देते हो, वह कल तुम्हारी जानका लागू होगा।

लाज रखना—मान-मर्यादा बचाना।

उ०—उसने मोहनकी इज्जत उतारनेमें कोई कसर न छोड़ी थी, परन्तु ईश्वरने उसकी लाज रख ली।

लाज खोना—अप्रतिष्ठित होना।

उ०—मेरी समझमें नहीं आता कि उसने लाज खोकर क्या पाया है।

लाठी चलना—लड़ाई हो जाना।

उ०—आज शिवनाथ और कश्मीरीलालमें लाठी चल गयी है।

लात मारना—तिरस्कार करना।

उ०—जो लड़का शिक्षाको लात मारता है, वह सिरपर हाथ धरकर रोता है।

लाद दिया जाना—जेल भेज दिया जाना।

उ०—कल उसने राजकीय अश्वशालासे एक घोड़ा चुराया था, इसलिए आज वह लाद दिया गया।

लारा देना—टालना।

उ०—वह दो महीनेसे लारा दे रहा है, रुपया देनेका नाम नहीं लेता।

लारा-लीरी करना—बहाना बनाना।

उ०—यदि मैं जानता कि तुम लारा-लीरी करोगे, तो एक पैसा भी उधार न देता।

लाल-पीला होना—क्रोध करना।

उ०—लाला कालूराम! लाल पीला होनेकी आवश्यकता नहीं, यह लो अपना रुपया।

लाल झंडी दिखाना—चलता हुआ कार्य बन्द करना।

उ०—लाल इमली-मिलके मजूरोंने मिलके लाल झण्डी दिखा दी।

लाल उगलना—सम्पत्तिशाली होना।

उ०—भारत भूमि, जिसके विरुद्ध मिस मेयोने विष उगला है, कभी लाल उगलती थी, और संसारकी नाक समझी जाती थी।

लासा लगाना—फँसाना।

उ०—वह किसी दिन ऐसा लासा लगायगा कि तुम फड़फड़ाते ही रह जाओगे।

लिये पड़ना—दुःखमें फँसना।

उ०—उनको कुछ-न-कुछ रोग लगा ही रहता है, ज्वरसे पीछा छूटा, तो पाँच दिनसे आँखें लिये पड़े हैं।

लीकपर पहिया चढ़ना—कार्य चालू होना।

उ०—जिस समय लीकपर तुम्हारा पहिया चढ़ जायगा, तुम्हारे सिरसे चिन्ताका भार उतर जायगा।

लीपा-पोती करना—बुराइयोंको छिपाना।

उ०—तुमने लीपा-पोती तो बहुत की, परन्तु कुछ प्रयोजन सिद्ध न हुआ।

लुटिया डबोना—काम बिगाड़ना।

उ०—वह प्रति दिन एक मटका पानी भरनेको प्रस्तुत हो गया था, परन्तु तुमने लुटिया डुबो दी।

लुटिया डबोना—साहस छोड़ देना।

उ०—अभी तो गंगा एक मीलकी दूरीपर है, तुम यहीं लुटिया डबोये देते हो।

दुकाँ बन्द करके रहा बैठ जो।
तो दी उसने बिलकुल ही लुटिया डबो॥

ले डालना—बुरा भला कहना।

उ०—मोहनका कुछ भी अपराध न था, परन्तु यादवके साथ तुमने उसे भी ले डाला।

लेनेके देने पड़ जाना—लाभकी जगह हानि होना।

उ०—मैंने कह दिया है कि यदि तुम वहाँ जाओगे, तो लेनेके देने पड़ जायंगे।

लेनेके देने पड़ जाना—संकटमय स्थितिमें पड़ना।

उ०—तुम्हें अपनी ही पड़ी हुई है, यहाँ लेनेके देने पड़ रहे हैं।

ले बैठना—चर्चा करना।

उ०—मैं अपनी राम-कहानी सुनाने गया था, परन्तु जब वह अपना किस्सा ले बैठा, तो मैं उठ खड़ा हुआ।

ले मरना—प्राप्त कर लेना।

उ०—तुम तो कुछ न कुछ ले मरे, परन्तु मैं व्यर्थ ही मारा गया।

ले मरना—फँसवा देना; आपत्तिमें डालना।

उ०—उसके साथ न जाओ क्योंकि वह स्वयं जायगा और तुमको भी ले मरेगा।

लोटन कबूतर हो जाना—तड़प उठना।

उ०—यदि तुम उसका सौन्दर्य देखोगे, तो लोटन कबूतर हो जाओगे।

लोट-पोट हो जाना—हर्षोत्फुल्ल होना।

उ०—यदि उस पुस्तकको पढ़ोगे, तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाओगे।

लोटा-लोटा फिरना—व्याकुल होना।

उ०—जो उसको आँख मटकाते देख लेता है, उसका दिल चाक हो जाता है और वह लोटा-लोटा फिरता है।

दुखतर कुम्हार की ने मटका के चश्म अपनी।
दिल चाककर दिया है फिरता हूँ लोटा लोटा॥

लोटे नमक डालना—एक दूसरेका साथ देनेकी प्रतिज्ञा करना।

उ०—यदि उन्होंने लोटे नमक डाल दिया है, तो तुमको मिरचें क्यों लगती हैं?

लोहा लेना—सामना करना।

उ०—वीर पुरुष वीरतापूर्वक लोहा लेते हैं और गालियाँ नहीं देते।

लोहा मानना—किसीकी योग्यता अथवा वीरताको स्वीकार करना।

उ०—संसारके समस्त अन्य देश भारतका लोहा मानते और इसको स्वर्ण भेंट देते थे।

लोहा बजना—तलवार चलना।

उ०—समर-भूमिमें लोहा बजता है; गाना-बजाना नहीं होता।

लोहेके चने चबाना—कठिन कार्य करना।

उ०—हम लोग दिन-रात लोहेके चने चबाते हैं, फिर भी पेट नहीं भरता।

लोहेकी छाती करना—दिलको कड़ा करना।

उ०—सुना है उसने हमारा लोहा लेनेके लिए लोहेकी छाती की है।

लौ लगाना—ध्यान लगाना।

उ०—परमात्मासे लौ लगाओ, वही बेड़ा पार लगायगा।

(व)

वकालत करना—किसीके पक्षमें बोलना।

उ०—तुम जो उसकी वकालत करते, कुछ मेहनताना अवश्य मिला होगा।

वक्र-दृष्टि करना—असन्तुष्ट होना।

उ०—तुमसे कुछ सहायताकी आशा थी, तुमने भी वक्रदृष्टि कर ली।

वक्षस्थल कूटना—अत्यन्त शोक करना।

उ०—न जाने आज विमला क्यों अपना वक्षस्थल कूट रही है।

वचन डालना—आज्ञा न माननी।

उ०—जो विद्यार्थी गुरुका वचन डालता है, वह बहुत दुःख उठाता है।

वचन तोड़ना—बात पूर्ण न करना।

उ०—जो व्यक्ति अपना वचन तोड़ता है, मैं उससे मित्रता जोड़ना नहीं चाहता।

वज्रपात होना—घोर आपत्ति आ पड़ना।

उ०—किसीको स्वप्नमें भी ध्यान न था कि आनन्दके समय ऐसा वज्रपात होगा।

वज्र नास्तिक बनना—कुमार्ग-गामी होना।

उ०—समयके फेरसे आजकल लोग वज्र नास्तिक बन रहे हैं।

वधिक-वीणाका मृग बनना—धोखेसे फँस जाना।

उ०—तुमको उन लोगोंके विषयमें सब कुछ बता दिया था, फिर भी तुम वधिक-वीणाके मृग बन गये।

वन-कुठार बनना—देश-द्रोही बनना।

उ०—तुमने वन-कुठार बनकर इस वनके अनेक सुन्दर एवं सफल वृक्ष काट डाले।

वामाङ्ग न आना—न मानना, वशीभूत न होना।

उ०—जबतक राम दाहिने न होगा, सीताराम वामाङ्ग न आयगा।

वर्षा कर देना—अधिक परिमाणमें देना।

उ०—जब उसके घर पुलिसवाले जाकर गरजते हैं, तो वह दूध-घीका वर्षा कर देता है।

वसन्तकी खबर न होना—अनभिज्ञ होना।

उ०—तुमको वसन्तकी भी खबर नहीं! वह देखो उसके मुँहपर वसन्त खिल रहा है।

वागाडम्बर करना—व्यर्थ बोलना।

उ०—दिगम्बर प्रसादजी! आप वागाडम्बर क्यों करते हैं? जो बात है, स्पष्ट कहिये।

वात प्रकुपित होना—विचारोंपर वश न रहना।

उ०—उसकी बातोंपर ध्यान न दीजिये; इस समय उसकी वात प्रकुपित हो रही है।

वार देना—न्योछावर करना।

उ०—ऐसे वस्त्र तो वीरसिंहकी माता उसपर वार देती है।

वारे-न्यारे होना—विजय प्राप्त होना।

उ०—हिम्मतसिंह इस वीरतासे लड़ा कि दो घण्टेमें ही वारे-न्यारे हो गये।

वारे-न्यारे करना—खूब लाभ उठाना।

उ०—इस बार तो तुमने तेलके व्यापारमें वारे-न्यारे कर डाले।

वालुकासे तेल निकालना—निरर्थक काम करना।

उ०—जो उसको तिल चबानेसे रोकता है; वह वालुकासे तेल निकालता है।

वाह-वाह होना—प्रशंसा होना।

उ०—आज तो सब जगह तुम्हारे मित्रकी वाह-वाह हो रही है।

वाह-वाह लूटना—यश प्राप्त करना।

उ०—कल कवि-सम्मेलनमें जगदीशने खूब वाह-वाह लूटी।

वाही-तबाही बकना—निरर्थक बातें करना।

उ०—जब वह वाही-तबाही बकता है और तुम वाह-वाह करते हो, तो वह फूला अंग नहीं समाता।

वितण्डावाद खड़ा कर देना—रुकावट डालना।

उ०—जब वह अपना कार्य करने बैठता है, तुम वितण्डावाद खड़ा कर देते हो।

विभीषण बनना—घरका भेदी बनकर छल करना।

उ०—वह तुमको रावण समझकर विभीषण बन गया है।

विषकी बेल बोना—हानिकारक कार्य करना।

उ०—बार-बार समझानेपर भी तुम विषकी बेल ही बो रहे हो।

विष उगलना—किसीके विरुद्ध बोलना।

उ०—सुना है उस काले सापने आज सभामें हमारे विरुद्ध बहुत विष उगला है।

विष चखना—हानिप्रद कार्य करना।

उ०—अमृतलाल जान बूझकर विष चखता है; इसलिए किसीको दोष नहीं दे सकता।

विषके घूँट पीना—कटुवचन सहना।

उ०—जो कोई तुम्हारे घर खाना खाता है वह विषके घूँट भी पीता है।

विषके घूँट पीना—कड़ी चोट सहना।

उ०—मोहनने कहा—"जब तुम शत्रुओंके साथ खाना खाते हो, तो मैं विषके घूँट पीता हूँ।"

विष खाना—जलना ; द्वेष करना।

उ०—यदि वह हमारे साथ हुक्का पीता है, तो तुम विष क्यों खाते हो ?

विषके घूँट पीते रहना—अपने विनाशके साधनमें लगे रहना।

उ०—जब मनुष्यकी धड़क खुल जाती है, तो वह विषके घूँट पीता रहता है।

वीरगति पाना—वीरतापूर्वक लड़कर मरना।

उ०—युरोपीय महासमरमें अनेक भारतीय वीरोंने वीर-गति पायी है।

वेद वाक्य समझना—प्रमाणित मानना।

उ०—वेदप्रकाश अपने पिताकी बातोंको वेद-वाक्य समझता है।

वैकुण्ठ वास होना—मरना।

उ०—पं० वैकुण्ठनाथ तिवारीका कल सायंकालके तीन बजे वैकुण्ठ वास हो गया।

वृहस्पति बन बैठना—ज्ञानाभिमानी होना।

उ०—केवल तीन महीने काशीमें रहकर वह वृहस्पति बन बैठा है।

(श)

शतमुखसे सराहना—अत्यधिक प्रशंसा करना।

उ०—अमेरिका निवासी स्वामी रामतीर्थको शतमुखसे सराहते हैं।

शत्रुताकी गन्ध आना—विरोधके लक्षण दिखायी देना।

उ०—मुझको उससे शत्रुताकी गन्ध आती थी, इसलिए मैं उसको अपना विरोधी समझता था।

शरीर-पात होना—मरना।

उ०—गत मास काशीमें स्वामी सदानन्द सरस्वतीका शरीर-पात हो गया था।

शरीरमें बिजली दौड़ना—उत्तेजित होना।

उ०—तुम्हारे मुखसे अपमान-जनक शब्द सुनते ही उनके शरीरमें बिजली दौड़ गयी।

शरीरमें आग लगना—प्रकुपित होना।

उ०—यदि कोई तुम्हारी सुराहीसे एक लोटा पानी ले लेता है, तो तुम्हारो शरीरमें आग लग जाती है।

शस्त्र रखवा लेना—पराजित करना।

उ०—तुम तो किसी गिनतीमें ही नहीं हो; वह तो अच्छे-अच्छोंके शस्त्र रखवा लेता है।

शस्त्र छोड़ देना—हार मान लेना।

उ०—उन लोगोंमें ले-देकर एक व्यक्ति लड़नेके योग्य समझा जाता था, उसने भी शस्त्र छोड़ दिये।

शस्त्र ढीले होना—साहस टूटना।

उ०—तुम ही तो एक आदमी थे, तुम्हारे ही शस्त्र ढीले हो गये; अब हम कमर बाँधकर क्या करेंगे ?

शस्त्र ढीले होना—शक्ति न रहना।

उ०—वृद्धावस्थामें प्रायः मनुष्यके शस्त्र ढीले हो जाते हैं।

शहद लगाकर चाटना—निरर्थक लिये फिरना।

उ०—मुझे इस पुस्तककी आवश्यकता नहीं, तुम इसको शहद लगाकर चाटो।

शह देना—भड़काना।

उ०—हमने तुम्हारा क्या ले लिया था जो तुम कल उसको हमारे विरुद्ध शह दे गये।

शान गाँठना—प्रभाव जमाना।

उ०—तुम मूर्खोंमें ही शान गाँठ सकते हो; यहाँ तुम्हारा कौड़ी नहीं उठती।

शान गंठना—प्रभाव जमना।

उ०—कल मोहनने ऐसी प्रबल युक्तियाँ दीं कि उसकी शान गँठ गया।

शान ढीली होना—अपमानित होना।

उ०—क्या वहाँ जानेमें तुम्हारी शान ढीली होती है जो दूसरोंको भेजते हो?

शान ढीली करना—अप्रतिष्ठित करना।

उ०—आज शान्तिने शारदाको सारी शान ढीली कर दी।

शिकञ्जेमें खींचना—आपत्तिमें डालना।

उ०—किसी दिन ऐसा शिकञ्जेमें खींचूंगा कि सब चौकड़ी भूल जाओगे।

शिकार हाथ लगना—आसामी मिलना।

उ०—क्यों, किशोरीलाल! आज तो बहुत दिनोंके बाद शिकार हाथ लगा है।

शिकार होना—मारा जाना।

उ०—जाड़ेके दिनोंमें कितने ही गरीब लोग शीतके शिकार हो जाते हैं।

शिकार होना—फन्देमें फँसना।

उ०—आये दिन कोई न कोई उस दुष्टका शिकार हो जाता है।

शिप्पा लड़ाना—गप्प करना।

उ०—उसको और काम ही क्या है? दिनभर बैठा हुआ शिप्पा लड़ाता रहता है।

शिरोधार्य करना—सादर स्वीकार करना ।

उ०—पण्डितजी ! आप हमारे गुरु हैं, इसलिए हम सब आपकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं ।

शिरोमणि कहलाना—सर्वोच्च होना ।

उ०—एक वह भी समय था जब भारत संसार शिरोमणि कहलाता था ।

शीशेमें उतारना—वशमें करना ।

उ०—सुनते हैं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने कुहक-बलसे परियोंको शीशेमें उतारते हैं ।

शीशेमें उतारना—सुन्दर बनना ।

उ०—चित्रकारने इस चित्रको ऐसा शीशेमें उतारा है कि देखनेवाला चकित हो जाता है ।

शेखी बघारना—अभिमानकी बातें करना ।

उ०—घरमें महीनों दालमें छौंक नहीं लगता, बाहर अमीरीकी शेखी बघारते फिरते हो ।

थे दो घड़ीसे शेख़जी शेख़ी बघारते ।
वह सारी शेखी उनकी झड़ी दो घड़ीके बाद ॥
(ज़ौक)

शेखी झड़ना—अभिमान मिटना ।

उ०—कुछ दिनोंसे उसे बहुत दिन लग गये थे; कल रात उसकी सारी शेखी झड़ गयी ।

शेखी झाड़ना—अभिमान मिटाना ।

उ०—किसी दिन ऐसे डण्डे लगाऊँगा कि उसकी सब शेखी झाड़ दूँगा।

शेर और बकरीका एक घाट पानी पीना—पूर्ण न्याय होना।

उ०—लोग कहते हैं कि अंगरेजी राज्यमे शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

शेर बनना—अकड़ दिखाना।

उ०—आज डण्डेके आगे भींगी बिल्ली बनते हो और उस दिन अपने घरपर शेर बन रहे थे।

शेरके मुंहमें हाथ डालना—भयंकर कार्य करना।

उ०—गीदड़को देखकर तो तुम दबाकर भागते हो और शेरके मुँहमें हाथ डालना चाहते हो।

शेषसे मणि लेना—जान-जोखिमका काम करना।

उ०—जो अपनी जान देनेको प्रस्तुत हो, वह शेषसे मणि लेनेकी चेष्टा करे।

श्रद्धांजलि देना—सम्मान करना।

उ०—उस दिन आर्य-समाज मन्दिरमें देहरादून निवासियोंने स्वामी श्रद्धानन्दको श्रद्धाञ्जलि दी।

श्राद्ध कर देना—विनाश करना।

उ०—श्राद्ध करना था तो अपने बाप-दादाका करते; तुमने उस गरीबका श्राद्ध क्यों कर दिया?

श्री गणेश करना—आरंभ करना।

उ०—आज मैं इस पुस्तकका श्रीगणेश करता हूँ।

———

(ष)

षड्रागमें पड़ना—बखेड़ेमें फँसना।

उ०—मुझे क्या बावले कुत्तेने काटा है जो इस षड्रागमें पड़ूँ ?

षड्भङ्ग बनना—अघोरी होना।

उ०—मैं उसके घरका पानी भी नहीं पी सकता; वह तो आजकल षड्भङ्ग बना हुआ है।

षड्यन्त्र रचना—छिपकर किसीके विरुद्ध कार्य करना।

उ०—सुना है वे हमारे विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रच रहे हैं।

षड्रस भोजन करना—आनन्द-पूर्वक रहना।

उ०—तुम तो षड्रस भोजन करते हो; यहाँ सूखी रोटी भी नहीं मिलती है।

षण्ढता दिखाना—भीरु बनना।

उ०—तुमको लज्जा नहीं आती ! मुसटण्ड होकर षण्ढता दिखाते हो।

षोडश वर्षमें पदार्पण करना—जवान होना।

उ०—कहते हैं कि षोडश वर्षमें पदार्पण करनेपर गधी भी अप्सरा हो जाती है, तुम तो मनुष्य हो।

षोडश श्रृङ्गार करना—खूब बनना-सँवरना।

उ०—आज कहाँकी तैयारी है जो षोडश श्रृङ्गार कर रहे हो?

षोडशोपचार होना—सब प्रकारसे आदर पाना।

उ०—षड्रस भोजन करते हो, सब जगह षोडशोपचार होता है और क्या इन्द्रका राज्य लोगे?

(स)

संसार-यात्रा समाप्त होना—मरना।

उ०—युवावस्थाके आरम्भमें ही उसकी संसार-यात्रा समाप्त हो गयी थी।

संसारसे बिदा करना—मार डालना।

उ०—चोरोंने घरमें घुसते ही लाला सन्तरामको संसारसे विदा कर दिया।

संसारसे बिदा होना—मर जाना।

उ०—शिवनाथ घरवालोंसे लड़कर संसारसे विदा हो गया।

संसारसे नाता तोड़ना—देहान्त होना।

उ०—जगदीशसे मित्रता जोड़कर नाथूसिंहने संसारसे नाता तोड़ दिया।

सङ्कल्प-विकल्पमें पड़ना—सोच-विचारमें फँस जाना।

उ०—जो होना था सो हो गया, अब व्यर्थ सङ्कल्प-विकल्प में क्यों पड़ते हो ?

सठिया जाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—पच्चीस सालकी लड़कीका विवाह सोलह सालके लड़के के साथ कर दिया; क्या वह सठिया गया है ?

सत्तू बांधके पीछे फिरना—बुरी तरह तङ्ग करना।

उ०—उसको चैनसे दो रोटी खाने दो; तुम सत्तू बाँधके उसके पीछे क्यों फिर रहे हो ?

सदाकी नींद सो जाना—मर जाना।

उ०—आज बेचारा सदानन्द भी सदाकी नींद सो गया।

सदाके लिये सुला देना—मार डालना।

उ०—यह डाकुओंका गांव है, इसलिए सदासुखसे कह दो कि जागता रहे, कहीं ऐसा न हो उसको कोई सदाके लिए सुला दे।

सनक सवार होना—बुद्धि विचलित होना।

उ०—क्या तुम्हें सनक सवार हुई है जो इस दङ्गई घोड़ेपर चढ़ते हो।

सन्नाटा छा जाना—नीरवता होना।

उ०—रात्रिका समय था, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, ऐसे समय वह घरसे निकला।

सन्नाटेमें आना—चुप हो जाना।

उ०—जब हेडमास्टर बेत लेकर क्लासमें पहुँचे, सब छात्र सन्नाटेमें आ गये।

सन्नाटेमें आना—भयभीत हो जाना।

उ०—सशस्त्र डाकुओंको देखकर गाँव वाले सन्नाटेमें आ गये।

सब गुड़ गोबर हो जाना—किया-कराया सब नष्ट हो जाना।

उ०—गोविन्दरामको कृपासे सब गुड़ गोबर हो गया।

सब धान बाईस पंसेरी करना—ऊँच-नीचका भेद न रखना।

उ०—जहाँ लोग सब धान बाईस पंसेरी करते हैं, वहाँ विद्वान् को न रहना चाहिए।

सब्ज बाग दिखाना—झूठी सहानुभूति प्रकट करना।

उ०—यह बात उचित नहीं है कि तुम बहार लूटो और हमको सब्ज बाग दिखाओ।

गैरोंको रोज होती है हासिल बहारे-वस्ल।
और हमको सब्ज बाग ही दिखलाये जाते हैं॥

समझमें न आना—कुछ महत्व न देना।

उ०—वह अपने आपको न जाने क्या समझता है कि कोई लेखक उसकी समझमें ही नहीं आता।

समय पड़ेपर काम आना—आपत्ति कालमें सहायक होना।

उ०—मित्र वही जो समय पड़ेपर काम आता है।

समाई करना—सहनशील होना।

उ०—तुम ही थे जो समाई कर गये; और कोई होता तो उसके पाँच-सात जमाता।

सर करना—बड़ा कार्य करना।

उ०—दूसरोंको हँसी न उड़ाओ, हम भी देखेंगे जब तुम कुछ सर करोगे।

सर करना—विजय प्राप्त करना ।

उ०—शिवाजीने सिंहगढ़ सर करके अपनी माताको प्रसन्न किया ।

सस्ते छूटना—थोड़ी-सी हानि उठाकर बच जाना ।

उ०—तुम तो फिर भी सस्ते ही छूट गये; आपत्तिमें तो बेचारा सन्तोषानन्द फँस गया ।

सस्ते गला छूटना—आपत्तिसे सहजमें ही बच जाना ।

उ०—चलो कुशल हो गयी, सस्ते गला छूटा; कहीं मैं न होता, तो लेनेके देने पड़ जाते ।

सांचेमें ढल जाना—प्रभावित हो जाना ।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वहाँ जाते ही सुन्दरलाल भी उनके साँचेमें ढल जायगा ।

सांचेमें ढालना—सुन्दर बनाना ।

उ०—श्यामसुन्दरको तो ब्रह्माने अवकाशके समय सांचेमें ढाला है ।

सांट लेना—अपने पक्षमें कर लेना ।

उ०—तुमको इतना भी पता नहीं है कि उन्होंने तुम्हारे सात साथियोंको सॉट लिया है ।

सांठ-गांठ होना—सम्बन्ध रखना ।

उ०—तुमसे उसकी कुछ साँठ-गाँठ अवश्य होगी, इसीलिए वह यहाँ बार-बार आता है ।

सांप-छछून्दरकी गति होना—असमञ्जसमें पड़ना ।

उ०—तुम मुरलीधरको अपने पास भी रखना नहीं चाहते, और उससे सम्बन्ध भी तोड़ना नहीं चाहते; तुम्हारी साँप-छछून्दर-की गति हो रही है।

सांपके बिलमें हाथ डालना—जान-जोखिमका कार्य करना।

उ०—रात्रिके समय चूहेकी आहट हानेसे बिल खोजने लगते हो, और साँपके बिलमें हाथ डालते हो।

सांप पालना—दुष्टकी रक्षा करना।

उ०—तुम साँप पालते हो, पालो, परन्तु वह किसी दिन तुम्हारे डङ्क अवश्य मारेगा।

सांप डस जाना—मर जाना।

उ०—जब पुकारनेपर कोई न बोला तो विमलाबाबूने कहा—"बार बार चिल्लानेपर भी कोई नहीं बोलता, क्या सबको साँप डस गया है?'

सांप सूँघ जाना—मर जाना।

उ०—"साधुराम! साधुराम! बोलते क्यों नहीं हो? क्या साँप सूँघ गया है?"

सांपको दूध पिलाना—दुष्टके साथ भलाई करना।

उ०—साँपको दूध तो पिलाते हो, परन्तु स्मरण रखो कि किसी दिन वह ऐसा डङ्क मारेगा कि पानी न मांगोगे।

सांस पूरे होना—जीवन समाप्त होना; मरना।

उ०—जो लोग ब्रह्मचर्यका पालन नहीं करते, उनके साँस अधूरी आयुमें ही पूरे हो जाते हैं।

सांस लेना—कुछ विश्राम करना।

उ०—वह प्रातःकालसे एक टांगसे फिर रहा है, उसको सांस तो लेने दो।

साक्ष्य देना—सिद्ध करना।

उ०—चित्तौड़की भूमि आज भी राणा प्रतापके गौरवका साक्ष्य दे रही है।

साका करना—आग्रह करना।

उ०—धर्मदासकी धर्मपत्नीने उसके साथ साका कर रखा है।

साख उठ जाना—प्रतिष्ठा न रहना।

उ०—गत वर्ष उसकी साख उठ गयी, इसलिए इस साल वह चुपचाप बैठा है।

साढ़सत्ती आना—बुरे दिन आना।

उ०—रामदीनपर ऐसी साढ़सत्ती आयी कि गरीबका सर्वस्व चला गया।

सात घाटका पानी पीना—अनेक प्रकारका अनुभव प्राप्त करना।

उ०—उसके साथ सात-पाँच न करो; उसने सात घाटका पानी पीया है।

सात परदोंमें छिपाकर रखना—बहुत सुरक्षित रखना।

उ०—उस पुस्तकको वह सात परदोंमें छिपाकर रखता है।

सात-पाँच करना—चालाकी करना।

उ०—रामनाथको सीधा समझकर तुम लोग उसके साथ
ात-पाँच करते हो।

सामने ठहर सकना—तुलना हो सकना।

उ०—तुम्हारे कालेजमें एक भी प्रोफेसर नहीं है जो पण्डित
ाधनके सामने ठहर सके।

सायेसे भागना—घृणा होना।

उ०—जो तुम्हारे सायेसे भागता है, तुम उसके पीछे अपना
ीर खपाते हो।

सारे जमानेकी बातें सुनना—संसार भरमें बुरा बनना।

उ०—जब तुम मेरी एक भी नहीं सुनते, तो मैं तुम्हारे लिए
रे जमानेकी बातें क्यों सुनूँ ?

सुनी एक भी बात तुमने न मेरी।
सुनी मैंने सारे ज़मानेकी बातें॥

(दाग़)

सिंहासन हिलना—प्रभाव पड़ना।

उ०—मेनकाके रूप और लावण्यको देखकर विश्वामित्रका
हासन हिल गया था।

सिंहासन हिलना—भयभीत होना।

उ०—प्रजा विद्रोही होनेसे राजाका सिंहासन हिल जाता है।

सिक्का बैठना—प्रभुत्व जमाना।

उ०—जिस समय मेरा सिक्का बैठ जायगा, मैं यहाँ किसी दुष्टको खड़ा न होने दूँगा।

सिक्का बैठाना—प्रभुत्व जमाना।

उ०—सोहनने सहारनपुरमें ऐसा सिक्का बैठाया है कि वहाँ उसके विरुद्ध कोई खड़ा नहीं होता।

सिक्का जमाना—धाक जमाना।

उ०—पञ्जाबमें राजा रणजीत सिंहने वह सिक्का जमाया था कि बड़े-बड़े राजा उनका लोहा मानने लगे थे।

सिट-पिटा जाना—घबरा उठना।

उ०—गत रात्रि जब किसीने सिट्टी बजाई, तो तुम सिट-पिटा गये।

सिट्टी-पिट्टी भूल जाना—घमण्ड दूर हो जाना।

उ०—किसी दिन उस दुष्टको ऐसा पीटूँगा कि वह सब सिट्टी-पिट्टी भूल जायगा।

सितम ढाना—कठिन दुःख देना।

उ०—वह तुमपर इसलिए सितम ढाता है कि तुम सितम उठाते हो।

सितारा चमकना—भाग्यशाली होना।

उ०—सूर्य प्रसाद तुमको पुरुषार्थमें लगा रहना चाहिये किसी दिन तुम्हारा सितारा भी चमकेगा।

सिमट जाना—लज्जा करना।

उ०—सुमेरचन्द ! खुलकर बैठो, तुम तो सिमटे जाते हो।

सिर-आंखोंपर बैठाना—बहुत सम्मान करना।

उ०—वह हमारे अध्यापक हैं, हम उनको सिर-आँखोंपर बैठाते हैं।

सिर-आंखोंपर बैठाना—प्रेम करना।

उ०—मैंने सोहनको सिर-आँखोंपर बैठाया, इसलिए मोहन उठकर चल दिया।

सिर आ पड़ना—आपत्ति आना।

उ०—जब किसीके सिर आ पड़ती है, भुगतनी ही पड़ती है।

सिर उठाकर चलना—अभिमानके साथ चलना।

उ०—जिस आदमीके हाथमें चार पैसे होते हैं, वह प्रायः सिर उठाकर चलता है।

सिर उठाना—उपद्रव खड़ा करना।

उ०—यदि फिर कभी तुमने सिर उठाया, तो मारे जाओगे।

सिर उठाना—विद्रोह करना।

उ०—जब स्पेनकी प्रजाने सिर उठाया, राजाके पाँव उखड़ गये।

सिर उठाना—प्रतिष्ठाके साथ खड़ा होना।

उ०—उसने हमारा रुपया अबतक नहीं दिया है, वह सिर कैसे उठा सकता है ?

सिर उठाना—रोगसे छुटकारा पाना।

उ०—उसने हालमें ही ज्वरसे सिर उठाया है, अभीतक उसके पाँवोंमें शक्ति नहीं आयी है।

सिर ऊँचा होना—प्रतिष्ठित होना।

उ०—उस नीचको बकने दो; तुम अपने परिश्रममें लगे रहो, एक दिन तुम्हारा सिर ऊँचा होगा।

सिर कटना—बहुत कष्ट होना।

उ०—काम करते तुम्हारा सिर कटता है, परन्तु खानेको सदा प्रस्तुत रहते हो।

सिर खुजलाना—मार खानेके लक्षण दिखायी देना।

उ०—क्या तुम्हारा सिर खुजलाता है जो उससे छेड़-छाड़ करते हो?

सिर खपाना—मस्तिष्कको अधिक प्रयुक्त करना।

उ०—तुम्हारी समझ खाक नहीं आता, मैं कहाँतक अपना सिर खपाऊँ?

सिर चढ़ाना—धृष्ट बनाना।

उ०—तुमने ही उसको सिर चढ़ाया था, यदि उसने तुम्हारी पगड़ी उतार ली, तो आश्चर्य क्या है?

सिर चढ़ना—ढीठ बनना।

उ०—यह इतना सिर चढ़ गया है कि किसी बड़े आदमीको देखकर भी खाटसे नीचे नहीं उतरता।

सिर चढ़ना—सत्कार पाना।

उ०—बेल-पत्रको साधारण पत्र न समझो; यह महादेवके सिर चढ़ता है।

सिर झुकाना—सम्मान करना।

उ०—विद्वान्के आगे छोटे-बड़े सभी सिर झुकाते हैं।

सिर झुकाना—प्रणाम करना।

उ०—सीताराम प्रातःकाल उठकर गुरुके चरणोंमें सिर झुकाता है।

सिर झुकाना—बड़प्पन स्वीकार करना।

उ०—दिखला दूँगा एक दिन तुम भी उसके आगे सिर झुकाओगे।

सिर झुकाना—लज्जित होना।

उ०—जब झगड़ूमलसे कुछ उत्तर न बना, तो उसने सिर झुका लिया।

सिर डालना—इच्छाके विरुद्ध सौंपना।

उ०—यह बखेड़ा मेरे सिर क्यों डालते हो? मैं कदापि करनेवाला नहीं हूँ।

सिर देना—बलिदान करना।

उ०—महापुरुष धर्मपर सिर देते और चिरस्थायी यश लेते हैं।

सिर धुनना—पश्चात्ताप करना।

उ०—अवसरपर तो हाथ-पाँव नहीं हिलाते, बादमें सिर धुनते हो, इससे क्या लाभ है?

सिर नीचा होना—निन्दित होना।

उ०—उच्च कुलमें जन्म लेकर यदि तुम्हारा सिर नीचा होता है, तो बड़ी लज्जाकी बात है।

सिर पकड़कर रोना—बहुत पछताना।

उ०—परीक्षाके केवल दो मास और है; यदि तुमने इस समय भी कुछ हाथ-पाँव न हिलाये, तो सिर पकड़कर रोओगे।

वो अंजामको रोयेगा सिर पकड़कर।
नहीं इसमें धोखा खुदा जानता है॥

सिर पटकना—जातोड़ प्रयत्न करना; कठिन उद्योग करना।

उ०—चाहे तुम कितना ही सिर पटको, वह कदापि सन्मार्ग-पर नहीं आयेगा।

सिर पटकता हूँ मैं करवट नहीं लेती ग़ाफ़िल।
पाँव फैलाये हुए सोती है क़िस्मत मेरी॥

सिर पटकना—ऊपर डालना।

उ०—यह काम मोहनके करनेका था; परन्तु उसने मेरे सिर पटक दिया।

सिर पड़ना—नाम लगना।

उ०—यदि उन लोगोंके साथ उठना-बैठना रखोगे, तो मैं सच कहता हूँ कि, करेगा कोई और सिर पड़ेगी तुम्हारे।

सिर पड़ी बजाना—आई आपत्तिको सहना।

उ०—मनुष्यको जब कोई उपाय नहीं मिलता, तो सिर पड़ी बजानी ही पड़ती है।

सिर पत्थरपर पटकना—व्याकुल होना।

उ०—वह मनुष्य नहीं है, पत्थर है; उसके लिए तुम सिर पत्थरपर क्यों पटकते हो ?

बुलबुलका आशियाँ है कहीं बालो-पर कहीं।
पत्थर पे बाग़बान पटकता है सर कहीं॥
(मोर)

सिरपर आना——समीप आना।

उ०—परीक्षा सिरपर आ गयी है; आप अभी तक हाथपर हाथ धरे बैठे हैं।

सिरपर उल्लू बोलना—बुरे दिन आना।

उ०—उल्लू! उनका उल्लू सीधा हो रहा है, परन्तु तुम्हारे सिरपर उल्लू बोल रहा है।

सिरपर खून लेना—हनन करना।

उ०—उस ग़रीबने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम उसका खून अपने सिरपर लेते हो ?

सिरपर से रास्ता कर लेना—बहुत तङ्ग करना।

उ०—अपने घरका रास्ता नापो; तुमने बहुत सिरपरसे रास्ता कर लिया है।

सिरपर मौत नाचना—मृत्युका समीप आ जाना।

उ०—तुम्हारी उछल-कूदसे विदित होता है कि तुम्हारे सिर-पर मौत नाच रही है।

सिरपर चढ़कर बोलना—स्वीकार कर लेना।

उ०—याद रखो उसका खून तुम्हारे सिरपर चढ़कर बोलेगा।

सिरपर चढ़ाना—आदत बिगाड़ना।

उ०—जिसने तुम्हें सिरपर चढ़ाया है, उसीका सिर खाओ, मुझे तङ्ग न करो।

सिरपर हाथ रखना—सहायक होना।

उ०—मैं क्या जानता था कि वह ऐसा दुष्ट निकलेगा; मैंने तो दीन समझकर ही उसके सिरपर हाथ रखा था।

सिरपर खून सवार होना—जान लेनेपर उतारू होना।

उ०—वह समझानेसे न मानेगा क्योंकि उसके सिरपर खून सवार है।

सिरपर भूत सवार होना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

उ०—वह पिशाच कदापि न मानेगा क्योंकि उसके सिरपर भूत सवार है।

सिरपर हाथ धरकर रोना—बहुत पछताना।

उ०—जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कार्य करता है, वह सिरपर हाथ धरकर रोता है।

सिरपर हाथ धरकर रोना—दुःखित होना।

उ०—जो हँस-हँसकर किसीका दिल दुखाता है, वह सिरपर हाथ धरकर रोता है।

अय 'ज़ौक़' वक्त नाले के रखले जिगर पे हाथ।
वरना जिगरको रोयेगा तू धरके सर पे हाथ॥
(ज़ौक़)

सिरपरसे तिनका उतारना—बोझ हलका करना।

उ०—तुमने उसके सिरपरसे तिनका उतारकर बड़ा भारी अहसान चढ़ाया है।

सिरपरसे तिनका उतारना—थोड़ा उपकार करना।

उ०—तुमने मेरे सिरसे तिनका क्या उतारा, मैं तो तुम्हारे अहसानसे दब गया।

सिरपर खड़ा होना—बहुत समीप आना।

उ०—परीक्षा सिरपर खड़ी है और वह अभीतक चुपचाप बैठा हुआ है।

है इम्तिहां सिरपर खड़ा, मेहनत करो, मेहनत करो।
बाँधो कमर, बैठे हो क्या, मेहनत करो, मेहनत करो॥

सिरपर खड़ा होना—तङ्ग करना।

उ०—मुझे लालाको रुपया देना है वह प्रति दिन प्रातःकाल आकर सिरपर खड़ा हो जाता है।

सिरपरसे हाथ उठ जाना—निस्सहाय रह जाना (किसीके मरनेसे)

उ०—वह केवल पाँच वर्षका था जब उसके सिरपरसे चचाका हाथ उठ गया।

सिरपर कोई न होना—अनाथ होना।

उ०—जिसके सिरपर कोई नहीं होता, उसकी रक्षा ईश्वर करता है।

सिरपर लेना—ज़िम्मे लेना।

उ०—उसके मित्र होकर जब तुम सहायता नहीं देते, तो मैं इस बखेड़ेको अपने सिरपर क्यों लूँ?

* * * *

सिरपर आ पहुँचना—अत्यन्त समीप आ जाना।

उ०—हाथमें एक पैसा नहीं, शुल्क भेजनेका समय सिरपर आ पहुँचा; समझमें नहीं आता कि क्या करूँ।

सिर-पैरकी खबर न होना—बिलकुल अनभिज्ञ होना।

उ०—तुमको सिर-पैरकी तो खबर नहीं है और दूसरोंको उपाय बताते फिरते हो।

सिर फिर जाना—पागल हो जाना।

उ०—क्या मेरा सिर फिर गया है जो निष्प्रयोजन किसीके लिए पांव ताड़ता फिरूँ?

सुना करते हैं छेड़कर गालियाँ हम।
वगरना कोई सिर फिरा है किसीका॥

सिर-फुटव्वल करना—मार-पीट करना।

उ०—सीतारामको समझा दो कि व्यर्थ सिर-फुटव्वल करनेसे कुछ लाभ न होगा।

सिर मढ़ना—इच्छा विरुद्ध सौंपना।

उ०—मैंने तुमसे बार-बार कह दिया है कि मुझे आजकल अवकाश नहीं है; फिर इस बखेड़ेको मेरे सिर क्यों मढ़ते हो?

सिर मारना—बहुत प्रयत्न करना।

उ०—मैं आज प्रातःकालके सात बजेसे सिर मार रहा हूँ परन्तु कुछ समझमें नहीं आता है।

सिर मारना—वापस करना।

उ०—यह सड़ा हुआ गुड़ जिससे लाये हो, उसीके सिर मारो।

सिर मुंडवाना—ठगा-जाना।

उ०—इसका मूल्य केवल एक रुपया है, तुम, न जाने, कहाँ सिर मुँडवाकर आये हो।

सिर मुंडाते ही ओले पड़ना—कार्य आरम्भ करते ही हानि उठाना।

उ०—धानके व्यापारमें तुमको कुछ-न-कुछ लाभ तो हुआ, यहाँ तो सिर मुंडाते ही ओले पड़े।

सिर मूंडना—ठगना।

उ०—उस व्यक्तिके विषयमें तुम्हारा क्या मत है जो दूसरों-का सिर मूंडता और अपना पेट पालता है?

सिरमौर बनना—सर्वमान्य होना।

उ०—अपने बाहुबलसे थोड़े दिनोंमें ही वह राजाओंका सिरमौर बन गया।

सिरसे कफन बाँधना—मरनेको प्रस्तुत हो जाना।

उ०—जो तुम हमारे वधपर कमर कसते हो, तो हम भी सिरसे कफन बाँधते हैं।

सिरसे उतारकर धर देना—निर्लज्ज हो जाना।

उ०—जो व्यक्ति सिरसे उतारकर धर देता है, उसपर किसी-के कहने-सुननेका प्रभाव नहीं पड़ता।

सिरसे बोझ उतरना—कार्य समाप्त होना।

उ०—मुझे यही चिन्ता बनी रहती है कि कब सिरसे बोझ उतरेगा।

सिरहानेका सांप जानना—भयङ्कर शत्रु समझना।

उ०—पहली बातें भूल जाओ; अब तुम मुझको सिरहानेका साँप जानो।

माई एहा पूतजण जेहा राणा प्रताप।
अकबर सूतो औदके जाण सिराणे साँप॥

(पृथ्वीराज)

सिरहाने बैठाना—सम्मान करना; आदर करना।

उ०—पं० तपोधन शर्माको इस गाँवके सब लोग सिरहाने बैठाते हैं।

सिर हिला देना—इनकार कर देना।

उ०—समयकी गति देखिये कि जिस किसीके पास भी वह सहायता लेने गया, उसीने सिर हिला दिया।

सिर होना—तङ्ग करना।

उ०—जिसने पुस्तक उठायी, उसको तो कुछ कहते नहीं, और मेरे सिर होते हो।

सींग समाना—निभना।

उ०—बछियाके बाप! जहाँ तुम्हारे सींग समाएँ वहाँ जाओ, मुझपर दया करो।

सींग कटाकर बछड़ोंमें मिलना—अधिक आयु होनेपर बालोचित कार्य करना।

उ०—उसकी कुछ मत पूछो, वह तो सींग कटाकर बछड़ोंमें मिलता है।

सीधा बनाना—ठीक मार्गपर लाना।

उ०—आपके पुत्रको सीधा बनाना बड़ी टेढ़ी खीर है।

सीधा बनाना—घमण्ड दूर करना।

उ०—किसी दिन उसको ऐसा सीधा बनाऊँगा कि सब टेढ़ी चाल चलना भूल जायगा।

सीधा होना—ठीक होना।

उ०—कोई ऐसा साधन बतलाइये जिससे वह सीधा हो जाय।

सीधा हो जाना—प्रस्तुत हो जाना।

उ०—तुम जरा सीधे हो जाओ, वह इधरका आना भी भूल जायगा।

सीधी कहना—स्पष्ट बोलना।

उ०—कोई बुरा माने चाहे भला; मैं सदा सीधी कहा करता हूं।

सीधी नजरसे देखना—भद्रता पूर्वक व्यवहार करना।

उ०—संसारमें सीधे आदमीको कोई सीधी नजरसे नहीं देखता।

सीधी सुनाना—डाँट-डपट दिखाना।

उ०—यदि वह फिर तुम्हारे पास आये, तो सीधी सुनाओ।

सीधे मुंह बात न करना—अभिमान होना।

उ०—उसको मुँह लगानेका फल यह हुआ कि अब वह सीधे मुँह बात नहीं करता।

सीधे मुंह बात न करना—बेमुरौवत होना।

उ०—मैं जानता हूँ कि स्वार्थ निकलनेपर तुम सीधे मुँह बात न करोगे।

सुईका भाला बनाना—थोड़ी सी बातको अधिक बढ़ा देना।

उ०—यह क्या कम आश्चर्यकी बात है कि तुम सूईका भाला बना देते हो।

सुईके नाकेसे निकालना—अधिक कष्ट देना।

उ०—तुम तो आदमीको सूईके नाकेसे निकालते हो।

सुखकी नींद सोना—निश्चित रहना।

उ०—तुम्हें दुःख किस बातका है? आनन्दसे खाते और सुखकी नींद सोते हो।

सुथराव करना—संहार करना।

उ०—उस एक वीरने संग्राम-भूमिमें अनेक शत्रुओंका सुथराव कर दिया।

सुधाका विष बनना—लाभदायक वस्तुका हानिप्रद होना।

उ०—जब मनुष्यके बुरे दिन आते है, सुधा विष बन जाती है।

सुरखावका पर लगना—विशेषता होना।

उ०—सुरेन्द्रके कौन सा सुरखावका पर लगा हुआ है जो उसे मन्त्री बनाया गया है।

सुरमा बना डालना—बहुत बारीक पीसना।

उ०—तुमने तो रगड़ते-रगड़ते इसको सुरमा बना डाला है।

सुरमा बना डालना—बहुत मारना।

उ०—मोहनने आज यादवका सुरमा बना डाला है।

सुला देना—मार डालना।

उ०—जबतक जागता रहा, कोई उसके पास नहीं आया, परन्तु आँख लगते ही किसीने उसको सुला दिया।

सुहाग लुट जाना—विधवा हो जाना।

उ०—यारोपीय महासमरमें अनेक स्त्रियोंका सुहाग लुट गया।

सूकरोंके आगे मोती फेंकना—दुष्टोंके साथ भलाई करना, दुष्टोंको सदुपदेश देना।

उ०—पण्डितजी! आप सूकरोंके आगे मोती फेंकते हैं, इसका फल अच्छा न होगा।

सूखकर कांटा हो जाना—अत्यन्त दुर्बल हो जाना।

उ०—सुक्खनलाल किसी गुलके गममें सूखकर काँटा हो गया है।

सूखकर तिनका हो जाना—अस्थिचर्मावशिष्ट हो जाना।

उ०—वह लड़का, जो तन-तनकर चला करता था, आजकल सूखकर तिनका हो गया है।

सूखा जवाब देना—टाल देना।

उ०—सोहन उसके पास सहायताके लिए गया था परन्तु उसने सूखा जवाब दे दिया।

सूखा टालना—कुछ न देना।

उ०—जो कोई तुम्हारे पास कुछ पानेकी आशासे आता है, तुम उसे सूखा टाल देते हो।

सूखी चिनाई करना—घी अथवा जलके बिना भोजन करना।

(स)

सूखे घाट उतरना—टाल देना, कुछ न देना।

उ०—यह बड़ी लज्जाकी बात है कि तुम बहती गङ्गामें किसीको सूखे घाट उतारते हो।

सूतके बिनौले हो जाना—अधिक हानि पहुँचना।

उ०—तुम्हें अपनी ही पड़ी है, यहाँ सूतके बिनौले हो गये।

सूर्यको दीपक दिखाना—विश्वविख्यात व्यक्तिका परिचय देना।

उ०—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरको संसार जानता है; तुम सूर्यको दीपक क्यों दिखाते हो?

सूलीपरकी रोटी खाना—जोखिममें जान डालकर आजीविका करना।

उ०—संसारमें सैनिक सूलीपरकी रोटी खाते हैं।

सूत्र पात होना—आरम्भ होना।

उ०—इसी घटनासे बप्पाके सौभाग्यका सूत्र-पात हुआ।

सैकड़ों घड़े पानी पड़ जाना—अत्यन्त लज्जित होना।

उ०—जब मैंने यमुना-पुलिनकी घटनाकी पोल खोली, उसपर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया।

सैकड़ों कुओंका पानी पीना—अनुभवी होना।

उ०—तुम सुरेन्द्रको साधारण व्यक्ति न समझो; उसने सैकड़ों कुओंका पानी पीया है।

सोकर खोना—असावधान होकर कार्य बिगाड़ना।

उ०—यह स्वर्ण-अवसर तुमने सोकर खो दिया; अब जागनेसे क्या होता है।

पौढ़ी हती पलँगा पर मैं निसि ज्ञान-रु ध्यान पिया मन लाये।
लागि गयी पलकें पल सो पल लागत ही पलमें पिय आये॥
ज्योंहि उठी उनके मिलिवे कहँ जागि परी पिय पास न पाये।
'मीरन' और तो सोयके खोवत मैं सखि प्रीतम जागि गँवाये॥

(मीरन)

सो जाना—असावधान हो जाना।

उ०—जो व्यक्ति अवसरपर सो जाता है, वह जागनेपर बहुत हाथ मलता है।

अभी क्या थे क्या हो गये तुम।
अभी जागते थे अभी सो गये तुम॥

(हाली)

सोता सिंह जगाना—बलवानसे छेड़छाड़ करना।

उ०—जो व्यक्ति सोता सिंह जगाता है, वह अवश्य हानि उठाता है।

सोते सांपको जगाना—शान्त शत्रुसे छेड़-छाड़ करना।

उ०—सतीशचन्द्र! अब तुम्हारी कुशल नहीं, क्योंकि तुमने सोते साँपको जगाया है।

सोनेकी चिड़िया हाथसे निकलना—प्राप्तिका मार्ग बन्द होना, किसी मालदार आसामीका काबूसे निकलना।

उ०—अब फड़फड़ानेसे कुछ नहीं होता ; सोनेकी चिड़िया हाथसे निकल गयी।

सोनेकी चिड़िया फँसाना—मालदार व्यक्तिपर काबू पाना।

उ०—हमसे न उड़ो ; हम जानते हैं तुमने सोनेकी चिड़िया फँसायी है।

सोनेकी चिड़िया मिल जाना—धनिक व्यक्तिसे मैत्री हो जाना।

उ०—तुमको तो सोनेकी चिड़िया मिल गयी है, अब यावज्जीवन मौज उड़ाओ।

सोनेमें सुगन्ध हो जाना—गुणाधिक्य होना।

उ०—पं० रामानन्द द्विवेदीकी सरलता सोनेमें सुगन्ध हो गयी।

सोनेके कौर खाना—उत्तम भोजन करना; सम्पत्तिशाली होना।

उ०—तुम तो सोनेके कौर खाते हो, और यहाँ तो कोदों भी नहीं मिलता है।

सो-सोकर जागना—भूल-भूलकर याद आना।

उ०—सोहन ! तुम सो-सोकर जागते हो ; जो कुछ मँगाना है एक बार बतला दो।

सौ जानसे मुग्ध होना—अत्यधिक मोहित होना।

उ०—तुम उसकी एक भी नहीं सुनते और वह तुमपर सौ जानसे मुग्ध है।

सौ जानसे मरना—अत्यधिक प्रेम करना।

उ०—वह तुमपर सौ जानसे मरता है और मैं तुम्हें देख कर जीता हूं।

सौ बातें सुनाना—बहुत बुरा-भला कहना।

उ०—जो व्यक्ति तुमको सौ बातें सुनाता है, उससे बात करते तुम्हें लज्जा नहीं आती।

फिर तूने 'अमीर' उससे की बात।
सौ बातें जो अभी सुना चुका है॥
(अमीर)

स्वप्नमें भी ध्यान न आना—सर्वथा भूल जाना।

उ०—जिस पर तुम सौ जानसे मरते थे, उसका तुमको अब स्वप्नमें भी ध्यान नहीं आता।

स्वप्न हो जाना—मिट जाना।

उ०—पिताके मरते ही सुरेन्द्रका सब सुख स्वप्न हो गया।

स्वरमें स्वर मिलाना—चिरौरी करना।

उ०—मोहनको वही आदमी अच्छा लगता है, जो उसके स्वरमें स्वर मिलाता है।

स्वर्गका मार्ग दिखाना—जानसे मारना।

उ०—यह तुमने बहुत ही शुभ कार्य किया जो उस नारकीय जीवको स्वर्गका मार्ग दिखाया।

स्वर्गवास होना—मर जाना।

उ०—ऋषिकेशके समीप स्वर्ग-आश्रममें स्वामी सर्वदानन्दका स्वर्गवास हो गया।

स्वर्गारोहण होना—देहान्त होना।

उ०—श्रावण शुक्ला सप्तमी सं० १६८० को गोस्वामी तुलसी-दासका स्वर्गारोहण हुआ।

स्वाङ्ग रचना—कपट-जाल फैलाना।

उ०—स्वार्थी लोग स्वार्थ-सिद्धिके लिए अनेक प्रकारके स्वांग रचते हैं।

स्वाहा करना—नष्ट करना।

उ०—पिताके स्वर्गवासके उपरान्त सुरेन्द्रने सब सम्पत्ति स्वाहा कर दी।

(ह)

हँडियां चढ़ जाना—प्राप्ति होना।

उ०—तुमको किसीके लाभालाभसे क्या प्रयोजन ? तुम्हारी हंडिया तो चढ़ ही जायगी।

हँस-खेल कर मारना—प्रेम दिखाकर सताना।

उ०—वेश्याएं अपने मरने वालोंको हँस-खेल कर मारती हैं।

छोटी-मोटी कामिनी सारी विषकी बेल।
बैरी मारे दांवसे ये मारें हँस-खेल॥

(कबीर)

हक्का-बक्का-रह जाना—विस्मित हो जाना।

उ०—जब कसबी बनजारेने सोरठको अपने टाँडेमें न पाया, तो वह हक्का-बक्का रह गया।

हजामत बना देना—ठग लेना।

उ—सुनते हैं कल उस धूर्त्तराजने तुम्हारी हजामत भी बना दी।

हजार सुनाना—बहुत बुरा भला कहना।

उ०—उसको जरा छेड़ कर देखो, वह एकको हजार सुनायेगा।

हट्टा-कट्टा बन जाना—दृढ़ हो जाना।

उ०—च्यवन प्राशके सेवनसे चमनलाल थोड़े दिनोंमें ही हट्टा-कट्टा बन गया है।

हठ-धरमी पर उतरना—झूठा आग्रह करना।

उ०—वह साधारण बात पर भी हठ-धरमी पर उतर आता है।

हड्डियाँ निकल आना—अत्यन्त दुर्बल हो जाना।

उ०—यादवके शरीरमें ऐसा रोग घुसा है कि थोड़े दिनोंमें ही उसकी हड्डियां निकल आयी हैं।

हड़-बड़ा उठना—घबरा जाना।

उ०—वह अपने कमरेमें बैठा हुआ कुछ सोच रहा था; मेरी आवाज सुनते ही हड़-बड़ा उठा।

हड़प लेना—बरजोरी अपना बना लेना।

उ०—तुम मोहनको बड़ा सज्जन बताते थे; उसने तो मेरी पुस्तक ही हड़प ली।

हड़ताल लगाना—मिटाना, रद्द करना।

उ०—आजकलके, नवयुवक प्राचीन वैज्ञानिक सिद्धान्तोंपर भी हड़ताल लगा रहे हैं।

हत्थे चढ़ना—अधिकारमें आ जाना, काबूमें आ जाना।

उ०—जिस दिन भी वह मेरे हत्थे चढ़ेगा, उसका सारा नशा उतार दूंगा।

> एकसे एक हसीनोंमें हैं अच्छा लेकिन।
> हत्थे चढ़ जाय जो अपने वही माल अच्छा है॥
>
> (अमीर)

हथियार रख देना—साहस छोड़ देना।

उ०—आगे चल कर तुमसे क्या आशा की जा सकती है जब तुमने अभीसे हथियार रख दिये।

हथियार उठाना—लड़ाई करना।

उ०—मैंने निश्चय कर लिया है कि यदि वह मुझे ललकारेगा, तो मैं अवश्य हथियार उठाऊँगा।

हथियार उठाना—मुकाबिला करना।

उ० यदि तुम उसके विरुद्ध हथियार उठाओगे, तो तुम्हारा आवा बैठ जायगा।

हथेलीपर सरसों जमाना—चालाकी करना।

उ०—उसको सीधा-सादा न समझो; वह हथेलीपर सरसों जमाता है।

हथेलीपर जान लिये फिरना—मरनेको प्रस्तुत रहना।

उ०—वह तुम्हारी धमकियोंको क्या समझता है? वह तो हथेलीपर जान लिये फिरता है।

हरा होना—प्रसन्न होना।

उ०—अपने परममित्र हरधनको देखकर हर प्रसाद हरा हो जाता है।

हरा होना—स्वस्थ होना।

उ०—हरदत्तको ज्वरने सुखा कर काँटा बना दिया था; वह दो महीनेसे हरा हुआ है।

हराम होना—निषिद्ध होना, बन्द होना।

उ०—जबसे वह यहां आया है, उसका खाना-पीना हराम हो रहा है।

हरी-हरी चरना—आनन्द करना।

उ०—अभी तक तो हरी-हरी चर रहे हो; अब कमाना पड़ेगा, आटे-दालका भाव मालूम हो जायगा।

हरी-हरी घास दिखाना—लालच देना।

उ०—केवल तुम्हारे जैसे पशुओंको ही वह हरी-हरी घास दिखाकर फँसा लेता है।

हरी-हरी सूझना—सबको एक समान जानना।

उ०—विश्वामित्रने कहा–"मुनिको हरी-हरी सूझती है जिसने महादेवके धनुषको गन्नेके समान ताड़ डाला, उसको अब भी नहीं समझे।"

हल-चल पड़ना—भगदड़ पड़ना।

उ०—हिन्दू-मुसलमानोंमें झगड़ा हो जानेके कारण समस्त मेलेमें हल-चल पड़ गयी।

हवन कर डालना—नष्ट कर देना।

उ०—मोहनने थोड़े दिनोंमें ही अपनी सब सम्पत्ति हवन कर डाली।

हवामें भरना—अभिमानी होना।

उ०—तुम अपना माथा खाली न करो; वह हवामें भरा हुआ है, कदापि न मानेगा।

हवा नापना—व्यर्थ कार्य करना।

उ०—तुम्हारा भाई दिनभर हवा नापता फिरता है।

हवाके घोड़ेपर सवार होना—बहुत जल्दी होना।

उ०—तुम तो इस समय हवाके घोड़ेपर सवार हो, तुमको अपनी कथा क्या सुनाऊँ?

हवा बांधना—विश्वास जमाना।

उ०—मैं मन्त्र-यन्त्र कुछ नहीं जानता, केवल अपनी हवा बाँधता हूँ।

हवा बांधना—प्रभाव जमाना।

उ०—हरिदत्त अपनी हवा बाँधता है और मोहन उसका भेद खोलता है।

हवा बँधना—प्रभाव जमना।

उ०—योगेन्द्रकी युक्तियाँ तो प्रबल न थीं परन्तु सभामें उसकी हवा बँध गयी।

हवा बदलना—परिवर्त्तन होना।

उ०—पण्डितजी हवा बदल गयी है, आजकल कुलीनताको कोई नहीं पूछता।

हवासे लड़ना—चिड़चिड़ा स्वभाव होना।

उ०—तुम तो हवासे लड़ते हो, उसके गानेपर ही बिगड़ गये।

आह करने पै क्यों बिगड़ते हो।
तुम तो साहब हवासे लड़ते हो॥

हवा भर जाना—घमण्ड हो जाना।

उ०—उसके भीतर हवा भर गयी है, वह खाली बातोंसे कदापि न मानेगा।

हवा बिगड़ना—प्रताप नष्ट होना।

उ०—जब मनुष्यकी हवा बिगड़ जाती है, उसको कोई चुल्लू-भर पानीको भी नहीं पूछता।

हवा हो जाना—छिप जाना, दूर हो जाना।

उ०—नरेन्द्र पहिले जमीनपर पाँव न धरता था, परन्तु जबसे उसका प्रताप हवा हुआ है, वह पानी हो गया है।

वो दिन हवा हुए जो पसीना गुलाब था।
अब इत्र भी मलो तो मुहब्बत की बू नहीं॥

हवा हो जाना—भाग जाना।

उ०—आज जब सभामें उसपर घड़ों पानी पड़ा, तो वह हवा हो गया।

हवा हो जाना—सवेग गमन करना।

उ०—पुस्तक किससे माँगूँ ? वह तो मुझे देखते ही हवा हो जाता है।

हवामें फिरना—अभिमानमें रहना।

उ०—तुम किस हवामें फिरते हो ? उससे छेड़छाड़ न किया करो; उसने सात घाटका पानी पी रखा है।

हवाका रुख देखना—स्थितिकी जाँच करना।

उ०—अभी मैं कुछ नहीं कह सकता; हवाका रुख देख कर बात-चीत करूँगा।

हवा उड़ना—झूठी खबर फैलाना।

उ०—यहाँ यह हवा उड़ रही है कि हरिमोहनका हुक्का-पानी बन्द हो गया।

हवा उखड़ना—प्रभाव जाता रहना।

उ०—मुरली मनोहरकी हवा उखड़ गयी है, अब यहाँ उसका जमना कठिन है।

हवा खाना—वञ्चित रह जाना।

उ०—जितना खाना बना था सब खाया गया, अब तुम हवा खाओ क्योंकि तुम हवा खाने चल गये थे।

हवासे बातें करना—सवेग गमन करना।

उ०—आग और पानीसे इञ्जनमें वह शक्ति उत्पन्न होती है कि रेल गाड़ी हवासे बातें करने लगती है।

हवा-हवसकी धांधलीमें पड़ना—सांसारिक वासनाओंमें फँसना।

उ०—वृद्धावस्था आनेपर भी उसका दादा हवा-हवसकी धाँधलीमें पड़ा हुआ है।

हस्तगत करना—अधिकारमें लाना।

उ०—हिम्मत सिंह और उसके साथियोंने सहजमें ही बारके दुर्गको हस्तगत कर लिया।

हां-नाका जवाब देना—स्वीकार तथा अस्वीकार करना।

उ०—उसके पास जाओ और कहो कि हमको हाँ-ना का जवाब दो।

हां-हूँ करना—बच्चोंका बोलना आरम्भ होना।

उ०—सरला-बहिन! तुम्हारा बच्चा बोलने लगा है या नहीं?

विमला—हाँ, कुछ हाँ-हूँ करने लगा है।

हां-हूँ करना—बोलना।

उ०—तुम तो सब कुछ सुन कर चुप हो गये; कुछ हाँ-हूँ तो करो।

हांडी पकाना—षड्यन्त्र रचना।

उ०—तुमको अभी तक इतना भी पता नहीं है कि वे लोग महीने भरसे हाँडी पका रहे हैं।

हाथ उठाना—मारना।

उ०—वह चुपचाप बैठा हुआ था; तुमने उसपर हाथ क्यों उठाया?

हाथ उठाना—रोकना।

उ०—वह ग्वालियर कम्पनीकी लारी आ रही है; यदि बैठो तो हाथ उठाओ।

हाथ उठाना—आशा छोड़ना।

उ०—रूपराम! रूपयेसे हाथ उठाओ; उससे एक कौड़ी भी वसूल न होगी।

हाथ उठा अब इश्कके बीमारसे।
कोई बचता भी इस आजारसे॥

(ज़ौक़)

हाथ फैलाना—याचना करना।

उ०—मन्नूलाल भूखा मर जायगा परन्तु किसीके आगे हाथ न फैलायगा।

फैलाये क्या कोई मेरे परवरदिगार हाथ।
बन्देका एक हाथ है तेरे हजार हाथ॥

हाथकी ओर देखना—कुछ पानेकी आशा करना।

उ०—परमात्माने परमानन्दको सब कुछ दिया है; वह किसीके हाथकी ओर क्यों देखे?

हाथकी कठ-पुतली बनाना—सर्वथा दूसरेके संकेत पर चलना।

उ०—कृष्णकुमार आजकल कालूरामके हाथकी कठ-पुतली बना हुआ है।

हाथ छोड़ना—मारना।

उ०—यदि तुम उसपर हाथ छोड़ोगे, तो मैं तुम्हारी खबर लेनेमें कोई कसर न रखूँगा।

हाथ पकड़ना—आश्रय देना।

उ०—पण्डित दीनबन्धुने दया करके दयारामका हाथ पकड़ लिया है।

हाथ-पांव फूलना—भयभीत हो जाना, घबराना।

उ०—पुलिस-दारोगाको देखकर लाला फूलचन्दके हाथ पाँव फूल जाते हैं।

हाथ धोना—खो देना।

उ०—आज नलमें पानी बहुत थोड़ा है; यदि देर करोगे तो पानीसे हाथ धोओगे।

मछली जब छूटती है पानीसे।
हाथ धोती है जिन्दगानीसे॥

हाथ डालना—आरम्भ करना।

उ०—यदि तुम मेरा साथ देनेका वचन दो, तो मैं इस कार्य में हाथ डालता हूँ।

हाथ खींच लेना—सम्बन्ध न रखना, सहायता बन्द कर देना।

उ०—यदि तुम अपना हाथ खींच लोगे, तो वह अपने पाँवों पर खड़ा होना सीख जायगा।

हाथ-पैर जोड़ना—अनुनय-विनय करना।

उ०—यदि मोहन तुमसे सम्बन्ध तोड़ता है, तोड़ने दो, तुम हाथ-पैर क्यों जोड़ते हो?

हाथ दबना—परवश होना।

उ०—मैं इस समय तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता क्योंकि मेरा हाथ दबा हुआ है।

हाथ बैठना—अभ्यस्त हो जाना।

उ०—अब तो महेन्द्रका ऐसा अच्छा हाथ बैठ गया है कि वह खड़ा-खड़ा चित्र खींच देता है।

हाथकी पूँजी गँवाना—मूलधन खो देना।

उ०—तुमने तो व्यापारमें अच्छा लाभ उठाया जो हाथकी पूँजी भी गँवा बैठे।

हाथ तक न उठाना—नमस्कार, प्रणाम कुछ भी न करना।

उ०—यादव ऐसा असभ्य हो गया है कि अपनेसे बड़ेको कभी हाथ तक नहीं उठाता।

हाथ-पल्ले पड़ना—प्राप्ति होना।

उ०—मैंने तो बहुत पाँव तोड़े परन्तु कुछ भी हाथ पल्ले न पड़ा।

हाथ-पाँव बचाना—सावधान होकर काम करना।

उ०—मैं बहुत ही हाथ पांव बचाता हूँ परन्तु कुछ न कुछ हानि हो ही जाती है।

हाथ लगाना—उठवाना।

उ०—यह भार इतना भारी है कि मैं उठा नहीं सकता; कृपया जरा हाथ लगा दीजिये।

पड़ा है देरसे मिट्टी खराब होती है।
लगा दो हाथ जनाज़ेको फिर सँवर लेना॥

हाथ लगाना—सहायता देना।

उ०—अनाथालयके लिए चन्दा किया जा रहा है; आप भी इस शुभ कार्यमें हाथ लगाइये।

हाथ मारना—शर्त लगाना।

उ—मैं हाथ मारता हूँ कि सुरेन्द्र इस वर्ष परीक्षामें अवश्य सफल होगा।

हाथ मारना—अच्छी प्राप्ति करना।

उ०—हमने तो आज व्यर्थ ही पाँव तोड़े, परन्तु तुम्हारे भाई-ने खूब हाथ मारे।

हाथ दिखाना—वीरता दिखाना।

उ०—रणवीरने रण-भूमिमें वह हाथ दिखाये कि शत्रुके पाँव उखड़ गये।

हाथ होना—कृपा होना।

उ०—जिसपर परमात्माका हाथ है, उसको शत्रुका क्या डर है?

हाथ धोकर पीछे पड़ना—बहुत तङ्ग करना।

उ०—मुझको पद-दलित करनेके लिए वह हाथ धोकर पीछे पड़ा हुआ है।

हाथपर हाथ धरे बैठे रहना—कुछ न करना।

उ०—तुम्हारे पिता कठिन श्रम करते-करते मर मिटते हैं परन्तु तुम हाथपर हाथ धरे बैठे रहते हो।

हाथ आना—मिलना

उ०—मान लिया कि उसका सब कुछ चला जायगा, परन्तु तुम्हारे हाथ क्या आयगा?

हाथ मलना—पछताना।

उ०—यदि भट्टीकी ओर पांव बढ़ाओगे, तो यावज्जीवन हाथ मलते रहोगे।

'मल मलके हाथ रोये ढाकेके थान वाले।'

हाथसे निकल जाना—अधिकारमें न रहना।

उ०—हिम्मतसिंहकी हिम्मतने मुगलोंके पांव उखाड़ दिये और बारका दुर्ग उनके हाथसे निकल गया।

हाथ निकल जाना—मारनेकी बान पड़ना।

उ०—सुशीलाके लड़केके बहुत हाथ निकल गये हैं; वह किसी बच्चेको देख ही नहीं सकता।

हाथ-पांव निकलना—मारनेकी बान पड़ना।

उ०—जिस बच्चेके हाथ-पांव निकल जाते हैं, उसको कोई अपने बच्चोंमें नहीं घुसने देता।

हाथ-पांव निकलना—ढीठ हो जाना।

उ०—मोहन जबसे धूर्त-मण्डलीमें घुसा है, उसके हाथ-पांव निकल गये हैं।

हाथ-पांव चलना—शक्ति होना।

उ०—जबतक उसके हाथ-पांव चलते हैं, वह किसीके आगे हाथ न फैलायेगा।

हाथ-कटा बैठना—किसीको लेख-बद्ध वचन दे देना।

उ०—जब तुम पहिले ही अपने हाथ कटा बैठे, तो मैं अब क्या कर सकता हूँ?

हाथपर हाथ मारा न दिखायी देना—अत्यन्त अन्धकार होना।

उ०—वर्षा हो रही है; हाथपर हाथ मारा दिखायी नहीं देता; भला इस समय आप कहां जा रहे हैं ?

हाथ-पांव फुलाना—घबराहट कर देना।

उ०—तुम तो व्यर्थ ही मनुष्यके हाथ-पांव फुला देते हो।

हाथ-पांव रखना—शक्ति होना।

उ०—तुम भी तो हाथ पांव रखते हो, खूब कमाओ और आनन्दसे खाओ।

हाथ-पांव हिलाना—पुरुषार्थ करना।

उ०—खाली बैठनेसे काम न चलेगा; कुछ हाथ-पांव अवश्य हिलाओ।

हाथ-पांव सँभालना—जवान होना।

उ०—सरलाकी चिन्ता दूर हो गयी क्योंकि उसके लड़कोंने हाथ-पांव सँभाल लिये।

हाथ बँटाना—सहायता देना।

उ०—हिन्दू स्कूलके लिए चन्दा किया जा रहा है, इस कार्यमें आप भी हाथ बँटायें।

हाथ फेरना—ठगना।

उ०—उस कंजूस मक्खीचूस पर तो आज तुमने खूब हाथ फेरा है।

हाथ बांधे हुए खड़ा रहना—सेवामें उपस्थित रहना।

उ०—वह सदा हाथ बाँधे हुए खड़ा रहता है, परन्तु आप उससे सन्तुष्ट नहीं हैं।

मेरे घर रात-दिन अश्कोंकी झड़ी रहती है।
हाथ बांधे हुए बरसात खड़ी रहती है।

हाथ चूमना—प्यार करना।

उ०—कीर्तिदेव श्यामसुन्दरके लेखकी सुन्दरतापर मुग्ध हो गये और उन्होंने उसके हाथ चूम लिये।

है मद्दे नज़र खून ये किसका कि हिनाने।
चूमे हैं तेरे हाथ, तेरे पांव पड़ी है॥

हाथमें लेना—सँभालना, देख-भाल करना।

उ०—जबसे आपने अनाथालयका कार्य हाथमें लिया है, बालकोंको बड़ा सुख मिल रहा है।

हाथ तले आना—वशमें होना।

उ०—आप घबराते क्यों हैं? वह किसी न किसी दिन मेरे हाथ तले अवश्य आयगा।

हाथ भरका कलेजा होना—बड़ा साहसी होना।

उ०—वह तुमसे कदापि डरनेवाला नहीं; यदि तुम तीसमार खाँ हो, तो उसका भी हाथ भरका कलेजा है।

इश्क़में हमदम बुतों के चाहिये पत्थरका दिल।
हाथ भरका हो कलेजा दिल लगानेके लिए॥

हाथ उठा लेना—कृपालु न रहना।

उ०—जबसे तुमने हाथ उठा लिया है, मैं भी उसको अपने घरमें पाँव नहीं रखने देता।

अय तेगे-नाज़ हाथ जो तूने उठा लिया।
लेता नहीं कोई मुझे अपनी पनाह में॥

हाथ खुला होना—उदार होना।

उ०—मोहन तुम्हारी तरह कंजूस नहीं, उसका हाथ खुला हुआ है।

हाथ ऊँचा होना—उदार होना।

उ०—वह तुम्हारे समान नीच नहीं है; उसका हाथ सदा ऊँचा रहता है।

हाथ न चलना—मार न सकना।

उ०—तुम्हारा लड़का सदा पिटता रहता ही है; उसका हाथ कभी नहीं चलता।

हाथ हिलाते चले आना—खाली हाथ आना।

उ०—तुम सदा हाथ हिलाते चले आते हो; कभी इतना भी नहीं होता कि बच्चोंके लिए कुछ लेते चलें।

हाथ जोड़ना—बिनती करना।

उ०—मैंने हाथ जोड़े, पाँव पकड़े, परन्तु उसने आना स्वीकार न किया।

हाथ चलना—पास धन होना।

उ०—जब तक मेरा हाथ चलता है, मैं तुमको सहायता देना बन्द न करूँगा।

सखीके पास कुछ हो और न दे, ये गैर मुमकिन है।
नहीं करता है मुट्ठी बन्द जब तक हाथ चलता है॥

हाथ थाम कर चलाना—सोच-विचार कर व्यय करना।

उ०—जो व्यक्ति हाथ थाम कर चलता है, वह कभी किसीका ऋणी नहीं होता।

हाथ पकड़ाना—सौंपना।

उ०—मरते समय वह अपने लड़केका हाथ मुझको पकड़ा गया था।

हाथसे खोना—अधिकार खोना।

उ०—ले देकर एक मकान रहा था; उसने उसे भी हाथसे खो दिया।

दिखलाके पाँव कितनोंको पामाल कर दिया।
कितनोको तुमने हाथसे खोया दिखाके हाथ॥

हाथ खाली होना—धन पास न होना।

उ०—तुम्हारी झोली कहांसे भर दूँ? आजकल मेरा ही हाथ खाली है।

हाथ तंग होना—धनकी कमी होना।

उ०—उस गरीबका हाथ तङ्ग है; तुम कहते हो दिल खोल कर खर्च करो।

हाथ रँगना—अनुचित उपायसे धन प्राप्त करना।

उ०—तुम कहांके सन्त हो? तुमने भी जी भर कर हाथ रंगे हैं।

हाथ साफ करना—प्राप्ति करना।

उ०—आसामी मालदार है, पुलिस भी खूब हाथ साफ करेगा।

हाथ साफ करना—खूब खाना।

उ०—आज तो यादव और माधवने लड्डू-कचौड़ियोंपर खूब हाथ साफ किये हैं।

हाथ साफ करना—मारना।

उ०—किसी दिन मेरे हत्थे चढ़ गया, तो उसपर खूब ही हाथ साफ करूंगा।

हाथकी सफाई दिखाना—चाल चलना।

उ०—तुम उसका विश्वास न करना, वह केवल हाथकी सफाई दिखाता है।

हाथ रखना—सान्त्वना देना।

उ०—वह इतनी देरसे पाँव पीट रहा है; तुमसे इतना भी नहीं होता कि हाथ ही रख दो।

तुम नहीं जानते तसकीन को सूरत क्या है।
हाथ रखनेसे कहीं दर्दे-जिगर जाता है॥

हाथ खाली न होना—अवकाश न होना।

उ०—इस समय मेरा हाथ खाली नहीं है; किसी दूसरे दिन आनेकी कृपा कीजिये।

हाथ चलाना—मारना।

उ०—यदि बच्चेपर हाथ चलाओगे, तो तुम्हारी टांगें तोड़ दूंगा।

हाथ-पांव मारना—प्रयत्न करना।

उ०—हमने बहुत हाथ-पाँव मारे, पर कुछ भी हाथ-पल्ले न पड़ा।

हाथ-पांव सँभालना—जवान होना।

उ०—अब उसको किसी बातकी चिन्ता नहीं रही, क्योंकि उसके बच्चोंने हाथ-पांव संभाल लिये।

हाथ-लगन होना—प्राप्ति होना।

उ०—मैंने व्यर्थ ही पांव तोड़े; वहांसे कुछ भी हाथ-लगन नहीं हुई।

हाथमें दिल रखना—मनको वशमें करना।

उ०—जो हाथमें दिल रखता है, वह सर्वत्र विजयी होता है।

हाथ पर हाथ मारना—वचन देना।

उ०—हमारे सुख-दुःखके साथी होना चाहते हो, तो हाथ-पर हाथ मारो।

हाथ रखना—रक्षा करना।

उ०—जो दीनों पर हाथ रखता है, वही दीनबन्धु है।

हाथ रखना—अधिकार जमाना।

उ०—तुम दूसरोंकी सम्पत्तिपर हाथ क्यों रखते हो ?

हाथा-पाई करना—लड़ना।

उ०—कल तुम दोनों क्लासमें हाथा-पाई क्यों कर रहे थे ?

हाथों-हाथ उठना—शीघ्र समाप्त होना।

उ०—आज दो सेर रसगुल्ले लाया था, सब हाथों-हाथ उठ गये।

हाथों-हाथ लेना—सम्मान करना।

उ०—जब कभी मैं उनके घर जाता हूँ, वे मुझे हाथों-हाथ लेते हैं।

हाथों-हाथ लेना—प्रेम करना।

उ०—रामानन्दका पिता तुमको भी हाथों-हाथ लेता है।

हाथों-हाथ लेना—तुरन्त लेना।

उ०—जिस किसीको भी सौदा दो, दाम हाथों-हाथ ले लो।

हाथों छांव करना—सम्मान करना।

उ०—इस गाँवके सब लोग पण्डित जगन्नाथको हाथों-छाँव करते हैं।

हाथों छांव करना—प्रेम करना।

उ०—शिवनाथ छज्जूरामको हाथों छाँव करता है।

हाथों उछलना—अधिक प्रसन्न होना।

उ०—आज तो कश्मीरीलाल कालिया हाथों उछल रहा है।

हाथों दुख उठाना—किसीके द्वारा कष्ट पाना।

उ०—हरदत्तके हाथों मैंने महीनों दुःख उठाये हैं।

हाथों बिक जाना—किसीका दास हो जाना।

उ०—क्या मैं तुम्हारे हाथों बिक गया हूँ जो तुम्हारे कहनेसे झूठ बोलूँ ?

हाथों-हाथ बिक जाना—शीघ्र बिक जाना।

उ०—हिन्दी मुहाविरोंकी सौ प्रतियाँ मँगाई थीं; सब हाथों-हाथ बिक गयीं।

हाथोंके तोते उड़ जाना—बड़ी घबराहट होना।

उ०—विमलने जब कमरेमें कमलाको न पाया तो, उसके हाथोंके तोते उड़ गये।

हामी भरना—स्वीकार करना।

उ०—जब तुम जानते थे कि मुझे वहाँ जानेका अवकाश न मिलेगा, तुमने हामी क्यों भरी थी ?

हाय-तोबा मचाना—कोलाहल करना।

उ०—तुम लोग इतनी देरसे हाय-तोबा क्यों मचा रहे हो ?

हाय-तोबा मचाना—व्यग्र होना।

उ०—साहससे काम लो; ज़रा-से दुःखमें हाय-तोबा मचाने

हिचर-मिचर करना—झिझकना।

उ०—चलना है तो साफ़ कहो, इतनी देरसे हिचर-मिचर क्यों कर रहे हो ?

यारो ये हिचर-मिचर कहाँ तक।
अपनी सी करो बने जहाँ तक॥

हिड़की बँधना—रोनेका क्रम बँधना।

उ०—पतिको मृत्युका समाचार सुनते ही कुमुदकी हिड़की बँध गयी।

हिड़कियों रोना—अधिक जोरसे रोना।

उ०—क्या तुममेंसे कोई बतला सकता है कि यह स्त्री हिड़कियों क्यों रो रही है ?

हिन्दी की चिन्दी निकालना—अधिक छान-बीन करना।

उ०—मैं उसको अच्छी तरह जानता हूं; वह बड़ी हिन्दीको चिन्दी निकालता है।

हिरन हो जाना—भाग जाना।

उ०—तुम्हारी वीरतासे मैं खूब परिचित हूँ; उस नरसिंहकी गरज सुनते ही तुम हिरन हो जाओगे।

हिरन हो जाना—दूर हो जाना।

उ०—तुम्हारी खोपड़ीपर ऐसे चपत जमाऊंगा कि सब नशा हिरन हो जायगा।

हिल जाना—परिचित होना जाना।

उ०—मुन्नी मुझसे ऐसी हिल गयी है कि दिन भर मेरे पाससे घड़ी भर भी नहीं हिलती।

नहीं आता इसे तकिये पे आराम।
यह सिर पाँवोंसे तेरे हिल रहा है॥

हीरा तोलना—विद्वान् होना।

उ०—काला अक्षर भैंस बराबर, तिस पर भी हीरा तोलते हो।

हीरे की खानि मिलना—अमित धन मिलना।

उ०—हीरावल्लभको हीरेकी खानि मिल गयी है; अब वह काले आदमीसे बात नहीं करता।

हुक्का-पानी बन्द करना—जाति-च्युत करना।

उ०—उसने बिरादरीकी आज्ञाके बिना विधवा-विवाह कर लिया था इसलिए उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया गया।

हुन बरसना—अधिक धन होना।

उ०—ठीक है; मेरे घर हुन बरसती है और तुम भूखे बङ्गाली हो।

हुर मारना—सादृश्य होना।

उ०—इस बालकमें इसके पिताकी हुर मारती है।

हेकड़ी दिखाना—अभिमान करना।

उ०—जो तुम्हारे घर-द्वारको न जानता हो, उसके सामने इतनी हेकड़ी दिखाओ।

हेठी होना—अप्रतिष्ठा होना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा कुछ न बिगड़ेगा; केवल तुम्हारी ही हेठी होगी।

होंठ चबाना—क्रोध करना।

उ०—तुम्हारे हिस्सेके चने रखे हैं; होंठ क्यों चबाते हो?

होंठ चबाना—पश्चात्ताप करना।

उ०—क्रोधके आवेशमें भले-बुरेका बोध नहीं रहा; अब होंठ चबाते हो।

होंठ चाटना—किसी खाद्य पदार्थका मज़ा लेना।

उ०—किसी दिन अवकाश मिलनेपर ऐसी स्वादिष्ट दाल बनाऊँगा कि तुम होंठ चाटते रह जाओगे।

होंठ काटना—कुढ़ना।

उ०—किसीको गाना-बजाना अच्छा लगता है; गाने-बजाने दो तुम होंठ क्यों काटते हो?

होंठ काटना—पछताना।

उ०—कार्य करते समय लाभालाभका विचार नहीं करते, बादमें होंठ काटते हो।

होंठ सूखना—पिपासार्त होना।

उ०—कड़ी धूपमें चलते-चलते उसके होंठ सूख गये।

होठोंपर जान आना—मरणासन्न होना।

उ०—उसकी होठोंपर जान आ रही है, परन्तु धनका मोह नहीं जाता।

अब ख़ौफ़े-आक़बत है होठोंपर जान आयी।
देता नहीं है कोई तेरे सिवा दिखायी॥

हो जाना—छेड़-छाड़ होना।

उ०—सुनते हैं आज मोहनकी और तुम्हारी भरी सभामें हो गयी।

होनी आना—आपत्तिमें पड़ना।

उ०—होरीलालकी होनी आ रही है, इसीलिए ऊट-पटाङ्ग बक रहा है।

होश हिरन हो जाना—घबरा जाना।

उ०—रात्रिके समय जङ्गलमें सिंहकी गरज सुनकर अच्छे-अच्छोंके होश हिरन हो जाते हैं।

होश फ़ाख़ता होना—बुद्धि ठिकाने न होना।

उ०—इन्स्पेक्टरका आना सुनकर मास्टर ब्रह्मानन्दके होश-फ़ाख़ता हो जाते हैं।

होश ठिकाने होना—ठीक मार्गपर आना।

उ०—मोहनकी चाँदपर पाँच-सात जमा दो, तो उसके होश ठिकाने हो जायँगे।

होश ठिकाने लगाना—अभिमान दूर करना।

उ०—यहांसे तुरन्त चले जाओ वरना अभी होश ठिकाने लगा दूँगा।

होश उड़ जाना—घबरा जाना।

उ०—वह बड़ा वीर है; जिस समय उसने जङ्गलमें एक गीदड़को देखा, उसके होश उड़ गये।

हृदयका शूल बनना—दुःख प्रद होना।

उ०—हरनामदासकी आंखोंका तारा उसके हृदयका शूल बन गया है।

हृदयसे बाहर निकाल देना—भूल जाना।

उ०—यदि सबल बनना चाहते हो, तो निर्बल विचारोंको हृदयसे बाहर निकाल दो।

हृदयसे बाहर निकाल देना—प्रेम छोड़ देना।

उ०—मैंने उस आस्तीनके सांपको हृदयसे बाहर निकाल दिया है।

हृदय फड़क उठना—प्रसन्न हो जाना।

उ०—उस महात्माकी दिव्य मूर्तिका दर्शन करके प्रत्येक व्यक्तिका हृदय फड़क उठता है।

हृदय विदीर्ण हो जाना—अत्यन्त दुःख होना।

उ०—उस विधवाका करुणा-क्रन्दन सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो गया।

हृदय खोलना—भेद कहना।

उ०—मुझे पता नहीं था कि वह विश्वास-घात करेगा; मैंने तो सुहृद् समझकर उससे हृदय खोला था।

हृदयका ताला खोलना—ज्ञान देना।

उ०—परमात्माने तुलारामके हृदयका ताला खोल दिया है।

हृदयके कपाट खुलना—ज्ञान उत्पन्न होना।

उ०—जब ईश्वरकी कृपा होती है, तब मनुष्यके हृदयके कपाट खुलते हैं।

हृदय पर अङ्कित कर देना—अच्छी तरह समझा देना।

उ०—अध्यापकका दोष नहीं है; वह प्रत्येक बात तुम्हारे हृदय पर अङ्कित कर देता है।

हृदयङ्गम होना—समझमें आना।

उ०—शुद्ध विचार होने पर कठिनसे कठिन विषय भी हृदयङ्गम हो जाता है।

हृदयमें गुदगुदी उठना—प्रसन्न होना।

उ०—मोहनके आनेका समाचार सुनते ही तुम्हारे हृदयमें गुदगुदी उठने लगती है।

मुहाविरेदार वाक्यांश

(Idiomatic Phrases)

(अ)

अकलका अन्धा—निरा मूर्ख ।

उ०—यदि वह अकलका अन्धा न होता, तो अपनी सम्पत्ति गँवाकर ठोकरें खाता क्यों फिरता ?

अकलका पुतला—बड़ा बुद्धिमान् ।

उ०—और तो और, अकलका पुतला बुद्धिसागर भी तो आजकल उन लोगोंके हाथकी कठ-पुतली बना हुआ है ।

अगस्तिक यात्रा—कभी पूरा न होने वाला कार्य ।

उ०—मैं यहाँ कबतक बैठा रहूँगा ? आपने तो अगस्तिक यात्रा आरम्भ कर दी है ।

अटकल पच्चू—बिना सोचे-समझे ।

उ०—बार-बार समझानेपर भी तुम सब जगह अटकल पच्चू बोल उठते हो ।

अनचाहतका संग—एक ओरका प्रेम ।

उ०—तुमको उसकी अनुपस्थिति अखरती है, और उसको तुम्हारी उपस्थिति ; यह अन चाहतका संग है ।

हाय दई कैसी भई, अन चाहतके संग।
दीपक के भावें नहीं, जल-जल मरै पतंग॥

अनाप शनाप—बिना सोचे-विचारे।

उ०—तुम अनाप-शनाप कह बैठोगे, और वह लाठी लेकर मारनेको खड़ा हो जायगा।

अन्त समय—मरण काल।

उ०—तुम्हारे जैसे दुष्टोंकी अन्त समय बड़ी दुर्गति होती है।

अन्धाधुन्द—बिना विचारे।

उ०—जो व्यक्ति अन्धाधुन्द व्यय करता है, वह शीघ्र ऋणी हो जाता है।

दिल अधाधुन्ध हो जाता है हमेशा अय 'दाग़।
छान बीन इसमें न कुछ छानो-फटक होती है॥

दाग़

अन्धेकी लकड़ी—एकमात्र सहारा।

उ०—मोहन—यह किसका बालक है?

विद्या—यह मेरी अन्धेकी लकड़ी है?

अन्धेर खाता—बेहिसाब काम।

उ०—प्रकाशके यहाँ बड़ा अन्धेर खाता रहता है।

अन्धेर खाता—अन्याय।

उ०—नई रोशनीके जमानेमें भी संसारमें अन्धेर खाता हो रहा है।

अन्नका कीड़ा—अन्नपर जीवन निर्भर रखनेवाला।

उ०—मनुष्य अन्नका कीड़ा है; यदि इसको एक समय भी भोजन न मिले, तो घबरा उठे।

अन्न-जलके अधीन—किसी जगहके अन्न-जलके भाग्यमें होनेपर निर्भर।

उ०—काशी जानेके विषयमें मैं अभी कुछ कह नहीं सकता; यह अन्न-जलके अधीन है।

अफलातूनका बच्चा—बड़ा बुद्धिमान् (व्यङ्गमें)।

उ०—उससे शास्त्रार्थ क्यों न करें? वह कहांका अफलातूनका बच्चा है।

अफलातूनका बच्चा—बड़ा बलवान् (व्यङ्गमें)।

उ०—कर लेना जो कुछ करोगे; तुम बड़े अफलातूनके बच्चे निकल कर आये हो।

अरण्य रोदन—निष्फल कार्य अथवा भाषण।

उ०—मुझे तो तुम्हारे अरण्य-रोदनपर हँसी आती है।

(आ)

आंखका तारा—अत्यन्त प्रिय।

उ०—आजकल ताराचन्द, महाशय दर्शनलालकी आँखका तारा, बना हुआ है।

आंखका मारा—आसक्त जन।

उ०—आँखका मारा आँखोंमें रात काटता है, यह सोलह आने ठीक है।

आंखकी पुतली—अति प्रिय।

उ०—वह तुमको आँखकी पुतली समझता है, और तुम उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते हो।

आंखों-आंखोंमें—बिल्कुल सामने।

उ०—जगदीश इतना चालाक है कि उसने आँखों-आँखोंमें मेरी पुस्तकोंपर हाथ साफ कर दिया।

आंखोंसे—प्रेमसे, सम्मानसे।

उ०—तुम तो कभी उसके पास जाते हो नहीं; वह तो तुम्हें आँखोंसे बुलाता है।

आंखोंकी ठण्डक—अति प्रिय।

उ०—जिसको आँखोंकी ठण्डक समझते थे, वही अब तुम्हारी आँखोंमें खटकता है।

आंखों देखी कानों सुनी—विश्वास योग्य।

उ०—मैं झूठ नहीं बोलता; मैं आंखों देखी कानों सुनी कहता हूं।

आंधीके आम—अस्थायी लाभ।

उ०—स्थायी रूपसे कोई काम दिलवाइये; आँधीके आमोंसे क्या काम चलता है?

आकाश-पातालका व्यवधान—बहुत बड़ा अन्तर।

उ०—तुम अभी नौसिखिये हो; तुम्हारी और उसकी कवितामें आकाश-पातालका व्यवधान है।

आकाश-भेदी—बहुत ऊँचा।

उ०—जो व्यक्ति आकाशभेदी भवनमें रहता हो, उसका दिमाग़ आसमानपर होनेमें आश्चर्य क्या है?

आकाशका पुष्प—असम्भव वस्तु।

उ०—वह आजकल आकाशके पुष्प प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा है।

आग-फूँसका साथ—विरोधी स्वभाववालोंका संग।

उ०—यादव और मोहनका आग-फूँसका साथ है; वे एक जगह नहीं रह सकते।

आगा-पीछा—हानि-लाभ।

उ०—जब तुमको ही अपना आगा-पीछा नहीं सूझता, तो दूसरेका क्या पड़ी है?

आगेका छोकरा—अनुभव शून्य।

उ०—मोहन तुम्हारे साथ शास्त्रार्थमें नहीं डट सकता; वह तो तुम्हारे आगेका छोकरा है।

आटेकी आपा—मूर्खा स्त्री।

उ०—किसी आटेकी आपासे विवाह कर दिया जायगा। तो तुमको आटे-दालका भाव मालूम हो जायगा।

आटेमें नमक—थोड़ा।

उ०—गाहकके कपड़े न उतारो; इतना नफा लो जितना आटेमें नमक।

आठों पहर—प्रत्येक समय; सर्वदा।

उ०—तुम्हारे घरमें आठों पहर दांता किल-किल रहती है।

आठों गांठ कुम्मैत—अत्यन्त चालाक।

उ०—गोविन्द आठों गाँठ कुम्मैत है; वह गाँठसे कुछ भी खोनेवाला नहीं है।

आड़े समयका गहना—आपत्तिमें काम आनेवाली वस्तु।

उ०—मैं अपना बाग कदापि न बेचूंगा; यह तो आड़े समयका गहना है।

आधा तीतर, आधी बटेर—गड़बड़ झाला।

उ०—तुम्हारा मामिला सुलझना कठिन है; यह तो आधा तीतर आधी बटेर है।

आनकी आनमें—अति शीघ्र।

उ०—जब परमात्माकी कृपा होती है, आनकी आनमें पापी से सन्त हो जाता है।

आसमानी गोला—दैवी आपत्ति।

उ०—कौन जानता था कि आनन्दके समय उसपर आसमानी गोला टूट पड़ेगा?

आस्तीनका साँप—कपटी मित्र।

उ०—मैंने तुमसे पहिले ही कह दिया था कि जगदीश आस्तीनका साँप है; वह अवसर पाकर अवश्य डंक मारेगा।

(इ)

इधरका न उधरका—निरर्थक।

उ०—पढ़ना-लिखना भी छोड़ दिया, खेती-बाड़ीको भी तिलाञ्जलि दे दी, अब वह इधरका न उधर का।

इन्द्रका अखाड़ा—वह भवन जहाँ सब प्रकारका आमोद-प्रमोद रहता हो।

उ०—संसारमें आजकल धन-कुबेरोंके भवन इन्द्रके अखाड़े बने हुए हैं।

इन्द्रकी परी—अति सुन्दर स्त्री।

उ०—बैकुण्ठके समान ससुराल मिल गयी है, इन्द्रकी परीसे विवाह हो गया है; अब इन्द्रसेन इन्द्रसेन नहीं रहा।

इना गिना—केवल काम चलाऊ।

उ०—इना-गिना रुपया मिलता है; एक कौड़ी पास नहीं रहती।

(उ)

उठाऊ चूल्हा—वह व्यक्ति जिसका कोई ठिकाना न हो।

उ०—तुम्हारा क्या विश्वास; तुम तो उठाऊ चूल्हे हो, आज यहाँ, कल वहाँ।

उड़दपर सफेदी—अत्यन्त थोड़ा।

उ०—उसकी आँखोंमें इतनी भी लज्जा नहीं है जितनी उड़द-पर सफेदी।

उदर-पूर्ति—जीवन-निर्वाह।

उ०—कहिये पण्डितजी, आज कल उदरपूर्तिका क्या साधन है।

उधेड़-बुन—सोच-विचार।

उ०—ऊधोरामजी, न जाने दिनरात किस उधेड़-बुनमें लगे रहते हैं?

उन्नीस-बीस अन्तर—बहुत थोड़ा अन्तर।

उ०—वैद्यजीकी औषधिसे विद्याभूषणके रोगमें उन्नीस-बीसका अन्तर तो अवश्य है।

उलट-फेर—परिवर्त्तन।

उ०—थोड़े दिनोंमें ही मेरठमें बड़ा भारी उलट-फेर हो गया है।

(ऊ)

ऊपरका काम-काज—झाड़ू लगाने, बरतन साफ करने इत्यादिका काम।

उ०—भोजन रामनाथकी माता बना लेती है; ऊपरका काम-काज कहारी कर जाती है।

ऊपरकी आमदनी—घूस इत्यादि।

उ०—जगदीशके पिता कहते हैं कि जगह तो अच्छी है, परन्तु ऊपरकी आमदनी कुछ नहीं।

ऊपरही ऊपर—छिपाकर।

उ०—हमको बतलाया भी नहीं; तुम लोगोंने ऊपर ही ऊपर यह रचना कर डाली।

ऊपरसे—बादमें।

उ०—प्रातःकाल एक तोला च्यवनप्राश खाकर ऊपरसे पावभर दूध पी लिया करो।

(ए)

एक आवेके बरतन—एक कुटुम्बवाले व्यक्ति।

उ०—हरिमोहन, रामनारायण, रामकिशोर इत्यादि सब एक ही आवेके बरतन हैं।

एक थैलीके चट्टे-बट्टे—एक समान।

उ०—मैं उनका विश्वास नहीं करता; वे सब एक थैलीके चट्टे-बट्टे हैं।

एक बेलके तोमड़े—एक विचारवाले।

उ०—इनकी चालोंमें न आना; ये सब एक ही बेलके तोमड़े हैं।

एक पन्थ दो काज—एक साधनसे दो प्रयोजनकी सिद्धि।

उ०—ऋषिकेश चलना ठीक होगा; वहाँ एक पन्थ दो काज—गङ्गा स्नान और महात्माओंका दर्शन।

आज सखी तह जाइये, जहां बसत ब्रजराज।
गोरस बेचन हरि मिलन, एक पन्थ दो काज॥

एक जान दो कालिब—दो घनिष्ट प्रेमी।

उ०—यादव और मोहनको आप क्या समझते हैं वे एक जान दो कालिब हैं।

मेरे दिलके बर आए सब मतालिब।
भरत व राम हैं यक जां दो क़ालिब॥

एक मुँह दो बात—एक समयमें दो विरोधी बातें।

उ०—कभी कहते हो जाऊँगा कभी कहते हो नहीं जाऊँगा; यह एक मुँह दो बात कैसे?

एक गुरुके चेले—एक समान।

उ०—इनमें किसीका विश्वास न कीजिये; ये सब एक ही गुरुके चेले हैं।

एक चनेकी दो दाल—देखनेमें दो, स्वभावमें एक।

उ०—तेजपाल और लेखराम एक चनेकी दो दाल हैं।

एक आमकी दो फांकें—देखनेमें दो, स्वभावमें एक।

उ०—रोशनलाल और सतीश एक आमकी दो फाकें हैं।

एक स्वरसे—एक मत होकर।

उ०—समस्त सुधारकोंने इसका एक स्वरसे समर्थन किया है।

(ओ)

ओछा घड़ा—तुच्छ व्यक्ति।

उ०—उस ओछे घड़ेको आपने बरसों भरा, परन्तु वह कभी कृतज्ञ न हुआ।

ओढ़नीकी बतास—स्त्रीका प्रभाव।

उ०—ओढ़नीकी बतासने मनसबरायके पढ़ने-लिखनेको उड़ा दिया।

औंधी खोपड़ी—निरा मूर्ख।

उ०—उस औंधी खोपड़ीको सीधा करनेकी सामर्थ्य मुझमें नहीं है।

(क)

कच्चा चिट्ठा—पोल ;

उ०—कुलवन्त रायका कच्चा चिट्ठा खोलकर तुमने हमारा काम बहुत पक्का कर दिया।

कंजूस मक्खी चूस—बड़ा ही

उ०—कालूराम कंजूस मक्खी-चूस है; उससे कुछ आशा न रखो।

कड़ुवी बेल—दुष्ट व्यक्ति।

उ०—मिट्ठनलाल कितना मूर्ख है कि उस कड़ुवी बेलसे मीठे फलकी आशा करता है।

कड़ुवे घूँट—दुःखप्रद बातें।

उ०—मुझे वह दिन-रात ठोंके देता रहता है; मुझसे ये कड़ुवे घूँट नहीं पिये जाते।

कथाके बैंगुन—केवल दूसरोंके लिए उपदेश।

उ०—महाशयजीका भाषण कथाके बैंगुन हैं; स्वयं सिनेमा देखते हैं, दूसरोंको निषध करते हैं।

कपोल-कल्पित—निराधार; मन गढ़न्त।

उ०—विदेशीय इतिहासज्ञोंने भारतीय इतिहासमें अनेक कपोल-कल्पित बातें लिख मारी हैं।

कबूतरका सूतक—समाप्त न होनेवाला काम।

उ०—तुम्हारा बखेड़ा तो कबूतरका सूतक है; यह निकलने वाला नहीं है।

करतल गत—सुगम।

उ०—जिन प्रश्नोंको तुम कठिन समझते हो, वे सब माधवके करतलगत हैं।

कलका छोकरा—अनुभवशून्य व्यक्ति।

उ०—कलका छोकरा रामदत्त भी तो आज हमको उपदेश देने चला है।

कलेजेका टुकड़ा—अत्यन्त प्रिय।

उ०—जिस शिवनाथको कलेजेका टुकड़ा समझते हो, किसी दिन वही तुम्हारे कलेजेके टुकड़े करेगा।

कल्प-वृक्ष—धनिक व्यक्ति।

उ०—तुम तो कल्प-वृक्षकी छायामें निवास करते हो; तुम्हें किस बातकी चिन्ता है?

कांटेकी-सी तौल—बिल्कुल ठीक।

उ०—तुम चाहे मोहनको कुछ ही समझो, परन्तु उसकी बात कांटेकी-सी तौल होती है।

काक तालीय—आकस्मिक।

उ०—उसको काक तालीय लाभ हो गया, इसमें प्रशंसाकी तो कोई बात है नहीं।

काक-दन्त—असम्भव वस्तु।

उ०—उस सुन्दरीसे तुम्हारा विवाह न होगा; काक-दन्त पानेकी चेष्टा न करो।

कागा रौल—व्यर्थ कोलाहल।

उ०—पढ़े-लिखे होकर तुम लोग साधारण-सी बात पर कागा रौल कर रहे हो।

काजलकी कोठरी—अपयशका स्थान।

उ०—उसकी मित्रता काजलकी कोठरी है, जिसमें घुसनेपर तुम कालिख लगे बिना न निकलोगे।

काठका उल्लू—निरा मूर्ख।

उ०—उस काठके उल्लूको सौदा लेने भेज देते हो, वह सब काठ-कबाड़ उठा लाता है।

काठकी पुतली—नितान्त अनभिज्ञ।

उ०—वह काठकी पुतली कठोपनिषत्‌की फिलासफी छाँट रहा है।

काठ-कवाड़—निरर्थक वस्तु।

उ०—मैं तो खरे पैसे देता हूँ; इस काठ-कवाड़को लेकर क्या फूँकूगा ?

कानका कच्चा—झूठ-सच सुन कर विश्वास करनेवाला।

उ०—कालूराम कानका बड़ा कच्चा है।

कानका कच्चा—भेदकी बातको सुनकर गुप्त न रखनेवाला।

उ०—करमसिंह, तुम कानके बड़े कच्चे हो, इसीलिए मैं तुमसे कोई बात कहते डरता हूँ।

काम चोर—आलसी; काममें मुख मोड़नेवाला।

उ०—उस काम चोरने हमारा कामका काम बिगाड़ दिया, और पैसेके पैसे ले उड़ा।

काम-चलाऊ—कुछ उपयोगी।

उ०—यह कम्बल बहुत अच्छा तो नहीं है, परन्तु काम चलाऊ है; लेना हो; ले लो।

कामधेनु—धनिक व्यक्ति।

उ०—तुमको तो कामधेनु मिल गयी है; रात-दिन दुहो और मौज उड़ाओ।

कारूं का खजाना—अमित धन।

उ०—मेरे पास क्या कारूँ का खजाना धरा है जो प्रतिदिन तुम्हें सिनेमा देखनेको पैसे देता रहूं?

काला-नाग—कुटिल व्यक्ति।

उ०—तुम्हारी बुद्धिपर परदा पड़ा हुआ है जो काले नाग काश्मीरी लालको दूध पिला रहे हो।

कालाचोर—कोई व्यक्ति।

उ०—यह कम्बल काला चोर लाया है; तुम्हें इससे क्या प्रयोजन? ठण्ड लगती हो, ओढ़ लो।

काले कोसों—अति दूर।

उ०—"सीताकी अग्नि-परीक्षा काले कोसों हुई है, इसलिए लोगोंको विश्वास नहीं होता" रामने कहा।

किताबका कीड़ा—अधिक पढ़नेवाला व्यक्ति।

उ०—तुम तो किताबके कीड़े हो; तुम परीक्षामें सफल न होगे, तो और कौन होगा ?

किस खेतकी मूली—तुच्छ।

उ०—वहाँ अच्छे-अच्छे खेत रह जाते हैं; तुम किस खेतकी मूली हो, मूलचन्द ?

किस खेतका बथुवा—कुछ महत्व न रखने वाला।

उ०—यहाँ अच्छे-अच्छोंसे मुकाबिला किये बैठे हैं; वह किस खेतका बथुवा है ?

किस चिड़ियाका नाम—अपरिचित।

उ०—रामशरण किस चिड़ियाका नाम है ? मैं उसके विषयमें कुछ नहीं बता सकता।

किस मरजकी दवा—व्यर्थ।

उ०—जब दुखके समय काम नहीं आते, तो तुम किस मरजकी दवा हो ?

किस मुंहसे—किस बल पर।

उ०—जब वह तुम्हारा साथ नहीं देता, तो किस मुँहसे कहते हो कि वह मेरा मित्र है ?

कीरका कागर—परतन्त्र व्यक्ति।

उ०—कीर्तिराम कीरका कागर है, उसके विषयमें कुछ कहना व्यर्थ है।

कुक्कुर काट—पारस्परिक कलह।

उ०—जहां दिन रात कुक्कुर काट रहता है, वहाँ शीघ्र ही उल्लू बोलने लगते हैं।

कुक्कुर गति—दुर्दशा।

उ०—जो सदा सज्जनोंके विरुद्ध भौंकता रहता है, वह कुक्कुर-गतिको प्राप्त होता है।

कुत्ते की मौत—घृणा-जनक मरण।

उ०—कुन्दनलालने कुलको कलङ्कित किया और कुत्ते की मौत पायी।

कुत्ता खसी—जलालत; गिरावट।

उ०—आजकल लड़कोंको पढ़ानेका कार्य कुत्ता खसी है, इसलिये मुझे घृणा है।

कुल-दीपक—वंशको प्रसिद्ध करने वाला।

उ०—दीपचन्द कुल दीपक है; उसने अपने सत्कर्मों से वंशको प्रकाशित कर दिया है।

कुलाङ्गार—वंशका विध्वंस करनेवाला।

उ०—काकिलेश्वर! तुम कुलाङ्गार हो; तुमको देखकर तुम्हारे माता-पिता विना अग्नि-काष्ठ ही जलते रहते हैं।

कूप-मण्डूक—सांसारिक अनुभव शून्य अभिमानी व्यक्ति।

उ०—तुम तो कूप-मण्डूक हो; घरसे बाहर निकलो तो संसार-का कुछ पता लगे।

कोई दमका मेहमान—मरणासन्न।

उ०—उमरावसिंह! जगो कोई दमका मेहमान है; जाओ, तुम भी उससे मिल आओ।

कोखकी आंच—सन्तान-वियोग।

उ०—शिवा कोखकी आँचसे आठ पहर जलती रहती है।

कोल्हूका बैल—दिन-रात कार्यमें संलग्न व्यक्ति।

उ०—तुम आजकल कोल्हूके बैल बन रहे हो; आध घण्टेके लिए तो इस चक्करसे बाहर निकल जाया करो।

कोरा जवाब—साफ इनकार।

उ०—मुझको उससे बड़ी आशा है; वह इस आड़े समयमें कोरा जवाब न देगा।

कौड़ीके तीन—बहुत सस्ते।

उ०—थोड़े दिनोंमें अमरूद कौड़ीके तीन बिकेंगे क्योंकि इस वर्ष बहुत फल आया है।

कौड़ी-कौड़ीको मोहताज—अत्यन्त निर्धन।

उ०—तुम्हारे मित्र धनीराम, जो कल धन्ना सेठ बने फिरते थे, अपने दुष्कृत्योंसे आज कौड़ी-कौड़ीको मोहताज है।

कौवेके बच्चे—अधिक समय तक जीने वाले।

उ०—तुम कौनसे कौवेके बच्चे हो ? अधिकसे अधिक और पाँच-सात वरस जीओगे।

(ख)

खरहेका सींग—अप्राप्य वस्तु।

उ०—अदूरदर्शी अंगरेजोंके मतानुसार, स्वराज्य, भारतीयोंके लिए खरहेका सींग है।

खरा खेल फरूखाबादी—साफ बात।

उ०—लाग-लपेटसे मुझे बड़ी घृणा है, मैं तो खरा. खेल फरूखाबादी जानता हूँ।

खांडकी रोटी—सब प्रकारसे लाभप्रद।

उ०—लाला गङ्गाराम बोले,—पण्डितजी! रामायणकी कथा तो खाँडकी रोटी है, चाहे कहींसे आरम्भ कर दीजिये।"

खांडेकी धार—अत्यन्त कठिन कार्य।

उ०—प्रेम करना बच्चोंका खेलवाड़ नहीं है; यह तो खाँड़ेकी धार है।

खालाजीका घर—सुगम कार्य।

उ०—समर-क्षेत्रमें गोलियोंकी वर्षामें खड़ा होना खालाजीका घर नहीं है, लालाजी!

खिचड़ीका घी—आपसमें खप जाने वाली वस्तु।

उ०—सभाकी समस्त सामग्री खिचड़ीका घी है, उसका खोज मिलना कठिन है।

खुले खजाने—सबके सामने।

उ०—मैं खुले खजाने कहता हूँ कि राममोहनकी चारों पुस्तकें जगदीशके सन्दूकमें बन्द हैं।

खुले बन्दों—वेधड़क।

उ०—वह यहां प्रति दिन खुले बन्दों आता है; तुमसे जो कुछ हो सकता है, कर लो।

खुशामदी टट्टू—चिरौरी करनेवाला व्यक्ति।

उ०—रामदीन खुशामदी टट्टू है; यह स्पष्ट बात नहीं कह सकता।

खूनका प्यासा—मारनेकी इच्छा वाला।

उ०—कल जिसके पसीनेकी जगह खून गिराते थे, वही आज तुम्हारे खूनका प्यासा हो रहा है।

खेतका घोड़ा—युद्धमें काम आने वाला अश्व।

उ०—चेतूसे बढ़कर खेतका घोड़ा प्रतापको जन्म भर नहीं मिला।

खेलते-खेलते—बड़ी सुगमतासे।

उ०—ऐसे प्रश्नोंको तो बुद्धिवल्लभ खेलते-खेलते कर देता है।

ग

गङ्गा-जमुनी—मिश्रित।

उ०—आज पाँडेजीने गङ्गा-जमुनी दाल बड़ी ही स्वादिष्ट बनायी है।

गरजका बावला—स्वार्थी मनुष्य।

उ०—तुम जानते हो कि गरजका बावला उचित-अनुचितका विचार नहीं करता।

गाँठका पूरा—धनिक व्यक्ति।

उ०—यह स्मरण रखना कि गोविन्द गांठका पूरा तो अवश्य है, परन्तु अकलका अन्धा नहीं है।

गाढ़े का साथी—आपत्ति-कालमें काम आने वाला व्यक्ति।

उ०—गेंदा राम! सच बात तो यह कि जो गाढ़ेका साथी है, वही वास्तविक मित्र है।

गिने गन्ने—काम चलाऊ वस्तु।

उ०—हमारे पास तो गिने गन्ने हैं, केवल अपनी ही आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

गीदड़ भबकी—झूठी डाँट।

उ०—उसकी बुद्धिमत्ता देखिये, सिंहोंको गीदड़ भबकी देता है।

गीदड़ोंके बताये बेर—न मिलने वाली वस्तु।

उ०—तुम बुद्धिमान् होकर गीदड़ोंके बताये बेर खाने जा रहे हो।

गीदड़ोंके बताये बेर—धोखा।

उ०—उस दुष्टके कहनेसे आप ककोड़े खोजने चल दिये; यह तो गीदड़ोंके बताये बेर हैं।

गुदड़ीका लाल—साधारण वेषधारी महापुरुष गुणवान अथवा धनिक व्यक्ति जिसके रंग-ढंगसे उसकी वास्तविकता प्रकट न हो।

उ०—पण्डित तपोधन शर्मा तो गुदड़ीके लाल हैं; उनसे थोड़े ही व्यक्ति परिचित हैं।

गुनाह बे-लज्जत—हानिकर बुराकर्म।

उ०—तुम्हारी अकलपर पत्थर पड़ गये हैं जो गुनाह बे-लज्जतमें पड़ना चाहते हो।

गुरु-घण्टाल—बड़ा धूर्त्त।

उ०—जिस व्यक्तिको माधव गुरुजी कहकर सम्बोधित करता है, वह गुरु घण्टाल है।

गूँगेका गुड़—प्रकट न की जा सकने वाली बात।

उ०—ब्रह्म-प्राप्ति, यदि सच पूछो, गूँगेका गुड़ है।

गोबर-गणेश—अत्यन्त मूर्ख।

उ०—तुम्हारे मित्र गणेशदत्त तो पूरे गोबर गणेश ही हैं।

गौंका यार—स्वार्थी मित्र।

उ०—तुम जिसकी मित्रतापर भूल बैठे हो, वह गौंका यार है।

(घ)

घटा-टोप अंधेरा—भयङ्कर अंधेरा।

उ०—कल रात ऐसा घटा-टोप अंधेरा छाया हुआ था कि हाथपर हाथ मारा न सूझता था।

घरका आदमी—मेल-जोल वाला व्यक्ति।

उ०—पण्डितजी तो घरके आदमी हैं; उनसे किसी बातका ओल्हा नहीं किया जाता।

घरका भेदी—कपटी परिचित व्यक्ति।

उ०—राधामोहन घरका भेदी है; उसने ही सब काम बिगाड़ा है।

घरकी खेती—सुगमतासे प्राप्त होने वाली वस्तु।

उ०—क्या हुआ यदि उन्होंने एक टोकरा आमोंका तुम्हारे घर भेज दिया? उनके यहां तो घरकी खेती है।

घरका मामिला—आपसकी बात।

उ०—घरका मामिला न्यायालयमें न जाना चाहिये; आपसमें ही निपटारा कर लो।

घरकी बात—अपने काबूकी बात।

उ०—चिन्ता न करो; यह तो घरकी बात है; मैं सब कुछ ठीक कर लूँगा।

घरके घर—अनेक व्यक्ति।

उ०—उस वर्ष हमारे गाँवमें प्लेगने घरके घर तलपट कर दिये थे।

घरका मरद्—डरपोक।

उ०—उसकी वीरतासे भली-भाँति परिचित हूँ; वह केवल घरका मरद् है।

घर-बैठे—अनायास।

उ०—आज तो परमात्माने घर बैठे ही भोजन भेज दिया है।

घस खोदा—अनुभव शून्य; मूर्ख।

उ०—तुम्हारे जैसा घस खोदा वेदान्त दर्शनके सिद्धान्तोंको नहीं समझ सकते।

घोंघा वसन्त—निरा मूर्ख।

उ०—तुम्हारे समान बुद्धिमान् न हुआ है न होगा; कल उस घोंघा वसन्तको ही वसन्तोत्सवकी सभाका प्रधान बना दिया।

(च)

चण्डूखानेकी गप्प—निराधार बात।

उ०—पं० बेनीमाधवके तहसीलदार बननेकी खबर केवल चण्डूखानेकी गप्प है।

चरणोंकी धूलि—अत्यन्त तुच्छ।

उ०- स्वामिन्! यह बालक आपके चरणोंकी धूलि है।

चलता पुरजा—बड़ा चालाक।

उ०—तुम्हारे मिलमें मशीन चलानेवाला बड़ा ही चलता-पुरजा है ।

चलता हुआ—चालाक ।

उ०—चमनलाल बड़ा चलता हुआ व्यक्ति है, तुम उसे बड़ा-भोला भाला बतलाते थे ।

चाँदीका जूता—घूस इत्यादिमें धनका देना ।

उ०—चाँदीका जूता खाकर चाँदमल पेशकार तुम्हारे परम मित्र बन गये ।

चाण्डाल-चौकड़ी—दुष्ट मण्डली ।

उ०—जबसे वह इस चाण्डाल-चौकड़ीका मेम्बर बना है, उसका पढ़ना-लिखना छूट गया ।

चारके कन्धोंपर लदनेके दिन—मरनेके समीप अवस्था ।

उ०—अब तुम्हारे चारके कन्धोंपर लदनेके दिन हैं; परमात्माका भजन किया करो ।

चारों फलकी प्राप्ति—धर्म, अर्थ, काम, और मोक्षका मिलना ।

उ०—परमात्माकी भक्तिके बिना चारों फलकी प्राप्ति नहीं होती ।

चालीस-सेरा ऊत—निरामूर्ख ।

उ०—देवकीनन्दन चालीस-सेरा ऊत है; वह कभी पढ़ने-लिखनेमें मन नहीं लगाता ।

चिकना घड़ा—निर्लज्ज व्यक्ति।

उ०—मनसब राय तो चिकना घड़ा है ; उस पर किसीके उपदेशका प्रभाव नहीं जमता।

चुटकीके बजानेमें—अत्यन्त शीघ्र।

उ०—इसकी चिन्ता न करो ; यह सब प्रबन्ध चुटकीके बजानेमें हुआ जाता है।

चोटीका—उत्तम।

उ०—उसकी आकृतिपर न जाओ; वह चोटीका विद्वान् है।

चोली-दामनका साथ—घनिष्ठ सम्बन्ध।

उ०—लोग कहते हैं कि भारतमें हिन्दू-मुसलमानोंका चोली दामनका साथ है।

चौथीकी दुलहिन—अत्यन्त लज्जालु व्यक्ति।

उ०—यह तो तुम्हारा घर है, आरामसे बैठो ; तुम तो चौथीकी दुलहिन बने जाते हो।

(छ)

छँटा हुआ—प्रसिद्ध।

उ०—भूलकर भी उसका विश्वास न करना ; वह छँटा हुआ बदमाश है।

छातीका पत्थर—दुःखप्रद वस्तु अथवा व्यक्ति।

उ०—रामदेवका पुत्र उसकी छातीका पत्थर हो रहा है।

छापेमें छपा—अत्युत्तम।

उ०—ज़रा इस खद्दरके रूमालको देखिये; क्या छापेमें छपा है?

छिपा रुस्तम—अप्रसिद्ध गुणवान् व्यक्ति।

उ०—पण्डित विश्वेश्वर तो छिपे रुस्तम हैं; कल कवि सम्मेलनमें वह कविता पढ़ी कि सब फड़क उठे।

छिपा रुस्तम—गुप्त गुण्डा।

उ०—तुम उसको सज्जन बतलाते थे; वह तो छिपा रुस्तम निकला।

छोकर बुद्धि—अनुभव शून्यता।

उ०—उस कलके छोकरेको आजकी सभाका प्रधान बनाना चाहते हो; तुम छोकर बुद्धिसे ही काम लेते हो।

(ज)

जड भरत—निरामूर्ख।

उ०—आजकलके ग्रेजुयेट, यदि सच पूछो, अधिकतर जड भरत होते हैं।

जमाका डोबू—मूर्खतासे धन नष्ट करनेवाला।

उ०—जमुनादास तो जमाका डोबू है, तुमने उसको सौदा लाने क्यों भेज दिया?

जमाका डोबू—आलसी।

उ०—मोहन जमाका डोबू है, दिन भर पड़ा हुआ खाट तोड़ता रहता है।

जादू भरी आंखें—मोहित करनेवाले नेत्र।

उ०—उसकी जादू भरी आँखोंने कितने ही व्यक्ति विक्षिप्त कर दिये हैं।

जितना ऊपर उतना ही नीचे—पूरा दुष्ट।

उ०—उसको आप क्या समझते हैं? वह जितना ऊपर उतना ही नीचे है।

जीभका चटोरा—चटपटी चीजें खानेवाला।

उ०—जो व्यक्ति जीभका चटोरा होता है, उसका स्वास्थ्य कभी अच्छा नहीं रहता।

जीभका पतला—अवसरको विचार कर न बोलने वाला।

उ०—मोटेराम जीभका पतला है, न जाने क्या कह बैठे।

जीका जञ्जाल—दुःखदायी।

उ०—जगदीशकी मित्रता जगमोहनके जीका जञ्जाल बन गयी है।

जी खोलकर—निस्संकोच।

उ०—जो कुछ कहना है, जी खोलकर कहो, यहाँ सब अपने ही आदमी हैं।

जी खोलकर—तृप्त होकर।

उ०—कल तो तुमने जी खोलकर दिलका गुबार निकाला।

जी-जानसे—पूर्ण ध्यानसे, सब प्रकारसे।

उ०—वह आपके लिए जी-जानसे उद्यत है, आप और क्या चाहते हैं?

जी भरकर—तृप्त होकर।

उ०—आज हमने वह जी भरके खीर खायी कि कढ़ाई खाली कर दी।

जौ भर—अत्यल्प।

उ०—तुम्हारे भाईकी आँखोंमें जौ भर भी लज्जा नहीं है।

जुलाहेकी लौंडिया—साधारण व्यक्ति।

उ०—इस बातको तो जुलाहेकी लौंडिया भी समझ सकती है।

जोगीकी सी फेरी—बहुत थोड़ी देरके लिए आना।

उ०—कभी न कभी तो आप आते हैं; और वह भी जोगी-की सी फेरी।

(झ)

झड़-बेरीका कांटा—पीछा न छोड़ने वाला।

उ०—झगडूमल झड़बेरीका काँटा है, उससे दूर रहना ही अच्छा है।

झण्डे तलेके दुष्ट—प्रसिद्ध धूर्त।

उ०—उन लोगोंके जालमें न फँस जाना; वे झण्डे तलेके दुष्ट हैं।

झाड़-पिछोड़कर—बचा-खुचा इकट्ठा करके।

उ०—जो कुछ था सब झाड़-पिछोड़कर तुमको दे दिया था; अब मेरे पास कुछ नहीं है।

झांबेकी चिड़िया—शीघ्र बिछुड़ जानेवाले व्यक्ति।

उ०—छात्रालयके छात्र झांबेकी चिड़िया हैं; परीक्षा होते ही सब उड़ जायँगी।

झाड़-फूँकी फेरे—अधूरा विवाह-संस्कार।

उ०—पुलिसके भयके कारण वे लोग झाड़-फूँकी फेरे फेरकर लम्बे हुए।

झूठे टुकड़ोंका पला—किसीके अधीन पालित-पोषित।

उ०—हमारे झूठे टुकड़ोंका पला हमको ही आँखें दिखाता है।

झूठोंका राजा
झूठोंका सरदार
झूठोंका बादशाह } —बड़ा ही मिथ्यावादी।

उ०—मैं झगड़ूमलका विश्वास नहीं करता; वह झूठोंका राजा है।

(ट)

टकसाली भाषा—शुद्ध भाषा।

उ०—मेरठ डिविजनके लोग टकसाली भाषा बोलते और लिखते हैं।

टकसाली बात—पक्की बात।

उ०—मधुसूदन सदा टकसाली बात कहता है।

टकसाली कथा—प्रमाणित कथा।

उ०—पण्डित रामस्वरूपने आज टकसाली कथा सुनायी है।

टका सा जवाब—साफ इनकार।

उ०—उसके पास यदि अपना रुपया मांगने जाता हूं, तो वह टका सा जवाब देता है।

टकेका खेल—धनका चमत्कार।

उ०—किसी समय यहाँ भयानक वन था, आज विशाल भवन हैं, यह सब टकेका खेल है।

टकेकी खीर—मालकी वस्तु।

उ०—इसमें आनन्दकी कौनसी बात है? यह तो टकेकी खीर है, तुम भी ले सकते हो।

टक्कर का—जोड़ का।

उ०—इसकी टक्करका कम्बल तुमको सारे बाजारमें न मिलेगा।

टिड्डी दल—असंख्य व्यक्ति।

उ०—आज तो सेठजीके द्वार माँगनेवालोंका टिड्डी दल पड़ा हुआ है।

टेढ़ी खीर—कठिन कार्य।

उ०—मैं प्रयत्न तो अवश्य करूँगा; परन्तु उसको सीधे मार्ग-पर लाना बड़ी टेढ़ी खीर है।

(ठ)

ठग विद्या—धूर्त्तता।

उ०—तुम्हारा साथी विद्यादत्त ठग-विद्यामें खूब निपुण हो गया है।

ठगोंका ठग—बड़ा ही चालाक।

उ०—यादव एक ठगोंका ठग है; वह उसपर हाथ साफ किये बिना कभी न रहेगा।

ठट्ठे का मट्ठा—हँसी-दिल्लगीमें लड़ाई।

उ०—ठट्ठे का मट्ठा खट्टा होता है, इसको अधिक न पीना चाहिये।

ठठके ठठ—अत्यधिक।

उ०—उसकी दुकानमें लाठियोंके ठठके ठठ पड़े हैं, चाहे जितनी भी लाठियाँ लो।

ठन-ठन गोपाल—नितान्त निर्धन व्यक्ति।

उ०—धनिक है तेजपाल, पण्डितजी! यहाँ तो ठन-ठन गोपाल है।

ठगा-ठानी—मारपीट।

उ०—इस ठगा-ठानामें कहीं तुम न हानि उठा बैठना।

ठेला-ठेली—बड़ी भीड़।

उ०—ऐसी ठेला-ठेलीमें किसीका मिलना बड़ा कठिन है।

ठोका-मुँगरी—झगड़ा; रात-दिनका कलह।

उ०—हमारे पड़ौसी ठेकेदारके घरमें दिनरात ठोका-मुँगरी रहती है।

(ड)

डण्डेका यार—पिटकर सीधा होने वाला।

उ०—राधा मोहन भलमनसाहतसे कदापि न मानेगा; वह डण्डेका यार है।

डारकी डार—अधिक संख्या।

उ०—इस वनमें पहिले मृगोंकी डारकी डार फिरा करती थी।

डेरा-डण्डा—सब सामान।

उ०—यहाँसे वह कल अपना डेरा डण्डा उठा ले गया।

डोलेकी रांड—विवाह होते ही विधवा हो जाना।

उ०—वह डोलेकी रांड है; तुम उससे विवाह कर सकते हो।

डौल-डाल—दशा; हालत।

उ०—तुम तो वहाँ गये होगे; क्या डौल-डाल है?

———

(ढ)

ढलता सूरज—गौरवशून्य व्यक्ति।

उ०—रामदेव तो ढलता सूरज है; अब उसकी पूजा कोई नहीं करता।

ढलती जवानी—बुढ़ापेका आरम्भ।

उ०—तुम तो ढलती जवानीमें ही घुटने पकड़कर उठने लगे; बुढ़ापेमें क्या हाल होगा ?

ढलती-फिरती छांव—अस्थायी वस्तु।

उ०—लक्ष्मीका अभिमान न करो, यह ढलती-फिरती छाँव है।

ढाकके तीन पात—सदा निर्धन।

उ०—क्या हाल बताएँ ? यहाँ तो वही ढाकके तीन पात हैं।

ढपोर-शंख—वह व्यक्ति जो कहता अधिक हो और करता कुछ न हो।

उ०—वह कोरा ढपोर शङ्ख है; उसके विश्वासपर कोई कार्य न करना चाहिये।

ढोलकी पोल—गुप्त भेद।

उ०—कल ढोलकी पोल खुल जानेसे जनतामें उसकी बड़ी बदनामी हुई।

(त)

तकदीरका खेल—भाग्य सम्बन्धी कार्य।

उ०—इस विषयमें मैं कुछ नहीं कह सकता, यह तकदीरका खेल है।

खेल है तक़दीरका मिलना-मिलाना तो मगर।
हो गयी तेरी बदौलत सैरे-लन्दन गोल मेज॥
(दिनकर)

तकदीरका सिकन्दर—भाग्यशाली।

उ०—रामदत्त तकदीरका सिकन्दर है; परीक्षामें भी उत्तीर्ण हो गया और जगह भी अच्छी मिल गयी।

तलवारका हाथ—खड्ग-प्रहार।

उ०—वीरसिंहने तलवारका हाथ ऐसा मारा कि उस दुष्टकी गरदन अलग हो गयी।

तवा-सा मुंह—काला-कलूटा।

उ०—कालूराम तवा-सा मुंह लेकर रोटीके समय प्रतिदिन यहां आ धमकते हैं।

तवे परकी बूंद—शीघ्र नष्ट होनेवाली वस्तु।

उ०—इस वर्षासे खेतीको कुछ लाभ न होगा; वह तो तवेपर की बूंद है।

ताड़का वृक्ष—किसीको लाभ न पहुंचानेवाला बड़ा व्यक्ति।

उ०—तोताराम ताड़का वृक्ष है; उससे आप कुछ पानेकी आशा न रखिये।

ताबड़-तोड़ परिश्रम—कठिन प्रयत्न।

उ०—इस वर्ष तो माधव भी परीक्षाके लिए आरम्भसे ही ताबड़-तोड़ परिश्रम कर रहा है।

तारोंकी छांव—पश्चिम रात्रि।

उ०—ताराचन्द प्रतिदिन तारोंकी छांवमें उठता और स्नान करता है।

तिलमात्र
तिलभर } ज़रा भी।

उ०—तिलक रामको अपने बच्चोंका तिलभर भी ध्यान नहीं रहता।

तीनमें न तेरहमें—सर्वथा निकम्मा।

उ०—चार आदमियोंमें बैठकर क्यों डींग मारते हो? तुम तीनमें न तेरहमें।

तीतरकी बोली—अनिश्चित अर्थवाली बात।

उ०—उसकी बात तीतरकी बोली होती है; आप चाहे जो अर्थ निकाल लीजिये।

तेलीका बैल—बिना सोचे-समझे दिन-रात कार्यमें संलग्न रहने वाला व्यक्ति।

उ०—मनसबराय तेलीका बैल है; परीक्षामें कभी सफल नहीं होता।

तोता-चश्म—बे मुरौव्वत।

उ०—तुम्हारे जैसे तोता-चश्म आदमीसे तो मैं बात नहीं करना चाहता हूँ।

(थ)

थालीका बैंगन—एक बातपर न जमने वाला।

उ०—मोहनको अपने पक्षमें समझना बड़ी भूल है; वह तो थालीका बैंगन है।

(द)

दग्धकोकिलाहारी—बुरा गाने वाला।

उ०—आप तो दग्धकोकिलाहारी है; भला आपके गाने पर कौन न रीझेगा ?

दन्त-कथा—निराधार बात।

उ०—रामचन्द्रके विषयमें इस प्रकारकी अनेक दन्त कथाएँ प्रचलित हैं।

दन्त-वीणोपदेशाचार्य—शीतकालकी अत्यन्त ठंडी हवा।

उ०—दन्तवीणोपदेशाचार्यके उपदेशसे आज मैंने भी एक कम्बल मोल ले लिया है।

दमके दममें—अति शीघ्र।

उ०—बाजार जाओ और दमके दममें दो सेर घी लेकर वापस आओ।

दाल-भातमें मूसलचन्द—व्यर्थ बीचमें पड़ने वाला।

उ०—चन्द्रदत्त दाल-भातमें मूसलचन्द क्यों बना हुआ?

दाहिना हाथ—बड़ा विश्वासनीय सहायक।

उ०—जिस नानकको तुम अपना दाहिना हाथ समझते हो, वह तुम्हारी पगड़ी उतारने वाला है।

दिन-दहाड़े—खुल्लम-खुल्ला।

उ०—दिन-दहाड़े लूट मचाते हो और धर्मकी दुहाई देते हो; तुमको लज्जा नहीं आती?

दिन दूना रात चौगुना—उत्तरोत्तर।

उ०—चाणक्यके प्रतापसे चन्द्रगुप्तका ऐश्वर्य दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था।

दिल-जला—प्रेम-पीड़ित।

उ०—सुनते हैं दिल-जलेकी आह प्रेम-पात्रके दिलको हिला देती है।

दिल-फेंक—आसक्त होनेवाला व्यक्ति।

उ०—आजकल दामोदर भी अपनेको बड़ा दिल-फेंक समझते हैं।

दिलका काला—कपटी।

उ०—जिस मनुष्यका रङ्ग काला है, यह आवश्यक नहीं कि वह दिलका काला होगा।

दिलका कच्चा—भीरु; डरपोक।

उ०—जो व्यक्ति दिलका कच्चा होता है, वह प्रायः बातका पक्का नहीं होता।

दिलकी लगी—मानसिक व्यथा।

उ०—अभी तुम दिल्लगी और दिलकी लगीका भेद नहीं समझते हो।

दु टूक बात—संक्षिप्त और स्पष्ट होना।

उ०—मैं अधिक भूमिका न बाँधूगा; केवल दु टूक बात कहना चाहता हूँ।

दुनिया भरका—अत्यधिक।

उ०—यदि दुनिया भरका द्रव्य भी तुम्हारे पासमें आ जायगा, तुमको सन्तोष न होगा।

दूधका उफान—क्षणिक।

उ०—भद्र पुरुषोंका क्रोध, आप जानते हैं, दूधका उफान होता है।

दूधकी मक्खी—बीचमें रहनेवाला हानिकारक व्यक्ति।

उ०—रामशरण दूधकी मक्खी है; उसको बाहर निकाल कर फेंक दो।

दूधका दूध पानीका पानी—पूर्ण निर्णय; निष्पक्ष न्याय।

उ०—इस जिलेका न्यायाधीश दूधका दूध पानीका पानी करता है।

दूरकी बात—कठिन कार्य।

उ०—यह दूरकी बात नहीं है; मेरे समीप बैठो, मैं अभी समझा देता हूँ।

दो दिनका पाहुना—शीघ्र जानेवाला व्यक्ति; अधिक न ठहरने वाला।

उ०—विष्णुको अधिक कष्ट न दो; यह तो बेचारा दो दिनका पाहुना है।

दोपहरका दीप—आभा रहित।

उ०—दीपचन्दसे कल रात भेंट हुई थी; वह दोपहरका दीप प्रतीत होता था।

दो कौड़ीका—अति तुच्छ; निःसार।

उ०—यह कम्बल दो कौड़ीका भी नहीं है; इसे लेकर क्या कीजियेगा।

दो-चार घड़ीका मेहमान—मरणोन्मुख; मृत्युके सन्निकट।

उ०—उसकी कुशल क्या पूछते हो? वह तो दो-चार घड़ीका मेहमान है।

(ध)

धरती-धकेल—महा आलसी।

उ०—कैसे धरती-धकेलको परमात्माने तुम्हारो छातीपर धर दिया है।

धर्म-ध्वज }—पाखण्डी; दाम्भिक; स्वार्थवश धर्माचरण
धर्मध्वजी } करनेवाला।

उ०—आजकल अनेक धर्म-ध्वज फिरते हैं; किसीकी चालमें न आ जाना।

धुनका पक्का—कार्यको पूरा किये बिना न छोड़नेवाला; अध्यवसायी।

उ०—तपोधन शर्मा धुनका पक्का है इस वर्ष अवश्य एल-एल०, बी० पास करेगा।

धन्ना सेठ—धनिक व्यक्ति।

उ०—मैं कहींका धन्ना सेठ हूँ जो प्रतिदिन वस्त्र-दान करता रहूँ।

धुवांधार भाषण—ओजस्वी व्याख्यान।

उ०—आज रात्रिके आठ बजे आर्य-समाजमें पण्डित विष्णु शर्माका धुवाँधार भाषण होगा।

धोखेकी टट्टी—कपटका व्यापार।

उ०—कुछ लोगोंका मत है कि अछूतोद्धार केवल धोखेकी टट्टी है।

———

(न)

नक्षत्रका तेज— भाग्यशाली ।

उ०—नन्दराम शर्मा नक्षत्रका बहुत तेज निकला; वह इसी वर्ष दोनों परीक्षाओंमें उत्तीर्ण हो गया ।

नदी-नाव संयोग—आकस्मिक भेंट ।

उ०—स्वामिन् ! आपके समान महापुरुषोंका दर्शन नदी-नाव संयोग है ।

तुलसी या संसारमें भांति-भांतिके लोग ।
सबसे हिल-मिल बोलिए नदी-नाव संयोग ॥

—तुलसी

न देवाय न धर्माय—निरर्थक ।

उ०—ऐसे धनको रखनेसे क्या लाभ जो न देवाय न धर्माय ।

नाम लेवा पानी देवा—सन्तान, वंशज ।

उ०—अत्याचारियोंका सर्वनाश होता है, कोई नाम लेवा पानी देवा भी नहीं बचता ।

नयी जवानी मांझा ढीला—युवावस्थामें आलस ।

उ०—मुसटण्ड होकर तुमसे पानीका घड़ा नहीं उठता, यह नयी जवानी ढीला माँझा क्यों ?

नस-नसमें—अधिकतासे; पूर्णतः ।

उ०—मास्टर साहब कुछ न पूछिये; असत्य तो नानककी नस-नसमें भरा हुआ है।

नसीबेका धनी—भाग्यशाली।

उ०—चौधरी नसीब खाँ नसीबेके धनी हैं; उनको घर बैठे जायदाद मिल गयी है।

निरक्षर भट्टाचार्य—अपठित मूर्ख।

उ०—पण्डित भुजङ्गभूषण भट्टाचार्य तुम तुम्हारे समान निरक्षर भट्टाचार्यको पास नहीं फटकने देते।

नोकका जवान—वीर युवक।

उ०—तुम्हारा मित्र नेकीराम शर्मा नोकका जवान है।

(प)

पका आम—मरणासन्न व्यक्ति।

उ०—उसका दादा पका आम है न जाने कब टपक पड़े।

पकी दाढ़ी—वृद्ध पुरुष।

उ०—लाला घासीराम पकी दाढ़ी हैं; उनका अनुभव अधिक है।

पत्थरकी छाती—बड़ा साहस।

उ०—यदि पत्थरकी छाती है, तो छातीका पत्थर क्यों नहीं फेंक देते?

पत्थरकी लकीर—अटल बात।

उ०—मैंने अनेक बार अनुभव किया है कि जो कुछ वह कहता है पत्थरकी लकीर होती है।

परले सिरे का—छंटा हुआ।

उ०—परमानन्द, जिसको तुम अपना मित्र कहते हो, परले सिरेका धूर्त्त है।

पलककी झपकमें—अत्यन्त शीघ्र।

उ०—इतनी बड़ी घटना पलककी झपकमे घटित हो गयी।

पल्ला झाड़ कथा—वह उपदेश जिसको सुनकर ध्यान न दिया जाय।

उ०—पण्डित जी! आजकल तो लोग पल्ला झाड़ कथा सुनते हैं।

पानीका बुलबुला—शीघ्र मरनेवाला; क्षणभंगुर।

उ०—मानव शरीर पानीका बुलबुला है; इसका कुछ विश्वास नहीं।

पानीके मोल—बहुत सस्ता।

उ०—इस नगरमें आजकल दूध, पानीके मोल बिक रहा है।

पानीके बताशा—शीघ्र टूटने वाला; अति दुर्बल।

उ०—जापानके खिलौने पानीके बताशे होते हैं।

पानी भरीखाल—क्षणिक जीवन।

उ०—पानी भरी खालका क्या विश्वास? न जाने कब दम निकल जाय।

प्रातःकालका दीपक—मरणोन्मुख व्यक्ति।

उ०—उसका दादा प्रातःकालका दीपक है।

पीठ पीछे—अनुपस्थितिमें।

उ०—किसीकी पीठ पीछे निन्दा क्यों करते हो?

पुराना घाघ—कांइयाँ, बड़ा अनुभवी।

उ०—नत्थू नापित बड़ा पुराना घाघ है; उसको बड़ी दूरकी सूझती है।

पूर्णिमाका चन्द्र—अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति।

उ०—प्रताप नारायण किसी पूर्णिमाके चन्द्रके चकोर बने हुए हैं।

पेटके हल्का—बात गुप्त न रखने वाला।

उ०—राधा मोहन पेटका बड़ा हल्का है, इसीलिए मैं उससे कभी कोई भेदकी बात नहीं कहता हूं।

पेटका कुत्ता—भोजनका लालची।

उ०—यादव पेटका कुत्ता है; टुकड़ा देखते ही दुम हिलाने लगता है।

पेट भरकर—इच्छापूर्वक।

उ०—उसे पेटके गुलामने कल खूब पेट भरकर तुम्हारी बुराई की।

पेटका गुलाम—आजीविकाके लिए उचित-अनुचित साधनका विचार न करने वाला।

उ०—वह पेट रखता है, परन्तु पेटका गुलाम नहीं है।

'अय पेटके गुलामो! उट्ठो कि वक्त आया।'

पेटका गधा—खानेका बड़ा लालची।

उ०—विश्वनाथ पेटका गधा है; उसको घास दिखाकर चाहे जहाँ ले जाइये।

पेटका मारा—भूखा।

उ०—जगदीशके द्वारपर यदि कोई पेटका मारा पहुँच जाता है, तो वह उसको कुछ न कुछ दे देता है।

पेटकी ज्वाला—भूख।

उ०—गरीबोंके पेटकी ज्वाला किसी दिन तुम लोगोंको भस्म कर देगी।

पोतड़ोंका धनी—जन्मसे धनवान्।

उ०—लाला पुत्तनमल कोई नये रईस नहीं हैं; वे तो पुतड़ोंके धनी हैं।

पोतड़ोंका बिगड़ा हुआ—जन्मसे धनवान्।

उ०—वह भी आखिर पोतड़ोंका बिगड़ा हुआ है; तुमसे किसी बातमें पीछे न रहेगा।

फोकटमें—बिना मूल्य।

उ०—आठ आनेमें कटोरा और चम्मच फोकटमें मिला।

(ब)

बँधी मुट्ठी—गुप्त बात।

उ०—बँधी मुट्ठी है, इसके विषयमें कुछ नहीं कहा जा सकता।

बगुला-भगत—गुप्त कपटाचारी।

उ०—भोले-भाले लोगोंको ठगने वाले अनेक बगुला भगत फिरते हैं।

बच्चोंका खेलवाड़—सुगम कार्य।

उ०—कविता करना बच्चोंका खेलवाड़ नहीं है, पहिले कविताको समझो तो सही।

बड़ी बात—कठिन कार्य।

उ०—छोटे आदमीके लिए राजासे भेंट करना बड़ी बात है।

बड़ी नाकवाला—बड़ी गैरत वाला।

उ०—तुम बड़ी नाकवाले निकलकर आये; यदि कुछ लज्जा हो, तो हमारा रुपया अभी दे दो।

बन-बनकी लकड़ी—भिन्न-भिन्न स्थानोंके रहने वाले।

उ०—छात्रालयमें बन-बनकी लकड़ियां इकट्ठी हो रही हैं।

बनारसी ठग—अत्यन्त चालाक।

उ०—काशीराम पूरा बनारसी ठग है मैने उसको बहुत दिनों-से जानता हूं।

बनीके साथी
बनीके यार } स्वार्थी मित्र।

उ०—संसारमें लोग प्रायः बनीके साथी होते हैं ; बिगड़ीमें कोई काम नहीं आता ।

बने हुए तिलकधारी—निरे ढोंगी ।

उ०—आजकल बने हुए तिलकधारियोंका भारतमें अच्छा सम्मान होता है ।

बन्दर घाव—कभी अच्छा न होनेवाली चोट ।

उ०—विष्णु शर्माके लिए उस दिनका अपमान बन्दर घाव बन गया है ।

बराबरकी टक्कर—समान ।

उ०—माधव बराबरकी टक्कर है; यादवके लिए उसको परास्त करना कठिन-सा ही है ।

बलिदानका बकरा—हानिप्रद कार्यमें चलने वाला ।

उ०—क्या मैं ही बलिदानका बकरा हूँ ?

बांह गहेकी लाज—आश्रय देकर निभाना ।

उ०—यदि बाँह गहेकी लाज न होती, तो मैं तुमको आज ही ठुकरा देता ।

बाटका रोड़ा—किसीके मार्गमें रुकावट डालनेवाला ।

उ०—तुम कभी जिसकी बाट जोहते थे, वह अब बाटका रोड़ा बना हुआ है ।

बातका पूरा
बातका पक्का } —अपना वचन पूरा करने वाला ।

उ०—तुम उसको कच्चा नहीं कर सकते; वह अपनी बातका पक्का है।

बातकी बातमें—अति शीघ्र।

उ०—उसने बातकी बातमें एक बड़ी अच्छी कविता लिख डाली है।

बात-बातमें—प्रत्येक मामलेमें।

उ०—क्या यह अच्छी बात है कि बात-बातमें तुम उसकी बात बिगाड़ते हो।

बाबा आदमके समयका—अत्यन्त पुराना।

उ०—बाबूरामके पास बाबा आदमके समयका एक कम्बल है।

बालूकी भीत—अस्थायी।

उ०—ओछे आदमीकी प्रीति बालूकी भीत होती है।

बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल ठीक।

उ०—आपकी बात बावन तोले पाव रत्ती सिद्ध होती है।

बिगड़े-दिल—धूर्त्त।

उ०—किसी बिगड़े-दिलके हत्थे चढ़ गये तो सब नशा उतर जायगा।

बिना विषाणका बैल—निरा मूर्ख।

उ०—बिना विषाणका बैल काव्यरसास्वादनसे वञ्चित रहता है।

बिना नकेलका ऊँट—स्वच्छन्द व्यक्ति।

उ०—मोहन बिना नकेलका ऊँट है; न जाने किधर निकल गया।

बिना सूंडका हाथी—बहुत मोटा मनुष्य।

उ०—तुम्हारा सहपाठी गणेशदत्त तो आजकल बिना सूँडका हाथी हो रहा है।

बिना पानीकी मछली—अत्यन्त व्याकुल।

उ०—प्रेमनाथके प्रेम-सागरमें प्रेमानन्द बिना पानीकी मछली है। क्या यह आश्चर्य नहीं?

बिस बिस्वे—पूर्णतः।

उ०—बनवारीलाल बीस बिस्वे पुस्तकोंका चोर है।

बुद्धिका शत्रु—निरा मूर्ख।

उ०—बुद्धि सागर तुम बुद्धिके शत्रु हो; तुमको लाभालाभका भी ज्ञान नहीं।

बूरके लड्डू—निस्सार वस्तु।

उ०—संसारके सुख बूरके लड्डू हैं; जो खाता है, वही पछताता है।

बेदाम-गुलाम—मुफ्तका नौकर।

उ०—वह तुम्हारा बेदाम गुलाम बन गया है। और क्या चाहते हैं।

बे-पेंदीका बर्त्तन / बे-पेंदीका लोटा } वह व्यक्ति जिसका कुछ सिद्धान्त न हो।

उ०—तुम ही बतलाओ कि मैं उस बे-पेंदीके लोटेका विश्वास कैसे करूँ।

बे-पेंदीकी बातें—निराधार बातें।

उ०—दार्शनिकके सामने बे-पेंदीकी बातें न कहा करो।

[भ]

भरतीका पद—केवल संख्या बढ़ानेवाला नीरस पद।

उ०—तुम्हारी कवितामें भरतीके पदोंकी भरमार रहती है।

भाड़ेका टट्टू—बिना कुछ लिये काम न करनेवाला।

उ०—यादव भाड़ेका टट्टू है; उसको कुछ दो, तो काम करे।

भीष्मप्रतिज्ञा—कठिन प्रण।

उ०—अपमानित होकर चाणक्यने नन्द-वंशके विनाशकी भीष्म प्रतिज्ञा की थी।

भेड़िया चाल—अविवेकपूर्ण अनुसरण।

उ०—जिस देशमें भेड़िया चाल होती है, वहां लीडरोंकी मौज रहती है।

'न छोड़ोगे तुम भेड़िया चाल कब तक'

भोजन-भट्ट—खबीचड़, पेटू, अमिताहारी।

उ०—छज्जूराम पूरा भोजन-भट्ट है; जब खाने बैठता है, रोटियोंकी तह तोड़ डालता है।

[म]

मक्खी-चूस—कृपण।

उ०—मक्खनलाल बड़ा मक्खी-चूस है ; वह तुमको एक कौड़ी भी न देगा।

माईका लाल—साहसी व्यक्ति।

उ०—सैकड़ोंमें कोई माईका लाल होता है, जो दूसरोंके लिए जान लड़ाता है।

मानका पान—सम्मान सहित साधारण वस्तु।

उ०—पण्डितजी, मानका पान भी कम नहीं होता, उसने तो आपको प्रेम सहित भोजन कराया है।

मिट्टीके मोल—बहुत सस्ता।

उ०—तुमको यह सोनेकी अंगूठी मिट्टीके मोल मिल गयी। और क्या चाहते हो ?

मिट्टीका माधो—बड़ा आलसी।

उ०—तुम तो यार, मिट्टीके माधो हो ; तुमसे कमरेकी धूल भी नहीं झड़ती।

मीठी छुरी—कपटी मित्र।

उ०—मेरे अनुभवने सिद्ध कर दिया है कि माधव मीठी छुरी है।

मुखका ग्रास—सुगम कार्य।

उ०—आचार्य-परीक्षामें पास होना मुखका ग्रास नहीं है।

मुँह अँधेरे—सूर्योदयके पूर्व।

उ०—कल मुँह अँधेरे उठकर सब सामान ठीक करना है, इसलिए इस समय प्रकाशका प्रबन्ध कर लो।

मुंहका लबार—केवल कहने ही वाला।

उ०—केवलराम केवल मुँहका लबार है; कभी कुछ करके भी दिखाता है?

कहते हैं करते नहीं मुँहके बड़े लबार।
आखिर धक्के खायेंगे सांईके दरबार॥

मुँह देखेकी मुहब्बत—बनावटी प्रेम।

उ०—जिनको तुम अपने प्रेमी समझते हो, वे मुँह देखेकी मुहब्बत करते हैं।

मुँह-फट—असभ्य।

उ०—जाओ; अपना काम देखो; मैं ऐसे मुंह-फटके मुंह नहीं लगता हूँ।

मुँहका कड़ा—तेज स्वभावका व्यक्ति।

उ०—जो व्यक्ति मुँहका कड़ा हो उसके साथ नम्रतापूर्वक बात करना मूर्खता है।

मुँहका कच्चा—जो किसी बातको गुप्त न रख सके।

उ०—मोहन मुंहका कच्चा है, इसलिए मैं उसका विश्वास नहीं करता।

मैदानका शेर—वीर पुरुष।

उ०—रणवीर सिंह मैदानका शेर है; उसको देखकर शत्रु बकरीकी भांति भयभीत होते हैं।

मोटा शिकार—धनिक आसामी।

उ०—आज तो मोटे राम पाण्डेने कोई मोटा शिकार फंसाया है।

म्याऊँका ठौर—जोखिमकी बात।

उ०—तुम्हारे जैसे षण्डोंके लिए तो घर भी म्यांऊका ठौर होता है।

मोटी मुर्गी—मालदार आदमी।

उ०—उससे करारे दाम लो; वह तो मोटी मुर्गी है।

(य)

यमराजके दूत—पुलिसके सिपाही।

उ०—आजकल मामराजके पीछे यमराजके दूत पड़े हुए हैं।

यहांका यहीं—ठीक इसी स्थानपर।

उ०—अधिक तीन-पांच करोगे तो यहांका यहीं मार डालूंगा।

युग-युगान्तरसे—बहुत दिनोंसे।

उ०—हमारे देशमें युग-युगान्तरसे यही प्रथा चली आ रही है।

युग-युगान्तरमें—बहुत दिनोंमें।

उ०—स्वामी रामतीर्थके समान महापुरुष युग-युगान्तरमें कोई उत्पन्न होता है।

(र)

रंगा सियार—लम्पट ।

उ०—जिसको तुमने महात्माकी पदवी दी है, वह रंगा सियार है ।

रो-पीटकर—बड़े दुःखसे ।

उ०—राधाचरण रो-पीटकर कहींसे दस रुपये लाया था, सो किसी दुष्टने चुरा लिये ।

राम-कहानी—दुःखकी कथा ।

उ०—उनसे अपनी राम-कहानी कहो, सम्भव है कुछ काम बन जाय ।

राहकी बात—उचित बात ।

उ०—पण्डित रहतूरामजी राहकी बात कहते हैं, परन्तु तुम मानते ही नहीं हो ।

रोटी-कपड़ेका साधन—जीवन-निर्वाहका उपाय ।

उ०—जिस विद्यार्थीके रोटी-कपड़ेका भी साधन न हो, वह परीक्षामें उत्तीर्ण कैसे हो सकता है ?

(ल)

लँगोटका पक्का
लँगोटका सच्चा } संयमसे रहनेवाले, जो कामी न हो ।

उ०—विष्णुदत्तमें सबसे बड़ा गुण यह है कि वह लँगोटका पक्का है।

लँगोटिया यार—बचपनका मित्र।

उ०—सुदामा और कृष्ण दोनों लँगोटिया यार थे।

लकीरका फकीर—पुरानी रीतियोंको माननेवाला।

उ०—ललितमोहन इस नवयुगमें भी लकीरका फकीर ही बना हुआ है।

लङ्काका चोर—वह व्यक्ति जिसकी मूँछ-दाढ़ी न निकलती हो।

उ०—तुम भ्रममें पड़ गये हो; यह स्त्री नहीं है, कोई लङ्काका चोर है।

लाख रुपयेकी बात—बहुत लाभदायक बात।

उ०—लक्ष्मणदत्तने लाख रुपयेकी बात कही है, तुम न मानो यह और बात है।

लुटिया चोर—साधारण चोरी करने वाला।

उ०—गत वर्ष ललित, लुटिया चोर था, परन्तु अब तो, सुनते हैं, वह चोरोंका गुरु हो गया है।

लोहेके चने—कठिन कार्य।

उ०—बड़ी लज्जाकी बात है कि तुम ब्राह्मण होकर संस्कृतके अध्ययनको लोहेके चने बनाते हो।

(व)

विवाह पीछे बढ़ार—अवसर निकल जानेपर किसी कार्यका करना।

उ०—तुम तो सदा विवाह पीछे बढ़ार किया करते हो।

विष-भरा घड़ा—कुटिल व्यक्ति।

उ०—जिसको तुम लोग अमृतलाल कहते हो, वह विष भरा घड़ा है।

विषाक्त बाण—अति कटु शब्द।

उ०—उस गरीबपर सदा तुम विषाक्त बाण छोड़ते रहते हो।

विषकी गांठ—दुष्टतासे भरा हुआ।

उ०—नन्दराम विषकी गाँठ है; उससे सावधान रहना चाहिये।

विषकी बेल—दूसरोंको हानि पहुँचाने वाला।

उ०—तेजपाल परनारीको सदा विषकी बेल समझता है।

वेद-वाणी
वेद-वाक्य } प्रमाणित बात।

उ०—रामानन्द अपने पिताकी बातोंको वेद-वाक्य समझता है।

(श)

शरीरका चोर—रोग।

उ०—जबतक शरीरका चोर नहीं निकलता, मनुष्यका शरीर नहीं पनपता।

शाही मेहमान—राजनीतिक कैदी।

उ०—भवानीदत्त शाहको भी बहुत दिनोंसे शाही मेहमान बननेकी धुन सवार है।

(स)

सफेद झूठ—निरा असत्य।

उ०—आप सच मानिये, जो कुछ वह कहता है सब सफेद झूठ है।

सांपका बच्चा—दुष्ट व्यक्ति।

उ०—जिससे तुम मित्रता करना चाहते हो, वह साँपका बच्चा है।

सांपके नीचेका बिच्छू—बड़ा भयंकर व्यक्ति।

उ०—तुम्हारे कमरेके ऊपर जो आदमी रहता है, वह साँपके नीचेका बिच्छू है।

सांप-छछून्दरकी गति—विकट परिस्थिति जिसमें कुछ न सूझे।

उ०—न कहते हो बनता है, न चुप रहते; साँप-छछून्दरकी गति हो रही है।

सात-पांच—चालाकी।

उ०—सदानन्द बहुत ही सरल विद्यार्थी है; वह सात-पाँच नहीं जानता।

सायंकालका सूर्य—ऐश्वर्यशून्य व्यक्ति।

उ०—सुरेशका पिता सायंकालका सूर्य्य है; अब उसकी पूजा कोई नहीं करता।

सारसकी जोड़ी—अन्तरङ्ग मित्र।

उ०—सुरेन्द्र और नरेन्द्रकी सारसकी जोड़ी है।

सिरसे पांव तक—आरम्भसे अन्ततक।

उ०—मैंने तुमको सिरसे पाँवतक सब कथा सुना दी है, अब चाहे जो करो।

सुनहरा अवसर—अत्यन्त लाभदायक अवसर।

उ०—इस सुनहरे अवसरको हाथसे न दो; बादमें हाथ मलोगे।

सोडावाटरका जोश—क्षणिक उत्तेजना।

उ०—तुम लोगोंका आन्दोलन सोडावाटरका जोश होता है।

सोलह आना—पूर्णतः।

उ०—तुम्हारी बात, पूर्णानन्द, आज सोलह आने ठीक निकली।

सौ बातकी एक बात—सारांश।

उ०—बाबूजी, सौ बातकी एक बात यह है कि आपके लड़केका मन पढ़नेमें नहीं लगता है।

स्यापेकी नाइन—दिखाने मात्रको रोनेवाला व्यक्ति।

उ०—श्यामाका मित्र स्यापेकी नाइन है; उसके पिताकी मृत्युपर दो आँसू गिरा गया।

स्वर्ण सुयोग—अति लाभप्रद अवसर।

उ०—सुरेन्द्रने इस स्वर्ण सुयोगसे कुछ भी लाभ नहीं उठाया है।

स्वार्थके सगे—मतलबके सम्बन्धी।

उ०—संसारमें प्रायः स्वार्थके सगे ही पाये जाते हैं।

स्वारथके सब ही सगे बिनु स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवैं पंछी सरस तरु निरस भये उड़ि जाहिं॥

(ह)

हथेलीका आंवला—सन्देह रहित बात।

उ०—यह हथेलीका आँवला है कि वह बावला यहां आया और एक घण्टे तक बैठा रहा।

हरफ़न मौला—बड़ा चतुर-चालाक।

उ०—तुम्हारा सहपाठी हरदेव शर्मा हरफन मौला है।

हाथ चालाक—किसीकी चीज चुराने वाला।

उ०—मुझे ऐसे नौकरकी आवश्यकता है, जो हाथ चालाक न हो।

हाथका सच्चा—चीज न उठाने वाला।

उ०—गत वर्ष जो नौकर मेरे पास था, वह हाथका बड़ा सच्चा था।

हाथका दिया—दान।

उ०—लोग कहते हैं कि हाथका दिया किसी न किसी समय काम आता है।

हाथका मैल—तुच्छ।

उ०—पैसा तो हाथका मैल है, इसका लालच न कीजिये, लालाजी !

हाथकी तङ्गी—धनकी कमी।

उ०—हाथकी तङ्गीके कारण वह तुम्हारा ऋण नहीं चुका सका।

हियेका अंधा—बुद्धिहीन।

उ०—हृदय नारायणको तुमलोग हियेका अन्धा न समझो।

हुड़दङ्ग पार्टी—उपद्रव मचाने वाली मण्डली।

उ०—सुना है तुम भी आजकल उस हुड़दङ्ग पार्टीमें उठते-बैठते हो।

कुछ क्रियाओंका मुहाविरेदार प्रयोग

[IDIOMATIC USES OF SOME VERBS.]

अकड़ना—अभिमान करना।

उ०—यदि मेरे साथ अधिक अकड़ोगे, तो मैं डण्डसे खबर लूँगा।

अड़ना }
अरटना } —आग्रह करना।

उ०—वह अरँटता है अरँटने दो; उसकी देखा-देखी तुम झूठी बातपर क्यों अड़ते हो ?

आंकना—मूल्यका अनुमान लगाना।

उ०—मैंने तो इस कम्बलका दाम पाँच रुपये आँका है।

आना—जानना।

उ०—तुम उसकी प्रशंसाके पुल क्यों बाँधते हो ? उसको कुछ नहीं आता है।

उखड़ना—असन्तुष्ट होना।

उ०—साधारण-सी बात पर कहीं अच्छे आदमी उखड़ते हैं।

उखाड़ना—बिगाड़ना।

उ०—सब दोष तुम्हारे ही मत्थे है, क्योंकि तुमने उसका जमा-जमाया काम उखाड़ा है।

उचकना—अभिमान करना।

उ०—उत्तमचन्द ! इतना क्यों उचकते हो ? यहाँ सब तुमसे खूब परिचित हैं।

उछलना—प्रसन्न होना।

उ०—नारायण ! आज क्या मिल गया है जो इतना उछल रहे हो ?

उछलना—अभिमान करना।

उ०—बहुत न उछलो; तुम्हारी बानगी भी कल देखी जायगी।

उठना-बैठना—मेल-जोल होना।

उ०—वह अंगरेजोंमें उठता-बैठता है, इसलिए काले आदमी-से बात नहीं करता।

उठना—उन्नति करना।

उ०—हमलोग भाग्यके भरोसे बैठे हैं; अन्य सब जातियाँ उठ रही हैं।

'उठ रहे हैं उठने वाले आजकल'

उठना—खर्च होना।

उ०—सेठ माटूमलके पुत्रके विवाहमें दस सहस्र रुपयेसे कम न उठे होंगे।

उठाना—उद्धार करना।

उ०—जो स्वयं नहीं उठ सकता, वह दूसरोंको कैसे उठा सकता है।

उठाना—सहन करना।

उ०—पढ़ने लिखनेमें पण्डित तपोधनने अनेक कष्ट उठाए हैं।

उठाना—काम आना।

उ०—हमने तुम्हारी बरसों उठायी; अब हमपर दया करो।

उठाना—बेचना।

उ०—अजी, उठाओ भी, इस समय अच्छे दाम मिल रहे हैं।

उड़ना—चाल चलना।

उ०—हमसे न उठो, हम तुम्हारी रग-रग पहिचानते हैं।

उड़ाना—खाना।

उ०—आज तो तर माल उड़ाओगे; हमसे इसीलिए बात नहीं करते।

उड़ाना—चुराना।

उ०—मुझे बीस बिस्वे निश्चय है कि रामकी पुस्तक तुमने उड़ायी है।

अजब अन्दाज से है आज नालाजन समझता हूँ।
उड़ाया बुलबुले गुलजारने रंगे-फुगाँ अपना॥

(दिनकर)

उभरना—अभिमान करना; उत्तेजित होना।

उ०—मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुम उससे जितना दबोगे, वह उतना ही उभरेगा।

उभारना—उत्तेजित करना।

उ०—मुझे विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि उसको मेरे विरुद्ध तुमने उभारा है।

उलझना—लड़ना।

उ०—सुरेन्द्र! तुमको लज्जा नहीं आती? एक नौकरसे उलझ रहे हो।

(ऐं)

ऐंठना—अभिमान करना।

उ०—इतना किस लिए ऐंठते हो? यह लो अपनी पुस्तक।

ऐंठना—असन्तुष्ट होना।

उ०—हमसे ऐंठते हो, ऐंठो; हम इसकी परवाह नहीं करते।

(ओ)

ओटना—भुगतना।

उ—मैं स्पष्ट कहे देता हूँ कि यह बखेड़ा तुमने ही खड़ा किया है, तुम ही ओटोगे।

औंदकना—चौंक पड़ना।

उ०—यदि तुम अघोड़ी बाबाकी आकृति देख लोगे, तो रात भर औंदकोगे।

माई एहा पूत जण जेहा राण प्रताप।
अकबर सूतो औंदेकै जाण सिराणौ साँप॥

———

कटना—लज्जित होना।

उ०—कल जब मैंने उसके चाकू चुरानेकी कथा कही, वह बहुत कटा।

कटना—निर्वाह होना।

उ०—तुमको पता नहीं कि आजकल हमारी कैसे कट रही है।

कट रही है बुरी भली अपनी।
है मुसीबतमें ज़िन्दगी अपनी॥

कड़कना—प्रकुपित होना।

उ०—क्या कारण था कि कल तुम्हारे मित्र कालूराम बहुत कड़क रहे थे?

कांपना—डरना।

उ०—वह ऐसा वीर है कि भेड़ियेका नाम सुनकर ही कांपने लगता है।

काटना—बुरा लगना।

उ०—यदि वह इस हलुवेको नहीं खाता, तो तुम खा लो; तुम्हें क्या काटता है?

कूदना—प्रसन्न होना।

उ०—कुन्दनलालको आज क्या मिल गया जो इतना कूद रहा है।

खटकना—सन्देह होना।

उ०—मुझे पहिले ही खटका था कि यह कोई धूर्त्त है।

खटकना—बुरा लगना।

उ०—यह बतलाओ कि शुकदेवका यहां आना तुम्हें क्यों खटकता है?

खलना—दुःख देना।

उ०—मैं नहीं समझता हूँ कि उनका खेलना-कूदना तुम्हें क्यों खलता है।

खिंचना—मन-मुटाव करना।

उ०—सुरेन्द्र दो दिनका पाहुना है; उससे इतना क्यों खिचते हो?

खिलना—प्रसन्न होना।

उ०—आज लाला नयनसुखमल बहुत खिल रहे हैं।

खुलना—निस्सङ्कोच होना।

उ०—वह बड़ा हँसने-बोलनेवाला व्यक्ति है, वह अभी तुमसे खुला नहीं।

खेलना-खाना—आनन्द करना।

उ०—बाल्यावस्थामें प्रायः सभी बच्चे खेलते खाते हैं।
'तुम्हारे खेलने-खानेके दिन हैं।

गढ़ना—पीटना।

उ०—किसी दिन मुझे मिलने दो; उसको पकड़कर ऐसा गढ़ूंगा कि वह भी जानेगा।

गढ़ना—बनाना।

उ०—उन्होंने मोहनके विषयमें कुछ भी न पूछा होगा; यह तुमने गढ़ा है।

गिड़गिड़ाना—अधिक विनती करना।

उ०—जो व्यक्ति तुम्हारी एक भी नहीं सुनता, उसके सामने क्यों गिड़गिड़ाते हो?

गिरना—अवनतिको प्राप्त होना।

उ०—तुमने दूसरोंको गिराया है, अब तुम गिरोगे।

गिरना—नष्ट होना।

उ०—नीचोंमें उठने-बैठनेके कारण तुम प्रतिदिन गिर रहे हो।

गिराना—भ्रष्ट करना।

उ०—तुम्हारा गिरना तो अवश्यम्भावी है, परन्तु तुम विमलको भी गिराओगे।

गिराना—अवनति करना।

उ०—जिन अछूतोंको उठाना चाहते हो, उनको तुमने ही गिराया था।

गुजरना—दुःख उठाना।

उ०—तुम नहीं जानते कि हमपर इन दिनों क्या गुजर रही है।

घटना—हानि होना; अप्रतिष्ठा होना।

उ०—मैं नहीं जानता कि उसके पास जानेमें तुम्हारा क्या घटता है।

घुटना—प्रेम होना।

उ०—सुरेन्द्र और नरेन्द्रकी आजकल खूब घुटती है।

घुलना—लड़ना।

उ०—घनानन्द! कल तुम मोहनके साथ अकारण क्यों घुल रहे थे?

चटाना—घूस देना।

उ०—यदि तुम उसको कुछ न चटाते, तो वह तुम्हारे पक्षमें कदापि न होता।

चढ़ना—अभिमान होना।

उ०—उसको बहुत दिनोंसे चढ़ी हुई है, इसीलिए मैंने उससे बोलना छोड़ दिया।

चढ़ाना—पीना।

उ०—जगदीशका पिता एक बोतल रोज चढ़ाता है।

चराना—देखना।

उ०—मुझे अकड़ न दिखाओ, मैंने तुम्हारे जैसे पशु बहुत चराये हैं।

चलना—बहाना करना।

उ०—मुझसे क्यों चलते हो ? मैं तो तुमको बचपनसे जानता हूँ।

चलना—माननीय होना।

उ०—चमनलालके चलाको गाँव भरमें चलती है।

चलना—ठहरना।

उ०—तुमने एक रुपया व्यर्थ खोया; यह धोती दो महीने भी न चलेगी।

चलना—बात माना जाना।

उ०—उसके सामने उसके पिताकी भी नहीं चलती है।

चलना—अनबन होना।

उ०—अमरनाथकी इन दिनों जगदीशसे चली हुई है।

चलाना—धोखा देना।

उ०—मुझको न चलाओ; मैं तुम्हारी चालमें आनेवाला नहीं हूँ।

चांटना—पीटना।

उ०—किसी दिन ऐसा चाँटूँगा कि सब चटक-मटक भूल जाओगे।

चिपटना—सिर होना।

उ०—क्या तुम्हारा सिर फिर गया है जो लोगोंको चिपटते फिरते हो?

चुभना—बुरा लगना।

उ०—यदि कोई रामके विरुद्ध बात करता है, तो लक्ष्मणके बहुत चुभती है।

———

छकना—लज्जित होना।

उ०—जरा उन लोगोंके साथ भोजन करने जाओ; देखना कैसे छकते हो।

छकाना—लज्जित करना।

उ०—कल हम लोगोंने छन्नूलालको चौपाटीपर खूब छकाया।

छटपटाना—घबराना।

उ०—यदि तुम छटपटाओगे, तो सब बना बनाया काम बिगड़ जायगा।

छड़ना—पीटना।

उ०—जगदीशकी माताने कल उसको बुरी तरह छड़ा।

छनना—खूब मेल-जोल होना।

उ०—शिवनाथ और छज्जूरामकी आजकल खूब छनती है।

छनना—तकरार होना।

उ०—जब महेशकी सुरेशसे छनती है, तब वह तुम्हारे पास उठने-बैठने लगता है।

जँचना—अच्छा दिखायी देना।

उ०—इस कोटका कपड़ा भी अच्छा है और सिलाई भी अच्छी की है; इस समय आप जँच रहे हैं।

जँचना—पसन्द आना।

उ०—उसने तीन-चार प्रकारका गाढ़ा दिखाया, परन्तु मुझे जँचा नहीं।

जँचना—विश्वास होना।

उ०—यदि मुझे उसकी बात जँचती, तो मैं उसके साथ राम-र चला जाता।

जकड़ना—विवश करना।

उ०—मुझे अवकाश मिलने दो; मैं उसे ऐसा जकड़ूँगा कि चसक न सकेगा।

जड़ना—विरुद्ध कहना।

उ०—तुमने श्याम सुन्दरसे कुछ ऐसी जड़ी कि उसने यहाँ आना छोड़ दिया।

जमना—स्थिति दृढ़ होना।

उ०—मुझे ज़रा जमने दो; मैं उन सबको उखेड़ दूँगा।

जमाना—रामानन्दने सुरेशके एक ऐसा धौल जमाया कि वह चिल्ला उठा।

जलना—दुःखी होना।

उ०—शान्तिका पिता उसके दुराचरणसे सदा जलता रहता है।

जलाना—सताना।

उ०—बड़ी लज्जाकी बात है कि तुम एक शान्ति-प्रिय व्यक्तिको जलाते हो।

जागना—सावधान होना।

उ०—समय और धन नष्ट करके भी तुम नहीं जागते; आश्चर्य है।

जाना—हानि होना।

उ०—लाला दामोदर दासके पास जानेमें तुम्हारा क्या जाता है।

झटकना—ठगना।

उ०—वह प्रत्येक विद्यार्थीसे कुछ न कुछ झटकता रहता है।

झाड़ना—बुरा-भला कहना।

उ०—किसी दिन मिलनेपर उसको ऐसा झाड़ूंगा कि वह सदा स्मरण रखेगा।

टकराना—झगड़ा करना।

उ०—भद्र पुरुष कभी किसीसे व्यर्थ नहीं टकराते हैं, टीकाराम!

टटोलना—मनका भाव परखना।

उ०—मोहनने तो टका-सा जवाब दे दिया; अब रामको टटोलता हूँ।

टपाना—चुराना।

उ०—दयाराम कहता है कि सीतारामकी घड़ी तुमने टपायी है।

टरकाना—टालना।

उ०—जीवितरामको न टरकाओ; उसको कुछ दे दो।

टांकना—लिखना; नोटकर लेना।

उ०—मैं तुम्हारी दोनों बातोंको अपनी नोट-बुकमें अभी टांकता हूं।

टापना—वञ्चित रह जाना।

उ०—वह खा-पीकर लम्बा हुआ; अब तुम टापो।

ठुकना—मार खाना।

उ०—यदि उसके साथ कभी फिर झगड़ा करोगे, तो बहुत ठुकोगे।

ठुकराना—तिरस्कार करना।

उ०—जो तुम्हें हाथों छांव करता है, तुम उसे ठुकराते हो, श्याम !

ठोकना—पीटना ।

उ०—यदि उसके भाईको छेड़ोगे, तो वह तुम्हें बहुत ठोकेगा ।

डकराना—ज़ोरसे रोना ।

उ०—पुष्कर द्वारा राज्य छिन जानेपर नलके बच्चे अपने भाग्यको कोसते और डकराते थे ।

डकारना—अनुचित उपायसे अधिकारमें करना ।

उ०—ललित मोहन, तुम्हारी लीडरी सबसे खरी; नित-नये चन्दे डकारते और मौज उड़ाते हो ।

डगमगाना—विचलित होना ।

उ०—यदि कर्तव्य-पथपर डगमगाओगे, तो अपयशके भागी बनोगे ।

डबोना—भ्रष्ट करना ।

उ०—तुम गये सो गये, तुमने तो यादवको भी डबोया, माधव !

डूबना—भ्रष्ट होना ।

उ०—नीचोंकी संगतिमें रहकर कौन नहीं डूबता है, लालाजी !

डूबना—बरबाद होना।

उ०—यदि मदिरा-पान करोगे, तो अवश्य डूबोगे, मोहन!

डोलना—विचलित होना।

उ०—डालचन्द्र! स्मरण रखो कि धीर पुरुष धर्म-पथपर नहीं डोलते हैं।

तकना—अनुचित उपायसे लेनेकी इच्छा करना।

उ०—जो दूसरोंकी वस्तुओंको तकता है, वह महानीच है।

ताड़ना—भांपना।

उ०—जगदीश समझता है कि उसकी बातोंको कोई नहीं ताड़ता।

तिड़कना—उत्तेजित होना।

उ०—उसकी पुस्तक न उठाओ; वह आकर बहुत तिड़केगा।

तिलमिलाना—तड़पना।

उ०—आज तिलक राम, न जाने, क्यों तिलमिला रहा है।

तुलना—उद्यत होना।

उ०—तुलाराम तुमको हानि पहुँचानेपर तुला हुआ है।

तोड़ना—बहका कर अलग कर देना।

उ०—लालाजी, आपको पता भी नहीं है कि नयनसुख आपके गवाह तोड़ रहा है।

दबना—हारना।

उ०—यदि तुम साहससे काम लेते, तो उससे कदापि न दबते।

दबना—लचना।

उ०—पण्डित तपोधन शास्त्री मेरे गुरु हैं, इसीलिए मैं उनसे दबता हूँ।

दबना—शान्त होना।

उ०—दोनों पक्ष उत्तेजित होते जा रहे हैं; अब झगड़ा न दबेगा।

दबाना—शान्त करना।

उ०—यदि आप झगड़ेको आरम्भमें ही न दबाते, तो न जाने क्या फल होता।

दबाना—विवश करना।

उ०—यदि तुम दातारामको न दबाते, तो वह तुम्हारा छाता कभी न देता।

दहना—सताना।

उ०—मैं तो पहिले ही जानता था कि तुम किसी दिन मुझे अवश्य दहोगे।

दुहना—सार निकालना।

उ०—पण्डित निर्मलानन्दने इस छोटी-सी पुस्तकमें वेदान्तको दुहा है।

दुहना—धन रहना।

उ०—तुम्हारे लिए कल्याणदत्त कामधेनु है; खूब दुहो और मौज उड़ाओ।

देखना—बदला लेना, दण्ड देना।

उ०—मैंने निश्चय कर लिया है कि उसको किसी दिन अवश्य देखूँगा।

देखना-भालना—प्रबन्ध करना; रक्षा करना।

उ०—यदि तुम उसके बच्चोंको न देखते-भालते, तो उसका सब काम बिगड़ जाता।

धुनना—खूब मारना।

उ०—धनीराम किसी दिन रूपचन्दको ऐसा धुनेगा कि वह फिर इधर न फटकेगा।

नकेलना—वशीभूत करना।

उ०—यदि तुम उसको न नकेलते, तो वह तुम्हारी गरदन पर सवार रहता।

नचाना—तङ्ग करना।

उ०—तुम एक घण्टेसे नवीनको नचा रहे हो; उसकी टोपी क्यों नहीं दे देते?

नचाना—पीटना।

उ०—जब उसका बाप सुनेगा कि वह तुम्हारे साथ नाच देखने जाता है, तो वह उसको खूब नचायेगा।

नाचना—व्याकुल होना।

उ०—ऋषिकेशका बिच्छू ऐसा काटता है कि मनुष्य घण्टों नाचता है।

नाचना—क्रुद्ध होना।

उ०—इतना किस लिए नाच रहे हो? यह लो; सम्भालो अपना रुपया।

नाथना—काबूमें करना।

उ०—उस बिना सींग-पूँछके बैलको तुमने अच्छा नाथा है।

नोचना—बहुत बुरा-भला कहना।

उ०—नानकको क्यों नोच रहे हो? इसने क्या अपराध किया है।

पछाड़ना—पराजित करना।

उ०—कल नत्थूने कल्लूको ऐसा पछाड़ा कि वह कभी न भूलेगा।

पटना—निभना।

उ०—तुम अपने घरपर रहो, हमसे तुम्हारी न पटेगी।

पटना—बनना।

उ०—वहाँ जाना व्यर्थ है, उससे सौदा कभी न पटेगा।

पटकना—पीटकर गिराना।

उ०—कभी ऐसा पटकूँगा कि घण्टों धरती चाटोगे।

पटाना—फँसाना ; बहकाना ।

उ०—तुमने उसको ऐसा पटाया है कि वह घरका नामतक नहीं लेता ।

पड़ना—आपत्ति आना ।

उ०—जिसपर पड़ती है, वही जानता है ।

पड़ना—प्रयोजन होना ।

उ०—मुझे क्या पड़ी है कि मैं किसीके फटेमें पाँव दूँ ।

पढ़ाना—बहकाना ।

उ०—यदि तुम उसको न पढ़ाते, तो वह अवश्य पढ़ता ।

पीना—मदिरा-पान करना ।

उ०—स्वयं छिप-छिपकर पीते हो और दूसरोंको उपदेश देते हो ।

पसीजना—दया आना ।

उ०—तुम चाहे कितनी ही विनती करो, वह कदापि न पसीजेगा ।

फटकना—आना ।

उ०—कल तुम्हारे द्वारपर कौन खड़ा हुआ था ? तुम तो कहते थे कि वह यहाँ कभी नहीं फटकता ।

फटकना—आना।

उ०—यदि फिर कभी वहाँ फटके, तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा।

छाज-सी दाढ़ीको लेकर शेख़ जी।
यारके कूचेमें मत फटका करो॥

फटकारन—किसी प्रकार ले लेना।

उ०—मैं जानता हूं तुम कुछ न कुछ अवश्य फटकारोगे।

फटकारना—सस्ता-महँगा बेच देना।

उ०—यदि आर्थिक स्थिति अच्छी होती, तो वह अपनी भैंस न फटकारता।

फटकारना—बुरा-भला कहना।

उ०—हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ता; रामदेवके पिता उसको बहुत फटकारेंगे।

फटना—असभ्यता पूर्वक हँसना।

उ०—इतना क्यों फट रहे हो? आदमीकी तरह बैठना सीखो।

फलना-फूलना—आनन्दसे रहना।

उ०—जो माता-पिताको जलाता है, वह कभी नहीं फूलता-फलता।

फिसलना—ललचना।

उ०—उस भ्रष्टाचारिणीका रूप देखकर भरत कुमार भी फिसलता है।

फुदकना—इतराना।

उ०—कल रामदत्त उन लोगोंके साथ बैठा बड़ा फुदक रहा था।

फूलना—प्रसन्न होना।

उ०—मन-चाही हो रहा है; अब क्यों न फूलोगे ?

———

बनना—निभना।

उ०—रामनाथकी तुमसे कदापि न बनेगी।

बनना—इतराना।

उ०—उसमें सबसे बड़ा अवगुण यह है कि वह बनता बहुत है।

बनाना—हँसी उड़ाना।

उ०—उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम उसको रोज़ बनाते हो ?

बरसना—अत्यन्त प्रकुपित होना।

उ०—जिसने तुमको भरा है, उसपर ही बरसो।

अजब अन्दाज़से वह वस्लमें पुर-फन बरसता है।
कभी छागल गरजती है कभी कङ्गन बरसता है॥

बिगड़ना—क्रोधित होना।

उ०—मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा; मुझसे क्यों बिगड़ते हो ?

आह करनेपे क्यों बिगड़ते हो।
तुम तो साहब हवासे लड़ते हो॥

बिगड़ना—असन्तुष्ट होना।

उ०—जब तुम उसको बनाते हो, तो वह बड़ा बिगड़ता है।

बिगड़ना—अनबन होना।

उ०—तुम लाख प्रयत्न करो; लेखरामसे हमारी न बिगड़ेगी।

बिगाड़ना—शत्रुता करना।

उ०—वे तुम्हारे गुरु हैं; उन्होंने तुम्हारा बहुत सुधार किया है; उनसे न बिगाड़ो।

बिगाड़ना—हानि पहुंचाना।

उ०—एक बार नहीं, तुम हजार बार पकड़ो; मेरा क्या बिगाड़ सकते हो?

'क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी कज़ा आएगी?'

बिखरना—असन्तुष्ट होना।

उ०—दामोदर! बैठो तो सही, जरासी बातपर क्यों बिखर रहे हो?

———

भरना—बहुत देना।

उ०—उसकी माता अपने जामाताको ही भरती है; और किसीको कौड़ी नहीं देती।

भरना—बहकाना; उत्तेजित करना।

उ०—तुम उसको चाहे जितना भरो, वह हमारे विरुद्ध न होगा।

भरना—भुगतना।

उ०—जानते हो, जो जैसा करेगा वैसा भरेगा?

भरमाना—बहकाना।

उ०—चेचनलाल बच्चा नहीं है जो उसको इस प्रकार भरमाते हो।

भानना—बहुत पीटना।

उ०—जबतक उसको न भानोगे, वह सीधा न होगा।

भिड़ना—झगड़ा करना।

उ०—मुसटण्ड होकर एक बालकसे भिड़ रहे हो, 'तुम्हें लज्जा नहीं आती'?

भुनना—कुढ़ना।

उ०—भानुदत्त! तुम शान्तिको देखकर क्यों भुनते हो?

मरना—प्रेम करना।

उ०—वह तुमपर मरता है, इसीलिये जीता है; यदि वह मरना छोड़ दे, वो मर जाय।

मानना—सम्मान करना।

उ०—मैं क्या, उनको छोटे-बड़े सभी मानते हैं।

मारना—सताना।

उ०—तुम भी उसीको मारते हो, जो तुमपर मरता है।

मूँड़ना—ठगना।

उ०—तुम ग्राहकको मूँड़ते हो, इसीलिये मैं तुम्हारी दुकानपर नहीं आता हूँ।

रगड़ना—बहुत मारना।

उ०—वह आज तुमको बहुत रगड़ेगा क्योंकि तुमने उसका रबर तोड़ डाला है।

रड़कना—दुःख देना।

उ०—उस दिनका अपमान मेरे हृदयमें अभीतक रड़कता है।

रमाना—बहकाना।

उ०—तुम रामको ही रमाओ; मैं तुम्हारी घातें जानता हूँ।

रीझना—मोहित होना।

उ०—आप भी एक काली-कलूटी वारविलासिनीपर रीझे हैं। धिक्कार है!

लगना—प्रभाव पड़ना।

उ०—रामचरणको आपका उपदेश ऐसा लगा है कि उसने आमिष-भोजनका त्याग कर दिया है।

लगना—दुःख मिलना।

उ०—जिसको लगती है वही जानता है; किसी दूसरेको क्या पता है।

लगना—खर्च होना।

उ०—इस कार्यमें तुम्हारे कमसे कम सौ रुपये लगेंगे।

लगाना—खर्च करना।

उ०—मैं जानता हूँ इस कार्यमें कुछ लाभ न होगा; अतएव मैं एक कौड़ी भी न लगाऊँगा।

लगाना—विरुद्ध कहना।

उ०—मुझे पता चला है कि वीरसेनसे रामके विषयमें तुम ही लगाते हो।

लताड़ना—धमकाना।

उ०—जब कभी वह मुझे मिलेगा, मैं उसे अवश्य लताड़ूंगा।

लथेड़ना—फँसाना।

उ०—लेनेमें न देनेमें, इस बखेड़ेमें मुझे क्यों लथेड़ते हो।

लपेटना—फँसाना।

उ०—एक निर्दोष व्यक्तिको क्यों लपेटते हो?

लिपटना—सिर होना।

उ०—जाओ, अपना काम देखो; मुझे व्यर्थ क्यों लिपटते हो?

सँभलना—जवान होना।

उ०—सरलाको अब चिन्ता नहीं रही क्योंकि उसके बच्चे सँभल रहे हैं।

सटकना—चुपकेसे चल देना।

उ०—चन्देका नाम सुनकर सभासे कितने ही व्यक्ति सटक रहे हैं।

सटकाना—चुराना।

उ०—रामकी पुस्तक और कौन ले जाता? जगदीशने ही सटकायी होगी।

सड़ना—दुर्दशा होना।

उ०—इस आन्दोलनके कारण आज अनेक आदमी जेलोंमें सड़ रहे हैं।

समझना—दण्ड देना।

उ०—जब मैंने कहा 'समझूंगा, वह समझनेका अर्थ ही न समझा।

समाना—निर्वाह होना।

उ०—वह यहाँ किस प्रकार समायेगा? हम लोग ही बड़ी कठिनतासे रहते हैं।

सरना—निभना।

उ०—सुरेन्द्रके बिना तुम्हारी एक दिन भी न सरेगी।

सिखाना-पढ़ाना—बहकाना।

उ०—यदि तुम उसको न सिखाते-पढ़ाते, तो वह सहदेवका अपमान न करता।

सुधारना—पीटना।

उ०—बकबक किये ही जाओगे? कहो तो अभी उठकर सुधारूं।

सुनना—ध्यान देना।

उ०—मैं बहुत-कुछ समझाता हूं, परन्तु वह सुनता ही नहीं।

सुनना—मानना।

उ०—तुम चिरौरी करके उसका महत भारी कर रहे हो; वह कदापि न सुनेगा।

सुनाना—बड़ी बात कहना।

उ०—तुम एक कहोगे, तो वह बीस सुनायेगा।

हथियाना—वशमें करना।

उ०—बड़ा प्रयत्न करनेपर एक मेज हाथ लगी थी, सो तुमने हथिया ली।

हड़पना—अनीति पूर्वक अधिकारमें लाना।

उ०—जो दीनोंका माल हड़पते हैं, वे नरकगामी होते हैं।

होना—तकरार होना।

उ०—देख लेना, आज मेरी और उनकी भरी सभामें होगी।

* समाप्त *